नमस्कार नेशन
राष्ट्र के हित की बात
epaper.namaskaarnation.com
रविवार, 19 मई 2024

संपादकीय की कलम से...

स्वाति मालीवाल से जुड़ा बवाल

नमस्कार नेशन

आम आदमी पार्टी की ख़ास नेत्री सुश्री स्वाति मालीवाल के साथ मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निज सचिव द्वारा की गयी मारपीट की घटना अब रोचक हो गयी है। इस घटना की तह में जाने से पहले आपको स्वाति का अर्थ और स्वाति का महत्व समझना चाहिए। स्वाति का अर्थ है सरस्वती। स्वाति का अर्थ है तलवार। स्वाति हिन्दू धर्म से जुड़ा बहुत ही मन मोहने वाला नाम है। स्वाति सरस्वती है और एक नक्षत्र भी। स्वाती नाम की राशि कुंभ है। इस राशि की लड़कियां स्वभाव से बेहद ईमानदार होती हैं। यह किसी भी परिस्थिति के हिसाब से अपने आप को ढाल लेती हैं। स्वाती नाम की लड़कियां अक्सर दोस्ती करने से पहले सामने वाले व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से परखती है। इस राशि की स्वाती नाम की लड़कियों के करियर की बात करें तो यह फोटोग्राफर, वैज्ञानिक, लेखिका, मनोवैज्ञानिक व वकील सफलतापूर्वक बन सकती हैं। आप की नेता और दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष के साथ जो कुछ हुआ वो विस्मयकारी,पीड़ादायक और निंदनीय है । लेकिन सवाल ये है कि सामाजिक आंदोलन से होते हुए आम आदमी पार्टी से जुड़ी स्वाति के साथ मुख्यमंत्री के निज सचिव को इतनी बदतमीजी करने का साहस अचानक आ कहाँ से गया ? स्वाति न मुक्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के लिए नई हैं और न उनके निज सचिव के लिये । आप ने स्वाति को महिला आयोग का अध्यक्ष भी बनाया और राज्य सभा भी भेजा,जाहिर है कि वे पार्टी के लिए महत्वपूर्ण रहीं हैं ,लेकिन अचानक उनके साथ मुख्यमंत्री के निज सचिव का दुर्व्यवहार ये जाहिर करता है कि स्वाति के किसी क्रियाकलाप से मुख्यमंत्री के निज सचिव अवगत थे और उन्होंने इसीलिए स्वाति को मुख्यमंत्री से मिलने से रोका और जब नहीं रुकीं तो जो किया सो सब सीसीटीवी में कैद है। इस घटना के बाद स्वाति आप में रहेंगीं इसमें मुझे संदेह है। मुझे आशंका है कि वे आजकल में ही भाजपा के शरणार्थी शिविर में आश्रय ले सकतीं है।मामला पुलिस के पास पहुँच चुका है और पुलिस मुख्यमंत्री आवास के कार्यालय तक। भाजपा बहुत पहले से वहां पहुंचना चाहती थी ,लेकिन रास्ता अब बना ,वो भी स्वाति के जरिये। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल भाजपा की आँखों की सबसे बड़ी किरकिरी हैं,और शायद इसीलिए केजरीवाल की जमानत का भाजपा निविरोध किय। गनीमत है कि बड़ी अदालत ने जमानत की आलोचना को दरियादिली के साथ लिया और कुछ कहा नहीं। आखिर में स्वाति भाजपा के काम आयीं और उन्होंने जानबूझकर एक तय पटकथा के तहत जो करना था सो किया। उन्हें इसका फल मिलेगा ,न्याय भी मिलेगा लेकिन उन्होंने अपने आपको समाप्त भी कर लिया। अब वे सरस्वती नहीं रहीं। सचमुच की स्वाति से हटकर उनका व्यक्तित्व शून्य बन गया है।

आपको बता दें की स्वाति नक्षत्र आकाश मंडल में 15वाँ नक्षत्र होकर इसका स्वामी राहु यानि अधंकार है।स्वाति मालीवाल भी मुमकिन है कि आम आदमी पार्टी का 15 वां नक्षत्र ही हों और उनका स्वामी भी कोई अन्धकार ही हो। कहावत भी है कि जब स्वाति नक्षत्र में ओस की बूँद सीप पर गिरती है तो मोती बनता है। इस बूँद के लिए चातक भी तरसता है और सीप भी। मुमकिन है कि आप भी स्वाति को इतना ही महत्वपूर्ण मानता हो। लेकिन अब आम आदमी पार्टी के लिए स्वाति पहले वाली स्वाति नहीं रही। आम आदमी पार्टी की मंत्री आतिशी ने कहा कि स्वाति मालीवाल के लगाए सारे आरोप झूठे और निराधार है। साजिश के तहत स्वाति को बीजेपी ने भेजा था। स्वाति सीएम हाउस में जबरदस्ती घुसी थी। बीजेपी ने पूरे मामले की साजिश रची है। बिभव पर झूठे आरोप लगाए गए हैं। बिभव कुमार ने स्वाति मालीवाल के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

स्वाति हर पार्टी में है। हर पार्टी का अपनी महिला नेत्रियों के प्रति एक जैसा रवैया होता है। मैंने अपने पांच दशक के पत्रकारिता के जीवन में निकट से जाना है कि चाहे कांग्रेस हो,भाजपा हो,वामपंथी हों ,समाजवादी हों या फिर और कोई विचारधारा के दल महिलाओं का केवल इस्तेमाल करते हैं और वक्त आने पर उन्हें दूध में पड़ी मख्खी कीतरह निकाल भी फेंकते है। उन्हें संरक्षण कोई नहीं देता । स्वाति ने भी इस हकीकत को शायद समझा नहीं या समझ लिया तो कुछ ज्यादा ही समझ लिया। स्वाति आम चुनाव के पांचवें चरण के पहले सत्तापक्ष की और से चली गयी एक गोटी भर हैं। जिन्हें उनका इस्तेमाल करना था वे कर चुके हैं और स्वाति को पता भी नहीं चला । अब पुलिस और अदालत स्वाति को जितना न्याय दिला सकती है शायद दिला भी दे किन्तु स्वाति का जो नुक्सान होना था उसकी भरपाई कोईनहीं कर सकता ,न भाजपा और न आप। स्वाति को कांग्रेस के जमाने के स्त्री उत्पीड़न के मामले शायद याद नहीं है।वे तंदूर कांड भूल गयीं वे भाजपा के दस साल के कार्यकाल में हुए स्त्री उत्पीड़न की घटनाओं को भी शायद याद नहीं रख पायी। वे मप्र का हनीट्रैप कांड और कर्नाटक का ताजा रेमन्ना कांड भी याद नहीं रख सकीं , और उस पार्टी के खिलाफ इस्तेमाल कर ली गयीं जिस पार्टी ने उन्हें पहचान,रूतबा,पद और पैसा उपलब्ध कराया। वे पीड़िता हैं इसलिए मैं उनके साथ हूँ किन्तु उन्होंने जिस तरह से अपना इस्तेमाल होने दिया उसे देखते हुए मैं उनके साथ नहीं भी हू।

आदिवासी जनजीवन के नये जन्म का उजाला

नमस्कार नेशन

सुखी परिवार अभियान के प्रणेता, आदिवासी जनजीवन के मसीहा एवं प्रख्यात जैन संत गणि राजेन्द्र विजय पिछले 36 वर्षों से आदिवासी विषयों एवं मुद्दों को लेकर सक्रिय है, उन्होंने आदिवासी जनजीवन के उन्नयन एवं विकास के लिये अनेक जनकल्याणकारी गतिविधियों-योजनाओं जिनमें शिक्षा, सेवा, चिकित्सा एवं आर्थिक उन्नयन के उपक्रम किये हैं, जो आदिवासी जन-जीवन में उतरती रोशनी है। हाल ही में गुजरात में 4400 करोड़ की परियोजनाओं का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आनलाइन कवांट की आदिवासी महिलाओं से बातचीत करते हुए गणि राजेन्द्र विजय को जिस स्नेह एवं आत्मीयता से याद किया, समूचे देश ने यह परिदृश्य देखा और उनकी सेवाओं को महसूस किया। मोदी का इस तरह इस संत पुरुष को याद करना,उनके गौरव को, उनके होने का भान कराता हैं। इस वर्ष गणि राजेन्द्र विजयजी अपने जन्म दिन 19 मई, 2024 को गुजरात के आदिवासी क्षेत्र कवांट में देश के पहले कौशल विकास विश्वविद्यालय 'भगवान आदिनाथ आदिवासी कौशल विश्वविद्यालय' के बीज को आकार देने को तत्पर हो रहे हैं, जिससे भारत के कौशल का दुनिया में डंका बजेगा एवं आदिवासी जनजीवन विकास की एक नई गाथा लिखने को तत्पर हो सकेगा।

निश्चित ही गणि राजेन्द्र विजयजी आदिवासी समाज को उचित दर्जा दिलाने एवं उनकी समस्याओं के समाधान के लिये तत्पर है। वे स्वयं समर्थ एवं समृद्ध है, अत: शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिये स्वयं आगे आएं। एक तरह से एक संतपुरुष के प्रयत्नों से एक सम्पूर्ण पिछडा एवं उपेक्षित आदिवासी समाज स्वयं को आदर्श रूप में निर्मित करने के लिये तत्पर हो रहा है, यह एक अनुकरणीय एवं सराहनीय प्रयास है। लेकिन इन आदिवासी लोगों को राजनीतिक संरक्षक भी मिले, इसके लिये वे सभी राजनीतिक दलों के नेताओं से सम्पर्क स्थापित कर आदिवासी जीवन के दर्द से उन्हें अवगत कराया एवं इस बार के लोकसभा चुनाव में आदिवासी लोगों को सक्रिय किये हुए है। भारतीय समाज में जिन आदर्शों की कल्पना की गई है, वे भारतीयों को आज भी उतनी ही श्रद्धा से स्वीकार हैं। मूल्य निष्ठा में जनता का विश्वास अभी तक समाप्त नहीं हुआ। व्यक्ति अगर अकेला भी हो पर नैतिकता का पक्षधर हो और उसका विरोध कोई ताकतवर कुटिलता और षड्यंत्र से कर रहा हो तो जनता अकेले आदमी को पसन्द करेगी। इन्हीं मूल्यों की प्रतिष्ठापना, गणि राजेन्द्र विजय के मिशन एवं विजन का उद्देश्य है।

गणि राजेन्द्र विजय एक ऐसा व्यक्तित्व है जो आध्यात्मिक विकास और नैतिक उत्थान के प्रयत्न में तपकर और अधिक निखरा है। वे आदिवासी जनजीवन के उत्थान और उन्नयन के लिये लम्बे समय से प्रयासरत हैं और विशेषत: आदिवासी जनजीवन में शिक्षा की योजनाओं को लेकर जागरूक है, इसके लिये सर्वसुविधयुक्त करीब 12 करोड की लागत से एकलव्य आवासीय माडल विद्यालय का निर्माण होकर विगत दो दशकों से शिक्षा की नई उपलब्धियां एवं कीर्तिमान उनके प्रयत्नों से स्थापित कर रहा है। वर्ष 2007 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस विद्यालय एवं अन्य योजनाओं का शुभारंभ करीब डेढ़ लाख आदिवासी लोगों के बीच किया, इतनी विशाल आदिवासी उपस्थिति गणिजी के इस क्षेत्र में प्रभाव को दर्शा रही थी। उनके नेतृत्व में अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित है, जिनमें कन्या शिक्षा के लिये ब्राह्मी सुन्दरी कन्या छात्रावास का कुशलतापूर्वक संचालन हो रहा हैं। इसी आदिवासी अंचल में जहां जीवदया की दृष्टि से गौशाला संचालित है तो चिकित्सा और सेवा के लिये चलयमान चिकित्सालय भी अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दे रहा है। आदिवासी जनजीवन की आर्थिक उन्नति एवं स्वावलम्बन के लिये वे सुखी परिवार ग्रामोद्योग भी संचालित कर रहे हैं। अपने इन्हीं व्यापक उपक्रमों की सफलता के लिये वे कठोर साधना करते हैं और अपने शरीर को तपाते हैं। अपने कार्यक्रमों में वे आदिवासी के साथ-साथ आम लोगों में शिक्षा के साथ-साथ नशा मुक्ति एवं रूढ़ि उन्मूलन की अलख जगाते हैं। उनके प्रयत्नों का उद्देश्य है शिक्षा एवं पढ़ने की रूचि जागृत करने के साथ-साथ आदिवासी जनजीवन के मन में अहिंसा, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जगाना है। हर आदमी अपने अन्दर झांके और अपना स्वयं का निरीक्षण करे। आज मानवता इसलिए खतरे में नहीं है कि अनैतिकता बढ़ रही है। अनैतिकता सदैव रही है- कभी कम और कभी ज्यादा। सबसे खतरे वाली बात यह है कि नैतिकता के प्रति आस्था नहीं रही। त्याग, साधना, सादगी, प्रबुद्धता एवं करुणा से ओतप्रोत गणि राजेन्द्र विजयजी आदिवासी जाति की अस्मिता की सुरक्षा के लिए तथा मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने के लिए सतत प्रयासरत हैं। मानो वे दांडी पकड़े गुजरात के उभरते हुए 'गांधी' हैं। इसी आदिवासी माटी में 19 मई, 1974 को एक आदिवासी परिवार में जन्में गणि राजेन्द्र विजयजी मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था में जैन मुनि बन गये। बीस से अधिक पुस्तकें लिखने वाले इस संत के भीतर एक ज्वाला है, जो कभी अश्लीलता के खिलाफ आन्दोलन करती हुए दिखती है, तो कभी जबरन धर्म परिवर्तन कराने वालों के प्रति मुखर हो जाती है। कभी जल, जमीन, जंगल के अस्तित्व के लिये मुखर हो जाती है। इस संत ने स्वस्थ एवं अहिंसक समाज निर्माण के लिये जिस तरह के प्रयत्न किये हैं, उनमें दिखावा नहीं है, प्रदर्शन नहीं है, प्रचार-प्रसार की भूख नहीं है, किसी सम्मान पाने की लालसा नहीं है, किन्हीं राजनेताओं को अपने मंचों पर बुलाकर अपने शक्ति के प्रदर्शन की अभीप्सा नहीं है। अपनी धून में यह संत आदर्श को स्थापित करने और आदिवासी समाज की शक्ल बदलने के लिये प्रयासरत है और इन प्रयासों के सुपरिणाम देखना हो तो कंवाट, बलद, रंगपुर, बोडेली आदि-आदि आदिवासी क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

गणि राजेन्द्र विजयजी परिवार को सुदृढ़ बनाने के लिये ही सुखी परिवार फाउण्डेशन के द्वारा संचालित सुखी परिवार अभियान को लेकर सक्रिय है। मेरा सौभाग्य है कि वर्ष 2006 से संचालित इस फाउण्डेशन का संस्थापक महामंत्री बनने से लेकर वर्तमान में अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे रहा हूं। गणिजी की सर्वोच्च प्राथमिकता है कि सबसे पहले परिवार संस्कारवान बने, माता-पिता संस्कारवान बने, तभी बच्चे संस्कारवान चरित्रवान बनकर घर की, परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ा सकेंगे। अगर बच्चे सत्पथ से भटक जाएंगे तो उनका जीवन अंधकार के उस गहन गर्त में चला जाएगा जहां से पुन: निकलना बहुत मुश्किल हो जाएगा। बच्चों को संस्कारी बनाने की दृष्टि से गणि राजेन्द्र विजय विशेष प्रयास कर रहे हैं। भारत को आज सांस्कृतिक क्रांति का इंतजार है। यह कार्य सरकार तंत्र पर नहीं छोड़ा जा सकता है। सही शिक्षा और सही संस्कारों के निर्माण के द्वारा ही परिवार, समाज और राष्ट्र को वास्तविक अर्थों में नैतिक एवं चरित्रसम्पन्न बनाया जा सकता है। मेरी दृष्टि में गणि राजेन्द्र विजयजी के उपक्रम एवं प्रयास आदिवासी अंचल में एक रोशनी का अवतरण है, यह ऐसी रोशनी है जो हिंसा, आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद जैसी समस्याओं का समाधान बन रही है।

विचार मंथन

आम आदमी पार्टी को ईड़ी ने बनाया आरोपी, देश का पहला मामला

नमस्कार नेशन

100 करोड रुपए के शराब घोटाले के आरोप मैं पहली बार किसी राजनीतिक दल को आरोपी बनाया गया है। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों का कहना है, शराब घोटाले की रकम को गोवा के चुनाव में खर्च किया गया है। जिसके कारण आम आदमी पार्टी को आरोपी बनाया गया है। मनी ट्रेल में आम आदमी पार्टी भी शामिल है। शुक्रवार को न्यायालय में सातवीं चार्ज शीट दायर की गई है। इस आरोप पत्र में अभियुक्त के रूप में अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी भी शामिल किया गया है। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों का कहना है, केजरीवाल के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं। शराब घोटाले की रकम को गोवा के चुनाव में खर्च किया गया है। इसके प्रमाण भी ईड़ी के पास उपलब्ध हैं। इसलिए उन्होंने राजनीतिक दल आम आदमी पार्टी को भी आरोपी बनाया है। भारत में इस तरह का यह पहला मामला है। राजनीतिक दल को कभी किसी भी अपराधिक मामले में आरोपी नहीं बनाया गया। राजनीतिक दल के पदाधिकारी यदि कोई गलत काम करते हैं। तो उन्हें जरूर अपराधिक गतिविधियों में शामिल मानकर उनके ऊपर कारवाई की जाती है। यह पहली बार हुआ है, जब आम आदमी पार्टी को आरोपी बनाया गया है। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों ने आम आदमी पार्टी के लिए जो राह चुनी है। आगे चलकर कई राजनीतिक दलों के ऊपर आपराधिक मामला चलाने का नया रास्ता खुल गया है। विशेष रूप से कई राजनीतिक दल इस दायरे में भविष्य में आ सकते है। जो गड्ढा आज आम आदमी पार्टी के लिए पीएमएलए कानून के द्वारा खोदा गया है। भविष्य में उसका असर अन्य मान्यता प्राप्त राजनीति दलों के ऊपर पडना तय है। चुनावी बांड को सुप्रीम कोर्ट द्वारा असंवैधानिक घोषित कर दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर स्टेट बैंक और चुनाव आयोग द्वारा जो डाटा सार्वजनिक किया गया है। उसके बाद भारतीय जनता पार्टी सहित कई राजनीतिक दलों के ऊपर इसी तरह के आरोप लग रहे हैं। ईड़ी, आयकर विभाग,और सीबीआई के छापे के बाद कई कंपनियों द्वारा चुनावी बांड से चंदा दिया गया है। जिन राजनीतिक दलों को चुनावी बांड से चंदा दिया गया है। उसके बाद जांच एजेंसी ने उनके खिलाफ कार्रवाई बंद कर दी है। रिजर्व बैंक का भी एक मामला इसी तरह का आया है। इसके अलावा कई दवाई कंपनियों के मामले में भी इसी तरह के घोटाले के आरोप राजनीतिक दलों पर लगाए जा रहे हैं। चुनावी बांड से चंदा लेकर केंद्र सरकार और राज्य सरकारों द्वारा कई कंपनियों को ठेके दिए गए हैं। कइयों को अन्य तरह से फायदा पहुंचाया गया है। केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, आंध्र, तेलंगाना में अन्य राजनीतिक दलों की सरकार है। इनके ऊपर भी चुनावी बांड से चंदा लेकर लाभ पहुंचाने के आरोप लगाए जा रहे हैं। राजनीतिक दलों ने चुनावी बांड से चंदा लेकर चुनाव में खर्च किया है। इसी तरह से अन्य राजनीतिक दलों ने भी बांड से चंदा लेकर चुनाव में खर्च किया है। आम आदमी पार्टी के खिलाफ जो आरोप पत्र दाखिल किया गया है। उससे आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय राजनीतिक दल के रूप में मान्यता खत्म हो सकती है। चुनाव आयोग इसका निर्णय ले सकता है। इसी तरह से अब अन्य क्षेत्रीय दलों को भी निशाना बनाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है, संस्था कभी कोई अपराध नहीं करती है। अपराध संस्था के पदाधिकारियों द्वारा किए जाते हैं। ईड़ी के अधिकारियों ने जो चार्ज शीट दाखिल की है। निश्चित रूप से यह भारत का यह पहला मामला है। सुप्रीम कोर्ट में जमानत के मामले में जो बहस चल रही थी। उस दौरान भी यह मामला सामने आया था। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा था। पीएमएलए कानून में राजनीतिक दलों के ऊपर इस तरह की कार्रवाई नहीं की जा सकती है। ट्रायल कोर्ट में जो चार्ज सीट दाखिल की गई है। निश्चित रूप से आम आदमी पार्टी हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में भी चुनौती देगी। हाल फिलहाल जिस तरह के हालात चल रहे हैं। उसमे आम आदमी पार्टी के ऊपर राजनीतिक दल के रूप में उनकी मान्यता पर बड़ा संकट खड़ा होता हुआ दिख रहा है। राजनीतिक हल्कों में गैर भाजपा राजनीतिक दलों मे चिंता की लहर जरूर देखने को मिल रही है। चुनाव आयोग जिस तरह से विपक्षी दलों की उपेक्षा कर रहा है। ऐसी स्थिति में विपक्षी राजनीतिक दलों की मान्यता समाप्त करके उन्हें चुनाव लड़ने से रोका जा सकता है। यह आशंका विपक्षी दलों द्वारा व्यक्त की जा रही है। ईड़ी के अधिकारियों का कहना है, पीएमएलए की धारा 70 के तहत जो कार्रवाई की गई है। उसमें कार्रवाई करने का अधिकार ईड़ी के पास है। जबकि एक्ट में कंपनी शब्द का उल्लेख किया गया है। कंपनी और राजनीतिक दल दोनों में अंतर है। राजनीतिक दल का कोई उल्लेख एक्ट में नहीं है। इस मामले में टॉयल कोर्ट में अब चार्ज शीट पेश हो चुकी है।

चिंतन-मनन

चिंतन सही हो

नमस्कार नेशन

एक व्यक्ति ने अपने मित्र से साठ रूपए उधार लिए। कुछ दिनों बाद वह आया और बीस रूपए देकर बोला, सारे रूपए आ गए? मित्र ने कहा, साठ दिए थे और तुम बीस लौटा रहे हो, तो अभी चालीस रूपए बाकी रहेंगे। तीस और तीस साठ होते हैं। उसने कहा, नहीं, दस और दस साठ होते हैं। मैंने साठ रूपए लौटा दिए हैं। मित्र ने कहा, भोले आदमी! दस और दस बीस ही होते हैं। तीस और तीस साठ होते हैं। उसने कहा, मैं इस बात को नहीं मानता। मैं तो यही मानता हूं कि दस और दस साठ होते हैं। मेरी मान्यता मेरे पास और तुम्हारी मान्यता तुम्हारे पास। ?से मानने वाले को विधाता भी नहीं समझा सकता। गणित का नियम -दस और दस बीस होते हैं। कोई व्यक्ति इस गणित के नियम को जानने की बात छोड़कर मानने की बात को ही पकड़ बैठता है तो उसका कोई इलाज नहीं है। हम मानने की बात को छोड़ दें और जानें। सदा जानने का प्रयत्न करें। सदा जानें। हम विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रयत्न करें। वे प्राप्त हों तो ठीक है, न हों तो कोई बात नहीं। पुरूषार्थ को सही दिशा में लगाएं। पुरूषार्थ निरंतर हमारा साथ दे। हम प्रयत्न को बंद न करें। पुरूषार्थ को साथ लेकर चलें। मन और शरीर को विशेष आदेश दें। मन जो भटकता रहता है, अनेक प्रवृत्तियों में संलग्न रहता है, बहुत अधिक सक्रिय और गतिशील है, उस पर हम कुछ नियंत्रण करें। मन की सक्रियता को कम करें।

मेष राशि	बेचैनी, उद्विग्नता से बचिये, समय पर सोचे कार्य अवश्य ही बन जायेंगे।
वृष राशि	चिन्ताएङ्क कम हों, सफलता के साधन जुटायें, अचानक लाभ के योग अवश्य बनेंगे।
मिथुन राशि	सफलता के साधन जुटायें, अचानक लाभ के योग अवश्य ही बनेंगे।
कर्क राशि	व्यर्थ धन का व्यय, समय व शांति नष्ट होवे, विघटनकारी तत्व परेशान करेंगे।
सिंह राशि	भोग-ऐश्वर्य व स्वास्थ नरम रहे, तथा विरोधी वर्ग अवश्य ही परेशान करेंगे।
कन्या राशि	धन व समय नष्ट हो, क्लेश व अशांति, यात्रा से कष्ट, चिन्ता अवश्य ही होगी।
तुला राशि	परिश्रम से सफलता के कार्य अवश्य जुटायें, कार्य बाधा अवरोध से बचिये।
वृश्चिक राशि	चोट आदि से बचिये, क्लेश व अशांति से बचिये, समय नष्ट होगा।
धनु राशि	भाग्य का सितारा साथ देगा, क्लेश व अशांति से बचिये, समय नष्ट होगा।
मकर राशि	समय नष्ट हो, चिन्ता व यात्रा, व्यग्रता तथा स्वास्थ्य नरम-गरम होवेगा।
कुंभ राशि	आकस्मिक घटनाओं से चोट आदि का भय होगा, ध्यान अवश्य रखेंगे।
मीन राशि	अधिकारियों से कष्ट, इष्ट मित्र सहायक न होवे, समय व धन नष्ट होवेगा।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

नमस्कार नेशन

पर्यावरण शब्द परि और आवरण की सन्धि से बना है। पृथ्वी पर रहने वाले सारे जीव इसी आवरण में उत्पन्न होते हैं, फलते-फूलते हैं, तथा मृत्यु के पश्चात् इसी में विलीन हो जाते हैं। जीवों का शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से बना है दृ 卐पन्च तत्व से बना शरीरा卐। यही पांच तत्व उपरोक्त आवरण अर्थात् पर्यावरण के भी घटक हैं। इसीलिए जीवों के शारीरिक स्वास्थ्य पर इन तत्वों की शुद्धता का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। पर्यावरण के दूषित घटक जीवों के शरीर में विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं जिससे जीवों का मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। भारतवर्ष के ऋषियों ने वैदिक काल से ही जीवों के स्वास्थ्य पर पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभाव को पहचाना और उसके लिए समाज को सजग किया। पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। माता पूज्यनीय होती है और पृथ्वी तो माता की भी माता है अत: वह भी पूज्यनीय है। इसीलिए हमारे ऋषियों ने पृथ्वी की पूजा के लिए सभी वेदों में अनेकों मन्त्र बनाये हैं और पृथ्वी के लिए हमें अपना जीवन तक बलिदान करने की शिक्षा दिया है। इसी प्रकार हमारे ऋषियों ने जल संरक्षण हेतु नदियों को भी की मां की तरह पूजना, उनका आदर करना और उनका संरक्षण करना सिखाया था। आज भी समाज में अधिकतर नदियों के नामों के आगे मां लगाया जाता है।अर्थात् हे मानव तू जल का सदुपयोग कर, इसकी प्रशंसा और स्तुति कर, यह अमृत के समान लाभदायक एवं गुणकारी है। जल के पूजन, आदर और संरक्षण का आदेश सभी वेदों और अन्य ग्रन्थों में कई बार दिया गया है। अर्थात् जल (के स्रोत) हमारी माताएं हैं, वह हमें घी के समान जल देकर हमें बलवान और पवित्र बनाएं। हमारे धर्म ग्रंथों में जल स्रोतों के पास मल-मूत्र त्याग करने या अन्य किसी प्रकार से उन्हें दूषित करने से मना किया गया है। हमारे ऋषि वायु की शुद्धता की महिमा से भी परिचित थे। इसीलिए उन्होंने पवन को देवता माना और ऑक्सीजन को प्राण वायु कहा है। उन्होंने वायु की शुद्धता बनाये रखने के लिए कई प्रकार के यज्ञों का विधान भी बनाया था। इसी प्रकार अग्नि को भी देवता माना गया है। ऋग्वेद में अग्नि की पूजा बार-बार की गयी है। अग्नि ही नहीं प्रकृति के हर घटक से, जो कि हमें जीवन और आरोग्य प्रदान करते हैं, देवता मान कर उन्हें पूजा गया है। हमारे ऋषियों ने हमें पर्वतों, ग्रहों, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, पत्थर, पेड़, वायु, जल सभी को पूजने और आदर करने की शिक्षा दिया है।

सभी वेदों, उपनिषदों, पुराणों तथा अन्य सनातन ग्रन्थों में भी अनेकों मन्त्रों द्वारा पर्यावरण के सभी घटकों की प्रार्थना की गयी है और हमें बार-बार सिखाया गया है कि उन्हें अपनी माता तथा देवताओं की भांति पूजा और आदर करना चाहिए। इसी शिक्षा के कारण वैदिक काल में लोग प्रकृति से अधिक प्रेम करते थे और निरोग रहते थे। कालान्तर में धीरे-धीरे विज्ञान का विकास होता रहा और मानव की लालच भी बढ़ती गयी। अर्थात् हे पृथ्वी मां मुझे तेरा जो भाग फसल उगाने के लिए खोदना पड़ रहा है, वह शीघ्र ही ठीक हो जाय। मेरी चोट से मां तुझे हानि न पहुंचे। उनका मन संरक्षण के प्रति संवेदनशील था। परन्तु कालान्तर में मानव ने अपने विज्ञान का दुरुपयोग करते हुए अपने पोषण के अतिरिक्त अपने निहित स्वार्थ, अहंकार और अपने को प्रभावशाली सिद्ध करने के लिए प्रकृति का दोहन आरम्भ कर दिया। अधिक से अधिक विलासिता पूर्ण जीवन की इच्छा ने उसे हिन्सक बना दिया। उसने घर, वस्त्र, वाहन इत्यादि के लिए जंगलों, पर्वतों, भूगर्भ-स्थित खनिजों, जल इत्यादि का दुरुपयोग इतना अधिक कर दिया कि सन्सार के पेड़ों की संख्या अरबों गुना कम हो गयी। पर्वतों को तोड़ डाला, भूगर्भ-स्थित खनिजों का इतना दोहन किया कि आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा। कम से कम प्रयास में अधिक से अधिक खाद्यान्न उत्पन्न करने के प्रयास में भूमि में कृत्रिम उर्वरक डाले और भूमिगत जल का इतना दोहन किया कि भूगर्भ-स्थित पेय जल का संकट उत्पन्न हो गया। कृत्रिम उर्वरकों के कारण खाद्यान्न का उत्पादन तो बढ़ गया परन्तु वह विषैला सिद्ध हुआ। दूषित अन्न खाने से सम्पूर्ण मानव जाति कई प्रकार के नए-नए रोगों से ग्रस्त हो गयी। कृषि में रसायनों के प्रयोग, वनों की कटाई, कोयले तथा तेल की अन्धाधुन्ध खपत और प्रकृति के प्रति दोहन की भावना के कारण पृथ्वी, जल, वायु और यहाँ तक कि अन्तरिक्ष भी दूषित हो गया। इससे न केवल मानव बल्कि दूसरे अन्य जीवों का जीवन भी इतना प्रभावित हुआ कि उनकी कुछ जातियां तो विलुप्त ही हो गयीं। पहले मानव कृषि कार्य में पशुओं का बहुतायत उपयोग करता था। पशु भी मानव परिवार के सदस्यों की तरह होते थे। परन्तु कृषि कार्यों में यन्त्रों के अत्यधिक उपयोग ने पशुओं को महत्वहीन कर दिया। अत: लोगों ने उन्हें ही मार कर खाना आरम्भ कर दिया। इससे समाज में मान्साहारियों की संख्या में वृद्धि तथा पशुओं की संख्या में भयावह घटोत्तरी हो गयी। पहले फसलों के डन्ठल (पराली) पशु खाते थे। जब पशुओं की संख्या कम हो गयी तो किसानों ने पराली को खेत में ही जलाना आरम्भ कर दिया। इससे वायु प्रदूषण इतना बढ़ गया कि कुछ-कुछ क्षेत्रों में कई लोगों की सांस लेने की समस्या से मृत्यु तक हो चुकी है। गत शताब्दी में लोग कृषि अवशेषों को खेत में ही पानी भर कर उसी में उसे जोत कर उसे मिट्टी में दबा देते थे। यह कृषि-अवशेष अगली फसल के लिए उत्तम खाद का कार्य करता था। आज भी इस प्रक्रिया को अपना कर पराली-दहन की समस्या से मुक्ति पाया जा सकता है। परन्तु कुछ निजी स्वार्थों के कारण लोग इसे न अपना कर पर्यावरण की बहुत क्षति कर रहे हैं। इन सभी कारणों से आज प्रकृति का सन्तुलन इतना बिगड़ गया है कि यदि यही क्रम कुछ और वर्षों तक चलता रहा तो इस पृथ्वी से मानव के विलुप्त होने की आशंका दृष्टिगोचर होने लगेगी।

https://epaper.namaskaarnation.com

संपादकीय

मतदान- कश्मीर घाटी में शुभ संकेत

इस बार लोकसभा चुनाव में कश्मीर घाटी की सीटों पर अच्छे मतदान का संदेश यही है कि वहां हालात बदल रहे हैं और लोगों ने धारा 370 की समाप्ति को अब एक हकीकत के रूप में स्वीकार कर लिया है। यह अपने आप में शुभ संकेत है। हालांकि अलगाववाद के गढ़ श्रीनगर में 36 फीसदी लोगों ने वोट डाले, जो 2019 की तुलना में जब राज्य में धारा 370 लागू थी तब भी महज 14 फीसदी लोगों ने वोट डाले थे। उस तुलना में यह इस बार का वोटिंग ढाई गुना ज्यादा है। बड़ी संख्या में बुजुर्गों और महिलाओं को वोट डालते देखा गया। श्रीनगर के अलावा शोपियां, त्राल और पुलवामा में क्रमशः 45%, 37.52% और 39.25% मतदान हुआ जबकि शोपियां और पुलवामा में 2019 में मात्र 3% और 2.15% मतदान दर्ज किया गया था। गौरतलब है कि कश्मीर घाटी में पिछले दो दशकों में उग्रवादियों के बहिष्कार के आह्वान के कारण संसदीय चुनावों में मतदान प्रतिशत मात्र 1 से 2 प्रतिशत ही रहा था। राज्य में पथराव की घटनाएं बड़े पैमाने पर होती थीं और हड़तालें आम बात हुआ करती थीं, जिसका खमियाजा आम कश्मीरी को ही भुगतना पड़ता था। आतंकवाद के कारण लोग डरे हुए थे और अलगाववादी हर चुनाव में लोगों पर बहिष्कार के लिए दबाव बनाते थे। अब सारे अलगाववादी या तो जेल में हैं या फिर निष्क्रिय हो चुके हैं। राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि घाटी में मतदाता भागीदारी में वृद्धि एक पीढ़ीगत बदलाव का भी प्रतीक है, जिसमें पहली बार के मतदाता के अलावा 50 और 60 वर्ष की आयु वाले व्यक्ति भी पहली बार वोट डालने आए थे। जानकारों का मानना है कि अगर इस बार लोकसभा चुनाव में मतदाता में इतना उत्साह है तो जल्द होने वाले विधानसभा चुनाव यह जोश और ज्यादा दिखेगा, क्योंकि लोग तब राज्य में अपनी सरकार चुनेंगे। अच्छे मतदान का एक प्रमुख कारण घाटी में आई शांति और सुकून है। सेना और पुलिस ने मिलकर आंतकियों पर खासी लगाम कस दी है। लोग अब बेखौफ घर से निकल रहे हैं। इस चुनाव की खास बात है कि बीजेपी ने घाटी की तीनों सीटों पर अपना कोई उम्मीदवार खड़ा नहीं किया है। यह पार्टी का रणनीतिक निर्णय है, क्योंकि एक तो उसके प्रत्याशियों के जीतने की कोई संभावना नहीं थी, दूसरे उनके हारने से धारा 370 को लेकर एक नकारात्मक संदेश जाता। दूसरे, घाटी में इंडिया गठबंधन के सहयोगी दल ही एक-दूसरे के खिलाफ लड़ रहे हैं, जैसे कि नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी। इससे इंडिया गठबंधन की एकता तार- तार हो गई है। हालांकि नेशनल कांफ्रेंस का कांग्रेस से समझौता है। भाजपा वहां जल्द होने वाले विधानसभा चुनाव में नई रणनीति के साथ उतरेगी। उसका अंतिम लक्ष्य छोटे सहयोगियों के साथ राज्य में मिलकर सरकार बनाना है। इसमें संदेह नहीं कि इस चुनाव के बाद जम्मू कश्मीर और खासकर घाटी की सियासी हवा बदली हुई होगी। राज्य के दो प्रमुख दल नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी भले ही अभी भाजपा की आलोचना कर रहे हों, लेकिन विधानसभा चुनाव नतीजों के बाद वो भाजपा से मिलकर सरकार बना लें तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। वैसे भी कश्मीर में धारा 370 फिर से लागू करने की मांग किसी भी पार्टी के लिए प्रतिगामी ही होगी। कश्मीर के पूरी तरह भारत के साथ जुड़ने के बाद वहां बहुत से बुनियादी बदलाव हुए हैं, जो जनता के हित में हैं। सबसे प्रमुख तो जाति के आधार पर आरक्षण व्यवस्था का लागू होना है। इसका निश्चित रूप से सकारात्मक संदेश गया है। घाटी में मतदाताओं की अच्छी भागीदारी अच्छे दिनों का संकेत है।

नफरत रूपी रेत की भीत पर उगा वोट जिहाद

भारतीय चुनाव हो और विवादित बोल न हों, मजहब और धर्म न टकराए, भारत पाक की चर्चा न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। एक-दूसरे पर आरोप लगाती पार्टियों में अब यही सब वोट बटोरने के तरीके बन गए हैं। यहाँ विकास व भारतीय उत्कर्ष के मुद्दे पीछे रह जाते हैं। यहाँ प्रकृति और पर्यावरण के मुद्दे पीछे रह जाते हैं। यहाँ संविधान को ताक पर रखकर मुहजोरी शुरू हो जाती है जो कि देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ताजा तकरार मारिया आलम खां के उस बयान से गरमाया है जिसमें उन्होंने एकजुट होकर वोट-जिहाद करने की अपील कर डाली। मुसलामानों को एक होकर चुनाव में वोट जिहाद के नाम पर वोट डालने को कह डाला। यह एक ओछी कोशिश है और यह भारत की एकता-अखंडता को तोड़ने की कोशिश भी कही जा सकती है। भारत में जिहाद शब्द पर कायदे से प्रतिबन्ध लगना चाहिए, जिसकी सनातन परम्परा की लंबी विरासत है। साझी संस्कृति की लंबी विरासत है, उस देश में वोट जिहाद के माध्यम से भारतीय एकीकरण को खंडित करने, तोड़ने की यह क्रूर कोशिश मानी जा रही है। मारिया आलम खां कोई बच्ची नहीं हैं। वह चुनाव में एक जन-प्रलोभन को यदि संबोधित कर रही थीं, तो उन्हें ऐसा बयान देने का कोई हक तो नहीं ही है।

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

जब-जब चुनाव आते हैं कुछ चौंकाने वाले विमर्श छिड़ जाते हैं। खास बात यह है इस मतदान की कि भारतीय जनता पार्टी एक बार फिर अपनी तीसरी पारी खेलने को लेकर आश्वस्त है। विपक्ष इंडी-गठबंधन के साथ एकजुट भी हैं और बिखरे हुए भी। देश में अगर बीजेपी सरकार बनती है तो तीसरी बार ऐसा होगा कि विपक्ष कमजोर होगा क्योंकि इंडी-गठबंधन भले एकजुट हों, लेकिन एनडीए के मुकाबले यह बिखरा हुआ एक गठबंधन है जिसमें खंड-खंड कभी भी बन जाने की क्षमता है।

हमारे देश में जब-जब चुनाव होता है, पड़ोसी देशों और दुनिया के अनेक देशों की नज़रें भारत पर लगी रहती हैं। भारतीय चुनाव में अपनी दिलचस्पी दिखने वाले देशों के अपने-अपने निहितार्थ हैं। विश्व की मीडिया की नज़रें भी भारत पर बनी रहती हैं। कॉर्पोरेट जगत के लोगों की निगाह रहती है। धर्म के ठेकेदारों की भी नज़र भारत के चुनावों में होती है। अब इन सब काग-दृष्टि के बीच भारत अपनी डेमोक्रेसी को लेकर बहे जा रहा है। इस वर्ष एक नया मुद्दा विमर्श के केंद्र में आया है-वोट जिहाद का। भारत में यह नया सत्य है या शिगूफा, यह तो आने वाला समय तय करेगा लेकिन मुद्दा दिलचस्प है और विष्फोटक भी है। वोट जिहाद अपनी नई टर्मिनोलॉजी के साथ अब दस्तक दे ही दिया है तो वोट में प्रतिभागिता कर रही पार्टियाँ एक-दूसरे पर मुहतोड़ ज़वाब देना शुरू कर दी हैं।

भारतीय चुनाव हो और विवादित बोल न हों, मजहब और धर्म न टकराए, भारत पाक की चर्चा न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। एक-दूसरे पर आरोप लगाती पार्टियों में अब यही सब वोट बटोरने के तरीके बन गए हैं। यहाँ विकास व भारतीय उत्कर्ष के मुद्दे पीछे रह जाते हैं। यहाँ प्रकृति और पर्यावरण के मुद्दे पीछे रह जाते हैं। यहाँ संविधान को ताक पर रखकर मुहजोरी शुरू हो जाती है जो कि देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है।

ताजा तकरार मारिया आलम खां के उस बयान से गरमाया है जिसमें उन्होंने एकजुट होकर वोट-जिहाद करने की अपील कर डाली। मुसलामानों को एक होकर चुनाव में वोट जिहाद के नाम पर वोट डालने को कह डाला। यह एक ओछी कोशिश है और यह भारत की एकता-अखंडता को तोड़ने की कोशिश भी कही जा सकती है। भारत में जिहाद शब्द पर कायदे से प्रतिबन्ध लगना चाहिए, जिसकी सनातन परम्परा की लंबी विरासत है। साझी संस्कृति की लंबी विरासत है, उस देश में वोट जिहाद के माध्यम से भारतीय एकीकरण को खंडित करने, तोड़ने की यह क्रूर कोशिश मानी जा रही है। मारिया आलम खां कोई बच्ची नहीं हैं। वह चुनाव में एक जन-शैलाब को यदि संबोधित कर रही थीं, तो उन्हें ऐसा बयान देने का कोई हक तो नहीं ही है।विदेशों में राहुल गाँधी का संबोधन जिसमें उन्होंने अल्पसंख्यकों के साथ भारत में हो रहे अन्याय का ज़िक्र किया था और अब मारिया खान का वोट जिहाद के नाम पर सांप्रदायिक पार्टी बताकर बीजेपी को रोकने का जब बयान आया तो ये दोनों बातें कहीं न कहीं जुड़ती हैं। सत्ताधारी बीजेपी को ऐसे बयान के माध्यम से रोकने की कोशिश भले न कामयाब हो लेकिन मारिया के इस बयान से विपक्ष और इंडी-गठबंधन को ज़रूर नुकसान होगा, यह तो तय है। इससे दो बातें और भी सामने उभरती हैं एक, क्या बीजेपी से डरी हुई बाहरी ताकतें यह सब प्रायोजित रूप से करवा रही हैं? या बीजेपी के तीसरी बार सत्ता में आने से उनमें डर समाया है, यह बात समझने की है।

वोट जिहाद कोई मामूली नारा नहीं है। यह एक षड्यंत्रकारी कोशिश भी मानी जा सकती है जो भारतीय प्रजातंत्र के खिलाफ है। देखा जाए तो यह विद्वेष फ़ैलाने, भारतीय समरसता को समाप्त करने और भारत की विकास करने में एक अवरोध है। इसे सामान्य रूप से नहीं लिया जा सकता। यह एक गंभीर मामला है। यह राष्ट्र विरोधी बयान है जो चुनाव के कुछ चरण बीतते अपना दस्तक दे ही दिया है। इसमें ऐसी भी संभावना है कि कुछ खुद का साम्राज्य स्थापित करने वाली वर्चस्ववादी शक्तियों की जानी-समझी चाल हो, क्योंकि चुनाव के बीच ऐसा बयान आया है। बीजेपी ने हालांकि इस पर अपने मतदाताओं को सचेत किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इसका दूरगामी परिणाम क्या होगा, इस पर टिपण्णी की है लेकिन ऐसे बोल भारत में बोले ही क्यों जाएँ, जो देश को हिलाकर रख दें। यद्यपि मारिया के पारिवारिक सदस्य और विपक्ष मारिया के उस बयान को उसका निजी बयान बताकर किनारा कर लिए हैं लेकिन बात निकली है तो दूर तलक जाएगी।

खैर, चुनाव हो जायेंगे। देश अपनी नई सरकार के साथ आगे बढ़ जाएगा लेकिन जब-जब चुनाव आता है भारत में, चुनाव के दौरान बिगड़े बोल भारतीय मूल अस्मिता व पहचान को विद्रूप बना देते हैं। यदि असंसदीय भाषा, असंसदीय गतिविधि और अप्रत्याशित बयान इसी तरह जारी रहे तो भारत के लिए यह ठीक नहीं है। षड्यंत्रकारी शक्तियां इससे अपने मंसूबों में कामयाब होंगी। देशहित तो कतई नहीं होगा। हमारे भारतीय जनमानस का प्रत्येक जन बहुत ही उम्मीद से नए चुनाव में मतदान करता है। उसको वोट जिहाद जैसी बात बताई जाएगी। उसे डरने और डराने की बात की जाएगी। यह भारतीय संविधान की गरिमा का अपमान है। कदाचित ऐसे अमर्यादित बयान से चुनाव में प्रतिभागिता कर रही पार्टियाँ बच नहीं सकती क्या? बिना हिन्दू-मुसलमान किये भी चुनाव हो सकता है। जाति, क्षेत्र, धर्म, मजहब अपने-बेगाने कहने सुनने से ज्यादा ज़रूरी है देश, देश का संविधान, देश का जन और सबके बीच सहिष्णुतापूर्ण जीवन-धर्म। भारतीय राजनेता चाहे वे किसी भी दल के सदस्य हों, उन्हें देश की आत्मशक्ति को कमजोर करने से बचना ज़रूर चाहिए।

दुनिया में विघटनकारी शक्तियों की मंशा होती है तोड़ना। वे तोड़ेंगे। विखंडित करेंगे। अस्थिर करेंगे। इसके लिए वे हमारे बीच से ही किसी को मोहरा बनाकर अपने निजी स्वार्थ को सिद्ध करने की कोशिश करेंगे। चुनाव का समय इसके लिए सबसे ज्यादा उर्वर व उपजाऊ होता है। वे विषाद व विष के फसल उगाने की पूरी कोशिश करेंगे। इसमें आवारा पूंजी का निवेश करेंगे। भ्रमित करके लोकतंत्र की शक्ति को कमजोर करेंगे। ऐसे ही कोशिश से निकला है वोट जिहाद। लव जिहाद, लैंड जिहाद के बाद वोट जिहाद कहीं हमारा व हमारी सदृढ़ भारतीय लोकतंत्र का फ्युचर किलर न बन जाये, इसे गंभीरता से नहीं सोचा गया तो भारत को कोई नहीं बचा पाएगा। मतदान के दौरान और बाद में भी भारत तो हम सबका है फिर यहाँ किसी जिहाद की जगह आखिर हो ही क्यों?

देश का जन-जन, सबका सुन्दर मन यदि किसी भी तात्कालिक उकसावे से ऊपर उठकर देश के बारे में नहीं सोचेगा तो ऐसी विघटनकारी ताकत हम पर हावी होंगी। भारतीय गरिमा के लिए अच्छा क्या है, और बुरा क्या है, इसे हम सभी को सोचना है। आज जब वोट जिहाद जैसे प्रश्न हमारे सामने खड़े हों तो हमें भारतीय मन से ज्यादा सोचने की ज़रूरत है जिसमें समष्टिगत लाभ निहित हैं। यदि भारतीय जन भारतीयता के मन से एकजुट रहेंगे तो नफ़रत रूपी रेत की भीत पर उगे वोट जिहाद की उम्र बिलकुल मामूली है, यह एक बड़ा सच है।

अध्यात्म

निंदा से सदैव बचना चाहिए

एक बार एक राजा ने यह फैसला लिया कि वह प्रतिदिन 100 अंधे लोगों को खीर खिलाया करेगा। एक दिन खीर वाले दूध में सांप ने मुंह डाला और दूध में विष डाल दिया और ज़हरीली खीर को खाकर 100 के 100 अंधे व्यक्ति मर गए। राजा बहुत परेशान हुआ कि मुझे 100 आदमियों की हत्या का पाप लगेगा। राजा परेशानी की हालत में अपने राज्य को छोड़कर जंगलों में भक्ति करने के लिए चल पड़ा, ताकि इस पाप की माफी मिल सके। रास्ते में एक गांव आया। राजा ने चौपाल में बैठे लोगों से पूछा कि क्या इस गांव में कोई भक्ति भाव वाला परिवार है? ताकि उसके घर रात काटी जा सके। चौपाल में बैठे लोगों ने बताया कि इस गांव में दो बहन भाई रहते हैं जो खूब बंदगी करते हैं। राजा उनके घर रात ठहर गया। सुबह जब राजा उठा तो लड़की ध्यान पर बैठी हुई थी। इससे पहले लड़की का रूटीन था कि वह दिन निकलने से पहले ही ध्यान से उठ जाती थी और नाश्ता तैयार करती थी। लेकिन उस दिन वह लड़की बहुत देर तक ध्यान पर बैठी रही। जब लड़की ध्यान से उठी तो उसके भाई ने कहा की बहन तू इतना लेट उठी है ,अपने घर मुसाफिर आया हुआ है। इसने नाश्ता करके दूर जाना है। तुझे ध्यान से जल्दी उठना चाहिए था। तो लड़की ने जवाब दिया कि भैया ऊपर एक ऐसा मामला उलझा हुआ था। धर्मराज को किसी उलझन भरी स्थिति पर कोई फैसला लेना था और मैं वो फैसला सुनने के लिए रुक गयी थी, इस लिए देर तक बैठी रही ध्यान पर। तो उसके भाई ने पूछा ऐसी क्या बात थी। तो लड़की ने बताया कि फलां राज्य का राजा अंधे व्यक्तियों को खीर खिलाया करता था। लेकिन सांप के दूध में विष डालने से 100 अंधे व्यक्ति मर गए। अब धर्मराज को समझ नहीं आ रही कि अंधे व्यक्तियों की मौत का पाप राजा को लगे, सांप को लगे या दूध नंगा छोड़ने वाले रसोईए को लगे। राजा भी सुन रहा था। राजा को अपने से संबंधित बात सुन कर दिलचस्पी हो गई और उसने लड़की से पूछा कि फिर क्या फैसला हुआ? लड़की ने बताया कि अभी तक कोई फैसला नहीं हो पाया था। तो राजा ने पूछा कि क्या मैं आपके घर एक रात के लिए और रुक सकता हूं? दोनों बहन भाइयों ने खुशी से उसको हां कर दी। राजा अगले दिन के लिए रुक गया, लेकिन चौपाल में बैठे लोग दिन भर यही चर्चा करते रहे कि कल जो व्यक्ति हमारे गांव में एक रात रुकने के लिए आया था और कोई भक्ति भाव वाला घर पूछ रहा था। उस की भक्ति का नाटक तो सामने आ गया है। रात काटने के बाद वो इस लिए नही गया क्योंकि जवान लड़की को देखकर उस व्यक्ति की नियत खोटी हो गई। इसलिए वह उस सुन्दर और जवान लड़की के घर पक्के तौर पर ही ठहरेगा या फिर लड़की को लेकर भागेगा। दिनभर चौपाल में उस राजा की निंदा होती रही। अगली सुबह लड़की फिर ध्यान पर बैठी और रूटीन के टाइम अनुसार ध्यान से उठ गई। तो राजा ने पूछा- बेटी अंधे व्यक्तियों की हत्या का पाप किसको लगा? तो लड़की ने बताया- वह पाप तो हमारे गांव के चौपाल में बैठने वाले लोग बांट के ले गए। निंदक हमेशा दुसरों के पाप अपने सर पर ढोता रहता है। और दूसरों द्वारा किये गए उन पाप-कर्मों के फल को भी भोगता है। अत : हमें सदैव निंदा से बचना चाहिए ।

चार चरणों के मतदान में उभरी प्रवृत्तियों के संकेत

लोकसभा चुनाव के चार चरण पूरे होने के बाद कुल 543 स्थानों में से 379 का मतदान संपन्न हो चुका है। वस्तुतः अब तक तमिलनाडु, केरल, गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक, असम, गोवा, त्रिपुरा, मणिपुर, मेघालय, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मिजोरम, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, पुद्दुचेरी, लक्षद्वीप, अंडमान, दमन और दीव, दादरा एवं नगर हवेली में मतदान समाप्त हो गया है। इस तरह कुल 18 राज्यों और 4 केंद्र शासित प्रदेशों में मतदान खत्म है। इनमें आठ राज्यों तथा दो केंद्र शासित प्रदेशों में बीजेपी कभी शक्तिशाली नहीं रही । पहले चरण में 102, दूसर में 88, तीसरे में 93 तथा चौथे चरण में 96 सीटों पर मतदान हुआ। अब केवल 164 स्थान का ही मतदान बाकी है । हालांकि अभी पंजाब, हरियाणा, दिल्ली जैसे राज्यों का मतदान बाकी है। बावजूद चुनाव से संबंधित मुद्दे, पार्टियों की रणनीतियां, मतदान की प्रवृत्तियां आदि काफी हद तक हमारे सामने आ चुके हैं। इसलिए लोकसभा चुनाव के अभी तक के मतदान के आधार पर कुछ स्पष्ट दिखती तस्वीरें तथा संकेतों और संदेशों को समझाना ज्यादा आसान हो गया है।

अवधेश कुमार

इस चुनाव में सबसे ज्यादा चर्चा मतदान प्रतिशत गिरने की प्रवृत्तियों का हुआ है। चौथे चरण का अंतिम मतदान प्रतिशत आने में समय लगेगा । चुनाव आयोग द्वारा दिए गए आंकड़ों के अनुसार तीसरे चरण में 65.68% मतदान हुआ, जबकि 2019 में इस चरण में 68.4% मतदान हुआ था । इसमें असम में सर्वाधिक 85.45 प्रतिशत, गोवा में 76.06%, बिहार में 59.15% और उत्तर प्रदेश में 57.55% मतदान हुआ। पहले चरण में 66.14% तथा दूसरे में 66.71% मतदान हुआ था। 2019 के लोकसभा चुनाव में पहले चरण में 69.4 3% और दूसरे में 69.6 4% मतदान हुआ था। इस तरह देखें तो पहले चरण में 3.3 प्रतिशत, दूसरे में करीब 2.9% एवं तीसरे चरण में 2.72% की कमी आई है। कुल मिलाकर मोटा - मोटी 2019 की तुलना में 3% मतदान राष्ट्रीय स्तर पर कम हुआ है। सामान्यतया राष्ट्रीय स्तर पर तीन प्रतिशत मतदान कम होना बहुत ज्यादा नहीं लगता, किंतु राज्यों के अनुसार देखें तो इनमें काफी उतार - चढ़ाव है। मसलन महाराष्ट्र, बिहार, गुजरात, मध्यप्रदेश, केरल जैसे राज्यों में मतदान का प्रतिशत ज्यादा कम रहा। दूसरी ओर पूर्वोत्तर के लोगों ने भारी मतदान किया। पश्चिम बंगाल का लगभग 73 -74% मतदान भी अभी तक अच्छा है लेकिन यह पिछले चुनाव से काफी कम है। राज्यों के अंदर भी अलग-अलग क्षेत्र में कम और ज्यादा मतदान हुआ है। इसमें सबसे सबके दिमाग में यह प्रश्न कौंध रहा है कि किसके मतदाता कम संख्या में निकले?

परिणाम के पूर्व कोई भी भविष्यवाणी जोखिम भरी है। महिला मतदाताओं की संख्या के आधार पर पिछले लोकसभा चुनाव और राज्य विधानसभा चुनावों में माना जा रहा था कि जहां भी भाजपा है वहां इनका ज्यादातर मत उसे ही मिलता है। इस चुनाव में महिला मतदाताओं की संख्या असम और पश्चिम बंगाल में 83% से अधिक रही, आए जो देश में सबसे ज्यादा है। शेष जगह महिलाओं का मतदान सामान्य रहा और पुरुषों की तुलना में ज्यादातर जगह कम। इन सबके निश्चय ही निहितार्थ हैं । क्या हैं निहितार्थ? विपक्ष के दावों के बावजूद देश भर में यह नहीं देखा गया कि कहीं भी व्यापक स्तर पर जनता के अंदर नरेंद्र मोदी सरकार को सत्ता से हर हाल में उखाड़ फेंकने का सामूहिक वातावरण है। इसी तरह विपक्ष को केंद्र की सत्ता में स्थापित करना है ऐसा सामूहिक प्रखर भाव भी कहीं देखा नहीं गया। स्थानीय स्तरों पर भाजपा के नेताओं -कार्यकर्ताओं और समर्थकों के एक समूह में कई कारणों से उदासीनता और असंतोष दिखा है। 22 जनवरी को अयोध्या में रामलाल की प्राण प्रतिष्ठा के साथ बना हुआ स्वाभाविक अभूतपूर्व वातावरण निश्चित रूप से कमजोर पड़ा और चुनाव की अंतर्धारा में यह सशक्त रूप से सब जगह कायम नहीं रहा। ऐसा नहीं था कि लोगों ने 500 वर्षों के बाद मंदिर निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा से भावनात्मक रूप से स्वयं को जोड़ा नहीं लेकिन उसे बनाए रखने के लिए उम्मीदवार, गठबंधन तथा अन्य सरकारी सम्मानों के लिए चयनित व्यक्तियों का व्यक्तित्व उसके अनुरूप होना चाहिए। अगर इनमें राममंदिर, हिंदुत्व और प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व की झलक नहीं होगी तो कार्यकर्ता और प्रतिबद्ध समर्थक चुनाव में करो या मरो के भाव से काम नहीं कर पाएंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर मतदान करना है तो चाहे बीजेपी हो या गठबंधन उनमें भी उस तरह की प्रखरता सामने दिखने चाहिए थी। बावजूद भाजपा के नेता ,कार्यकर्ता और प्रतिबद्ध समर्थक गुस्से और प्रतिशोध के भाव में एकमुश्त उसके विरुद्ध मतदान कर देंगे ऐसा मानने का ठोस आधार नहीं दिखता है। भाजपा विरोधी जितना प्रचार करें चार चरणों के चुनाव में इस तरह की व्यापक प्रवृत्तियों की रिपोर्ट नहीं है। हां, अप्रतिबद्ध मतदाता इधर से उधर जाते हैं और इस चुनाव में गए हैं। किंतु अभी तक की प्रवृत्तियों में ऐसा नहीं दिखा है कि दो लोकसभा चुनावों से भाजपा के साथ खड़े होने वाले मतदाताओं का बहुत बड़ा समूह बिल्कुल विपक्ष के साथ भाजपा को हराने की मानसिकता से चला गया।

चुनाव प्रक्रिया आरंभ होने के बाद कांग्रेस से निकले नेताओं ने जिस तरह पार्टी को हिंदुत्व और राम मंदिर विरोधी घोषित किया उसका इतना अर्थ तो है ही कि यह मुद्दा मूर्त रूप में विद्यमान है। विपक्ष वैसे मुद्दों पर सरकार को घेरे जिनमें तथ्य हों और वे सच भी हों तो आम लोग प्रभावित होंगे। अभी तक के चुनाव में विपक्ष ने उन मुद्दों को सबसे ऊपर लाने की कोशिश की है जिनमें ज्यादातर सच नहीं है। उदाहरण के लिए भाजपा ने 400 सीटों का नारा इसलिए दिया कि वह संविधान और आरक्षण को खत्म कर सके। इसी तरह यह कि नरेंद्र मोदी सत्ता में आ गए तो आगे चुनाव नहीं होगा। यानी यह फासिस्ट और उच्च जातियों की मानसिकता वाली पार्टी है जो लोकतंत्र के अनुकूल व्यवस्था को रहने नहीं देगी । ये सब वही आरोप हैं जो संघ परिवार और भाजपा पर वर्षों से लगाए जाते रहे और हमेशा गलत साबित हुए। ऐसा नहीं है कि लगातार इस दुष्प्रचार से मतदाता बिल्कुल प्रभावित नहीं हुए लेकिन 10 वर्षों के शासनकाल में ऐसा नहीं हुआ जबकि पहले भी यही आरोप लगाया गया था । तो आगे होगा इस पर मतदाताओं का व्यापक समूह विश्वास नहीं कर सकता। लोगों के सामने यह सच भी है कि भाजपा ने सत्ता में आने के बाद आरक्षण व्यवस्था को ज्यादा सुसंगत और तार्किक बनाया है। आर्थिक रूप से कमजोर की सूची में आरक्षण के लिए मुसलमान सहित सभी को शामिल किया है। संविधान दिवस की शुरुआत करने वाली पार्टी संविधान को खत्म कर देगी इस पर सहसा कौन विश्वास करेगा? आप देखेंगे कि पहले चरण के साथ विपक्ष ने प्रकट और अप्रकट अल्पसंख्यकों के नाम पर मुसलमान से जुड़े उन मुद्दों को उभारा जिनके विरुद्ध प्रतिक्रिया में भाजपा की ताकत बढ़ती रही है। इस चुनाव का यह दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है कि स्वयं मुसलमानों के अंदर पढ़े -लिखे और अगुवा वर्ग ने चुनाव को इस्लाम मजहब का विषय बनाया, इसके आधार पर पूरे समुदाय से भाजपा के विरुद्ध वोट करने कि सार्वजनिक अभियान चलाया है,पर किसी भी विपक्ष के नेता ने इसका विरोध नहीं किया। पहले चरण के बाद दूसरे, तीसरे और चौथे चरण तक यह विषय चरम पर पहुंचा और स्वयं प्रधानमंत्री एवं भाजपा की इसके विरुद्ध प्रतिक्रियाओं ने निश्चय ही मतदान को प्रभावित किया होगा। कुछ राज्यों विशेषकर तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना , आंध्रप्रदेश ,पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में साफ दिख रहा है कि सनातन, हिंदुत्व, राम मंदिर मतदाताओं को प्रभावित करने वाला बड़ा कारक है और वहां की सत्तारूढ़ दलों के विरुद्ध प्रतिक्रिया में भाजपा को वोट मिला है। संदेशखाली बंगाल चुनाव को प्रभावित कर रहा है । बंगाल, उड़ीसा और तेलंगाना में भाजपा शानदार प्रदर्शन करें तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इसी तरह केरल और तमिलनाडु में भी उसका प्रदर्शन संतोषजनक हो सकता है।

वस्तुतः सभी पार्टियों को चुनाव में परिपक्व लोकतांत्रिक व्यवहार का परिचय देना चाहिए था। महान सभ्यता -संस्कृति वाले इस देश के चरित्र को केंद्र में रखते हुए अर्थनीति, विदेश नीति,रक्षा नीति, सामाजिक- सांस्कृतिक नीति आदि पर गंभीर बहस से चुनाव को सही पटरी पर लाया जा सकता था। प्रधानमंत्री ने स्वयं चुनाव अभियान की शुरुआत 2047 तक भाजपा को विकसित देश बनाने, अगले 5 वर्ष से लेकर सरकार में आने पर 100 दिन के एजेंडे की बात की। लेकिन संविधान और आरक्षण खत्म करने, लोकतंत्र का अंत करने, अल्पसंख्यकों विशेषकर मुसलमानों के मजहबी अधिकार समाप्त कर देने के साथ अलग-अलग जातियां के समर्थन और विरोध जैसे आरोप इतने हाबी हो गए कि अंततः ये चुनाव का मुख्य मुद्दे हो गये। जो स्थिति हो गई है उसमें यह मानने का कोई कारण नहीं कि शेष तीन चरणों में ये मुद्दे नहीं रहेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अयोध्या में श्रीरामलला का दर्शन और रोड शो वास्तव में चुनाव को इनके साथ जातीय, स्थानीय और छोटा स्वार्थों वाले मुद्दों से निकालकर व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य की पटरी पर लाने की कोशिश थी।

आज का कार्टून

राशिफल

मेष

नये कारोबार में कुछ तकनीकी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारी वर्ग के साथ आपको सम्बन्ध अच्छे रखने चाहिये।

वृषभ

आज आप मानसिक थकान का अनुभव कर सकते हैं। आपको आज आराम करना चाहिये। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

मिथुन

दिन के शुरुआती भाग में आप ज्यादा व्यस्त हो सकते हैं। कारोबार में आपको ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण रहेगा।

कर्क

आज का दिन आपके लिये काफी अच्छा रहेगा। विवाह को लेकर परेशानियों का निवारण हो सकता है। जीवनसाथी आपके प्रति काफी सहयोगात्मक रहेगा।

सिंह

आज दिन की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। अपेक्षानुसार काम न होने से आप थोड़े क्रोधित हो सकते हैं। दूसरों पर निर्भरता ज्यादा बढ़ाने से काम बिगड़ने की आशंका है।

कन्या

नये सम्बन्धों को लेकर परेशानी हो सकती है। कार्यक्षेत्र में आपको अतिरिक्त समय देना पड़ सकता है। अपने लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा न करें।

तुला

विद्वान जनों के साथ आपके सम्पर्क मजबूत होंगे। वैवाहिक जीवन काफी खुशहाल रहेगा। सरकारी अधिकारियों की मदद से जरूरी काम समय हो जायेंगे।

वृश्चिक

कार्यक्षेत्र में आपको अतिरिक्त ध्यान देना पड़ेगा। घर में अनुशासन का अभाव रहेगा। काम समय पर न होने से अशान्ति होगी।

धनु

परिजनों के साथ अच्छा समय बितायेंगे। दूसरों की आलोचनाओं से आपको दुखी नहीं होना चाहिये। आलस्य के कारण आपको नसों में खिंचाव की समस्या हो सकती है।

मकर

मीडिया से जुड़े लोगों को चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। आज आपके पिता के साथ आपका मनमुटाव हो सकता है। शाम को काफी निराश महसूस कर सकते हैं। कुसंगति में फँसने से बचें।

कुंभ

परिवार में मांगलिक कार्यक्रम हो सकते हैं। अपने काम करने के तरीके में आपको बदलाव करना पड़ेगा। जॉब में आप काफी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

मीन

आज आपके करियर की परेशानियों का निवारण हो सकता है। रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा। परिवार में बुजुर्गों का सहयोग मिलेगा।

संपादकीय

हम कब बंद करेंगे प्लास्टिक का उपयोग

हाल ही में कनाडा की राजधानी ओटावा में प्लास्टिक प्रदूषण पर अंतरराष्ट्रीय संधि के लिए गहन मंथन के बाद राष्ट्रों के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी संधि के प्रारूप पर सहमति बनी, जो इसी वर्ष के अंत में बुसान में होने वाली बैठक में सहभागियों के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी। प्लास्टिक प्रदूषण से दुनिया का कोई भी राष्ट्र अछूता नहीं है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र एक बाध्यकारी संधि के लिए पहल की है। प्लास्टिक प्रदूषण से समस्त मानवता और जैविक सभ्यता निरंतर प्रभावित हो रही है। 20वीं सदी की महान उपलब्धि प्लास्टिक धीरे-धीरे संपूर्ण मानव सभ्यता व प्रकृति के लिए एक बड़े संकट के रूप में प्रकट हो गई है। पिछले कुछ वर्षों में एक ही बार उपयोग में आने वाली प्लास्टिक सामग्री पर प्रतिबंध लगाए गए हैं, लेकिन अब भी प्रतिवर्ष 600 अरब डॉलर मूल्य का करीब 40 करोड़ टन प्लास्टिक का उत्पादन हो रहा है। यह उत्पादन 2050 तक करीब 100 करोड़ टन प्रतिवर्ष से भी बढ़ जाएगा। तथ्य यह है कि जितने प्लास्टिक का उत्पादन हो रहा है, उसके नौ फीसदी की ही रीसाइक्लिंग हो पा रहा है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार, अधिकांश प्लास्टिक या तो खुले में जलाया जा रहा है या यत्र-तत्र फेंक दिया गया है। दीर्घ आयु होने के नाते इसका निरंतर उपयोग या दुरुपयोग होता रहता है। इन्हीं वजहों से वर्ष 2040 तक सभी प्रकार के प्लास्टिक उत्पादन को 60 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य निर्धारित किया जा रहा है, अन्यथा यह चक्र कभी रुकने वाला नहीं है।

प्लास्टिक के समर्थक तर्क देते हैं कि इससे 3.5 फीसदी ही कार्बन उत्सर्जन होता है, लेकिन प्लास्टिक की पहुंच और भयावहता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पश्चिम प्रशांत महासागर में 36,000 फुट की गहराई और माउंट एवरेस्ट की 29,000 फुट ऊंचाई तक प्रचुर मात्रा में प्लास्टिक पाया गया है। यह तो वह प्लास्टिक है, जो हम प्रत्यक्ष रूप में देखते हैं। व्यापक जनजागृति और तमाम प्रयासों के बावजूद हम अपने शरीर में जगह बना चुके प्लास्टिक से बेखबर हैं। हमें इसका जरा भी इल्म नहीं है कि प्लास्टिक के साथ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक कई प्रकार के रसायन हमारे शरीर में प्रवेश कर चुके हैं। संभवतः इस पृथ्वी पर अब ऐसा कोई भी स्थान शेष नहीं है, जहां प्लास्टिक न हो। भोजन, पानी, वस्त्र, आदि के जरिये प्लास्टिक के सूक्ष्म कण हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। यहां तक कि सौंदर्य प्रसाधन एवं स्वास्थ्य रक्षा हेतु भी प्लास्टिक का उपयोग हो रहा है। बीस वर्ष पूर्व पहली बार छोटे प्लास्टिक यानी 2-5 मिलीमीटर आकार वाले प्लास्टिक के कणों की खोज हुई, जो प्लास्टिक के बड़े टुकड़ों के टूटने से बने थे। फिर नैनो प्लास्टिक का पता चला, जो अत्यंत ही सूक्ष्म आकार के होते हैं। नैनो प्लास्टिक अपने सूक्ष्म आकार के कारण सामान्य दृष्टि से ओझल रहते हैं और विभिन्न माध्यमों से हमारे शरीर में पहुंचकर ऊतकों में जमा हो जाते हैं तथा दूरगामी असर पैदा करते हैं। विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि बढ़ते कैंसर, दिमागी रक्तस्राव जैसी गंभीर अवस्थाओं के लिए प्लास्टिक भी बहुत बड़ा कारक है।

प्लास्टिक मुक्त वातावरण की संकल्पना के लिए सबसे बड़ा अवरोध है इसका सार्थक विकल्प न होना। यदि कुछ विकल्प सुझाए भी गए हैं, तो वे सुगमता की कसौटी पर प्लास्टिक से कोसों दूर हैं। बहरहाल इस विकट समस्या से निजात पाने के लिए जरूरी है, प्लास्टिक की रीसाइक्लिंग व पुनः उपयोग की व्यवस्था को सुदृढ़ करना। भारत में स्वच्छ भारत अभियान के बाद प्लास्टिक उपयोग में सांकेतिक रूप से कमी आई है।

सुप्रीम कोर्ट से केंद्र को लगा जोर का झटका धीरे से

याचिकाकर्ता का सवाल था कि अगर विशेष अदालत ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में व्यक्ति विशेष के आरोपों को संज्ञान में ले लिया है, तो क्या तब भी उसे बेल के लिए सेक्शन 45 की दोहरी शर्तों को पूरा करना होगा। इस मामले में दिए गए सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद धन-शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) प्रावधानों के तहत जमानत की कड़ी शर्तों को संतुष्ट करने की जरूरत नहीं है। अगर आरोपी समन द्वारा विशेष अदालत के समक्ष पेश होता है, तो यह नहीं माना जा सकता कि वह हिरासत में है। अगर अदालती समन के चलते पेश होने के बाद ईडी आरोपी की हिरासत चाहती है, तो उसे विशेष अदालत में आवेदन देना होगा

देश की शीर्ष अदालत ने दो मामलों में केंद्र सरकार को जोर का झटका धीरे से देते हुए यह जाहिर कर दिया कि कानूनों की मनमानी व्याख्या अपनी सुविधा के हिसाब से नहीं की जा सकती। सुप्रीम कोर्ट के ईडी की गिरफ्तार करने की शक्तियों को सीमित करने के साथ ही दूसरे मामले में एक वरिष्ठ पत्रकार की गिरफ्तारी को अवैध करार देने से केंद्र को यह झटका लगा है। इन दोनों मामलों में दिए गए फैसलों से बेशक केंद्र की भाजपा सरकार को व्यापक राजनीतिक नुकसान नहीं हो किन्तु इसके दूरगामी परिणाम अवश्यंभावी होंगे। परिणाम यह होगा कि ईडी अब आसानी से किसी के खिलाफ गिरफ्तारी की कार्रवाई नहीं कर सकेगी। इसी तरह पुलिस खिलाफ खबर पर किसी पत्रकार को भी आसानी से गिरफ्तार नहीं कर सकेगी। ईडी की कार्रवाई में कितने कानूनी तथ्य हैं, यह देखने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने अधिनस्थ अदालतों को रैफ्री की भूमिका दी है। गौरतलब है कि लंबे अर्से से विपक्षी दल केंद्रीय एजेंसियों पर भेदभाव के आरोप लगाती रहीं हैं। विपक्षी दलों का आरोप है केंद्र सरकार राजनीतिक रंजिशवश इन एजेंसियों को दुरुपयोग कर रही है। एक याचिकाकर्ता ने दिसंबर 2023 में पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट के एक आदेश को चुनौती दी थी।

याचिकाकर्ता का सवाल था कि अगर विशेष अदालत ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में व्यक्ति विशेष के आरोपों को संज्ञान में ले लिया है, तो क्या तब भी उसे बेल के लिए सेक्शन 45 की दोहरी शर्तों को पूरा करना होगा। इस मामले में दिए गए सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद धन-शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) प्रावधानों के तहत जमानत की कड़ी शर्तों को संतुष्ट करने की जरूरत नहीं है। अगर आरोपी समन द्वारा विशेष अदालत के समक्ष पेश होता है, तो यह नहीं माना जा सकता कि वह हिरासत में है। अगर अदालती समन के चलते पेश होने के बाद ईडी आरोपी की हिरासत चाहती है, तो उसे विशेष अदालत में आवेदन देना होगा। अदालत केवल उन कारणों के साथ हिरासत देगी, जो संतोषजनक हो और जिनमें हिरासत में लेकर पूछताछ की जरूरत हो। जस्टिस अभय एस ओक और जस्टिस उज्जल भुइयां की बेंच ने यह फैसला सुनाया है। बेंच ने कहा है कि अगर किसी मामले

में ईडी ने किसी आरोपी को गिरफ्तार किए बिना चार्जशीट दाखिल की और अदालत ने इस पर संज्ञान लेकर उसे समन किया तो ऐसे व्यक्ति को पीएमएलए के तहत जमानत के लिए दोहरी शर्तों को पूरा करने की आवश्यकता नहीं है।

पीएमएलए को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के दौरान 2002-03 में लाया गया था। बाद में मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के दौरान 1 जुलाई, 2005 को इसे लागू किया गया। उस वक्त इस कानून को ब्लैक मनी के फ्लो को रोकने के उद्देश्य से बनाया गया था। पीएमएलए कानून के तहत सबसे पहले झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सीएम मधु कोडा के खिलाफ कार्रवाई की गई थी। इसके बाद साल 2010 में 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कोयला घोटाला समेत कई बड़े घोटालों में इस कानून के तहत कार्रवाई हुई। फिर साल 2012 में तत्कालीन वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने इसमें संशोधन भी किया था। बीते कुछ सालों में इस एक्ट में और भी कई बदलाव किए गए हैं। ईडी की शक्तियां सीमित करने के साथ केंद्र सरकार को दूसरा झटका लगा न्यूज क्लिक के फाउंडर संपादक प्रबीर पुरकायस्थ की गिरफ्तारी को लेकर। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद न्यूज क्लिक के फाउंडर प्रबीर पुरकायस्थ को रिहा कर दिया गया। न्यूजक्लिक फाउंडर पुरकायस्थ को पोर्टल के माध्यम से राष्ट्र-विरोधी प्रचार को बढ़ावा देने के लिए कथित चीनी फंडिंग के मामले में गिरफ्तार किया गया था। पुरकायस्थ के खिलाफ आरोप लगाया गया कि न्यूजक्लिक को चीन के पक्ष में प्रचार के लिए कथित तौर पर धन मिला था। देश की सबसे बड़ी अदालत ने यूएपीए मामले में उनकी गिरफ्तारी और रिमांड को गलत माना। कोर्ट का यह फैसला अपने आप में एक नजीर है। इसका असर आने वाले दिनों में दूसरे फैसलों पर भी दिख सकता है।

दरअसल सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले के जरिए किसी की गिरफ्तारी के लिए पुलिस के सामने एक साफ-साफ लकीर खींच दी है। कोर्ट ने साफ कहा कि गिरफ्तारी के वक्त पुलिस को इसका आधार लिखित तौर पर देना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 20, 21 और 22 के तहत सबसे अटूट मौलिक अधिकार है। इसे भी किसी तरह नजरअंदाज या अनदेखा नहीं किया जा सकता है। सुनवाई के दौरान कोर्ट की कही इस बात का स्पष्ट संदेश है कि हर नागरिक के लिए जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार की अपनी विशेष अहमियत है। इस मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यूएपीए या अन्य कानून के तहत किसी भी शख्स की गिरफ्तारी से पहले अब पुलिस को पहले लिखित में ये बताना जरूरी होगा कि उसकी गिरफ्तारी किस आधार पर की जा रही है। इसके लिए लिखित में भी सूचित करना होगा। कोर्ट ने सुनवाई के दौरान ये भी साफ कर दिया है कि किसी भी इंसान के लिए कानूनी कार्रवाई एक जैसी होनी चाहिए और उसे किसी हाल में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

न्यायमूर्ति बी. आर. गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने कहा कि गिरफ्तारी के ऐसे लिखित आधारों की एक कॉपी गिरफ्तार किए गए शख्स को बिना किसी अपवाद के जल्द से जल्द दी जानी चाहिए। कोर्ट की इस टिप्पणी से ये साफ हो गया कि गिरफ्तार शख्स को हर हाल में जल्द से जल्द गिरफ्तारी के लिखित आधारों की एक कॉपी मिलनी चाहिए, ताकि उसे अपने खिलाफ हो रही कार्रवाई की पूरी जानकारी हो। जस्टिस बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि इस निष्कर्ष पर पहुंचने में कोई झिझक नहीं है कि लिखित रूप में गिरफ्तारी के लिए रिमांड कॉपी नहीं दी गई, जिसके चलते गिरफ्तारी अवैध है। जस्टिस बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने जो कहा उससे इस बात की रिमांड की कॉपी ना मिलने पर गिरफ्तारी को भी अवैध साबित किया जा सकता है। कोर्ट ने मौलिक अधिकार पर अतिक्रमण करने के किसी भी प्रयास को अस्वीकार कर दिया।

कोर्ट ने कहा कि इस प्रकार, संविधान के अनुच्छेद 20, 21 और 22 द्वारा ऐसे मौलिक अधिकार का उल्लंघन करने के किसी भी प्रयास से सख्ती से निपटना होगा। कोर्ट की इस टिप्पणी से भी साफ हो रहा है कि अगर ऐसा होता है तो उसे इंसान के मौलिक अधिकार का हनन माना जाएगा। फैसला लिखते हुए, न्यायमूर्ति मेहता ने कहा कि पुरकायस्थ की गिरफ्तारी, उसके बाद पिछले साल 4 अक्टूबर का रिमांड आदेश और दिल्ली उच्च न्यायालय का 15 अक्टूबर का रिमांड को वैध करने का आदेश, कानून के विपरीत था और इसलिए इसे रद्द कर दिया गया। इस मामले की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यूएपीए या अन्य अपराधों के आरोप में गिरफ्तार किए गए किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तारी के आधार के बारे में लिखित रूप में सूचित किया जाना मौलिक और वैधानिक अधिकार है। किसी को भी ऐसे ही नहीं उठा सकते। सुप्रीम कोर्ट के इन दोनों आदेशों से स्पष्ट है कि पुलिस और केंद्रीय एजेंसियां आंख बंद करके कोई कार्रवाई नहीं कर सकेंगी। न्यूज क्लिक के फाउंडर की गिरफ्तारी के अवैध करार देने से यह भी साफ हो गया है कि सरकार विरोधी खबरें लिखने-दिखाने पर राजनीतिक दल सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल दुर्भावनावश नहीं कर सकती। शीर्ष कोर्ट के इस फैसले से निश्चित तौर पर प्रेस की आजादी से एक बड़ा डर समाप्त हो गया है।

अमरजीत मौआर

कब है वट सावित्री व्रत, जानें इसका महत्व और पूजा मुहूर्त

सनातन धर्म में हर त्यौहार और व्रत को विशेष महत्व दिया गया है। ऐसा ही एक त्यौहार है वट सावित्री। हिंदू कैलेंडर के अनुसार, यह दिन ज्येष्ठ (जेठ) अमावस्या के दौरान मनाया जाता है। द्रिक पंचांग के अनुसार इस वर्ष यह 6 जून, गुरुवार को पड़ रहा है। विवाहित महिलाएं पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखतीः विवाहित महिलाएं अपने पतियों की लंबी उम्र, सुख और समृद्धि के लिए व्रत रखती हैं। इस व्रत के संबंध में मान्यता है कि इसे करने से परिवार के सदस्यों को सौभाग्य और वैवाहिक जीवन में सुख की प्राप्ति होती है। वट सावित्रि व्रत में वट और सावित्रि दोनों का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन बरगद के पेड़ के महत्वपूर्ण महत्व को दशार्ता है, जिसकी हिंदू धर्म में इस दिन पूजा की जाती है। वट सावित्री व्रत पूजा मुहूर्तः वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ मास की अमावस्या पर रखा जाता है। पंचांग के अनुसार अमावस्या तिथि की शुरूआत 5 जून की शाम को 5 बजकर 54 मिनट पर हो रही है। इसका समापन 6 जून 2024 शाम 6 बजकर 07 मिनट पर होगा। उदया तिथि को देखते हुए इस साल वट सावित्री व्रत 6 जून को रखा जाएगा। इस दिन पूजा के लिए शुभ मुहूर्त प्रातः 11 बजकर 52 मिनट से दोपहर 12 बजकर 48 मिनट पर होगा।

वट के वृक्ष में तीन देवताओं का वासः भक्तों का मानना है कि पेड़ में तीन देवताओं का वास है- तने में भगवान विष्णु, शाखाओं में भगवान शिव और जड़ों में ब्रह्मदेव का वास माना जाता है। बरगद के पेड़ की लटकती शाखाओं को सावित्री का रूप माना जाता है। वट सावित्री व्रत का महत्व वट सावित्री का व्रत हिंदू धर्म में महिलाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वट सावित्री का व्रत ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। इस दिन विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखती हैं और बरगद के पेड़ के नीचे विधि-विधान से पूजा करती हैं। महिलाएं भी यमराज की पूजा करती हैं और अपने पति की लंबी और बेहतर जिंदगी के लिए प्रार्थना करती हैं।

अगर महिलाएं इस दिन पूरे विधि-विधान से पूजा करती हैं तो उन्हें शुभ फल मिलता है। पूजा के लिए महिलाएं किसी भी बरगद के पेड़ के नीचे षोडशोपचार, पंचोपचार एवं दशोपचार पूजा कर सकती हैं। साथ ही महिलाएं पूजा के बाद ब्राह्मण को दक्षिणा देती हैं और पूरे दिन व्रत रखती है।

यादगार होगी स्मृति ईरानी की जीत!

कांग्रेस के रणनीतिकार भले ही अपनी रणनीति से संतुष्ट हो। भले ही गांधी परिवार अपनी साख बचाने की कोई भी दलील दे पर सच्चाई यही है कि राहुल गांधी ने अमेठी सीट से चुनाव लड़ना कतई उचित नहीं समझा। उन्हें परिवार की 2019 में अपनी हारी खानदानी सीट अमेठी से मम्मी श्रीमती सोनिया गांधी की जीती रायबरेली कहीं ज्यादा सुरक्षित लगी। जहां तक अमेठी सीट पर स्मृति ईरानी के मुकाबले में किशोरी लाल शर्मा को मैदान में उतारने की बात है तो उनके उतारने से अमेठी में न तो कोई उत्साह की लहर है न तो उन्हे अमेठी हाथोहाथ लेने को तैयार है

कभी कांग्रेस की खानदानी सीट मानी जाने वाली अमेठी से 2019 में पहले भाजपा की स्मृति ईरानी से चुनाव हारना और अब 2024 में राहुल गांधी का पलायन करना निःसंदेह यह बताने को काफी है कि राहुल गांधी स्मृति ईरानी से टक्कर लेने का साहस नहीं दिखा सके। अलबत्ता कांग्रेस ने राहुल गांधी की बजाय अर्से तक गांधी परिवार के अमेठी, रायबरेली में चुनाव प्रबन्धक एवं वफादार सिपहसालार रहे किशोरी लाल शर्मा को चुनाव मैदान में उतारकर प्रत्यक्षः यह जताने की कोशिश की हैं कि गांधी परिवार अमेठी से अपने पुराने रिश्ते को बरकरार रखना चाहता है। कांग्रेस के रणनीतिकारों को उम्मीद थी कि चूंकि राहुल गांधी पड़ोस की गांधी परिवार की खानदानी सीट रायबरेली से चुनाव लड़ रहे हैं सो किशोरी लाल शर्मा को इसका लाभ मिलना तय है। यही नहीं चूंकि उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन के तहत रायबरेली व अमेठी सीट कांग्रेस के खाते में गई अतएवं दोनो ही सीटों पर गठबंधन की प्रमुख भागीदार सपा के वोटों का लाभ मिलना तय है।

कांग्रेस के रणनीतिकार भले ही अपनी रणनीति से संतुष्ट हो। भले ही गांधी परिवार अपनी साख बचाने की कोई भी दलील दे पर सच्चाई यही है कि राहुल गांधी ने अमेठी सीट से चुनाव लड़ना कतई उचित नहीं समझा। उन्हें परिवार की 2019 में अपनी हारी खानदानी सीट अमेठी से मम्मी श्रीमती सोनिया गांधी की जीती रायबरेली कहीं ज्यादा सुरक्षित लगी। जहां तक अमेठी सीट पर स्मृति ईरानी के मुकाबले में किशोरी लाल शर्मा को मैदान में उतारने की बात है तो उनके उतारने से अमेठी में न तो कोई उत्साह की लहर है न तो उन्हे अमेठी हाथोहाथ लेने को तैयार है। समर्पित कांग्रेसजनों और पदाधिकारियों तथा कार्यकताओं के अलावा न तो कोई बड़ा कांग्रेसी नेता उनके पक्ष में दिखाई दे रहा है और न ही उन्हे गांधी परिवार से कोई विशेष

तरजीह दी जा रही है। यदि ऐसा न होता तो श्री शर्मा के नामांकन के मौके पर प्रियंका गांधी अवश्य मौजूद रहती। जबकि वह पड़ोस में यानी रायबरेली में अपने भाई राहुल के नामांकन के अवसर पर जोश-ओ-खरोश के साथ उपस्थित थी। यह मान लिया जाये कि भाई के नाते प्रियंका की प्राथमिकता राहुल गांधी थे तो भी प्रियका के रॉबर्ट वाड्रा तो उपस्थित रह ही सकते थे।

जहां तक इंडिया गठबंधन के प्रमुख दल सपा व अन्य के कांग्रेस प्रत्याशी को समर्थन मिलने का सवाल है, हालात बता रहे हैं कि सपा समर्थक खासकर यादव समाज के लोगों का रूझान कांग्रेस प्रत्याशी की तुलना में भाजपा प्रत्याशी की ओर कहीं ज्यादा है। जिस तरह मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, स्मृति ईरानी के जुलूस से लेकर नामांकन पत्र दाखिल करने के मौके पर उपस्थित रहे और उन्होने पड़ोस के सुल्तानपुर में अपनी सुसराल बताकर अपने को यहां का दामाद बताकर अपना हक जताया। उससे भी यादव विरादरी का अधिकाधिक वोट श्रीमती ईरानी को मिलना ही मिलना है। यहां यह भी कम गौरतलब नहीं है कि अमेठी के जिन दो सीटों पर सपा विधायकों का कब्जा है उनमें से एक गौरीगंज के सपा विधायक सपा से लगभग प्रत्यक्ष भी न भी सही अप्रत्यक्ष रूप से नाता तोड़ चुके हैं। उनका पूरा परिवार हाल ही में भाजपा में शामिल हो चुका है।

ज्ञात रहे सपा विधायक राकेश प्रताप सिंह गौरीगंज सीट से लगातार तीन बार चुनाव जीतकर एक रिकार्ड बना चुके हैं। उनका इस सीट के मतदाताओं पर काफी अच्छा प्रभाव माना जाता है। ऐसे में उनके समर्थकों का अधिकाधिक वोट कांग्रेस के श्री शर्मा की बजाय भाजपा की श्रीमती ईरानी को मिलना तय माना जा रहा है। सपा की दूसरी विधान सभा सीट अमेठी पर भी ऐसा ही नजारा दिखने को मिल रहा है। यहां से सपा विधायिका महाराजी देवी का बेटा और बेटी सहित पूरा कुनबा ही श्रीमती ईरानी के पक्ष में चुनाव प्रचार करने में जुटा हुआ है। ज्ञातव्य है महाराजी देवी के पति गायत्री प्रजापति भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते एक अर्से से जेल में बंद है और उन्हे लगता है कि भाजपा की शरण में जाने से उनके पति व परिवार को राहत मिल सकती है।

महाराजी देवी प्रजापति ओबीसी से आती हैं और उनकी बिरादरी कुम्हारों के अलावा उनके खास समर्थक मानी जाने वाली जातियों मौर्य, नाई आदि का भी भरपूर समर्थन भाजपा प्रत्याशियों को मिलना तय माना जा रहा है। जानकार सूत्रों का कहना है कि यहां पर यह भी कम काबिलेगौर नहीं है कि जब 2019 में कांग्रेस प्रत्याशी राहुल गांधी को सपा-बसपा गठबंधन का पूरा समर्थन प्राप्त था तब भी भाजपा प्रत्याशी स्मृति ईरानी को ओबीसी के 70 फीसदी मतदाताओं का समर्थन हासिल हुआ था और कुर्मी तथा कौरी जाति का तो 80 फ ीसदी से अधिक समर्थन मिला था। भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में एक और महत्वपूर्ण बात यह बतायी जा रही है और वो है बसपा का सपा से अलग होकर स्वतंत्र चुनाव लड़ना। समझा जा रहा है कि ओबीसी जाति के रवि प्रकाश मौर्य भाजपा व कांग्रेस दोनों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। हालांकि यह तथ्य भी सामने आ रहा है कि बसपा के चलते मुस्लिम व दलित वोटों में बंटवारा तय है। जिसका खामियाजा कांग्रेस को ही भुगतना पड़ेगा।

राम मंदिर बनने के बाद से दलित परिवारों का ज्यादा से ज्यादा समर्थन भाजपा को मिलना सुनिश्चित है। जहां तक मुस्लिम मतों का सवाल है कुछ हद तक मुस्लिम महिलाओं का वोट भी भाजपा प्रत्याशी के खाते में जा सकता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के स्मृति ईरानी के समर्थन में अब तक दो-दो बार रैलिया करने से उदासीन मतदाताओं में जोश देखने को मिल रहा है। उपरोक्त तमाम तथ्यों, हालातों के अलावा स्मृति ईरानी का अमेठी के लोगों के बीच रहकर उनके सुख दुख में शामिल होना और क्षेत्र के उतरोत्तर विकास के लिये हर संभव प्रयास करना उनकी जीत को और पुख्ता बनाता है। अब तो यहां तक दावे किये जाने लगे हैं कि इस बार भाजपा प्रत्याशी स्मृति कम से कम दो लाख वोटों से कांग्रेस प्रत्याशी किशोरी लाल शर्मा को पराजित करने में सफल होगी।

अमरजीत मौआर

भगवान शिव और मां पार्वती के अलावा शिवलिंग पर विराजते हैं ये देवी-देवता, आप भी लें आशीर्वाद

सोमवार का दिन भगवान शंकर को समर्पित होता है। वहीं शिवलिंग पर मौजूद अलग-अलग स्थानों की पूजा-अर्चना करने से व्यक्ति को शुभ फल प्राप्त होते हैं। बता दें कि शिवलिंग पर भगवान शिव के अलावा माता पार्वती, भगवान गणेश, कार्तिकेय और अशोक सुंदरी का स्थान माना गया है। ऐसे में शिवलिंग के इन अलग-अलग स्थानों की पूजा कर आप इनका भी आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। अशोक सुंदरी का स्थानः पद्मपुराण के अनुसार, भगवान शिव और माता पार्वती के अलावा उनकी बेटी अशोक सुंदरी का भी उल्लेख किया गया है। बता दें कि शिवलिंग में जिस स्थान से जल बहकर निकलता है, उस स्थान को अशोक सुंदरी का स्थान माना जाता है। बता दें कि अशोक सुंदरी की पूजा करने के लिए शुद्ध जल में गंगाजल मिलाकर शिवलिंग पर अर्पित करना चाहिए।

वहीं शिवपुराण के मुताबिक शिवलिंग में जलाधारी के आगे की ओर पद चिन्हों में कार्तिकेय और भगवान गणेश का वास माना जाता हैं। बताया जाता है कि शिवलिंग पर जल चढ़ाने के बाद पद चिन्ह के स्थान पर दोनों तरफ से 5-7 बार अपने हाथों से इस तरह दबाना चाहिए, जैसे कि आप किसी के पैर दबा रहे हैं। इस दौरान जातक को श्री शिवाय नमस्तुभ्यं मंत्र का जाप करते रहना चाहिए। मान्यता के अनुसार, ऐसा करने से व्यक्ति को जल्द ही संतान सुख प्राप्त होता है। वहीं अगर बच्चे को किसी तरह की बीमारी या समस्या है, तो उससे भी राहत मिलती है।

हर साल 18 मई को मनाया जाता है वर्ल्ड एड्स वैक्सीन डे, जानिए क्या है इतिहास

एड्स एक गंभीर और जानलेवा बीमारी है। लेकिन आज भी हमारे समाज में इस बीमारी को लेकर जागरुकता की कमी है। एड्स एक ऐसी बीमारी है, जिसका कोई इलाज नहीं है। ऐसे में एड्स बीमारी के प्रति जागरुकता फैलाने और इसकी वैक्सीन को विकसित करने के महत्व के बारे में जागरुकता को लेकर हर साल 18 मई को वर्ल्ड एड्स वैक्सीन डे मनाया जाता है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको इस खास दिन के इतिहास और इसके महत्व के बारे में बताने जा रहे हैं।

इतिहासः नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एलर्जी एंड इंफेक्शियस डिजीज ने साल 1998 में इस दिन की शुरूआत की थी। तत्कालीन संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन द्वारा यह दिन एचआईवी वैक्सीन विकसित करने के आह्वान के बारे में याद दिलाता है। राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने साल 1997 में मॉर्गन स्टेट यूनिवर्सिटी में दिए जा रहे अपने भाषण एड्स के लिए वैक्सीन विकसित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला था। महत्वः बता दें कि यह दिन एचआईवी वैक्सीन की जरूरत और इसकी रिसर्च पर प्रकाश डालने का काम करता है। वर्ल्ड एड्स वैक्सीन डे पर दुनिया भर के लोग एड्स से जान गंवाने वाले लाखों लोगों को श्रद्धांजलि

देते हैं। साथ ही वैश्विक स्तर पर इस बीमारी के प्रतिकूल प्रभाव पर प्रकाश डालते हैं। एड्स क्या हैः एड्स को एक्वायर्ड इम्यूनोडेफिशिएंसी सिंड्रोम भी कहा जाता है। जो ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस की वजह से होता है। ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस शरीर के इम्यून सिस्टम पर हमला करता है और सीडी4 सेल्स को अपना निशाना बनाता है। वहीं सीडी4 सेल्स संक्रमण और बीमारियों से लड़ने के लिए बेहद जरूरी होता है। एचआईवी से पीड़ित मरीज की इम्यूनिटी गंभीर रूप से कमजोर हो जाती है और अगर व्यक्ति को सही समय पर इलाज न मिले तो यह जानलेवा साबित होता है। एड्स के लक्षणः एड्स के लक्षणों में जोड़ों का दर्द, ठंड लगना, मांसपेशियों में दर्द, बुखार, गले में खराश, सूजी हुई ग्रंथियां, पसीना आना (विशेषकर रात में), शरीर पर लाल चकत्ते पड़ने के अलावा थकान शामिल है। जानिए कैसे फैलता है एड्सः वेजाइनल डिस्चार्ज, एनल फ्लूइड, एचआईवी खून, वीर्य और ब्रेस्ट मिल्क के जरिए एड्स की बीमारी फैस सकती है। इसके अलावा एचआईवी संक्रमित खून से दूषित सुई या सीरिंज शेयर करने और असुरक्षित यौन संबंध बनाने से भी यह बीमारी फैल सकती है। एड्स की बीमारी प्रसव, गर्भावस्था और स्तनपान के दौरान संक्रमित मां से बच्चे में फैल सकती है।

https://t.me/NewsPaperHai

संपादकीय

सच्चाई की राह दूरुह!

आज सच्चाई कहां है ? सच्चा कौन है! इन बातों को आज के जमाने के लोग अपने-अपने ढंग से तर्क देकर समझाते नजर आते हैं और लोग तो झूठ को सच बनाकर अपने को सच्चा साबित करने में लगे है। यह बात सच है कि जगत के लोग, सब लोगों के क्रियाकलापों पर नजर रखते हैं।देश दुनिया में क्या हो रहा है, लोग क्या कर रहे हैं। राजनीति कहां हो रही है, पक्ष क्या कर रहा है, विपक्ष क्या कर रहा है, समग्र लोगों की स्थिति क्या है, कौन राजा, कौन रंक है, किसकी गतिविधियां कब शुरू हो रही है, कौन क्या कर रहा है, जगत के लोग सब जानते हैं। जगत में यही तो एक बात है कि लोग झुठ सच की बात करते हैं, लेकिन इन दोनों में सभी अपनी सोच को लेकर अपने अपने हिसाब से ही चलते हैं।दुनिया के लोग आज की राजनीति पर जो नजर रखे हैं, वह जानते हैं कि देश करवट ले रहा है, शासन प्रशासन किस तरह काम कर रहा है, देश के कौन से व्यक्ति कितने पानी में है। किस तरह से देश राज्य समाज को लोकतंत्र? में चलाया जा रहा है।सामाजिक व्यवस्था पर भी सब की नजर होती है। सरकारी काम और गतिविधियां तो हर किसी के सामने होता है। आज की जो स्थिति बनी है, उसमें देश की जनता आम आवाम सब कुछ जान समझ रहा है। महंगाई की बात समझ रहा है, प्राकृतिक नियमों की बातें समझ रहा है, पर्यावरण किस कदर अव्यवस्थित हो रहा है, वह भी समझ रहा है। हर क्षेत्र की हर बातें लोगों की नजर में होती है। बावजूद इसके गलत सही होता रहता है।अब यहां हम चर्चा करें कि जो लोग गलत करते हैं, वह निश्चित रूप से अपने आप को ताकतवर समझते हैं। झूठा वादा करना और लोगों को बरगलाना तथा बरगला कर लोगों से आर्थिक लाभ कमाने की विद्या भी गलत लोग जानते हैं। तभी तो वे गलत कहे जाते हैं। गलत लोग कभी अपने को गलत नहीं कह सकते, उनकी सफाई देने की कला भी महत्वपूर्ण होती है मजेदार होती है और होती है बेकार।सत्य को झूठ बनाते लोग अपने को सही साबित करने में लगे रहते हैं।गलत करने वाले लोग जिनके साथ गलत करते हैं, उनको ही गलत समझते हैं। उन पर ही दावा करते हैं, कि वह गलत है।जबकि वह जानते हैं कि गलत उन्होंने किया है, लेकिन मानते नहीं उन्होंने गलत किया है, ठगा है लोगों को।लेकिन अपने तर्क से ठगने की बातों को भी सत्य साबित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते।लोगों की आदत हो गई है, बस अपने लिए करते हैं। अपने लिए जीते हैं, अपने लिए सब कुछ कर सकते हैं, जो उन्हें नहीं करना चाहिए, वह भी करते हैं। समाज को ठगने का काम करने वाले लोग अपनी भलाई के आगे किसी का भला होने नहीं देते, यह बात सच है। लेकिन सच को आज कोई पूछता ही नहीं, सच को झूठ साबित करने की कला आज लोगों में समाहित हो चुकी है। लेकिन अब भी कुछ लोग हैं, जो सच को सच और झूठ को झूठ ही कहेंगे। भले उन्हें लोग नकारते हो, बुद्धू समझते हो, बुड़बक जैसा व्यवहार करते हो उनके साथ और उन्हें उल्लू समझते हैं लेकिन वह नहीं जानते कि सत्य सत्य होता है। वह कभी न कभी सबके सामने होता है। हर लोग यह जानता है, फिर भी अनजान बनता है।आज सामाजिक व्यवस्था अपने आप में सिमट कर रह गई है। परिवार अपने आप में सिमटा है। परिवार भी वह सिर्फ पत्नी बच्चा को ही मानता है।अपने पिता माता भाई बहन सब से दूर रहता है। अकेला हो जाता है, फिर भी नहीं मानता कि वह गलत है।सच्चाई यह भी है कि आज गलत लोग ही शिखर पर दिखते हैं। सही लोग बाजारों सड़कों पर दिखते हैं।कहते हैं झुठ का बोल वाला नहीं होता। सच ही सब पर भारी होता है, लेकिन आज जो स्थिति बनी है, निश्चित रूप से झूठ व्यवहारिक असामाजिक लोगों के लिए ही सर्वोपरि होता है। आज समाज के लोग स्वार्थ में वशिभूत है। संसार के लोगों में जब स्वार्थ आता है तो निश्चित रूप से लोग पतन की राह पर चल पडते है। अपने आप में सिमटकर दूसरे लोगों को शोषन दोहन करने में सफलता प्राप्त करता है। स्वार्थी मनुष्य अपने हित गलत ढंग से हासिल कर दूसरे को आहत करता है। वैसे सब लोग जानते हैं कि गलत क्या है?क्या सब लोग भी जानते हैं जिन का शोषण होता है, वह निश्चित रूप से गलत होता है और शोषण करने वाले बलशाली होते हैं, तभी वह शोषण करते हैं। इस देश में जो लोकतांत्रिक व्यवस्था है, वही आम लोगों को अपनी स्वेच्छा से जीवन जीने की जो छूट देती है, वही गलत सही होने का जिम्मेवार भी है। अब हम कहना चाहेंगे कि सच्चाई की राह दूरुह होती है, लेकिन होती है सच्ची और पक्की। अब जब सब लोग सभी बातों को जानते समझते हैं, तो यह जरूरी है की सच्चाई से जीवन का निर्वहन किया जाए। भगवत भक्ति में जीवन को समर्पित किया जाए, क्योंकि यह सभी जानते हैं कि यह जो जीवन है, वह उस अदृश्य शक्ति की देन है, जिन्होंने इस धरा पर मनुष्य रूपी प्राणी को उतारा है। वही सब कुछ करते हैं, गलत-सही करने वालों का दंड भी निर्धारण उनका ही काम है और वह करते भी है। इस संसार की हर बातों को अगर कोई जानता है, तो वह ऊपर वाला विधना भगवान ईश्वर और परमेश्वर, सब जानते हैं कि उनकी बातों को जाना जा रहा है, बावजूद बस सही नहीं कर पाते और अपनी मनमानी करते हैं।भगवत रूपी अदृश्य शक्ति निश्चित रूप से सब कुछ जानते हैं और सब कुछ शायद उन्हीं के मार्ग निर्देशन में चलता रहता है, इस संसार में, तो हम कहें कि जगत जानता है, सबकी बातें और जगदेवा को हम भगवान के रूप में मानते हैं, जो जगत का पालनहार है।वही भगवान है और इस जगत में भगवान के सिवा कोई सच्चा नहीं दिखता।पर सब अपने को सच्चा मान कर चलते हैं। लेकिन किनमें कितनी खामियां है, कितनी झूठ छुपी हुई है।यह तो लोग जानते समझते ही हैं लेकिन कर क्या सकते हैं, उपाय भी क्या है सबको पता है, सच्चाई की राह दुरुह होती है।

प्रभात वर्मा

कविता

पर्यावरण

जन जन में अब फैलाना है,
हम सब को ये जागरण।
धरती की हरियाली खो गयी
हम मानव के ही कारण ।
आओ, सब मिलकर करें इस
विषम समस्या का निवारण
ज्ञात है, पेड़ों पर ही आधारित
हम सबका जीवन मरण।
फिर भी क्यों काटते जा रहे
हम अपने प्राणाधार अरण्य।
बदलेगा नहीं जब तक इंसा
अपना कुत्सित ये कदाचरण।
फिर देगी कैसे भला धरित्रि
अपना स्नेहिल आवरण।
जीवन देते हैं ये वृक्ष हमें
पूजें सदा इनके चरण।
पेड़ लगाकर नये फिर से
हम करें शुद्ध वातावरण।
दृढ़-संकल्पों का आज हम
सब करें फिर
से पुण्य-स्मरण।
हमारे सतत प्रयास से ही बनेगा
सुरक्षित धरा का वातावरण ।

दस्तक प्रभात/वेदना

गौरैया जैसे पक्षियों को बचाने की संजय की अनुपम अनुठी मुहिम

मानव समाज में पक्षियों का हमेशा से एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वे हमें भोजन, औषधि, उर्वरक और मधुर गीत उपलब्ध कराते हैं। वे परागण की भी एक बड़ी वजह

हैं। इसके साथ साथ, मनोरंजन के विभिन्न स्रोतों के रूप में भी उनका उपयोग किया जाता है और वे हानिकारक फसल कीटों को नष्ट कर के, जैव नियंत्रण में भी हमारी सहायता करते हैं। ऐसे उपयोगी पक्षियों के सामने अब संकट आ गया है। कल तक हम पक्षियों के जितने करीब रहते थे उतने आज नही रह गए। हमने घर द्वार और बंगलों की ऐसी बनावट विकसित कर ली जिसमे हमने केवल अपने सुख सुविधाओं का ख्याल रखा लेकिन सदियों से साथ रहते आए पशु पक्षियों का ख्याल नहीं रखा। ऐसी हालत में पक्षियों, खासकर गौरैया के प्रेमी संजय कुमार की कहानी सराहनीय है और प्रेरक भी। प्रेरक इसलिए भी कि आज की दुनिया में लोग अपने व्यवसाय में व्यस्तता का बहाना बनाते हैं कि उनके पास वक्त नहीं है । संजय कुमार के ऊपर भी बहुत जिम्मेदारी है लेकिन इसके बावजूद पक्षियों के लिए समय निकालते हैं। उनके लिए दाना पानी का इंतजाम करते है और ऐसा करने के लिए औरों को भी प्रेरित करते है। संजय कुमार पत्रकार हैं लेखक हैं केंद्र सरकार के बड़े अधिकारी भी हैं लेकिन इन सबके होते हुए भी वे एक अनूठे पक्षी प्रेमी भी है। वे व्यस्ततम जीवन जीते हुए भी पक्षियों के लिए समय ऐसे निकालते हैं मानों वे उनके जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से हों। उनके बिना उनका जीवन ही अधूरा हो। मजे की बात यह है कि पक्षियों ने भी उनको ऐसे अपना लिया मानो वे सालों से उनके दोस्त हों। बिहार के भागलपुर में जन्में संजय कुमार भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं, पक्षी प्रेमी यों कहे गौरैया की जब चर्चा होती है तो इनका नाम जरूर सामने आता है। सालों से गौरैया संरक्षण मुहीम चला रहे हैं। पक्षियों ने इनके जीवन

को अभूतपूर्व विस्तार दे दिया है। वे अब पक्षियों की भाषा और उनके व्यवहार को भी समझने लगे हैं। एक कहावत है कि खग की भाषा खग ही जाने । लेकिन संजय कुमार बिना खग बने ही उनकी भाषा को भली भांति समझने लगे हैं। संजय कुमार की चौदह किताबें छप चुकी है लेकिन अकेले गौरैया संरक्षण पर ही अब तक इनकी तीन पुस्तकें- अभी मैं जिन्दा हूँ...गौरैया, ओ री गौरैया और आओ गौरैया प्रकाशित है। वे अच्छे फोटोग्राफर भी हैं। गौरैया की हजारों तस्वीरें भी ले चुके हैं। गौरैया और अन्य पक्षियों पर मीडिया में लिख कर संरक्षण का सन्देश भी देते रहते हैं। इसके लिए उन्हें बहुत सम्मान भी मिले है। संवेदनशील लोगों का भरपूर प्यार भी मिला है। पंद्रह साल पहले एक प्यासी गौरैया ने संजय कुमार की जिंदगी को ऐसा झकझोरा कि उसके बाद वे इनकी दुनिया में रमते चले गए। दुनिया भर में घर-आंगन में चहकने-फूदकने वाली गौरैया की आबादी में 60 से 80 फीसदी तक की कमी आई है। ब्रिटेन की ह्यरॉयल सोसायटी ऑफ प्रोटेक्शन ऑफ बर्डसह्न ने भारत से लेकर विश्व के विभिन्न हिस्सों में अनुसंधानकताओं द्वारा किए गए अध्ययनों के आधार पर गौरैया को ह्यरेड लिस्टह्न में डाला था। वहीं, आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक गौरैया की आबादी में करीब 60 फीसदी की कमी आई है। यह कमी ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में हुई है। पश्चिमी देशों में हुए अध्ययनों के अनुसार गौरैया की आबादी घटकर खतरनाक स्तर तक पहुंच गई है। लेकिन, स्टेट ऑफ इंडियनस बड्स 2020, रेंज, ट्रेंड्स और कंजर्वेशन स्टेट्स की रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 25 साल से गौरैया की संख्या भारत में स्थिर बनी हुई है। हालांकि देश के छह मेट्रो शहरों बेंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता और मुंबई में इनकी संख्या में कमी देखी गई है। संजय कुमार के मुताबिक गौरैया की संख्या में कमी के पीछे के कारणों में आहार की कमी, बढ़ता आवासीय संकट, कीटनाशक का व्यापक प्रयोग, जीवनशैली में बदलाव, प्रदूषण और मोबाइल फोन टावर से निकलने वाले रेडिएशन को दोषी बताया जाता रहा हैं, जो पूरी तरह से सत्य नहीं हैं। गौरैया अपने बच्चे को शुरूआत में कीड़ा खिलाती है यह कीड़ा उसे खेत-खलिहान-बाग-बगीचा और गाय के गोबर के पास से मिलता है। फसल और साग-सब्जी में बेतहाशा कीटनाशक के प्रयोग ने कीड़ों को मार डाला है। ऐसे में गौरैया अपने बच्चे को पालने के दौरान समुचित आहार यानि प्रोटीन नहीं दे पाती हैं और बच्चे कमजोर हो जाते हैं। गौरैया के प्रजनन के लिए अनुकूल आवास में कमी भी इसकी संख्या में कमी का एक कारण माना जा रहा है। आवासों का तेजी से कंक्रीट के जंगलों में तब्दील होने से तस्वीर बदल गयी है। शहरों में इनके प्रजनन के लिए अनुकूल आवास नहीं के बराबर है। गौरैया संरक्षण में जुड़े लोग कृत्रिम घर बना कर गौरैया को प्रजनन के लिए आवास देने की कोशिश कर रहे हैं। इसमें गौरैया अंडे देने के लिए आ भी रही है। कई गाँव में यह संकट ज्यादा नहीं है, फूस और मिट्टी के आवास अभी भी हैं। हाउस स्पैरो यानि घरेलू गौरैया इंसानों के घरों में या आस पास रहती है। अंडे देने के लिए घरों के अंदर जगह खोज लेती है लेकिन आधुनिक जीवन शैली के तहत घरों के पैक हो जाने से घर के अंदर प्रवेश नहीं कर पाती है और फिर अंडे देने के लिए इसे भटकना पड़ता है। ऐसे में हर कोई पहल करें और अपने आसपास रहने वाली गौरैया का ख्याल रखे तो इसे बचाया जा सकता है साथ ही दूसरी चिड़ियों को भी। क्योंकि कौआ और मैना भी गायब हो रहे हैं। संजय बताते हैं कि वे लगातार लोगों को जागरूक करने की कोशिश करते हैं। उन्हे गौरैया की ओर से याद दिलाते हैं कि, अभी मैं जिंदा हूँ ...मुझे बचा लो। रोज दाना झपानी रखे और आवासीय संकट से उबरने के लिए पेड़ और बॉक्स लगाएँ। इन बेजुबानों को बचाने के लिए जहां तक चैलेंज

का सवाल है तो इसमें सबसे महत्वपूर्ण यह है कि पहले मैं जब दाने को रेलिंग पर डाल देता था तो कबूतर आकर उसे पूरा चट कर जाता था और गौरैया ताकती रह जाती थी। बाद में मैंने कई दाना बॉक्स में दाना को रखने लगा, इससे दफा मेरे सामने गौरैया के बच्चे को हो पकड़ कर उसे मारकर खा जाते हैं। लेकिन इस इकोसिस्टम में हम कुछ भी नहीं कर सकते। हां, कोशिश रहती है कि उस पर नजर बनाए रखने की। इस तरह संजय कुमार ने पक्षियों की आबादी बढ़ने में खुद को झोंक दिया है। ना सिर्फ पक्षियों को दाना पानी देते हैं बल्कि किताबें/आलेख लिख लिख कर भी देश और दुनिया में पक्षियों को बचाने का संदेश फैला रहे हैं।तो वहीं हमारी गौरैया और

यह हुआ कि सब खा लेते हैं। सबसे बड़ा चैलेंज उस वक्त होता है जब गौरैया के बच्चे घोंसले से निकल कर खुले आसमान में आते हैं। छोटे-छोटे बच्चे जब दाना पानी के लिए आते हैं तब कौआ उन पर हमला करने की फिराक में रहता है। कई इन्वारमेंट वैरियर्स के साथ फोटो, घोंसला और गौरैया से जुडी छोटी बड़ी बातों की प्रदर्शनी लगा कर स्कूल-कॉलेज और आयोजनों में गौरैया संरक्षण पर चर्चा कर लोगों को जागरूक करते हैं।

दस्तक प्रभात/हेमलता म्हेस्के

कविता

संतप्त छांव

था तो भोग व अंतिम
यात्रा अरदास समारोह
दूर दराज से एक्सपर्ट
बुलाए गए
अवगत थे कॉस्टली
फिर भी किराए पर लाए गए
समसामयिक ज्वलंत प्रश्न
लेकिन अस्मिता का सवाल
कुछ भी कीमत
अदा करनी पड़े
पहेलियों से पर्दा हटाए गए
एक प्रश्न मस्तिष्क
में कौंधता है
अंतस को झकझोरता है
आखिर आम आदमी
कहां सिर टकराएगा
कैसे विषम
गुत्थी को सुलझाएगा
गजब की तीरंदाजी,
कुछ समझ नहीं आता है
किनारे लगना तो दूर की बात,
मझधार में उलझ जाएगा
चलते चलते थक गया हूं
दौड़ते दौड़ते रुक गया हूं
गजब की विस्मयता
प्रभु! बस, अब और नहीं
कीचड़ में धस गया हूं
जाने वाला तो चला गया
क्यों अनावश्यक जोड़ घटाव
कोई मूछों पर देता ताव,
कोई खा रहा है भाव
छिद्रित हो जाती है नाव
तनाव सिर्फ तनाव, संतप्त छांव

दस्तक प्रभात/दर्शन सिंह

लघुकथा

सच्ची खुशी

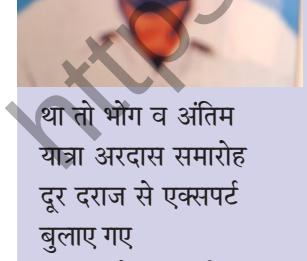

"मैम जी... यू तुम्हरे लिए है... अत्तू बनाई है..."

सुबह क्लासरूम में उपस्थिति पंजिका टेबल पर रखते समय ही मैंने वहां एक छोटा सा फूलों का गुलदस्ता देखा.. देखते ही समझ में आ गया था कि किसी बच्चे ने बनाया है.. अनायास ही होठों पर एक मुस्कान आ गई।

मैंने उसे उठाया ही था कि सामने बैठे बच्चों ने चिल्लाकर उसके सृजनकर्ता का नाम बता दिया..

"आस्था!!!" मैंने उस बच्ची को पुकारा तो वो शरमाते हुए अपनी जगह खड़ी हो गई।

" मैम जी.. तुम बिमार रही.. और आज तुमका देख के बहुतै नीक लग रहा.. एही खातिर हम बनावे रहे.. नीक है मैम जी??"

एक छह साल की बच्ची की इतनी आत्मीयता भरी बातें सुनकर आंखें अनायास ही नम हो उठीं... मैंने धीरे से बाहें फैलाकर उसे अपने अंक में समेट लिया..

अरसा बाद आज मेरे होठों पर सच्ची सी एक मुस्कान थी, और दिल में बेहद खुशी....

दस्तक प्रभात/प्रीती चौहान

पावन स्थल

महिमाशाली है सम्भल तीर्थ

भारतवर्ष में उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक तीर्थों का समृद्ध संसार कायम है। इन तीर्थ के बीच कल्कि तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध सम्भल का विशिष्ट महत्व पुरातन काल से आज तक बना हुआ है और यही 19 फरवरी 2024 को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली से 160 किलोमीटर दूरी पर अवस्थित कल्कि तीर्थ की आधारशिला यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी के द्वारा रखे जाने के कारण यहां की यशःकृति व प्रसिद्धि दूर देश तक बढ़ी है। जानकारी मिलती है कि पांच एकड़ क्षेत्र में बनने वाले कल्कि मंदिर का शिखर 108 फीट ऊंचा रहेगा। इसकी चौकी 11 फीट पर बनी होगी।सोमनाथ और अयोध्या के मंदिरों जैसा गुलाबी पत्थर कल्कि मंदिर में लगाया जाएगा। यहां उद्घाटन समारोह में सम्भल के ऐंचोड़ा कंबोह स्थान में मोदी जी के साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कल्कि धाम के पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम शहीद देश भर के संत महात्मा भी उपस्थित रहे।यह जानकारी की बात है कि कल्कि मंदिर निर्माण में 8 साल के संघर्ष ने 18 साल के संकल्प को पूरा कर दिया। यह मंदिर निर्माण के बाद न सिर्फ भारत का वरन संसार भर के ख्यात मंदिरों में एक होगा। ध्यान देने की बात है कि काशी विश्वनाथ, महाकाल लोक उज्जैन, सोमनाथ, श्री जगन्नाथ पुरी और अयोध्या जी के बाद प्रधानमंत्री की कृपा दृष्टि से कल्कि धाम विश्व स्तर पर चर्चित हुआ है। जहां तक सम्भल नाम का आशय है किसी को गिरने, फिसलने, लुढ़कने और नष्ट भ्रष्ट आदि होने से रोकने से है और सचमुच यह तीर्थ यही काम कर रहा है जो कलियुग के कुप्रभाव को निरंतर शमन दमन कर रहा है।इतिहास के पन्नों पर यह बात स्पष्ट रूप से जानकारी मिलती है कि भगवान विष्णु के दशावतारों में अंतिम अवतार कल्कि अवतार के रूप में सम्भल तीर्थ की चर्चा पुराणों में भी आई है और कल्कि महापुराण, स्कंद पुराण, भविष्य पुराण, श्रीमद् भागवत पुराण, विष्णु पुराण आदि भारतीय धर्म साहित्यों में यहां का स्पष्ट चित्रण मिलता है। महाभारत, वन पर्व के 160 में अध्याय में स्पष्ट अंकित है कि सम्भल ग्राम के विष्णु दत्त नामक ब्राह्मण के घर में श्री विष्णु का कल्कि अवतार होगा।गरुड़ पुराण पूर्वार्द्ध 81वां अध्याय स्पष्ट करता है कि सम्भल ग्राम भारत देश का एक उत्तम स्थान है। पुरातन विवरण के अनुसार सम्भल कस्बा मुरादाबाद से 23 मील दक्षिण पश्चिम और सोत नदी से चार मील पश्चिम में आबाद है। ऐसी एक और सम्भल तीर्थ की चर्चा की जाती है जो चीन देश के गोबी रेगिस्तान में ऋषियों का एक गुप्त नगर है तो भारतवर्ष में लब्धप्रतिष्ठित कल्कि मंदिर जयपुर में 18वीं शताब्दी में राजा जयसिंह द्वितीय द्वारा बनाया गया।यह मंदिर सिरेह देवरी बाजार में महल के द्वार के सामने विराजमान है।मंदिर के प्रांगण में ही सफेद संगमरमर का विशाल घोड़े की मूर्ति बनी हुई है तो ओडिशा के महानदी के किनारे विराजमान संबलपुर को भी इस रूप में इंगित किया जाता है लेकिन कल्कि तीर्थ के रूप में जिसका मान आदि-अनादि काल से बना हुआ है वही है सम्भल तीर्थ। विवरण है कि सनातन धर्म की पुनर्स्थापना के लिए श्री विष्णु नारायण का जहां कल्कि अवतार होगा वही सम्भल तीर्थ है जिसे प्राचीन काल में शंभल(शंबल) भी कहा गया है।ऐसे इस बात की जानकारी स्पष्ट रूप से मिलती है कि सत्ययुग में इस स्थल का नाम सत्यव्रत, त्रेता में महदगिरि, द्वापर में पिंगला और कलियुग में सम्भल है। विद्वान टॉलमी द्वारा उल्लेखित संबकल को सम्भल से समीकृत किया जाता है। यहां ऐसी पौराणिक मान्यता है कि कलियुग में कल्कि अवतार सम्भल नामक गांव में होगा। लोकमान्यता से शंभल को ही सम्भल माना जाता है।मध्यकाल में सम्भल की चर्चा खूबकर मिलती है पहले मुरादाबाद जिले में विराजमान और अब 23 जुलाई 2012 के बाद जिला के रूप में स्थापित और मुरादाबाद से 37 किलोमीटर दूरी पर सम्भल के बारे में वह पुरातन विवरण एकदम सत्य प्रतीत होता है जहां अंकित है- शिवलिंग कूप कदम न्यारे, दिशा दक्षिणी बहती गंगा! हर मंदिर प्यारे...यह निशानियां जो धर्मग्रंथो में बताई गई है वह सम्भल में ही दृष्टिगत होती है।पूर्व काल में यह क्षेत्र पांचाल राज्य में था बाद में राजपूत राजाओं के अधीनस्थ सम्भल का विकास रथ चलता रहा। मुगल काल में तो आगरा और नई दिल्ली जैसे बड़े नगरों से नजदीक रहने के कारण सम्भल का सामरिक महत्व भी बना रहा। सम्भल तीर्थ की चर्चा तब अधिक मिलती है जब यहां राजपूत राजाओं की राजधानी बनी और तब पृथ्वीराज चौहान के अधीनस्थ यह पूरा क्षेत्र विकास की राह पर आगे बढ़ता रहा।विवरण है कि राजा जयचंद्र की बेटी संयोगिता के अपहरण के बाद पृथ्वीराज ने उसे यहीं रखा था।यही कारण है कि जयचंद्र के नामी योद्धा आल्हा और ऊदल संयोगिता का पता लगाने यहां आए थे। बाबर के समय सम्भल की जागीर अफगान सरदारों के हाथ में थी बाद में बाबर ने हुमायूं को यहां की जागीरदार सौंपा। लेकिन हुमायूं की सेहत नासाज होने के कारण यहां अस्करी नामक शासन का शासन स्थापित हुआ।बाद में हुमायूं जब शेर- ए- बिहार शेरशाह के हाथों पराजित हो गया तब शेरशाह ने अपने दामाद मुबारिज खान को यहां का मालिकाना प्रदान किया। उस जमाने में भी सम्भल की सिद्धि-प्रसिद्ध कायम रही। 1575 ई. में स्थापित मुरादाबाद के कायस्थ रियासत कुंदरकी के तरफ से भी यहां कुछ निर्माण कार्य कराए जाने का विवरण मिलता है। प्राचीन सम्भल धाम में 68 तीर्थ और 19 कूप के साथ दर्जनों मंदिर विराजमान थे और आज भी इस तीर्थ में मंदिरों की कोई कमी नहीं है। यहां के सबसे प्राचीन मंदिरों में तीन प्रमुख हैं जिनमें पूर्व में चंद्रशेखर, उत्तर में भुवनेश्वर और दक्षिण में सम्भलेश्वर तीर्थ की गणना की जाती है। सम्भल तीर्थ में श्री कल्कि भगवान के अवतार की पौराणिक मान्यता है। इस मान्यता के अनुसार जहां भगवान अवतरित होते हैं वहां देवी देवता पहले से ही अपना वास और स्थान बना लेते हैं यही कारण है कि यहां कोटि-कोटि देवी देवताओं के स्थान विराजमान हैं। सम्भल तीर्थ के मंदिरों में मनोकामना मंदिर की प्रसिद्धि पूरे देश में है। ऐसे इसके साथ-साथ राम सती मंदिर, बालाजी मंदिर, हनुमान मंदिर, गोलेश्वर महादेव मंदिर, सीता राम बाबा मंदिर, चोट्टा शिव मंदिर, चामुंडा मंदिर, माता बगलामुखी मंदिर, सूरजकुंड मंदिर, रहट वाला मंदिर, पंजाबी मंदिर गोरजा माता मंदिर, गौरी सहाई मंदिर, महाकाली मंदिर, कुरुक्षेत्र मंदिर आदि का अपना विशिष्ट महत्व है।एक लंबी अवधि तक सम्भल में इस्लाम राजाओं का आधिपत्य कायम रहा यही कारण है कि यहां इस्लाम धर्म से जुड़े हुए स्थलों की भी कोई कमी नहीं है और स्टेशन के पास ही बाबर के जमाने का निर्मित खूबसूरत शाही जामा मस्जिद यहां देखा जा सकता है। इसके साथ ही साथ बाबा श्रीनाथ दरगाह, तोता मैना का कब्र, पृथ्वीराज चौहान के जमाने का चक्की का पाट, घंटाघर आदि पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं।सम्भल तीर्थ प्राचीनता और नवीनता का संगम लिए हुए हैं यही कारण है कि यहां कितने ही पुरातन तीर्थ आज भी दुरुस्त अवस्था में विराजमान हैं। विवरण मिलता है कि इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने भी सम्भल में कल्कि तीर्थ के नव श्रृंगार में अपना अहम योगदान दिया था। कुल मिलाकर यह कहना समीचीन जान पड़ता है कि भारतवर्ष के तीर्थ में कलियुग का महान देव स्थल कल्कि तीर्थ सम्भल के स्वर्णिम युग का आगमन हो गया है।यहां प्रत्येक वर्ष कार्तिक शुक्ल चतुर्थी और पंचमी को भक्तों के आगमन से यहां मेला लग जाता है। सचमुच कलियुग के महानतम तीर्थ के रूप में सम्भल तीर्थ का पुण्य प्रसून आधारशिला के बाद और भी बढ़ा है, इसमें कोई भी शक नहीं। भारतीय तीर्थ के अच्छे जानकार व ज्योतिष विद्वान पं.कामेश्वर मिश्र बताते हैं सनातन धर्मियों को सम्भल तीर्थ की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

दस्तक प्रभात
डॉ.राकेश कुमार सिन्हा'रवि'

https://t.me/AllNewsPaperPdf

सुभाषित
दुःख ऐसी वस्तु हैं जो ज्ञान और बल दोनोंका विनाशक होता है। दुःखसे बड़ा कोई शत्रु नहीं होता।
❑ महर्षि वाल्मिकी

गर्मीका संत्रास

इस समय दिल्लीसे लेकर उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थानसे लेकर हरियाणा और पंजाबमें भीषण गर्मीका प्रकोप अपने पूरे चरमपर है। आनेवाले दिनोंमें गर्मीका सितम और बढ़नेवाला है। मौसम विज्ञान विभागने अगले चार-पांच दिनोंतक राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और बिहारमें लू चलने और हीटवेवकी स्थिति शुरू होनेकी भविष्यवाणी की है। उत्तर-पश्चिम भारतके कई हिस्सोंमें तापमान ४५ डिग्री सेल्सियसके पार हो गया है। दिल्लीके नजफगढ़में अधिकतम तापमान ४७.४ डिग्री सेल्सियसतक पहुंच गया, जो इस मौसममें अबतक देशमें सबसे अधिक है। मौसम विज्ञान विभागकी माने तो उत्तर भारतीय राज्योंमें अगले कुछ दिनोंतक भीषण गर्मीसे राहत मिलनेवाली नहीं है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और राजस्थानके लिए आरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इसका मतलब है कि कमजोर स्वास्थ्यके लोगोंको विशेष रूपसे सावधान रहना होगा। जो लोग बदलते मौसमके साथ कमजोरी महसूस करते हैं या पहलेसे ही बीमार हैं, उनको गर्मीसे बचनेके लिए विशेष इन्तजाम करने होंगे। साथ ही जो लोग स्वस्थ हैं, उन्हें भी धूपसे बचनेके प्रबन्धके साथ ही घरसे निकलना चाहिए। एक बड़ी चिन्ताकी बात है कि मतदानके तीन प्रमुख चरण अभी बचे हैं। तापमानका असर चुनाव और मतदानपर भी पड़ेगा। मतदानके प्रतिशतमें गिरावट चर्चाका विषय बना हुआ है। चुनाव आयोगकी मतदान केन्द्रोंपर भी विशेष प्रबन्ध करना चाहिए ताकि दूरसे मतदानके लिए आया कोई व्यक्ति प्रतिकूल मौसमकी वजहसे बीमार या परेशान न हो। सेहतसे कमजोर लोगोंके लिए ज्यादा बेहतर यही है कि वह सुबहके समयमें ही मतदान कर लें। सुबह और शामके मतदानका समय बढ़ाया जाय तो मतदान प्रतिशत बढ़ानेमें मदद मिलेगी और लोग आसानीसे मतदान केन्द्रोंतक पहुंच सकेंगे। दक्षिण-पश्चिम मानसून अपनी सामान्य तिथि १९ मईको दक्षिण अंडमान सागरमें और एक जूनकी सामान्य तिथिसे एक दिन पहले ३१ मईको केरलमें प्रवेश करनेकी सम्भावना है। इसके बाद ही शेष भारतमें मानसूनकी प्रगति तय होगी। ऐसेमें लोगोंको भीषण गर्मीसे बचनेके लिए जहां जलका अधिक सेवन करना होगा, वहीं लोगोंको अपना पूरा शरीर ढककर ही निकलना होगा। सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओंको आगे आकर जगह-जगह प्याऊकी व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए।

आर्थिक मोरचेपर राहत

देशके आर्थिक मोरचेके सन्दर्भमें दो सुखद बातें सामने आयी हैं। एक ओर जहां संयुक्त राष्ट्रमें इस वर्षके लिए भारतकी विकास दरका अनुमान बढ़ाकर लगभग सात (६.९) प्रतिशत कर दिया है। वहीं दूसरी ओर चीनमें विदेशी निवेश घटनेका लाभ भारतको मिल रहा है। दोनों ही बातें देशकी मजबूत अर्थव्यवस्थाके बारेमें विश्वको अच्छा सन्देश दे रही है, जिसका लाभ विश्व समुदायको उठानेकी जरूरत है। संयुक्त राष्ट्रमें पहले २०२५ में ६.६ प्रतिशत विकास दरकी सम्भावना व्यक्त की थी। संयुक्त राष्ट्रने इस सन्दर्भमें मजबूत सार्वजनिक निवेश और निजी खपतमें वृद्धिका उल्लेख किया है। अनुमानोंके अनुसार कमजोर बाहरी मांगका निर्यात वृद्धिपर प्रभाव जारी रहेगा। औषधि और रसायनोंके निर्यातमें तेज वृद्धि सम्भव है। संयुक्त राष्ट्रके आर्थिक विश्लेषण और नीति प्रभावके निदेशक शान्तनु मुखर्जीने जो रिपोर्ट पेश की है, उसमें अनेक चेतावनियोंके साथ सम्भावनाओंकी भी चर्चा है। रिपोर्टमें भू-राजनीतिक तनावके साथ ही जलवायु जोखिमोंका भी उल्लेख किया गया है। वैसे संयुक्त राष्ट्रका यह भी मानना है कि विश्व अर्थव्यवस्थामें २०२४ में २.७ प्रतिशत वृद्धिका अनुमान है। २०२५ में २.८ प्रतिशततक वृद्धिका अनुमान व्यक्त किया गया है। जहांतक चीनकी आर्थिक स्थितिका प्रश्न है उसे संतोषजनक नहीं कहा जा सकता है, जिसके लिए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंगकी नीतियां जिम्मेदार हैं। इसके चलते चीनमें विदेशी निवेश कम हो रहा है और भारत पश्चिमी देशोंकी कई कम्पनियोंके सुरक्षित निवेश गंतव्य बन गया है। इसका फायदा सीधे भारतको मिल रहा है। भारत सरकारका दायित्व है कि वह इस अवसरका लाभ उठानेके लिए हरसम्भव प्रयास करे। साथ ही देशमें मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टरको पर्याप्त बढ़ावा देनेकी भी आवश्यकता है। इससे भारतको वैश्विक हिस्सेदारी बढ़ानेमें सहायता मिलेगी।

लोक संवाद

पत्रकारोंकी सुरक्षा

महोदय,-चुनावोंके दौरान पत्रकार अकसर रैलियों, अभियान कार्यक्रमों और विरोध प्रदर्शनोंको कवर करते हैं, जिससे उनपर शारीरिक हमले, उत्पीड़न और यहांतक कि हिरासतके जोखिम बढ़ जाते हैं। इसके अतिरिक्त, चुनावोंपर रिपोर्टिंग करनेवाले पत्रकारोंको डिजिटल लक्ष्यीकरण, ऑनलाइन दुर्व्यवहार और धमकीका सामना करना पड़ सकता है। जैसा कि भारतमें एक कड़ी प्रतिस्पर्धा वाली चुनावी प्रक्रिया चल रही है, एडिटर्स गिल्ड आफ इंडिया (ईजीआई) ने चुनावोंको कवर करनेवाले पत्रकारोंकी सुरक्षाके संबंधमें गम्भीर चिन्ताको उजागर करनेके लिए भारतके चुनाव आयोग (ईसीआई) से संपर्क किया। रिपोर्टें ऐसे उदाहरणोंका संकेत देती हैं, जहां पत्रकारोंको राजनीतिक अभियानों और रैलियोंके दौरान मौखिक उत्पीड़न, शारीरिक धमकी और कुछ मामलोंमें सीधे हमलेका सामना करना पड़ा है। उस भावनामें, ईजीआईने १३ मईको मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) को एक पत्र लिखा, जिसमें चुनावोंपर रिपोर्टिंग करनेवाले पत्रकारोंकी सुरक्षाके बारेमें आशंका व्यक्त की गयी। गिल्डने ईसीआईसे पत्रकारोंकी सुरक्षाकी गारंटीके लिए आवश्यक कदम उठानेका आग्रह किया। इस मुद्देके वैश्विक महत्वपर प्रकाश डालते हुए, पिछले साल संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संघटन (यूनेस्को) ने चुनावोंके दौरान पत्रकारोंके खिलाफ हमलोंमें खतरनाक वृद्धिका दस्तावेजीकरण करते हुए एक रिपोर्ट जारी की। जनवरी २०१९ और जून २०२२ के बीच, यूनेस्कोने ७० देशोंमें पत्रकारों और मीडिया कर्मियोंपर ७५९ हमले दर्ज किये। चौंकानेवाली बात यह है कि इनमेंसे ४२ प्रतिशत हमले कानून प्रवर्तन एजेंटों द्वारा किये गये, जिनमेंसे २९ प्रतिशतने स्पष्ट रूपसे महिला पत्रकारोंको निशाना बनाया। रिपोर्टमें इस तरहकी हिंसामें कानून प्रवर्तन एजेंसियों (एलईए) की भागीदारीपर जोर दिया गया है, जिसमें दुनियाभरके विभिन्न क्षेत्रोंमें विरोध प्रदर्शनोंको कवर करनेके दौरान पत्रकारोंको हिरासतमें लिये जानेकी घटनाओंपर भी गौर किया गया। यह सार्वजनिक प्रदर्शनोंको कवर करनेवाले मीडिया आऊटलैट्सके साथ सकारात्मक संबंधोंको बढ़ावा देने, पत्रकारोंको कार्यक्रमोंतक पहुंच प्रदान करने और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने, विशेष रूपसे महिला पत्रकारोंके सामने आनेवाले विशिष्ट जोखिमोंको संबोधित करनेके लिए एलईएकी आवश्यकताको रेखांकित करता है। -**हरिसिंह, वाया ईमेल।**

देशमें डिजिटलीकरणकी भूमिका

हालमें संयुक्त राष्ट्र महासभाके ७८वें सत्रके अध्यक्ष डेनिस फ्रांसिसने कहा कि भारतमें गरीबी घटानेमें डिजिटलीकरणकी अहम भूमिका है। पिछले दिनों भारतकी आधिकारिक यात्रापर रहे फ्रांसिसने कहा कि जबसे वे भारतसे लौटे हैं, उनके मनमें अतुल्य भारतकी डिजिटल उपलब्धि वैश्विक पटलपर रखना आवश्यक है।

❑ डा.जयंतीलाल भंडारी

भारतकी आधिकारिक यात्रापर रहे फ्रांसिसने भारतमें महसूस किया है कि सिर्फ एक हैंडसेट और डिजिटलीकरण माडलके उपयोगसे लाखों लोगोंको औपचारिक आर्थिक प्रणालीमें लानेके लिए भारतके डिजिटलीकरण कार्यक्रमकी अभूतपूर्व भूमिका है। उन्होंने कहा कि जहां डिजिटलीकरणसे भारतमें वित्तीय समावेशनमें मदद मिल रही है, वहीं डिजिटलीकरण लागतको कम करने, अर्थव्यवस्थाको अधिक कुशल बनाने और सेवाओंको सस्ता करनेमें भी प्रभावी योगदान दे रहा है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्थाको अधिक प्रतिस्पर्धी बनानेमें मदद मिल रही है। ये सब भारतसे ऐसे डिजिटल सबक हैं, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय समुदायके साथ साझा किया जा सकता है। गौरतलब है कि पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के द्वारा प्रकाशित रिपोर्टमें भी कहा गया है कि भारतमें गरीबी २०१५-१६ के मुकाबले २०१९-२०२१ के दौरान २५ फीसदीसे घटकर १५ फीसदी आ गयी है। इसमें डिजिटलीकरणकी भी अहम भूमिका है। इतना ही नहीं, विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) सहित दुनियाके विभिन्न सामाजिक सुरक्षाके वैश्विक संघटनोंके द्वारा भारतमें बहुआयामी गरीबी घटानेके मद्देनजर भारतमें लागू डिजिटल व्यवस्थाकी जोरदार सराहना की गयी है। आईएमएफके द्वारा प्रकाशित रिसर्च पेपरमें यह भी कहा गया है कि सरकारके प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) के तहत ८० करोड़से अधिक कमजोर वर्गके लोगोंको दिये जा रहे मुफ्त खाद्यान्नने गरीबोंपर मारको कम करनेमें अहम भूमिका निभायी है और इससे अत्यधिक गरीबीमें भी कमी आयी है। यह भी उल्लेखनीय है कि नीति आयोगकी तरफसे वैश्विक मान्यताके मापदंडोंपर आधारित जो बहुआयामी गरीबी इंडेक्स (एमपीआई) दस्तावेज जारी किया गया है, उसमें कहा गया है कि पिछले नौ वर्षोंमें भारतमें करीब २५ करोड़ लोग बहुआयामी गरीबीके दायरेसे बाहर आ गये हैं, लेकिन अब भी भारतमें करीब १५ करोड़ लोग बहुआयामी गरीबीका सामना कर रहे हैं। इस दस्तावेजके मुताबिक सरकारकी विभिन्न लोक-कल्याणकारी योजनाओं और देशमें आम आदमीतक पहुंची डिजिटल सुविधाओंने बहुआयामी गरीबी कम करनेमें प्रमुख भूमिका निभायी है। नि:संदेह गरीबीको घटाने और आम आदमीके लाभोंसे जुड़ा भारतका डिजिटल विकास वैश्विक मंचपर चमक रहा है। ५० करोड़से अधिक कमजोर वर्गके लोगोंको जनधन खातोंके माध्यमसे बैंकिंग प्रणालीसे जोड़ा गया है। डिजिटलीकरणने भारतकी अर्थव्यवस्थाको औपचारिक बनानेमें और आधारने लीकेजको कम करते हुए लाभार्थियोंको भुगतानके प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर-डीबीटी) में मदद की है। इन्फोसिसके सह संस्थापक और चेयरमैन नंदन नीलेकणीका भी कहना है कि भारतने अपने अनोखे डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और नयी डिजिटल पूंजीके सहारे पिछले दस सालमें वह कर दिखाया जो पारम्परिक तरीकेसे काम करनेमें पांच दशक लग जाते। भारतमें वर्ष २०१४ से लागू की गयी डीबीटी योजना एक वरदानकी तरह दिख रही है। भारतने पिछले एक दशकमें मजबूत डिजिटल ढांचेसे डिजिटलीकरणमें एक लंबा सफर तय कर लिया है, जिससे आम आदमी सहित पूरी अर्थव्यवस्था लाभान्वित हो रही है। यदि हम हालमें प्रकाशित कुछ अन्य प्रमुख वैश्विक आर्थिक रिपोर्टोंको देखें तो पाते हैं कि उनकी अध्ययन रिपोर्टोंमें दुनियामें तेजीसे बढ़ते हुए दिखाई दे रही भारतीय अर्थव्यवस्थामें डिजिटल अर्थव्यवस्थाको भारतकी नयी शक्ति बताया गया है। इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशंस (इक्रियर) और वैश्विक उपभोक्ता इंटरनेट समूह प्रोससकी रिपोर्टमें कहा गया है कि डिजिटल अर्थव्यवस्थाकी वैश्विक रैंकिंगमें अब भारत, अमेरिका और चीनके बाद दुनियाके तीसरे नंबरका सबसे बड़ा देश बन गया है। इक्रियरके द्वारा डिजिटल अर्थव्यवस्थापर हुई यह स्टडी कनेक्ट, हार्नेस, इनोवेट, प्रोटेक्ट और सस्टेन जैसे पांच महत्वपूर्ण पैरामीटर्सपर आधारित है। इन पैरामीटर्सपर भारतने ३९.१ स्कोर किया है, जबकि पहले क्रमपर स्थित अमेरिकाने ६५.१ और दूसरे क्रमपर स्थित चीनने ६२.३ स्कोर किया है। भारतके बाद ब्रिटेन चौथे और जर्मनी पांचवें क्रमपर है। इस रिपोर्टको जारी करते हुए नैसकॉमके अध्यक्ष देबजानी घोषने कहा कि दुनिया अब भी वास्तवमें नहीं समझ पायी है कि प्रौद्योगिकीने आम आदमीसे लेकर सभी वर्गोंके भारतीयोंके दैनिक जीवनमें खुदको कैसे शामिल कर लिया है, जो वास्तविक डिजिटल अर्थव्यवस्था है। एक उभरती अर्थव्यवस्थाके रूपमें भारतने डिजिटल युगमें छलांग लगा दी है। भारत दुनियाका दूसरा सबसे बड़ा इंटरनेट नेटवर्कवाला देश है। इसी प्रकार रिजर्व बैंक गवर्नर शक्तिकांत दासने कहा कि डिजिटल भुगतानमें भारत विश्व रैंकिंगमें शीर्षपर है। बीते वर्ष २०२३ में देशमें कुल डिजिटल भुगतान यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) की हिस्सेदारी बढ़कर ८० फीसदीके करीब पहुंच गयी है। यूपीआई लेन-देनकी संख्या महज छह सालमें २७३ गुना बढ़ी है। वर्ष २०१७ में ४३ करोड़ यूपीआई लेन-देन हुए थे, वर्ष २०२३ में इनकी संख्या बढ़कर ११७६१ करोड़ हो गयी। नि:संदेह भारतमें यूपीआईने भुगतान क्षेत्रमें क्रांति ला दी है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि भारतमें डिजिटल प्रौद्योगिकीको न केवल युवा अपना रहे हैं, बल्कि बुजुर्ग और गरीब वर्गके लोग भी इसमें पीछे नहीं हैं। जी-२० की अध्यक्षताके दौरान, भारतको सार्वजनिक सेवाओंकी बड़े पैमानेपर डिलीवरीके लिए डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचेका उपयोग करनेके चैंपियनके रूपमें मान्यता दी गयी थी। छोटे उद्योग-कारोबारके लिए सरल ऋण और रोजगार सृजन आम आदमी के बीमा और अन्य जन-कल्याण योजनाओंके लिए डिजिटल ढांचेका सफल उपयोग किया जा रहा है। इससे समाजके करोड़ों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। हम उम्मीद करें कि सरकार अब भी देशमें गरीब वर्गके १५ करोड़से अधिक लोगोंको बहुआयामी गरीबीसे बाहर लानेके लिए गरीबोंतक डिजिटलीकरणकी सरल पहुंच सुनिश्चित करेगी। डिजिटल आधारित भारतकी नयी दुनियामें सौ फीसदी विश्वसनीयता बनाये रखने हेतु रणनीतिक प्रयत्न सुनिश्चित किये जायंगे। साथ ही भारतके आम आदमीकी डिजिटल सहभागिता बढ़ानेके लिए गांवों एवं पिछड़े क्षेत्रोंतक डिजिटल साक्षरता, सरल डिजिटल कौशल प्रशिक्षण, सस्ते स्मार्टफोन, इंटरनेटकी निर्बाध कनेक्टिविटी और बिजलीकी सरल आपूर्ति जैसी जरूरी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जायंगी। इससे भारत वर्ष २०२७ तक आम आदमीकी मुस्कुराहट बढ़ाते हुए दुनियाकी तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था तथा वर्ष २०४७ तक विकसित अर्थव्यवस्था बननेकी डगरपर तेजीसे आगे बढ़ते हुए दिखाई दे सकेगा।

भारतने पिछले एक दशकमें मजबूत डिजिटल ढांचेसे डिजिटलीकरणमें लंबा सफर तय कर लिया है, जिससे अर्थव्यवस्था लाभान्वित हो रही है। हालमें प्रकाशित कुछ अन्य प्रमुख वैश्विक आर्थिक अध्ययनमें बताया गया है कि डिजिटल अर्थव्यवस्थाको भारतकी नयी शक्ति बताया गया है। इंडियन काउंसिल फार रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशंस और वैश्विक उपभोक्ता इंटरनेट समूह प्रोससकी रिपोर्टमें कहा गया है कि डिजिटल अर्थव्यवस्थाकी वैश्विक रैंकिंगमें अब भारत अमेरिका और चीनके बाद दुनियाके तीसरे नंबरका सबसे बड़ा देश बन गया है।

संविधानपर हास्यास्पद बयानबाजी

क्या कोई सरकार संविधान समाप्त कर सकती है? बिना संविधानके संस्थाओं, न्यायपालिका, विधायिका, कार्यपालिकाका संचालन हो सकता है? क्या संविधानके आधारिक लक्षणों-बेसिक फीचर्सका संशोधन या निरसन कर सकती है?

❑ हृदयनारायण दीक्षित

गांव गलीमें शोर है-कौवा कान ले गया। किसीने नहीं देखा। इसने उससे कहा। उसने अगलेसे कहा कि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी चुनावमें भारी बहुमत पाकर संविधान बदल देंगे। मूलभूत प्रश्न है कि क्या कोई सरकार संविधानके आधारिक लक्षणों-बेसिक फीचर्सका संशोधन या निरसन कर सकती है। तमाम प्रश्नोंका उत्तर है-नहीं। कौवा कान ले गया लेकिन कान अपनी जगह ही है। कौवा कांव-कांव कर रहा है। झूठमूठ। बचपनमें कथा सुनी थी। एक बारातके सारे लोग भाग रहे थे। एकने दूसरेसे पूछा, आप क्यों भाग रहे हैं। दूसरेने कहा, आप भी भाग रहे हैं। अगलेने कहा, मुझे क्या पता। सब भाग रहे हैं। सो हम भी भाग रहे हैं। बहुत खोज करनेपर पता चला कि एक व्यक्तिकी मोटरसाइकिलकी चाभी खो गयी थी। वह तेज रफ्तार दौड़कर चाभी खोजने गया था। बाकी लोग देखादेखी अकारण भाग रहे थे। संविधान खात्मेकी बहस व्यर्थ है। संविधान साधारण अभिलेख नहीं है। यह राष्ट्रका राजधर्म है। आवश्यकतानुसार संविधानमें संशोधन होते रहते हैं। लगभग १०५ संशोधन हो चुके हैं। संविधानमें ही संविधान संशोधनके प्रावधान हैं। संविधान बदलने और संशोधन करनेमें मूलभूत अंतर है। संविधान संशोधन विषयक प्रावधान (अनुच्छेद ३६८-मसौदा संविधान अनुच्छेद ३०४) पर संविधान सभामें बहस चली थी। एच. वी. कामथने कहा था, संशोधन आखिरकार क्या है। संशोधनका अर्थ हो सकता है संविधानमें कुछ परिवर्तन। उसमें कुछ जोड़ना या उसका निरसन। लेकिन चुनावमें संविधान संशोधनको लेकर कोई बहस नहीं है।

संविधान खत्म करनेकी बयानबाजी हास्यास्पद है। संविधान सभामें पी. एस. देशमुखने कहा था कि भविष्यमें कुछ समयतक संविधानमें तमाम परिवर्तन करने आवश्यक होंगे। इसलिए संविधान संशोधन आसान बनाना जरूरी है। सभामें अनेक सदस्योंने विचार व्यक्त किये। डा. आम्बेडकरने कहा कि आयरिश संविधानमें, दोनों सदन सामान्य बहुमतसे संविधानके किसी भागको संशोधित कर सकते हैं। शर्त है कि सदनोंके विनिश्चयको जनताका बहुमत अनुमोदित करे। स्विस संविधानमें भी विधानमण्डल संशोधन विधेयक पारित कर सकता है। लेकिन जनताके अनुसमर्थनकी आवश्यकता है। उन्होंने अनेक उदाहरण दिये। भारतमें संशोधनकी शक्ति विधायिकामें निहित है। उन्होंने सभामें विचाराधीन विधेयकका विवेचन किया कि हम संविधान संशोधनको तीन श्रेणियांमें बांटते हैं। एक श्रेणीमें संसदका साधारण बहुमत पर्याप्त है। दूसरी श्रेणीके संशोधनमें दो-तिहाई बहुमत आवश्यक है। तीसरी श्रेणीमें देशकी आधेसे अधिक विधानसभाओंका समर्थन आवश्यक है। यहां संशोधनकी पूरी प्रक्रिया औचित्यपूर्ण है। संविधान सभामें संशोधन प्रक्रियाको सरल बनानेकी मांग थी कि आमजन राजनीतिक प्रणालीको बदलनेकी मांग कर सकते हैं। जन असंतोष प्रकट करनेका कोई मार्ग भी होना चाहिए। डाक्टर आम्बेडकरने कहा, जो संविधानसे असंतुष्ट हैं उन्हें दो-तिहाई बहुमत प्राप्त करना होगा। यदि वह व्यस्क मतके आधारपर निर्वाचित संसदमें दो-तिहाई बहुमत भी नहीं पा सकते तो यह मान लेना चाहिए कि संविधानके प्रति असंतोषमें जनता उनके साथ नहीं है। सर्वोच्च न्यायालयने स्थापना दी थी कि हमारे संविधानका कोई भाग ऐसा नहीं है जिसका संशोधन नहीं हो सकता। गोलकनाथके चर्चित मुकदमेमें ११ जजोंकी विशेष न्यायपीठने छह न्यायाधीशोंके बहुमतसे पूर्व विनिश्चयको उलट दिया था और कहा था कि यद्यपि अनुच्छेद ३६८ में कोई अलग अपवाद नहीं है। लेकिन मूल अधिकारोंकी प्रवृत्ति ही ऐसी है कि वह अनुच्छेद ३६८ में संशोधन प्रक्रियाके अधीन नहीं हो सकते। यदि ऐसे किसी अधिकारका संशोधन करना है तो नयी संविधान सभा बुलानी पड़ेगी। फिर केशवानंद वादका चर्चित फैसला आया। गोलकनाथके वाद के समयसे ही प्रश्न उठाया जा रहा था कि क्या मौलिक अधिकारोंके बाहर भी संविधानका कोई उपबंध है जो संशोधनकी प्रक्रियासे मुक्त है। केशवानंदके मुकदमेमें बहुमतने गोलकनाथके मतको उलट दिया कि अनुच्छेद ३६८ के अधीन मूल अधिकारोंका संशोधन नहीं हो सकता। एक अन्य बड़ी बात भी न्यायालयने कही है कि संविधानके कुछ आधारिक लक्षण हैं जिनका संशोधन नहीं किया जा सकता। यदि संविधान संशोधन अधिनियम संविधानकी आधारिक संरचनामें परिवर्तनके लिए है तो न्यायालय उसे शक्तिवाह्यके आधारपर शून्य घोषित करनेका अधिकारी होगा। न्यायालयने भारतकी सम्प्रभुता, अखण्डता, परिसंघीय प्रणाली, न्यायिक पुर्नविलोकन, संसदीय प्रणाली आदि अनेक विषयोंको संविधानके आधारिक लक्षण बताये।

दरअसल चुनावके मूलभूत मुद्दोंसे ध्यान हटानेके लिए इंडिया गठबंधन संविधान खत्म करनेकी निराधार कल्पना दोहरा रहा है। संविधानमें आपातकालके लिए देशकी आन्तरिक अशांतिको आधार बताया गया है। तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ही आतंरिक अशांतिसे पीड़ित थीं। देशमें शांति थी। लोकतांत्रिक आन्दोलन बेशक थे। उन्होंने आपातकालीन प्रावधान (अनुच्छेद ३५२) का दुरुपयोग किया। इंडिया गठबंधनको आपातकाल १९७५-७७ के समय पारित ४२वें संविधान संशोधन अधिनियम १९७६ का अध्ययन करना चाहिए। ४२वें संशोधनके माध्यमसे संविधानके ५३ अनुच्छेद एक साथ बदले गये। सातवीं अनुसूचीमें भी परिवर्तन किये गये। महत्वपूर्ण सिद्धान्तोंको बदल दिया गया। संविधानके किसी उपबंधका उल्लंघन करनेके आधारपर उसकी संवैधानिकताको चुनौती देनेके लिए संघ और राज्योंके कानूनमें भेद किया गया। यह उपबंध किया गया कि कोई उच्च न्यायालय किसी केन्द्रीय विधि या जिसमें ऐसी विधिके अंतर्गत अधीनस्थ विधान भी सम्मिलित हैं, संविधान विरुद्ध होनेके आधारपर अविधि मान्य नहीं कर सकेगा। ४२वां संशोधन न्यायपालिकाकी शक्तिको घटाने वाला था और मौलिक अधिकारोंकी भी। सर्वोच्च न्यायालय अपनी अधिकारिता (अनुच्छेद ३२) में किसी राज्य विधिको असंवैधानिक घोषित नहीं करेगा। संविधान संशोधन अधिनियमोंके न्यायिक पुर्नविलोकनके अधिकारका भी संशोधन हुआ। उपबंध किया गया कि जिस विधिको संविधान संशोधन विधि बताया जायगा, उसे न्यायालयमें चुनौती नहीं दी जा सकती। नीति निदेशक तत्व (अनुच्छेद ३७) किसी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय नहीं है। लेकिन उपबंध किया गया कि किसी निदेशक तत्वको क्रियान्वित करनेवाली विधिको मूल अधिकारोंके उल्लंघनके आधारपर न्यायिक पुनर्विलोकनसे मुक्त रखा जायगा। यह मूल संविधानके ठीक उल्टा है। संविधानको तहस नहस करनेका यह प्रयास निन्दनीय है। श्रीमती इंदिरा गांधीके नेतृत्व वाली सरकारने संविधान और उसकी आत्माको ही कुचल दिया था। १९७७ के आम चुनावमें जनता पार्टीकी सरकार आयी। नयी सरकारने ४३वें संविधान संशोधन अधिनियमके माध्यमसे न्यायिक पुर्नविलोकनके न्यायपालिकाके अधिकारकी बहाली की। सभी जनविरोधी प्रावधानोंको निरस्त कर दिया गया। भारतीय संविधानके इतिहासमें संविधानके साथ छेड़खानीका निन्दनीय कृत्य दूसरा नहीं मिलता। संविधानके प्रति भारतीय जन-गण-मनकी निष्ठा है। संविधान बदलने या पूरा संविधान ही खारिज करने और तानाशाही लाने जैसे आरोप हास्यास्पद हैं। वे संविधान बदलने या हटानेकी बात उठाकर आपातकालकी संवैधानिक त्रासदी याद दिला रहे हैं। इस दृष्टिसे उनका यह कृत्य उपयोगी है। आपातकाल संवैधानिक त्रासदी है। आपातकालकी तानाशाही अत्याचार और संविधानको तहस-नहस करनेके कृत्योंका पाठ और पुर्नपाठ जरूरी है।

ज्ञानकी प्राप्ति

❑ श्रीराम शर्मा

वर्षोंकी प्रचंड तपसाधनाके पश्चात अंतत: गौतमको बोध प्राप्त हुआ और वह गौतमसे महात्मा बुद्ध बन गये। उनके ज्ञानसे कोटिश: लोगोंको नवजीवन मिला और असंख्य लोगोंके जीवनमें नयी दृष्टिका सृजन हुआ। वे जगह-जगह जाते और अपने अमृत ज्ञानसे लोगोंको आह्लादित और आनन्दित करते। देखते ही देखते उनका यश, उनकी कीर्ति दूर-दूरतक फैलने लगी और उनके शिष्यों एवं अनुयायियोंकी संख्या भी बढ़ती गयी। गौतम बुद्धके कई शिष्य बने, आनन्द उन्हींमेंसे एक थे। वे सब कुछ त्याग कर ज्ञानप्राप्तिकी आशामें तथागतकी शरणमें आये थे। वे तथागतसे ज्ञान पाने हेतु हमेशा आतुर रहते थे। वे तथागतसे हमेशा यही प्रश्न किया करते थे कि भगवन! मुझे ज्ञानकी प्राप्ति कब होगी। मुझे बोध कब होगा। मैं अपने जीवन लक्ष्यको कब और कैसे प्राप्त कर सकूंगा। भगवन! मेरा मन बहुत अधीर हुआ जा रहा है। प्रश्नोंको सुनकर तथागत हमेशा यही उत्तर देते थे कि उचित समय आनेपर सब कुछ होगा और मैं तुम्हारे प्रश्नोंका सही उत्तर भी दूंगा। संयोगवश एक दिन तथागत और आनन्द भ्रमण करते हुए कहीं चले जा रहे थे और अचानक वे दोनों एक झरनेके पास पहुंचे। उसी समय कुछ पशु उस झरनेमें नहाकर बाहर निकल रहे थे। वे दोनों वहांसे कुछ दूर आगे निकल आये और एक पेड़की छायामें बैठ गये। तथागत कुछ देर मौन रहे और फिर बोले, वत्स आनन्द पीछे वाले झरनेसे जहांसे हम अभी होकर आये हैं, वहांसे जरा पानी ले आओ। मुझे जोरकी प्यास लगी है। आनन्द कमंडल लेकर झरनेकी ओर गये और देखा कि झरनेका पानी तो गंदा आ रहा है। मन ही मन वे सोचने लगे, मैं अपने गुरुदेवको यह पानी कैसे पिला सकता हूं। फिर मैं क्या करूं। आनन्द वापस आये और बोले, भगवन! झरनेका पानी तो गंदा आ रहा है आप आज्ञा दे तो मैं कुछ दूर जाकर नदीसे पानी ले आऊं। तथागत बोले, नहीं तुम झरनेका पानी ही ले आओ, अब पानी साफ हो गया होगा। आनन्द फिर झरनेके पास गये परन्तु इस बार पानी साफ तो नहीं, लेकिन पहलेसे कम गंदा था। आनन्द इस बार भी बिना पानी लिये ही तथागतके पास आये और बोले, इस बार पानी थोड़ा साफ है फिर भी पीने लायक नहीं है। तथागतने कहा, तुम थक गये होंगे थोड़ा आराम कर लो, तबतक झरनेका पानी साफ हो जायगा और पीने लायक हो जायगा। आनन्द मन ही मन दुखी थे कि गुरुवर प्यासे हैं और नदीसे पानी क्यों नहीं लाने दे रहे। फिर थोड़ी देर बाद वह पुन: पानी लेने गये तो इस बार पानी साफ था और आनन्द जल ले आये और तथागतसे पूछा इस बार पानी साफ कैसे हो गया। तथागतने उत्तर दिया, कुछ देर पहले जानवरोंने पानीमें हलचल मचाई और नीचेकी धूल-मिट्टी ऊपर आ गयी और पानीमें मिल गयी। धीरे-धीरे मिट्टी नीचे सतहमें जम गयी और पानी साफ हो गया। यही तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर है।

उत्तर प्रदेशमें मोदी और योगीकी लक्ष्यपर पैनी नजर

❑ आर.के.सिन्हा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीने विगत मंगलवारको पवित्र वाराणसीमें लोकसभा चुनाव लड़नेके लिए अपना पर्चा भरनेसे एक दिन पहले जब काशीमें रोड शो निकाला तो उनकी सायेकी तरह साथ रहनेवाले उत्तर प्रदेश (यूपी)के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ भी थे। रोड शोके सारे मार्गमें काशीकी जनताने मोदी-योगीका जिस उत्साहसे अभूतपूर्व स्वागत किया उसने स्वत: कई ठोस संकेत दे दिये। वैसे भी लोकसभा चुनावके समरमें सारे देशकी निगाहें उत्तर प्रदेशपर लगी हुई हैं। सब जाननेको उत्सुक हैं कि यूपी किस पार्टीकी झोलीको आगामी ४ जूनको भरकर दिल्लीकी सत्ताकी चाबी सौंपेगा। सियासी गलियारेमें वैसे भी यह कहावत पुरानी है कि दिल्लीके सिंहासनका रास्ता यूपीसे होकर गुजरता है। यानी जिस पार्टीके पास यूपीमें सबसे अधिक सीटें होंगी, प्रधान मंत्रीकी कुर्सीतक पहुंचनेका उसका रास्ता उतना ही आसान होगा। यही वजह है कि यूपीकी ८० सीटोंपर जीत हासिल करनेके लिए राजनीतिक दल २०२४ लोकसभा चुनावोंमें कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहे। अलबत्ता सियासी पैंतरेबाजीसे उलट राजनीतिक विश्लेषक यही मान रहे हैं कि इस बार यूपीमें लोकसभा चुनावके परिणाम अप्रत्याशित नहीं होंगे। भाजपा २०१९ लोकसभा चुनावोंका प्रदर्शन बखूबी दोहरायगी। मोदी और योगीकी जोड़ी एक बार फिर करिश्माई प्रदर्शन करेगी। दरअसल मोदी-योगीकी जोड़ी जीतकी गारंटी बन चुकी है, जिसके आगे विपक्षी तेवर भी ढीले नजर आते हैं। विपक्षके पास इस जोड़ीकी कोई काट नहीं। भाजपा यदि यूपीमें लोकसभाकी सभी ८० सीटोंपर जीतके लक्ष्यके साथ चुनावी मैदानमें ताल ठोंक रही है तो उसके पीछे भी इसी जोड़ीका भरोसा है। प्रधान मंत्री कई बार सार्वजनिक मंचोंसे योगीके विकास मॉडलकी तारीफ कर चुके हैं। प्रधान मंत्री इसी मॉडलके जरिये यूपीकी सभी सीटोंपर जीतका दावा भी कर रहे हैं। जैसा कि अमरोहाकी अपनी चुनावी जनसभामें प्रधान मंत्रीने कहा भी कि लिखकर ले लीजिए। सात सालसे यूपीमें योगी की सरकार है। २०१९ लोकसभा चुनावके समय उन्हें दो ही साल काम करनेका मौका मिला था। अब तो सात साल हो गये हैं। योगीने दिखा दिया है कि गवर्नेंस क्या होता है। कानून व्यवस्था क्या होती है। विकास क्या होता है और इसलिए योगीके नेतृत्वमें इस बार रिकॉर्ड टूटेगा। इस बार २०१४ और २०१९ का रिकॉर्ड टूटेगा और यूपी इतिहास रचेगा। यूपीके चुनावी सफरमें २०१४ का लोकसभा चुनाव मीलका पत्थर साबित हुआ। इसी साल यूपीमें भाजपाका सियासी वनवास पूरा हुआ। उस समय भाजपाके सामने कोई गठबंधन नहीं था। भाजपाने करीब ४३ फीसदी वोट हासिल करते हुए ८० मेंसे ७१ सीटोंपर जीत दर्ज की थी। समाजवादी पार्टीने पांच सीटें जीती, जबकि कांग्रेस मात्र दो सीटोंपर ही सिमटकर रह गयी थी। बसपाका तो खाता भी नहीं खुला था। २०१९ लोकसभा चुनावमें मोदी लहर और योगीके कार्योंके दमपर बीजेपीने चुनावी दंगलमें पुन: ताल ठोंकी। मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ दो सालका कार्यकाल पूरा कर चुके थे। नरेन्द्र मोदीको रोकनेके लिए समाजवादी पार्टी और बसपा साथ आये। रालोदने भी साथ दिया। हालांकि चुनाव परिणाम पुन: भाजपाके पक्षमें ही रहा। भाजपाने करीब ५० फीसदी वोट शेयरके साथ ६१ सीट जीती। बसपा दस सीट, सपा पांच सीट और कांग्रेसके खातेमें महज एक सीट आयी। योगीने २०१९ के बाद एक मजबूत और कड़े फैसले लेनेवाले मुख्य मंत्रीकी छवि बनायी और जिसकी परिणिति उत्तर प्रदेशमें बुलडोजरके रूपमें सामने आयी। जो कहीं न कहीं २०२२ विधानसभा चुनावमें भाजपाका चुनावी सिंबल-सा बन गया। मुख्य मंत्रीने राज्यमें कानून व्यवस्थाके मोर्चेपर अपने प्रदर्शनके चलते चुनावको आभासी जनमत संग्रह बना दिया था। भाजपाने चुनावोंमें ऐतिहासिक वापसी की और तीन दशकोंसे चल रहा समाजवादी पार्टीकी साइकिलका पहिया पूरी तरह रुक गया। यूपीमें भाजपाका वोट प्रतिशत भी २०१४ के बादसे लगातार ४० फीसदीके ऊपर ही बना हुआ है। विगत दो लोकसभा चुनावोंके मुकाबले २०२४ चुनावमें स्थिति बिल्कुल अलग है। सपाने इस बार कांग्रेससे हाथ मिला लिया है जबकि बसपा अकेले ताल ठोंक रही है। रालोद भी इस बार भाजपाके साथ है। एनडीएने जातीय समीकरण बैठानेके लिए अपना दल (एस), निषाद पार्टी और सुभासपा जैसे क्षेत्रीय दलोंके साथ भी गठबंधन किया है। भाजपा इस लोकसभा चुनावमें यूपीमें बेहतर स्थितिमें है तो इसमें केंद्रकी मोदी सरकारकी उपलब्धियोंके साथ योगी माडलका अहम योगदान है। केन्द्रमें जिस तरह प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदीने योजनाओंको जमीनी स्तरपर उतारा। जिस तरह गरीब, युवा, महिला और किसानोंके जीवनमें खुशहाली लेकर आये उसी तरह योगीने यूपीमें सुशासनका राज कायम काम किया। योगीके सुशासनको यदि आंकड़ोंके पैरामीटरपर देखें तो यह जानकर संतुष्टि होती है कि सात सालके कार्यकालमें एक भी दंगे नहीं हुए, जबकि पहलेके मुख्य मंत्रियोंके समय औसतन हर तीसरे-चौथे दिन एक दंगा होता था। यह किसीसे छिपा नहीं है कि पहले पेशेवर माफिया और अपराधी सत्ताके संरक्षणमें दहशत फैलाते थे। योगी राजमें माफियाओंपर लगाम लगी। यूपीमें जनता अब भयमुक्त है, अपराधियोंके मनमें कानूनका खौफ है। पुलिस अपराधियों, माफियों और दंगाइयोंपर कहर बनकर टूटी है। उत्तर प्रदेश अपराधमुक्त, भयमुक्त एवं दंगामुक्त हुआ है। प्रदेशमें पुलिसके डरसे बड़े-बड़े अपराधी और माफिया प्रदेश छोड़कर या तो भाग गये या उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिये हैं। यूपीमें विकास योजनाओंको अमलीजामा पहनानेमें केन्द्र सरकारने भी भरपूर साथ दिया। यही वजह है कि केन्द्रकी योजनाओं यूपीमें खूब फलीभूत हुई। जिस कारण यूपीकी अर्थव्यवस्थामें गुणात्मक सुधार हुए। वर्ष २०१६-१७ के मुकाबले राज्यका सकल घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) दोगुनी होकर २५ लाख करोड़तक पहुंच गया। राज्य सरकारने २०२७ तक प्रदेशकी अर्थव्यवस्थाको वन ट्रिलियन डालरकी अर्थव्यवस्था बनानेका लक्ष्य रखा है। प्रदेशका बजट २०१६-१७ में जहां ३.४६ लाख करोड़ रुपयेका था वहीं २०२४-२५ में यह दोगुनेसे भी अधिक ७.३६ लाख करोड़ रुपयेका हो गया। विकासके इन्हीं आंकड़ोंकी बदौलत भाजपा यूपीमें मिशन ८० का लक्ष्य हासिल करनेका दावा कर रही है। लोकसभा चुनावोंमें कौन बाजी मारेगा यह तो भविष्यके गर्भमें छिपा है, लेकिनय इतना तो तय है कि मोदी-योगीकी जोड़ीपर यूपीकी जनताका विश्वास बना हुआ दिख रहा है।

सम्पादकीय

यूथ को ये समझाने में सफल रही कांग्रेस अग्निवीर उनके हितों पर कुठाराघात

कांग्रेस के नेता राहुल गांधी फौज में लागू की गई अग्निवीर योजना पर शुरू से ही हमलावर रहे हैं। वे अपने चुनावी भाषणों में कहते भी आ रहे हैं कि 'केंद्र में सरकार बनते ही अग्निवीर योजना को कूड़ेदान में डाल देंगे। एक जवान को शहीद का दर्जा, पेंशन और दूसरे को नहीं, ऐसी योजना नहीं चाहिए। वे इस योजना को खत्म करने का वादा कर रहे हैं। कांग्रेस ने अपने मैनिफेस्टो में भी वादा किया है कि अग्निवीर योजना खत्म कर सेनाओं में पुराने तरीके से भर्तियां की जाएंगी। लोकसभा चुनाव में अग्निवीर का मुद्दा भले ज्यादा चर्चा में न हो, लेकिन सेना में भर्ती की आस लगाए बैठे युवाओं के लिए ये अब भी बड़ा मसला है। कांग्रेस इस लोकसभा चुनाव में यूथ को कम से कम अग्निवीर योजना के खिलाफ खड़ा करने में तो सफल हो गई। उसने युवाओं को ये समझाने में सफलता पा ली है कि अग्निवीर योजना उनके हितों पर कुठाराघात है। अब देखना ये है कि यूथ का वोट किस तरफ जाता है। कोविड की वजह से 2020 से आर्मी और एयरफोर्स की भर्ती के रिजल्ट पेंडिंग थे। 14 जून, 2022 को केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अग्निपथ योजना का ऐलान किया। इसके तहत भर्ती होने वाले फौजियों को अग्निवीर कहा गया। योजना आने के बाद सेना में भर्ती की पेंडिंग कई भर्तियां रद्द कर दी गईं। देशभर में योजना के विरोध में प्रदर्शन भी हुए। हरियाणा के सांपला में अब भी प्रदर्शन चल ही रहा हैं। इनमें बिहार से आए लोग भी शामिल हैं। हरियाणा के भिवानी में रहने वाले रमन बताते हैं, बचपन से ही परिवार के लोगों को वर्दी में देखा था। मेरा भी सपना था कि वर्दी पहनूंगा, परिवार की विरासत आगे बढ़ाऊंगा। ये सपना पूरा नहीं हो पाया। '2019 में मैंने एयरफोर्स का एग्जाम पास किया था। 2020 की शुरुआत में एग्जाम होना था, लेकिन कोरोना की वजह से लेट हो गया। फिर जनवरी, 2021 की तारीख मिली। इसके बाद मेरा ग्रुप डिस्कशन और साइकोलॉजी टेस्ट हुआ। मैंने सभी टेस्ट पास कर लिए। इसके एक महीने बाद फरवरी में मेडिकल क्लियर किया और मार्च में रिजल्ट भी आ गया।' रमन का सवाल है कि उनकी भर्ती क्यों रोकी गई। वे कहते हैं कि अगर अग्निवीर के तहत नई भर्ती करनी ही थी, तो पहले पुरानी भर्तियां क्लियर करनी चाहिए थीं। हरियाणा के सांपला में अग्निवीर के विरोध में 100 से ज्यादा युवा प्रदर्शन कर रहे हैं। पहले ये दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करना चाहते थे, लेकिन इजाजत नहीं मिली। लिहाजा अब हरियाणा में प्रदर्शन कर रहे हैं। हरियाणा के भांडवा के रहने वाले सुरेश बेटों के लिए धरना दे रहे हैं। दोनों बेटों ने सेना भर्ती एग्जाम तो पास कर लिया, लेकिन भर्ती नहीं हुई। तैयारी के लिए कर्ज लिया था। अब बेटे काम करके कर्ज चुका रहे हैं। 'बच्चों के बदले मैं धरने पर जाता हूं, क्योंकि डर है कि अगर वे गए तो उन पर केस दर्ज हो जाएगा। सुरेश के दो बेटे हैं। दोनों सेना में भर्ती की तैयारी कर रहे हैं। इनकी पढ़ाई के लिए सुरेश ने जमीन गिरवी रखकर लोन लिया था। 'बड़े बेटे अंकित का आर्मी के लिए फिजिकल और मेडिकल क्लियर हो चुका था, सिर्फ पेपर बाकी था। वहीं, छोटे बेटे का एयरफोर्स में सिलेक्शन का प्रोसेस पूरा हो चुका था। अग्निवीर से पहले दोनों को आश्वासन भी मिला था। फिर पुरानी सभी भर्तियां रद्द हो गईं। अब बच्चे घर बैठे हैं।'

हर मामले में खटाखट-खटाखट बोलने वाले विपक्षी नेता सांसद स्वाति मालीवाल के मामले में चुप क्यों है?

अगर अरविंद केजरवाल ने घटना वाले दिन ही सामने आकर मोर्चा संभाल लिया होता तो शायद ये नौबत नहीं आती। पूरे प्रकरण के बीच संजय सिंह की प्रेस कॉन्फ्रेंस जिसमें बिभव को दोषी बताया गया था वो बेवजह साबित हुई। इन सबके बीच लोगों को कयासबाजी का मौका मिल गया है। शुक्रवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी यही सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि यह अविश्वसनीय और अस्वीकार्य है कि अरविंद केजरीवाल ने अपनी पार्टी की सांसद स्वाति मालीवाल पर हमले को लेकर एक शब्द भी नहीं बोला।

अशोक भाटिया।

राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल के साथ कथित मारपीट मामले पर उसके विरोध में चार दिन बाद आम आदमी पार्टी खुलकर सामने आ गई है। सौरभ भारद्वाज के ट्वीट और आतिशी की प्रेस कॉन्फ्रेंस ने क्लियर कर दिया है कि पार्टी बिभव कुमार के साथ खड़ी है। पर इस बीच दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की चुप्पी हैरानगी भरी है। अरविंद केजरीवाल जैसी शख्सियत से इस मुद्दे को लेकर उनका अब तक कुछ न बोलना आम आदमी पार्टी ही नहीं, दूसरी पार्टियों और राजनीतिक विश्लेषकों को भी समझ में नहीं आ रहा है।

हर मामले में खटाखट -खटाखट बोलने वाले अरविंद केजरीवाल 13 मई के दिन घटना वाले दिन मामले पर बोलकर इस घटना का पटाक्षेप कर सकते थे। लेकिन उन्होंने उस दिन कुछ नहीं बोला। यह कहा जा सकता है कि वे इस मामले को तूल नहीं देना चाहते हों। ऐसे मौकों पर ये पॉलिसी ठीक भी होती है। पर अपनी ही पार्टी की एक सांसद जो मुख्यमंत्री के निजी सचिव पर हमला करने का आरोप लगा रही है और यहां तक कह रही है कि यह सब उनके ही कहने पर हुआ, उसे इस तरह नजरअंदाज करना कहां तक सही था। उसी दिन अरविंद केजरीवाल अगर सामने आकर स्वाति मालीवाल और बिभव कुमार को सस्पेंड कर देते तो शायद मामला इतना तूल नहीं पकड़ता। सबसे बड़ी बात कि मामला आगे बढ़ता भी तो इसमें अरविंद केजरीवाल की छवि पर आंच नहीं आती।

16 मई को वह समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव के साथ संवाददाता सम्मेलन के लिए लखनऊ पहुंचे थे। इस दौरान भी उनके पास मौका था कि वो कहानी का पटाक्षेप कर देते। प्रेस कॉन्फ्रेंस में जब इस घटना के बारे में उनसे पूछा गया तो उन्होंने कोई जवाब न देकर माइक अखिलेश यादव की तरफ बड़ा दिया और अखिलेश यादव ने बात पलट दी ।

ये बहुत सामान्य सी बात है और कोई भी समझ सकता है कि एक तरफ तो पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह प्रेस कॉन्फ्रेंस करके कहते हैं कि मुख्यमंत्री हाउस में उस दिन मारपीट हुई थी और बिभव कुमार को उसकी सजा मिलेगी। उसके बावजूद कोई एक्शन नहीं लिया जाता है। बल्कि दो दिन बाद संजय सिंह और अरविंद केजरीवाल के साथ बिभव कुमार लखनऊ में दिखाई देते हैं। अगर पार्टी को ऐसा लग रहा था कि बिभव कुमार की गलती नहीं है और उनको बचाना ही था तो फिर संजय सिंह को प्रेस कॉन्फ्रेंस क्यों करने दिया गया? सवाल उठता है कि क्या संजय सिंह ने अपने मन से प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बिभव कुमार को दोषी करार दे दिया? अगर ऐसा नहीं है तो फिर 2 दिन बाद ही बिभव कुमार के साथ पब्लिक के सामने आने की क्या जरूरत थी? बिभव को कुछ दिनों के लिए अंडरग्राउंड कर देना चाहिए था। ऐन चुनावों के मौके पर यह सब जानबूझकर करने की बात तो हजम नहीं होती। ये भी हजम नहीं होता है कि अनायास यह सब हो गया या गलती से ऐसा हो गया? अरविंद केजरीवाल जो कि एक एक कदम सोच विचार कर कदम रखते हैं और जनता से पूछकर कर चलते हैं , वो ऐसी गलती कैसे करेंगे? ये कोई नहीं मान सकता। ऐसे माहौल में अगर अरविंद केजरीवाल हमेशा की तरह सामने आकर बोलते तो कोई शक-शुबहा रह ही नहीं जाता। पब्लिक मान लेती कि पार्टी के दो लोगों की लड़ाई है और झगड़ा आपस में सुलझा लिया जाएगा। राजनीतिक हल्कों में ही नहीं आम लोगों में भी एक कयास यह लगाया जा रहा है कि अरविंद केजरीवाल सुप्रीम कोर्ट के वकील अभिषेक मनु सिंघवी को राज्यसभा भेजना चाहते हैं। इसके लिए स्वाति मालीवाल से कहा गया कि वो अपनी सीट छोड़ दें। मालीवाल यही बात करने मुख्यमंत्री हाउस गईं थीं। हालांकि इस घटना के बाद अभी तक स्वाति मालीवाल ने किसी से ऐसी बात नहीं की है। इसलिए सही क्या है यो कोई नहीं जानता। अरविंद केजरीवाल की चुप्पी से इस तरह के कयासों को हवा मिल रही है। इसी तरह एक बात यह भी कही जा रही है कि अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने बिभव कुमार से स्वाति मालीवाल को पिटवाया। भाजपा नेता मनिंदर जीत सिंह सिरसा जो कभी आम आदमी पार्टी के नेता होते थे उन्होंने अपने ट्विटर हैंडल पर एक विडियो पोस्ट किया है। उसमे वो कह रह हैं कि स्वाति मालीवाल जी को किसी और ने नहीं बल्कि सुनीता केजरीवाल जी ने पिटवाया , मुझे यह जानकारी आम आदमी पार्टी के बड़े सीनियर नेता ने दी है और मैं बड़ी ज़िम्मेवारी के साथ ये बता रहा हूँ! अपनी धर्मपत्नी को बचाने की ख़ातिर केजरीवाल जी अपने निजी सहायक विभव कुमार के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। औरतों के लिए बड़ी बड़ी बातें करने वाले केजरीवाल जी राजनीति के मोह में किस कदर गिर चुके हैं। दिल्ली और पंजाब में आम आदमी पार्टी एक बहुत बड़ी हैसियत बन चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी के बाद संभवतया पूरे देश में सबसे अधिक चर्चा अरविंद केजरीवाल की ही होती है।अरविंद केजरीवाल की चुप्पी के चलते दिल्ली की जनता में गलत मैसेज जा रहा है। मुख्यमंत्री हाऊस में घटी इस घटना के बारे में अगर मुख्यमंत्री नहीं बोलेगा तो जनता में संदेह तो पैदा होगा ही। सबसे पहले तो महिलाओं के प्रति आम आदमी पार्टी का जो नजरिया रहा है उसमें पलीता लग रहा है। अभी तक जनता जानना चाहती थी कि बिभव कुमार पर एक्शन क्यों नहीं हो रहा है? पर अब अचानक बिभव कुमार के पक्ष में पार्टी के खड़े होने से नए तरह के सवाल लोगों के मन में खड़े हो रहे हैं। सवाल यह उठता है कि क्या अरविंद केजरीवाल की चुप्पी से ये सवाल दब जाएंगे? क्या इस चुप्पी से पार्टी का नुकसान नहीं होगा? अब दिल्ली में चुनाव प्रचार के लिए केवल 6 दिन बचे हैं। ऐसे मौके पर यह चुप्पी पार्टी के लिए खतरनाक साबित हो सकती है। बताया जाता है कि इस कथित बदतमीजी और मारपीट की घटना का असर राजनीतिक हलकों में अब काफी दूर तक देखने को मिल रहा है। इस घटना के बाद से 'इंडी' गठबंधन के कई सहयोगी दलों ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से दूरी बनाना शुरू कर दिया है। जिसमें कांग्रेस पार्टी भी शामिल है। कांग्रेस का दिल्ली में आम आदमी पार्टी के साथ गठबंधन है, मगर अब उसके बड़े नेता केजरीवाल के साथ प्रचार करने से बचने लगे हैं। इसके संकेत आने वाले वक्त में और साफ-साफ दिखाई देने वाले हैं। एक प्रेस कांफ्रेंस में कांग्रेस के प्रवक्ता जयराम रमेश से जब अरविंद केजरीवाल और स्वाति मालीवाल से जुड़े सवाल पूछे गए तो उन्होंने इनको टाल दिया। जयराम रमेश ब्रीफिंग में इन सवालों को टालते रहे केवल पर्यावरण से जुड़े सवालों का जवाब दिया। इसके साथ ही महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी की एक बड़ी रैली में राहुल गांधी शामिल नहीं हुए हैं। कांग्रेस का कहना था कि वह मुंबई में पहले प्रचार कर चुके हैं। कांग्रेस से पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे शामिल हुए ।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, अपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संतोष और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष
यात्रा के योग रहेंगे। किसी पानी वाली जगहों से आज दूरी बनाए रखें। मानसिक और शारीरिक थकान हो सकती है। आज का दिन खुशी से भरा रहेगा। नए काम की शुरुआत आज कर सकते हैं। मित्रों और स्नेहीजनों से मुलाकात हो सकती है।

वृष
स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ थकान या आलस्य का अनुभव हो सकता है। संतान की पढ़ाई-लिखाई और स्वास्थ्य के विषय में भी चिंता रहेगी। व्यर्थ के खर्च से आज दूर रहें। आज आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए।

मिथुन
अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें। आय की अपेक्षा व्यय अधिक हो सकता है। ऐसे में संभलकर चलने की जरूरत है। आज का दिन आपके लिए लाभदायी रहेगा। मित्रों के साथ भेंट हो सकती है। घूमने-फिरने, आनंद-प्रमोद में दिन गुजरेगा।

कर्क
आज आपके मन में भांति-भांति के विचारों की तरंगे उठेंगी। आप कई तरह के विचारों में खोए रहेंगे। आज किसी के साथ भी वाद-विवाद ना करें। माता एवं पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता आपको हो सकती है। ज्यादा सोचने-विचारने से आप परेशान रहेंगे।

सिंह
नौकरी या व्यावसायिक क्षेत्र में आपकी आय बढ़ेगी। दांपत्य जीवन में वातावरण आनंदमय रहने का योग बन रहा है। आप में परोपकार की भावना रहने से अन्य लोगों की सहायता करने के लिए आप उत्सुक रहेंगे।

कन्या
सभी काम व्यवस्थित रूप से पूरे होने की संभावना है। आज आपके कोई नए संबंध बनेंगे, जो आपके लिए भविष्य में आपके लिए लाभदायी सिद्ध होंगे। वैचारिक रूप से आप समृद्ध बने रहेंगे। शरीर, स्वास्थ्य और मन प्रसन्न रहेगा। अधिकारी आपसे खुश रहेंगे।

तुला
काम में मिली सफलता आप के उत्साह में वृद्धि करेगी। विरोधियों पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। सम्बंधों में भावनात्मकता अधिक रहेगी। प्रवास भी आनंदमयी होने की पूरी संभावना है। समाज में खूब मान-सम्मान मिलेगा।

वृश्चिक
आज आप धार्मिक कामों में दिन गुजारने वाले हैं। हालांकि निर्धारित समय में काम पूरा करने के लिए आप अतिरिक्त मेहनत करेंगे। घर के अन्य सदस्यों के साथ आपके संबंध अच्छे बने रहेंगे। आर्थिक लाभ होने की संभावना है।

धनु
आप अपनी वाणी से किसी को मंत्रमुग्ध कर पाएंगे। आपकी वैचारिक समृद्धि में बढ़ोतरी होगी। आज मेहनत की अपेक्षा परिणाम कम मिलने पर भी निराश नहीं होंगे। धन की व्यवस्थित योजना बनाने के लिए आज का दिन अनुकूल है।

मकर
व्यापार या नौकरी के कारण कहीं बाहर मीटिंग में जाना हो सकता है। अधिकारी आपसे खुश रहेंगे। आज का दिन मध्यम फलदायी है। बौद्धिक तथा लेखनकार्य से जुड़े जातक आज ज्यादा सक्रिय रहेंगे। साहित्य में कोई नया सृजन कर पाएंगे।

कुंभ
पारिवारिक जीवन में उल्लासमय वातावरण रहेगा। आज का दिन आपके लिए प्रतिकूल रह सकता है। मानसिक रूप से भी आप अस्वस्थता का अनुभव करेंगे। आपकी वाणी से किसी का दिल दुख सकता है।

मीन
आज का दिन आपके लिए मिश्रित फलदायी है। परिजनों के साथ आप अच्छी तरह से समय गुजार सकेंगे। दोस्तों का अच्छा साथ मिल सकता है। आर्थिक क्षेत्र में आय की अपेक्षा व्यय ही अधिक होगा। आज मीठी वाणी से सबका मन जीत लेंगे। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

आज का इतिहास

19 मई की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- मिग्यूल लोपेज डी जगाज्पी ने 1571 में फिलीपींस की राजधानी मनीला की स्थापना की।
- रूसी सेना 1792 को पोलैंड में दाखिल हुई।
- दुनिया का पहला डिपार्टमेंटल स्टोर 1848 में खुला।
- बहुचर्चित नाटककार और कवि ऑस्कर वाइल्ड जेल से 1892 में रिहा किए गए।
- दुनिया की उस समय की सबसे बड़ी रेल सुरंग 1900 में सिंपलन यात्रियों के लिए खुली।
- बेनितो मुसोलिनी ने 1926 में इटली को फांसीवादी राष्ट्र घोषित किया।
- श्वेत महिलाओं को 1930 में दक्षिण अफ्रीका में वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ।
- रूस और ब्रिटेन ने 1939 को नाजी विरोधी समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- रूस ने 1971 में मार्स-2 कार्यक्रम की शुरूआत की।
- ऑस्ट्रेलिया ने 1976 में सोने के स्वामित्व को कानूनी मान्यता दी।
- भारतीय मूल के महेन्द्र चौधरी 1999 में फिजी के प्रधानमंत्री नियुक्त हुई।
- मैक्सिको में 1999 में 'बाल्कान डिफ्यूजो' नामक ज्वालामुखी सक्रिय।
- फिजी में 2000 को भारतीय मूल के प्रधानमंत्री महेन्द्र चौधरी की सरकार को सात नाकाबपोश सशस्त्र व्यक्तियों द्वारा तख्तापलट।
- अमेरिकी सीनेट में 2007 में समग्र आव्रजन सुधार विधेयक पर सहमति।

19 मई को जन्मे व्यक्ति

- आधुनिक तुर्की के निर्माता कमाल अतातुर्क का जन्म 1881 में हुआ।
- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या कर भारतीय इतिहास के पन्नों में एक काला अध्याय जोड़ने वाले नाथूराम गोडसे का जन्म 1910 में आज ही के दिन हुआ था।
- भारत के राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी का जन्म 1913 में हुआ।
- रस्किन बॉण्ड का जन्म 1934 में हुआ वो अंग्रेज़ी भाषा के प्रसिद्ध भारतीय लेखकों में से एक हैं।
- कवि, रंगमंच कर्मी, कहानी लेखक, नाटककार, फ़िल्म निर्देशक और फ़िल्म अभिनेता गिरीश कर्नाड का जन्म 1938 में हुआ।

19 मई को हुए निधन

- टाटा समूह के संस्थापक जमशेद जी टाटा का निधन 1904 में हुआ।
- हिन्दी के शीर्ष साहित्यकार हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का निधन 1979 में हुआ।
- प्रसिद्ध तमिल अभिनेत्री तथा तमिलनाडु की भूतपूर्व मुख्यमंत्री जानकी रामचन्द्रन का निधन 1996 में हुआ।
- फ़िल्म और रंगमंच अभिनेता, निर्देशक और नाटककारसोंभु मित्रा का निधन 1997 में हुआ।

विशेष आलेख

डॉ. गणि राजेन्द्र विजयजी के 49वें जन्म दिवस

आदिवासी जनजीवन के नये जन्म का उजाला

ललित गर्ग

सुखी परिवार अभियान के प्रणेता, आदिवासी जनजीवन के मसीहा एवं प्रख्यात जैन संत गणि राजेन्द्र विजय पिछले 36 वर्षों से आदिवासी विषयों एवं मुद्दों को लेकर सक्रिय है, उन्होंने आदिवासी जनजीवन के उन्नयन एवं विकास के लिये अनेक जनकल्याणकारी गतिविधियों-योजनाओं जिनमें शिक्षा, सेवा, चिकित्सा एवं आर्थिक उन्नयन के उपक्रम किये हैं, जो आदिवासी जन-जीवन में उतरती रोशनी है। हाल ही में गुजरात में 4400 करोड़ की परियोजनाओं का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आनलाइन कवांट की आदिवासी महिलाओं से बातचीत करते हुए गणि राजेन्द्र विजय को जिस स्नेह एवं आत्मीयता से याद किया, समूचे देश ने यह परिदृश्य देखा और उनकी सेवाओं को महसूस किया। मोदी का इस तरह इस संत पुरुष को याद करना,उनके गौरव को, उनके होने का भान कराता हैं। इस वर्ष गणि राजेन्द्र विजयजी अपने जन्म दिन 19 मई, 2024 को गुजरात के आदिवासी क्षेत्र कवांट में देश के पहले कौशल विकास विश्वविद्यालय 'भगवान आदिनाथ आदिवासी कौशल विश्वविद्यालय' के बीज को आकार देने को तत्पर हो रहे हैं, जिससे भारत के कौशल का दुनिया में डंका बजेगा एवं आदिवासी जनजीवन विकास की एक नई गाथा लिखने को तत्पर हो सकेगा। निश्चित ही गणि राजेन्द्र विजयजी आदिवासी समाज को उचित दर्जा दिलाने एवं उनकी समस्याओं के समाधान के लिये तत्पर है। वे स्वयं समर्थ एवं समृद्ध है, अत: शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिये स्वयं आगे आएं। एक तरह से एक संतपुरुष के प्रयत्नों से एक सम्पूर्ण पिछडा एवं उपेक्षित आदिवासी समाज स्वयं को आदर्श रूप में निर्मित करने के लिये तत्पर हो रहा है, यह एक अनुकरणीय एवं सराहनीय प्रयास है। लेकिन इन आदिवासी लोगों को राजनीतिक संरक्षक भी मिले, इसके लिये वे सभी राजनीतिक दलों के नेताओं से सम्पर्क स्थापित कर आदिवासी जीवन के दर्द से उन्हें अवगत कराया एवं इस बार के लोकसभा चुनाव में आदिवासी लोगों को सक्रिय किये हुए है। भारतीय समाज में जिन आदर्शों की कल्पना की गई है, वे भारतीयों को आज भी उतनी ही श्रद्धा से स्वीकार हैं। मूल्य निष्ठा में जनता का विश्वास अभी तक समाप्त नहीं हुआ। व्यक्ति अगर अकेला भी हो पर नैतिकता का पक्षधर हो और उसका विरोध कोई ताकतवर कुटिलता और षड्यंत्र से कर रहा हो तो जनता अकेले आदमी को पसन्द करेगी। इन्हीं मूल्यों की प्रतिष्ठापना, गणि राजेन्द्र विजय के मिशन एवं विजन का उद्देश्य है। गणि राजेन्द्र विजय एक ऐसा व्यक्तित्व है जो आध्यात्मिक विकास और नैतिक उत्थान के प्रयत्न में तपकर और अधिक निखरा है। वे आदिवासी जनजीवन के उत्थान और उन्नयन के लिये लम्बे समय से प्रयासरत हैं और विशेषत: आदिवासी जनजीवन में शिक्षा की योजनाओं को लेकर जागरूक है, इसके लिये सर्वसुविधयुक्त करीब 12 करोड की लागत से एकलव्य आवासीय माडल विद्यालय का निर्माण होकर विगत दो दशकों से शिक्षा की नई उपलब्धियां एवं कीर्तिमान उनके प्रयत्नों से स्थापित कर रहा है। वर्ष 2007 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस विद्यालय एवं अन्य योजनाओं का शुभारंभ करीब डेढ़ लाख आदिवासी लोगों के बीच किया, इतनी विशाल आदिवासी उपस्थिति गणिजी के इस क्षेत्र में प्रभाव को दर्शा रही थी। उनके नेतृत्व में अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित है, जिनमें कन्या शिक्षा के लिये ब्राह्मी सुन्दरी कन्या छात्रावास का कुशलतापूर्वक संचालन हो रहा हैं। इसी आदिवासी अंचल में जहां जीवदया की दृष्टि से गौशाला संचालित है तो चिकित्सा और सेवा के लिये चलयमान चिकित्सालय भी अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दे रहा है। आदिवासी जनजीवन की आर्थिक उन्नति एवं स्वावलम्बन के लिये वे सुखी परिवार ग्रामोद्योग भी संचालित कर रहे हैं। अपने इन्हीं व्यापक उपक्रमों की सफलता के लिये वे कठोर साधना करते हैं और अपने शरीर को तपाते हैं।

अपने कार्यक्रमों में वे आदिवासी के साथ-साथ आम लोगों में शिक्षा के साथ-साथ नशा मुक्ति एवं रूढ़ि उन्मूलन की अलख जगाते हैं। उनके प्रयत्नों का उद्देश्य है शिक्षा एवं पढ़ने की रूचि जागृत करने के साथ-साथ आदिवासी जनजीवन के मन में अहिंसा, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जगाना है। हर आदमी अपने अन्दर झांके और अपना स्वयं का निरीक्षण करे। आज मानवता इसलिए खतरे में नहीं है कि अनैतिकता बढ़ रही है। अनैतिकता सदैव रही है- कभी कम और कभी ज्यादा। सबसे खतरे वाली बात यह है कि नैतिकता के प्रति आस्था नहीं रही। त्याग, साधना, सादगी, प्रबुद्धता एवं करुणा से ओतप्रोत गणि राजेन्द्र विजयजी आदिवासी जाति की अस्मिता की सुरक्षा के लिए तथा मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने के लिए सतत प्रयासरत हैं। मानो वे दांडी पकड़े गुजरात के उभरते हुए 'गांधी' हैं। इसी आदिवासी माटी में 19 मई, 1974 को एक आदिवासी परिवार में जन्में गणि राजेन्द्र विजयजी मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था में जैन मुनि बन गये। बीस से अधिक पुस्तकें लिखने वाले इस संत के भीतर एक ज्वाला है, जो कभी अश्लीलता के खिलाफ आन्दोलन करती हुए दिखती है, तो कभी जबरन धर्म परिवर्तन कराने वालों के प्रति मुखर हो जाती है। कभी जल, जमीन, जंगल के अस्तित्व के लिये मुखर हो जाती है। इस संत ने स्वस्थ एवं अहिंसक समाज निर्माण के लिये जिस तरह के प्रयत्न किये हैं, उनमें दिखावा नहीं है, प्रदर्शन नहीं है, प्रचार-प्रसार की भूख नहीं है, किसी सम्मान पाने की लालसा नहीं है, किन्हीं राजनेताओं को अपने मंचों पर बुलाकर अपने शक्ति के प्रदर्शन की अभीप्सा नहीं है। अपनी धून में यह संत आदर्श को स्थापित करने और आदिवासी समाज की शक्ल बदलने के लिये प्रयासरत है और इन प्रयासों के सुपरिणाम देखना हो तो कंवाट, बलद, रंगपुर, बोडेली आदि-आदि आदिवासी क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

चिंतन-मनन : वैदिक तथा सनातनी ग्रंथ, मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के उत्प्रेरक

भारतवर्ष सदैव आध्यात्मिक और वैदिक भारत के रूप में संपूर्ण विश्व में जाना जाता रहा है। अध्यात्म से जुड़े हुए हमारे ऐतिहासिक महापुरुषों के कारण भारत को सदैव आदर की दृष्टि से देखा जाता है। आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा भारत के लिए एक बहुत बड़ी पूंजी तथा संपत्ति है, जो हमें विरासत में प्राप्त हुई है। आध्यात्मिकता के दम पर ही भारत ने विश्व में वैदिक शास्त्र, अध्यात्म का परचम लहराया है। वैदिक दर्शन और अध्यात्म दर्शन भारतीयता का ऐतिहासिक परिचायक है। आध्यात्मिक शक्ति एवं वैदिक ऊर्जा के कारण भारत के महापुरुष सदैव सच्चरित्र और ब्रह्मचर्य का पालन करते आए हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने भी सत चरित्र को अपने जीवन का अंग बना कर अनेक वैदिक ग्रंथों की रचना भी की है जो प्रत्येक भारतीय जनमानस के लिए मार्गदर्शक ग्रंथ बन गए हैं। रामकृष्ण परमहंस, मां शारदा, विवेकानंद, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं अनेक ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने सत्चरित्र और अध्यात्म के दम पर भारत को विश्व में सर्वोच्च मुकाम भी दिलाया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा है की सच्चरित्र केवल एक व्यक्ति का ना होकर संपूर्ण राष्ट्र का होना चाहिए। अनेक यूरोपीय विद्वानों ने और भारतीय अध्यात्म के मनीषियों ने सत और चरित्र को अपने जीवन में आत्मसात करने के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए और दोनों को मिलाकर सत्चरित्र शब्द को बड़े विस्तार से समझाया है। अध्यात्म और योग शक्ति ही मनुष्य को सच्चरित्र बनाने में हमेशा मददगार रही है क्योंकि अध्यात्म से व्यक्ति की एकाग्रता तथा ज्ञान में वृद्धि होकर मन ईश्वर के प्रति श्रद्धानवत होता है और ईश्वर के प्रति जो व्यक्ति अगाध श्रद्धा रखता है वह सदैव अपने चरित्र के प्रति विशेष सावधान रहकर सच्चरित्र व्यक्तित्व ही बनाता है। यह कहावत एकदम सत्य प्रतीत होती है की सद्गुण है सच्ची संपत्ति दुर्गुण बड़ी विपत्ति यह तो निश्चित है की सदाचारी परोपकारी संयमशील, इमानदार ,निष्ठावान नागरिक सच्चरित्र होकर एक महान राष्ट्र को जन्म देता है ।वहीं दुष्ट चरित्र व्यक्ति काम, क्रोध, कामना और लालच में पड़कर अपनी जिंदगी को नर्क बना कर दिया सदैव अशांत रहता है, अशांत नागरिक किसी भी कार्य में स्थिरता अथवा प्रगति प्रदान नहीं कर सकता है, वह अपने समाज तथा देश को कमजोर करने का ही कार्य करता है। धन और संपत्ति से ज्यादा महत्वपूर्ण चरित्र को बलवान बनाने वाली आध्यात्मिक शिक्षा ही है। धन-संपत्ति नष्ट होने पर किसी भी व्यक्ति का बड़ा नुकसान नहीं होता पर यदि चरित्र चला जाए तो उसका सम्मान यश तथा सामाजिक स्थिति एकदम निकृष्ट बन जाती है उसका समाज में अपमान होने लगता है, ऐसे में कोई भी व्यक्ति या नागरिक समाज में सिर उठाकर नहीं चल सकता। ऐसा व्यक्ति समाज के उत्थान में कोई योगदान देने के काबिल नहीं रह जाता। इसलिए मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण आवश्यकता आध्यात्मिक शिक्षा एवं चरित्रवान जीवन है। सुभाष चंद्र बोस,महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, सरोजनी नायडू और अन्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में सच्चरित्र जीवन और मानसिक आध्यात्मिक शक्ति एवं ऊर्जा के कारण ही स्वतंत्रता संग्राम में पराधीन भारत को स्वतंत्रता दिलवाई थी। किसी भी देश के नागरिक को एक दिन में सच्चरित्र नहीं बनाया जा सकता बल्कि बालकों को बाल्यकाल से ही नैतिक शिक्षा से शिक्षित किया जाकर सदाचार का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए। यह सर्वविदित है कि मनुष्य के चरित्र और व्यक्तित्व पर देश परिस्थितियां शिक्षा और समाजिक व्यवहार का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है और नैतिकता सदाचार का पाठ किसी भी व्यक्ति को एक दिन में नहीं पढ़ाया जा सकता है।

दुष्ट चरित्र पुरुष समाज में कभी भी प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता सदैव अपनी बदनामी के कारण सिर झुका कर छुप कर घूमता है, इसीलिए भारतीय चिंतकों, मनीषियों ने लिखा और कहा है की चरित्र सदाचार की रक्षा मनुष्य को संपूर्ण प्रयास कर निरंतर करते रहना चाहिए। क्योंकि नागरिकों का नैतिक और सदाचारी स्वभाव और व्यवहार राष्ट्रीय संपति होता है और यही संपति राष्ट्र को एक सशक्त राष्ट्र और उत्कृष्ट देश बनाने में सदैव सहायक होता है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीदपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 ''प्रतीक्षा'' सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

रायबरेली नेहरू खानदान का वैसा मजबूत किला तो कतई नहीं है जैसा कि परिवारवाद समर्थक खानसामा यूट्यूब चैनलों पर दर्शा रहे हैं और कांग्रेसी इस बात को जोर-शोर से कह रहे हैं। राजनारायण (जनता पार्टी) ने 1975 में श्रीमती गांधी को बुरी तरह पराजित किया था और अशोक सिंह (भाजपा) ने 1996 में शीला कौल को हराया।

— कंचन गुप्ता, पत्रकार @KanchanGupta

विश्व शांति

भारत डोगरा

लोक भलाई से ही मानवता का कल्याण

भारत की आजादी के संघर्ष के बेहद प्रेरणादायक माहौल में राष्ट्रवाद के बहुत बड़े उभार के बावजूद महात्मा गांधी ने विश्व बंधुत्व का संदेश दिया, और शहीद भगत सिंह ने भी पूरी धरती को एक परिवार मानने को एक महान आदर्श बताया। आज की युद्ध और तनावों भरी दुनिया में यह आदर्श बहुत कठिन तो है, पर महाविनाशक हथियारों के इस दौर में इसकी जरूरत अब पहले से भी अधिक बढ़ गई है। अतः राह जितनी कठिन हो, इस दिशा में प्रयास होते रहने चाहिए।

विभिन्न स्तरों पर समर्पण की सोच दुनिया में प्रचलित है। इन सब से हटकर एक अन्य पहचान भी हो सकती है, जो बहुत महत्त्वपूर्ण है पर फिर भी इस पहचान को बहुत कम महत्त्व मिला है। यह विश्व नागरिकता या विश्व बंधुत्व की पहचान है। इस सोच में पूरे विश्व को एक बड़े परिवार के रूप में ही देखा जाता है। सभी लोग मूलतः एक ही विश्व के नागरिक हैं। अतः इस सोच में रंग, नस्ल, लिंग, जाति,धर्म, क्षेत्रीयता, राष्ट्रीयता, किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता है। किसी भेदभाव के बिना सभी लोगों की भलाई को सोच का आधार बनाया जाता है। इस सोच में अनेक तरह की संकीर्ण सोच से ऊपर उठकर पूरे विश्व को अपना मानने व पूरे विश्व की भलाई को अपना उद्देश्य मानने की व्यापक सोच प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इस सोच में यह निहित है कि जहां कहीं भी टकराव की कोई संभावना उत्पन्न होगी उसका शांतिपूर्ण समाधान निकाल लिया जाएगा क्योंकि मूल सोच तो सबकी भलाई की है, केवल अपना स्वार्थ साधने की नहीं है। इस तरह की सोच का जितना प्रसार होगा, युद्ध, गृह युद्ध और हर तरह की हिंसा की संभावना अपने आप कम होती जाएगी। यह किसी भी समय के लिए एक बड़ी उपलब्धि होती, पर वर्तमान दौर में, जब युद्ध और हथियार अत्यधिक विनाशक हो चुके हैं, युद्ध की संभावना को कम कर पाना पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण और जरूरी हो गया है।

इसी तरह जो दुनिया की सबसे बड़ी पर्यावरणीय समस्याएं हैं (जैसे जलवायु बदलाव) उनके लिए विभिन्न देशों को अपने संकीर्ण दृष्टिकोणों से ऊपर उठने की जरूरत है। यह तो धरती की जीवनदायिनी क्षमता को बचाने का सवाल है। धरती पर तरह-तरह का, विविधता भरा जीवन पनपने के हालात बने रहें, इसके लिए विश्व स्तर पर सभी देशों के सहयोग की जरूरत है। यदि विश्व नागरिकता और विश्व बंधुत्व की सोच विकसित होगी तो इससे इन गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं की सुलझाने में बहुत मदद मिलेगी। विश्व बंधुत्व की सोच यदि सभी मनुष्यों तक सीमित रहे, तो भी इसमें कुछ संकीर्णता आ जाएगी। अतः इस सोच में जीवन के सभी रूपों की रक्षा और भावी पीढ़ियों की रक्षा की सोच को भी अवश्य शामिल करना चाहिए। यदि विश्व नागरिकता और विश्व बंधुत्व की सोच को विभिन्न स्तरों पर प्रोत्साहित किया गया और इसे एक व्यापक जन-अभियान का रूप दिया गया तो इससे विश्व की अनेक गंभीर समस्याओं के समाधान में बहुत सहायता मिल सकती है। इसकी अनुकूल भूमिका तैयार करने के लिए विश्व बंधुत्व और नागरिकता पर कई स्तरों पर विमर्श जरूरी है। इसमें भारत के गांधीवादी आंदोलनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। सर्वोदय आंदोलन की 'जय जगत' की सोच इसके बहुत अनुकूल है। विश्व में अमन-शांति के कई आंदोलन और अभियान हैं। उनका सहयोग इस कार्य में बेहतर से बेहतर ढंग से मिल सके, यह सुनिश्चित करने में संयुक्त राष्ट्र संघ भी अपनी विश्व स्तर की उपस्थिति और मान्यता से एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इतना निश्चित है कि ये प्रयास इस समय बहुत व्यापक स्तर पर जरूरी हैं, और इनसे दुनिया की अनेक पेचीदा समस्याओं के समाधान में बहुत मदद मिलेगी।

> जो दुनिया की सबसे बड़ी पर्यावरणीय समस्याएं हैं (जैसे जलवायु बदलाव) उनके लिए विभिन्न देशों को अपने संकीर्ण दृष्टिकोणों से ऊपर उठने की जरूरत है। यह तो धरती की जीवनदायिनी क्षमता को बचाने का सवाल है। धरती पर तरह-तरह का, विविधता भरा जीवन पनपने के हालात बने रहें, इसके लिए विश्व स्तर पर सभी देशों के सहयोग की जरूरत है। यदि विश्व नागरिकता और विश्व बंधुत्व की सोच विकसित होगी तो इससे इन गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं की सुलझाने में मदद मिलेगी। विश्व बंधुत्व की सोच सभी मनुष्यों तक सीमित रहे तो भी इसमें कुछ संकीर्णता आ जाएगी। अतः इस सोच में जीवन के सभी रूपों की रक्षा और भावी पीढ़ियों की रक्षा की सोच को अवश्य शामिल करना चाहिए। विश्व नागरिकता और विश्व बंधुत्व की सोच को प्रोत्साहित किया गया तो विश्व की अनेक समस्याओं के समाधान में मदद मिल सकती है

विश्व के विभिन्न देशों में अनेक सार्थक जन आंदोलन सक्रिय हैं। वे एक-दूसरे के अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। इस वजह से एक-दूसरे के नजदीक आने की, एक दूसरे को बेहतर जानने की जरूरत सदा रही है। पर हाल के समय में जो स्थितियां विश्व स्तर पर तेजी से उत्पन्न हो रही हैं, उनके कारण विश्व भर के जन आंदोलन की नजदीकी और मित्रता को तेजी से बढ़ाने की जरूरत अब पहले से कहीं अधिक हो गई है। विश्व के अनेक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि अब तो धरती पर विविधता भरे जीवन को पनपाने वाली स्थितियां ही संकटग्रस्त हो गई हैं। ऐसा तरह-तरह के पर्यावरण विनाश के कारण हुआ है। भविष्य के युद्धों में अगर महाविनाशक हथियारों का उपयोग हुआ तो इस कारण भी धरती की जीवनदायिनी क्षमता खतरे में पड़ जाएगी। इस तरह के महाविनाशक हथियारों के विशाल भंडार पहले ही एकत्र हो चुके हैं और इन हथियारों को होड़ और दौड़ जारी है। दूसरी ओर, विश्व के मौजूदा नेतृत्व को अभी तक ऐसी कोई सफलता नहीं मिली है जिससे धरती पर जीवन की स्थितियों को संकटग्रस्त करने वाले इन कारकों पर असरदार रोक लगे। समस्याओं की गंभीरता वैज्ञानिक स्तर पर पता चलने के बावजूद ये समस्याएं कम नहीं हो रही हैं अपितु बढ़ रही हैं। अनेक अति शक्तिशाली देशों के नेतृत्व ने इन समस्याओं को अभी अपनी प्राथमिकता तक नहीं बनाया है और इस जिम्मेदारी से पीछे हट रहे हैं। इस स्थिति में विश्व के जन आंदोलनों की यह जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि इन सबसे महत्त्वपूर्ण समस्याओं को समझ कर इन्हें सुलझाने में अपनी बढ़ती भूमिका को स्वीकार करें तथा इसके अनुकूल मेहनत और तैयारी करें। इसके लिए उन्हें व्यापक एकता बनानी होगी-अपने देश में भी और उससे बाहर भी। बहुत छोटे स्तर पर कार्य करते हुए वे इतने व्यापक मुद्दों को प्रभावित नहीं कर पाएंगे। गठबंधन और एकता के साथ उन्हें विश्व के अनेक विख्यात वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों और प्रतिष्ठित नागरिकों को अपने साथ जोड़ना पड़ेगा, विशेषकर उन वरिष्ठ व्यक्तियों को जो पहले से इन सबसे महत्त्वपूर्ण समस्याओं को उच्च प्राथमिकता के आधार पर सुलझाने के लिए प्रयासरत रहे हैं।

इन नई जिम्मेदारियों को संभालने के लिए अनेक जन-संगठन और आंदोलन आगे बढ़े तो उन्हें पहले कदम पर अपनी सरकारों से विभिन्न तरह की रोक-टोक का सामना कर सकता है, पर यदि विश्व स्तर पर व्यापक एकता होगी तो इन समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। इन जन-आंदोलनों की एक मुख्य भूमिका यह है कि जीवन के अस्तित्व मात्र को खतरे में डालने वाली समस्याओं को जनसाधारण के बीच ले जाएं ताकि आम लोगों की ओर से इन समस्याओं को उच्च प्राथमिकता देने के लिए एक बड़ा दबाव बने। इन समस्याओं के महत्त्व की समय रहते व्यापक समझ बनेगी तो सरकारों पर भी समय रहते इन्हें सुलझाने के लिए दबाव बनेगा। यह भी जरूरी है कि इन समस्याओं के जो भी समाधान खोजे जाएं वे न्याय, समता और लोकतंत्र की परिधि में खोजे जाएं। इस तरह की सही राह तलाशने और इस पर व्यापक सहमति बनाने में जन-आंदोलनों और जन-संगठनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, पर इस भूमिका को सफलतापूर्वक निभाने के लिए उन्हें बहुत मेहनत और तैयारी करनी पड़ेगी।

जब हिन्दुस्तान मिले हिन्दुस्तान से

मीडिया

सुधीश पचौरी

> यह विज्ञापन एक बड़ी टायर कंपनी के टायर का है। विज्ञापन की 'कैचलाइन' है: 'जब हिन्दुस्तान मिले हिन्दुस्तान से...'। आखिर, में लिखा आता है 'फलां... टायर देश का टायर' यों चुनाव के दिनों में बहुत से दलों व गठबंधों के 'राजनीतिक विज्ञापन' भी आते हैं

आजकल खबर-चैनलों पर एक विज्ञापन कई एंकरों का भी पसंदीदा विज्ञापन बन गया दिखता है। यह देख अचरज होता है। एंकर का काम तो खबरों को अधिकतम तटस्थता से प्रस्तुत करने का होता है। वह जरा भी इधर उधर झुका तो तुरंत कठघरे में खड़ा कर दिया जाता है कि वह तटस्थ नहीं है।

यों आजकल राजनीति में किसी भी एंकर का सौ फीसद तटस्थ रहना लगभग असंभव है। अगर कोई कोशिश करे तो भी देखने वाले उसे किसी न किसी पक्ष में 'फिक्स' कर सकते हैं। इसीलिए एंकर हमेशा सजग रहते हैं कि ऐसा कुछ न करें जिससे कोई उनको किसी दल की ओर झुका हुआ बता दे। फिर भी आजकल लगभग हर बहस में कुछ प्रवक्ता एंकर को अपने अनुकूल न पाकर उस पर आरोप लगाने लगते हैं कि वह बिका हुआ है, विरोधी दल का एजेंट है जिसका वे यह कर जवाब देते हैं कि हमारा चैनल सभी के पक्ष को दिखाता है।

जिन दिनों राजनीति ऊपर से नीचे तक दो ध्रुवों में बंटी हो और आए दिन और अधिक विभाजित नजर आती हो, जिन दिनों एक पक्ष दूसरे पक्ष को फूटी आंख न सुहाता हो लेकिन जब मीडिया में कोई भी हारता न दिखना चाहता हो तब एंकर ऐसे आरोपों से अछूते कैसे रह सकते हैं। ऐसे विभाजित दौर में जब कई एंकर किसी एक विज्ञापन की अपने कार्यक्रम के बीच तारीफ करने लगें और उस विज्ञापन को 'अवश्य देखने योग्य' बताने लगें तो एंकरों की तटस्थता पर तो सवाल उठेगा ही लेकिन इस विज्ञापन की खुली पैरवी के बावजूद यह सवाल भी नहीं उठ रहा।

इसका कारण भी विज्ञापन में निहित है। यह विज्ञापन एक बड़ी टायर कंपनी के टायर का है। विज्ञापन की 'कैचलाइन' है : 'जब हिन्दुस्तान मिले हिन्दुस्तान से...'। आखिर, में लिखा आता है 'फलां... टायर देश का टायर' यों चुनाव के दिनों में बहुत से दलों व गठबंधों के 'राजनीतिक विज्ञापन' भी आते हैं। कुछ 'नेता के प्रति लाभार्थियों में कृतज्ञता का भाव जगाने' के लिए आते हैं तो कुछ चुनाव से पहले ही 'हर महिला को एक लाख' और 'इलाज के लिए पच्चीस लाख देते' दिखते हैं। इनके अलावा, 'उपभोक्ता ब्रांडों' के कामर्शियल विज्ञापन तो आते ही हैं : खाद्य तेल या मसाले बेचता बॉलीवुड हीरो या हीरोइन हो, किसी पाचक टिकिया या पाचक पेय को बेचने वाला कोई हीरो हो या किसी शेंपू को बेचती कोई हीरोइन या किसी सरिया को बेचने वाले कई हीरो-हीरोइन हों या किसी पान मसाले को बेचने वाले कई हीरो-हीरोइनें हों...या कारों के विज्ञापन हों...। ऐसे सारे विज्ञापन आम तौर पर 'गैर-राजनीतिक' ही माने जाते हैं। लेकिन चुनाव के इन दिनों ने कुछ ऐसे विज्ञापन भी आने लगे हैं जो जनता से वोट डालने का आग्रह करते दिखते हैं। ऐसे विज्ञापन चुनाव आयोग दिया करता था। देता भी है लेकिन इन दिनों कई निजी उद्यमी भी अपने 'ब्रांड' के साथ ऐसे विज्ञापन देने लगे हैं जो वोटरों से कहते हैं कि 'चुनाव में मतदान अवश्य करें'। यह 'बहती बहती गंगा में डुबकी लगाना' है।

ऐसे ही कई अज्ञात अनाम धन्य लोग भी हैं जो चैनलों का टाइम खरीद कर अपने फोटो के साथ लोगों को 'अवश्य वोट डालने' को कहते हैं। यहां हम उन विज्ञापनों की बात नहीं करेंगे जिनके संदेश प्रकारांतर से आज की राजनीति से किसी न किसी अर्थ में जुड़ते दिखते हैं लेकिन यह जरूर पूछेंगे कि 'जब हिन्दुस्तान मिले हिन्दुस्तान से' वाला विज्ञापन कुछ एंकरों द्वारा इतना सराहा क्यों जा रहा है? शायद इसलिए कि देश को 'उत्तर दक्षिण' में बांटने की राजनीति के बीच यह विज्ञापन 'देश के राज्यों को एक दूसरे से जोड़ने' का संदेश देता है। हमारे देखे पिछले सप्ताह एक दिन एक अंग्रेजी चैनल के एक एंकर ने इसका स्वागत किया और पूरा बजाया जबकि एक और दिन एक अन्य एंकर ने इसको अपने कार्यक्रम के बाद बजाया और तारीफ की। इस विज्ञापन का असली हीरो एक ब्रांड 'टायर' है जो गाड़ियों में लगकर सड़कों के जरिए सबको एक से दूसरे जोड़ता है। इसमें चुनाव प्रचार के इन दिनों की कुछ झलकियां भी हैं। यहां तक कि कुछ रिपोर्टरों एंकरों की झलकियां भी हैं। पहली बार है कि यह विज्ञापन कुछ नामी एंकरों व रिपोर्टरों को अपना कंटेंट बनाता है। यह विज्ञापन मीडिया के एक हिस्से को शायद इसलिए भी अधिक प्रिय दिखता है क्योंकि यह हिन्दुस्तान को 'उत्तर दक्षिण' बांटने वाले बयानों के जवाब की तरह आता है। लेकिन एक विज्ञापन को ऐसे स्पॉन्सर करना पत्रकारिता के पेशे के लिए कहां तक उचित है? क्या एंकरों को इतने खुल कर ऐसे भाव प्रकट करने चाहिए?

पुतिन-जिनपिंग शिखर वार्ता

वैश्विकी

डॉ. दिलीप चौबे

> अंतरराष्ट्रीय जगत में सबसे बड़ी घटना रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच शिखर वार्ता थी। यह शिखर वार्ता भावी विश्व व्यवस्था के निर्माण में मील का पत्थर साबित हो सकती है। शिखर वार्ता के बाद जारी 8 हजार शब्दों के संयुक्त वक्तव्य को विशेषज्ञों ने महत्त्वपूर्ण दस्तावेज करार दिया है

इस सप्ताह भारत के लिहाज से सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय घटना भारत और ईरान के बीच चाबहार बंदरगाह को लेकर हुए दीर्घकालिक समझौते की थी। इसके तहत भारत चाबहार बंदरगाह के एक हिस्से को विकसित और संचालित करेगा। आम चुनाव के बीच इस समझौते का अमल में आना महत्त्वपूर्ण है। संभव है कि दोनों देश नई सरकार के आने से पहले यह समझौता करना चाहते थे। अमेरिका को यह समझौता नागवार गुजरा और उसकी ओर से प्रतिबंध लगाने की अप्रत्यक्ष धमकी भी दी गई। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अमेरिकी धमकी को ज्यादा महत्त्व नहीं देते हुए कहा कि इस संदर्भ में संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं अपनाया जाना चाहिए। यह समझौता पूरे क्षेत्र के हित में है। वास्तव में चाबहार बंदरगाह उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इसके जरिये भारत की पहुंच मध्य एशिया और रूस तक होनी है। ऐसे समय में जब अमेरिका के लिए रूस और ईरान दोनों प्रमुख चुनौती बने हुए हैं, यह समझौता उसके लिए रणनीतिक दृष्टि से बड़ा सिरदर्द है। आने वाले दिनों में स्पष्ट होगा कि अमेरिका इस संबंध में क्या कदम उठाता है।

अंतरराष्ट्रीय जगत में सबसे बड़ी घटना रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच शिखर वार्ता थी। यह शिखर वार्ता भावी विश्व व्यवस्था के निर्माण में मील का पत्थर साबित हो सकती है। शिखर वार्ता के बाद जारी 8 हजार शब्दों के संयुक्त वक्तव्य को विशेषज्ञों ने महत्त्वपूर्ण दस्तावेज करार दिया है। एक पश्चिमी विशेषज्ञ के अनुसार यह दस्तावेज रूस और चीन के बीच 'असीमित साझेदारी' से भी आगे का कदम है। वर्ष 2022 में यूक्रेन संघर्ष से ठीक पहले दोनों देशों ने असीमित साझेदारी कायम करने का फैसला किया था। अब ये देश अपने अनुकूल नई विश्व व्यवस्था स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हैं। भारत भी एक न्यायसंगत और संतुलित विश्व व्यवस्था का हामी है। लेकिन वह मौजूदा विश्व व्यवस्था के प्रमुख देशों के साथ अपने संबंधों को आगे बढ़ा रहा है। रूस और चीन के बीच एक गठजोड़ के दौरान अमेरिका ने भारत के प्रति अपने रवैये को अनुकूल बताया है। व्हाइट हाउस ने अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा संचार सलाहकार जॉन एफ किर्बी ने भारत के लोकतंत्र की प्रशंसा करने के साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की भी सराहना की है। लगता है कि अमेरिकी प्रशासन को भारत के आम चुनाव के नतीजों का आभास हुआ है। कल तक अमेरिका खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू को बचाने के लिए भारत के हाथ मरोड़ रहा था। अब वह भारत का गुणगान करने की मुद्रा में है।

विदेश मंत्री जयशंकर ने पिछले दिनों कहा था कि दुनिया में अमेरिका का प्रभुत्व समाप्त हो रहा है। उनके इस बयान की भारत में नव-नियुक्त चीनी राजदूत ने प्रशंसा की थी। इस बीच यह भी रिपोर्ट आई की चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया है। वर्ष 2024 भारत-चीन संबंधों को पटरी पर लाने वाला वर्ष साबित हो सकता है। प्रधानमंत्री मोदी यदि फिर सत्ता में आते हैं तो वह वुहान और महाबलीपुरम शिखर वार्ताओं जैसी कोई पहल कर सकते हैं।

अगली ब्रिक्स शिखर वार्ता में मोदी और राष्ट्रपति पुतिन के बीच शिखर वार्ता संभावित है। पुतिन यह भी प्रयास कर सकते हैं कि इस दौरान तीनों देशों के नेताओं के बीच शिखर वार्ता भी आयोजित हो। भारत और चीन के नेता यदि शिखर वार्ता करते हैं तो यह महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम होगा। नई विश्व व्यवस्था में ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है। भारत भी इन संगठनों का सदस्य है। लेकिन इन संगठनों पर रूस और चीन का प्रभाव पहले से कहीं अधिक बढ़ गए हैं। भारत को नई परिस्थितियों में अपनी भूमिका का निर्धारण करना होगा। चीन ग्लोबल साउथ के नेता के रूप में उभरने के लिए बहुत सक्रिय है। रूस और चीन के संयुक्त वक्तव्य में भी ग्लोबल साउथ को केंद्र में रखा गया है। भारत स्वयं को ग्लोबल साउथ का स्वाभाविक नेता मानता है। लेकिन अपनी आर्थिक और सैनिक क्षमताओं के कारण चीन अपना प्रभाव लगातार बढ़ा रहा है।

समृद्ध नैतिकता आधारित शिक्षा नीति की जरूरत

विमर्श

संजीव ठाकुर

हर राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा का महत्त्वपूर्ण किरदार होता है। जिस राष्ट्र में शिक्षा, संस्कृति जितनी गहरी और समृद्ध हो वह राष्ट्र उतना ही विकसित, पुष्पित, पल्लवित होता है। इसके साथ आर्थिक तथा वैज्ञानिक सोच भी विचारणीय है। वैचारिक और सैद्धांतिक अंतरधारा, सिद्धांतों को कुचला या नष्ट नहीं किया जा सकता। व्यक्तिगत वैचारिक अभिव्यक्ति भारत के संदर्भ में गणतंत्र की मूल आत्मा है। विचार और सिद्धांत व्यक्ति की अंतःप्रज्ञा होती है। यदि यही सिद्धांत और अंतः प्रज्ञा जनमानस आत्मसात कर लेता है, तो इसका प्रभाव एक जन आंदोलन का रूप ले लेता है और यहीं से युग परिवर्तन की लहर उत्पादित होती है। प्राचीन यूनान में एक बहुत ही कुरूप किंतु विद्वान व्यक्ति रहते थे, उनके विचारों में मौलिकता, नयापन जनजागृति की अद्भुत क्षमता थी। उनकी विद्वता के कारण आम जनमानस होने राजा से ज्यादा महत्त्व और बुद्धिमान मानते थे। राजकीय तानाशाही के चलते उनके विचारों के कारण उनको मृत्युदंड दे दिया गया। जहर का प्याला पीने के बाद भी विद्वान, चिंतक, सुकरात अमर हो गए, उनकी विचारधारा आज भी जीवित है एवं लोग उसे अपना कर अपना जीवन सुधारने में इसका उपयोग करते हैं। अब्राहम लिंकन ने अमेरिकी स्वतंत्रता के बाद दास प्रथा के बारे में कहा था कि दास भी मनुष्य हैं, उन्हें भी उतना ही जीने का अधिकार है जितना स्वामी को है। अब्राहम लिंकन के आंदोलनकारी विचार से तत्कालीन अमेरिका के लोग घबरा गए और उनकी हत्या कर दी गई थी। पर अब्राहम लिंकन के विचारों ने दास प्रथा के उन्मूलन की अंतर आत्मा को जागृत कर दिया था, और जनमानस ने अपने अधिकारों के लिए लड़ते हुए दास प्रथा से मुक्ति पाई थी।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि हम जो सोचते हैं, वही बन जाते हैं। विवेकानंद के विचार सर्वकालीन प्रासंगिक हैं। आज हमारे बीच विवेकानंद सशरीर मौजूद नहीं हैं पर उनके विचारों की महत्ता कायम है। भौतिक शरीर के नष्ट हो जाने से और भौतिक विचार तथा सिद्धांत उतनी ही तीव्रता रखते हैं, वेग रखते हैं, जो एक समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। विचारों के संदर्भ में कहा जाता है कि एक व्यक्ति का विचार तब तक उस व्यक्ति के पास है, जब तक वह अकेला है किंतु जैसे ही विचारधारा एवं सिद्धांत का प्रचार-प्रसार होता है, तो उस जैसे हजारों लाखों लोग उसके साथ हो जाते हैं। तब वह अपने विचारों के माध्यम से जन सामान्य को प्रभावित कर उस लड़ाई में शामिल कर लेता है। विचारों सिद्धांतों की तीव्रता आवेश तथा सघनता किसी भी क्रांतिकारी लक्ष्य की प्राप्ति में एक बड़ा साधक हो सकता है। विचार व सिद्धांत एक से दूसरे व्यक्ति तक स्थानांतरित होते रहते हैं जिसमें विचारों को सघनता प्राप्त होती है ताकि सत्ता के दमन के समय वैचारिक अमरता स्थायी बनी रहे। चीन, उत्तर कोरिया जैसे राष्ट्रों में विचारों के इस स्वतंत्र का प्रवाह को बाधित नियंत्रित कर दिया गया। वहां विचार और सिद्धांत विद्वान व्यक्ति तक ही सीमित रहे, उसका फैलाव या विस्तार नहीं हो पाया। स्वस्थ स्वतंत्र राष्ट्र के लिए व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विचारों की स्वतंत्रता, नवीनता तथा उत्कृष्टता आवश्यक है क्योंकि विचारधारा और सिद्धांतों को रोक पाना किसी भी सत्ता या निरंकुश राजा के नियंत्रण में नहीं होता। विचार और सिद्धांत अनादि काल से गतिशील हैं तथा अनंत तक जगत तक गतिशील रहेंगे, और उनका प्रतिपादक एवं अनुशीलनकर्ता विचारों के साथ अमर हो जाते हैं।

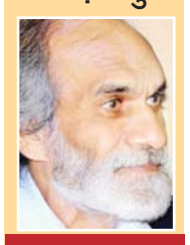

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

झल्लन की पाती पढ़िए महामानव

बतंगड़ बेतुक

विभांशु दिव्याल

हे महानायक, भारत भारतीयता के परम उन्नायक, राष्ट्रभक्ति के पुरोधा, हिंदुत्व के संरक्षक, हिंदुत्व विरोधियों के भक्षक, भारत को दुनिया की तीसरी महाशक्ति बनाने की चाह रखने वाले, देश सेवा को समर्पित और अपनी अनथक ऊर्जा के लिए चर्चित, अपनी भाषण शैली और वाग्मिता का लोहा मनवाने वाले और अपने हर कटु विरोधी का क्रूर मजाक उड़ाने वाले, हे देव पुरुष, यह अदना सा झल्लन आपकी सेवा में अपना प्रणाम भेज रहा है और अपनी छोटी क्षुद्र हैसियत से आपके विराट व्यक्तित्व की तरफ थोड़ी उम्मीद से देख रहा है।

वैसे न हम आपके वो भक्त हैं जो दिमाग बंद कर ताली पीटते हुए पीछे चल देते हैं, न हम आपके नेत्रबंद निंदक हैं जो आपका नाम सुनते ही बोलों-कुबोलों के डंडे लेकर आप पर पिल पड़ते हैं। अगर हमें किसी की कोई चीज अच्छी लगती है तो खुशी से नाचते नहीं, थोड़ी सी तारीफ कर देते हैं और बुरी लगती है तो गाली नहीं देते, थोड़ी सी आलोचना कर देते हैं। हमें वो आदमी अच्छा लगता है जो ईमानदारी की बात कर रहा हो तो ईमानदार लग भी रहा हो, दूसरों को जगाने की बात करता हो तो खुद जग भी रहा हो। आपकी ईमानदारी पर हम शक नहीं करते पर जब आप अपने हर दुश्मन को बेईमान बताने लगते हैं तो हमारे दिमाग के तार झनझनाने लगते हैं, हमें आपकी राष्ट्र भक्ति पर कोई संदेह नहीं होता पर जब आप अपने हर चुनावी दुश्मन को राष्ट्रद्रोह का तमगा पहनाते हैं तो हमारे चेतना तंतु तिलमिलाने लगते हैं।

आपका विकृतीकरण बोध विराट है जिसका किसी के पास न कोई इलाज है और न कोई काट है। जो चीज लोगों को खुर्दबीन से भी दिखाई नहीं देती आप उसे ही खोज लाते हैं, लोगों के दिमागों में आपकी बातें भले ही न अटें पर आप उन्हें जबरन ला अटाते हैं। तथ्य और तर्क आपको दंडवत करते हैं, विचार आपके आगे पानी भरते हैं। तिल को ताड़ बना देने की बात तो पुरानी हो गयी है आप तो बिछी घास को बरगद का झाड़ बता देते हो, मिट्टी के छोटे से डूह को विंध्याचल पहाड़ बना देते हो। आप चींटी के काटे में सर्पदंश दिखा देते हो, वाराह की चिचिआहट को हाथी की चिंघाड़ बता देते हो, बिलोंटे की खोंख को शेर की दहाड़ बना देते हो। जहां रेगिस्तान होता है वहां समंदर दिखा देते हो और जहां समंदर होता है उसे बंजर रेगिस्तान बता देते हो। जहां गिलट के बिछुए तक नहीं छिन रहे थे वहां आपने मंगलसूत्र छिनवा दिये। जहां रेजगारी तक नहीं बंट रही थी वहां आपने घर, दुकान, मकान बंटवा दिये। आपने खाने की थाली में से मीट, मछली निकलवा लिये और चुनाव की मंडी में बेभाव बिकवा दिये। आपने दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों को ललकारकर जगा दिया, उनका हिस्सा मुसलमानों को दे दिया जाएगा, यह डर भी दिखा दिया। उधर आपके विरोधी चिल्ला-चिल्लाकर इन्हीं दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों को बता रहे हैं कि आप फिर से सत्ता में आ जाएंगे तो इनका आरक्षण खत्म कर दिया जाएगा यानी एक कान पकड़कर जो डर आप दिखा रहे हैं, दूसरा कान पकड़कर वही डर वे भी दिखा रहे हैं। यही वह बिंदु है कि हम उनकी बात पर तो भरोसा करते ही नहीं हैं आपकी बात पर भी भरोसा नहीं कर पा रहे हैं।

आगे यह बात भी हमारी समझ में नहीं आयी कि वे कौन से खयाल थे या कौन से विचार थे जो आपको अचानक छा लिये कि आपने अडानी, अंबानी के घर से टेम्पो भर-भर के नोट राहुल बाबा के घर पहुंचवा दिये। इससे तो अच्छा होता कि आप वे टेम्पो हम बेचारे झल्लन के घर भिजवा दिये होते, हमारे बहुत से काम निकल गये होते और हम और हमारे अड़ोसी-पड़ोसी सब खुश हो लिये होते। खैर, वो आपका और राहुल बाबा के बीच का मामला है सो राहुल बाबा जानें और आप जानें पर हमारा संकट ये है कि हम आपको जानें तो किस तरह जानें, पहचानें तो किस तरह पहचानें। वैसे हम आपको साफ-साफ बताए देते हैं कि कभी-कभी आपके विरोधी हमें भी वैसे ही खटकते हैं जैसे आपको खटकते हैं, खासकर तब जब वे अपने पापों की गठरी आपके सर ला पटकते हैं, जब वे देश की हर मौजूदा बुराई की जड़ आपको दिखाते हैं और आप जैसे जनता के चुने प्रतिनिधि को तानाशाह बताते हैं। वे हमें बुरे लगते हैं जब वे आपको गालियां देते हैं, आप पर भद्दे कटाक्ष करते हैं, आपका मजाक उड़ाते हैं, आपके प्रति अमर्यादित शब्दावली पर उतर आते हैं, आपके अश्लील मीम बनवाते हैं, आपके झूठे वीडियो सोशल मीडिया पर चलवाते हैं और आपके प्रति दुश्मनी निभाने के लिए शालीनता और शिष्टता को नंगा नचाते हैं।

हे महामानव, इससे भी ज्यादा बुरा हमें तब लगता है जब आप भी शिष्टता और शालीनता को धता बता देते हैं, सार्वजनिक जीवन की मर्यादा को परे खिसका देते हैं और विरोधियों को नीचा दिखाने के लिए खुद भी कई सीढ़ियां नीचे उतर आते हैं। काश, आप थोड़ा ऊंचा उठ पाते, देश की धर्म-जाति-क्षेत्र-विचार में बंटी जनता को समरसता में परख पाते। आप किसी एक वर्ग-सम्प्रदाय के नहीं संपूर्ण भारत के नेता हो पाते तो हम झल्लन आपके चरणों में दंडवत हो जाते।

> जहां रेगिस्तान होता है वहां समंदर दिखा देते हो और जहां समंदर होता है उसे बंजर रेगिस्तान बता देते हो। जहां गिलट के बिछुए तक नहीं छिन रहे थे वहां आपने मंगलसूत्र छिनवा दिये। जहां रेजगारी तक नहीं बंट रही थी वहां आपने घर, दुकान, मकान बंटवा दिये। आपने खाने की थाली में से मीट, मछली निकलवा लिये और चुनाव की मंडी में बेभाव बिकवा दिये। आपने दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों को ललकारकर जगा दिया, उनका हिस्सा मुसलमानों को दे दिया जाएगा, यह डर भी दिखा दिया। उधर आपके विरोधी चिल्ला-चिल्लाकर इन्हीं दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों को बता रहे हैं कि आप फिर से सत्ता में आ जाएंगे तो इनका आरक्षण खत्म कर दिया जाएगा...

राष्ट्रीय सहारा

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।

दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750

वर्ष-33, अंक 275 — आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

https://t.me/AllNewsPaperPaid

मैं हर उस महिला के साथ खड़ी हूं जो पीड़ा में है, फिर चाहे वो दिल्ली की हो या मणिपुर की। उत्तराखण्ड और पश्चिम बंगाल से लेकर गुजरात तक की सभी महिलाओं की पीड़ा मुझे दुखी करती है। पीड़ितों में जाति, धर्म, पॉलिटिकल पार्टी या राज्य के आधार पर भेदभाव करना एक आला दर्जे की धूर्तता है। मैं ऐसी धूर्तता के खिलाफ हूं।
—नेहा सिंह राठौर, लोक गायिका@nehafolksinger

भक्ति

एस.वी. सिंह 'प्रहरी'

कर्मचक्र का स्रोत भवसागर

संसार में विभिन्न आध्यात्मिक मंचों से इस सांसारिक जीवन से मुक्ति प्राप्त करने को भवसागर पार करने की संज्ञा दी गई है। यहां भवसागर का अर्थ है 'भावनाओं का सागर'। वास्तव में 'भवसागर' जीव की जीवन यात्रा से सीधे जुड़ा है। जिस प्रकार वातावरण के प्रभाव से समुद्र सदैव क्रियाशील रहता है, उसी प्रकार मनुष्य की भावनाएं भी उसे अपना प्रारब्ध कर्म करने के लिए प्रेरित करती रहती हैं, और उसके समक्ष ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर देती हैं कि वह अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाता है और पूर्व से तय कर्म के क्रियान्वयन के लिए आगे बढ़ जाता है।

वस्तुतः मनुष्य की जीवन यात्रा दैहिक, दैविक एवं भौतिक वातावरण के अधीन चलती है, और उसकी संपूर्ण गतिविधि पूर्व से तय होती हैं, जिनके आधार पर ही मनुष्य के शरीर में ग्रह/नक्षत्रों की ऊर्जा विद्यमान होती है। जब ब्रह्मांड में ग्रह/नक्षत्रों के गोचर होते हैं, तो हमारे शरीर में विद्यमान संबंधित ग्रह/नक्षत्र भी क्रियाशील होकर अपने मूल आचरण के अनुरूप पूर्व से तय कर्मों के क्रियान्वयन हेतु मन में विचारों की उत्पत्ति करना प्रारंभ कर देते हैं। परंतु सुख अथवा दुःख के विषय का क्रियान्वयन प्रकृति अपने व्यवस्थाओं से दैहिक, दैविक एवं भौतिक गुणों के वातावरण से तय कराती है अर्थात् मनुष्य के मन-मस्तिष्क में उपजे विचार/भावनाएं इतनी प्रबल हो जाती हैं कि वह अपने दैहिक संतुलन/असंतुलन का कारक स्वयं बन जाता है अर्थात् अपने विचारों/भावनाओं के अनुरूप ही अपने दैनिक भोजन/खानपान, कपड़ों के रंग एवं घर/कार्यालय की साज-सज्जा आदि क्रियाकलाप के वातावरण का चयन करता है जिससे उसकी भावनाएं उसे संसार के ऐसे भौतिक वातावरण में लेकर जाती हैं, जहां वह स्वयं पूर्व तय कर्म के क्रियान्वयन का कारक बनकर सुख-दुःख के परिणामों को अनुभव करता है।

इसके अतिरिक्त दैविक कारक भी हैं, जिनके अंतर्गत संसार में बहुत से अच्छे-बुरे दैवीय प्रभाव होते हैं, जिनसे प्रभावित होकर व्यक्ति अपने तय कर्म का परिणाम ग्रहण करता है। जैसे यदि किसी जल प्रधान व्यक्ति का जन्म ऐसे क्षेत्र में हुआ हो, जहां पर सदैव 40 डिग्री से अधिक का तापमान रहता हो, तो निचित रूप से उसके मूल स्वभाव को कष्ट होगा अथवा अचानक कहीं पर बिजली गिरने से कोई व्यक्ति घायल हो जाए तो इस प्रकार से भी दैवीय व्यवस्था से प्रारब्ध का क्रियान्वयन सुख-दुख के रूप में प्रत्यक्ष होता रहता है।

क्या इनसे बचने का कोई उपाय है? यदि इस प्रश्न पर विचार करें तो वैदिक शोध में यह बात निकल कर आ रही है कि यदि संसार में कुछ भी सृजित हुआ है, वह स्वस्थ, संरक्षित एवं दीर्घायु भी रह सकता है। साथ ही, सांसारिक जीवन यात्रा में छोटी-बड़ी तकलीफों को दूर करने के उपाय भी हैं परंतु उस ओर गहन विचार करना होगा और जानना होगा कि हमारा मूल आचरण किस प्रवृत्ति का है। यहां प्रवृत्ति का अर्थ पंच तत्वों की ऊर्जा से संबंधित है। उस

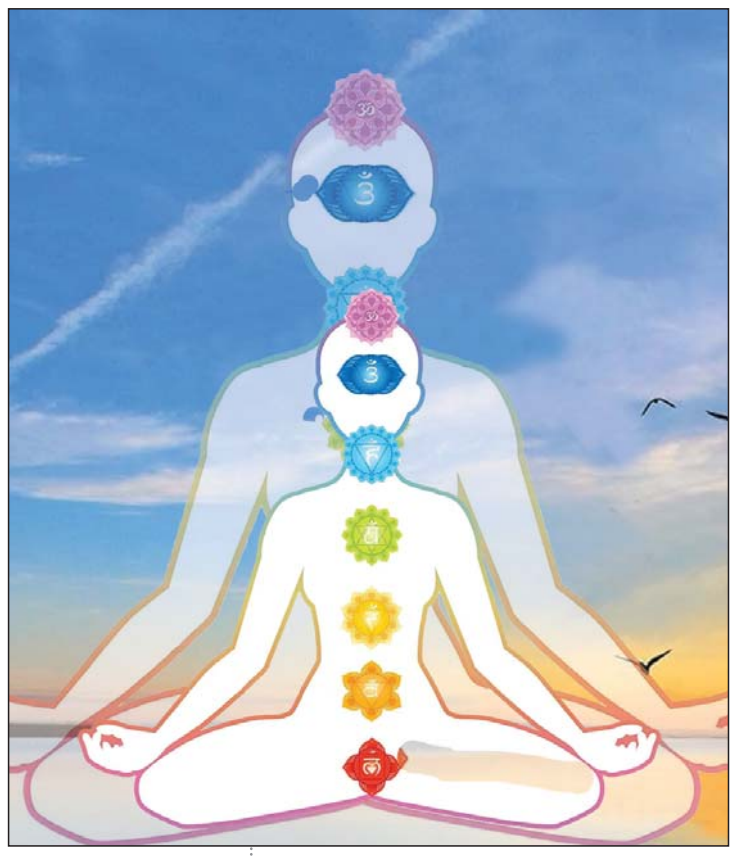

दृष्टिकोण से हमारे अंदर सत्, रज एव तम में से क्रमवार कौन-सा गुण सबसे अधिक है अर्थात् किस गुण की ओर हमारा आकर्षण सबसे अधिक हो रहा है, हमारी भावनाएं किस तत्व/गुणों की ओर अधिक है, इस संबंध में आपको विचार एवं विश्लेषण करके अच्छे कर्म एवं गुणों के क्रियान्वयन को ग्राह्य करना चाहिए तथा नकारात्मक एवं विध्वंसकता की ओर ले जाने वाले विचारों से दूरी बनानी चाहिए तो काफी हद तक कष्ट/तकलीफों को कम किया जाना संभव है। अब प्रश्न उठता है कि जब ईश्वर ने ही सब कुछ तय किया है, तो फिर मनुष्य के पास करने के लिए स्वतंत्र कर्म क्या है? इसके लिए ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि जैसा बहुमूल्य रत्न प्रदत्त किया है जिसके आधार पर मनुष्य को कर्म के क्रियान्वयन के स्वरूप में चयन का अधिकार प्रदान किया है अर्थात् हर मनुष्य को सच-झूठ, अच्छाई-बुराई, सकारात्मक-नकारात्मक आदि का मूल ज्ञान होता ही है। ऐसे में प्रबल भावनाओं से उत्पन्न इच्छा से कर्म को अंजाम देते समय हमें सदैव सच, अच्छाई एवं सकारात्मक आदि परिणाम वाले कर्मों का चयन करते हुए शेष के परित्याग करने की आदत डालनी चाहिए ताकि प्रारब्ध कर्म के परिणाम सकारात्मक-सुखमय रहें। उदाहरणार्थ-हम सभी को पता है कि अधिक मात्रा में लाल मिर्च खाने से शरीर में भोजन की नली/अमाशय में विभिन्न असाध्य रोग हो सकते हैं परंतु यदि पूर्व प्रारब्ध में तय है कि अमुक व्यक्ति के पेट में अल्सर होगा तो ऐसे में उसकी मूल भावनाओं में बार-बार तीखा मसाला खाने की प्रबलता बढ़ जाती है जिसके कारण वह अपनी आदतों पर अंकुश नहीं लगा पाता है। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि अच्छे-बुरे विषयों/कार्यों के परिणामों का ज्ञान होते हुए भी दैहिक, दैविक एवं भौतिक वातावरण में हम ऐसे गुणों/वस्तुओं/वातावरण को ग्रहण करते हैं जिससे हमें तकलीफ होती है तो फिर परिणाम के लिए भी हम मनुष्य ही दोषी हैं। वहीं पर यदि हम अपने अंदर उठने वाली भावनाओं पर अंकुश रखकर लाभ/हानि का विश्लेषण कर कोई निर्णय लें तो निश्चय ही तय कष्टकर परिणामों में कमी हो सकती है। अतएव मनुष्य को अपनी बुद्धि का प्रयोग कर अपने कर्मों के क्रियान्वयन में ईश्वरीय आशीर्वाद के रूप में प्रदत्त कर्मों के चयन के अधिकार का सार्थक एवं सकारात्मक उपयोग करते हुए संतुलित जीवन जीकर भवसागर को पार करने का सफल प्रयास करना चाहिए। ■

वस्तुतः मनुष्य की जीवन यात्रा दैहिक, दैविक एवं भौतिक वातावरण के अधीन चलती है, और उसकी संपूर्ण गतिविधि पूर्व से तय होती हैं, जिनके आधार पर ही मनुष्य के शरीर में ग्रह/नक्षत्रों की ऊर्जा विद्यमान होती है। जब ब्रह्मांड में ग्रह/नक्षत्रों के गोचर होते हैं, तो हमारे शरीर में विद्यमान संबंधित ग्रह/नक्षत्र भी क्रियाशील होकर अपने मूल आचरण के अनुरूप पूर्व से तय कर्मों के क्रियान्वयन हेतु मन में विचारों की उत्पत्ति करना प्रारंभ कर देते हैं। परंतु सुख-दुःख के विषय का क्रियान्वयन प्रकृति अपनी व्यवस्थाओं से दैहिक, दैविक एवं भौतिक गुणों के वातावरण से तय कराती है अर्थात् मनुष्य के मन-मस्तिष्क में उपजे विचार/भावनाएं इतनी प्रबल हो जाती हैं कि वह अपने दैहिक संतुलन/असंतुलन का कारक स्वयं बन जाता है अर्थात् अपने विचारों/भावनाओं के अनुरूप ही भोजन/खानपान, कपड़ों आदि चुनता है

फिल्मी दास्तां

अजय कुमार शर्मा

कैमरामैन से कैसे बने निर्देशक

'जागते रहो' (1956) फिल्म में एक छोटी भूमिका में अंतिम बार आने के बाद जब नर्गिस ने आरके स्टूडियो छोड़ दिया तो राज कपूर बुरी तरह टूट गए। 'आग' फिल्म के बाद से ही नर्गिस उनकी प्रेरणा बन गई थीं। वह स्वीकार ही नहीं कर पा रहे थे कि नर्गिस ने उन्हें हमेशा के लिए छोड़ दिया है। राज नायक के रूप में बाहर की फिल्में लेने लगे ताकि नर्गिस को भूल सकें और आरके फिल्म का बैनर भी बचा रहे। लेकिन 1959 के आते आते आरके फिल्म के हालात काफी बिगड़ गए। अब एक फिल्म तुरंत बनाई जानी थी ताकि यह कलंक धुल सके कि नर्गिस के चले जाने के बाद आरके स्टूडियो खत्म हो गया है, और अब राज कपूर फिल्म नहीं बना सकते हैं।

इसी समय अर्जुन देव रश्क एक भोले भाले व्यक्ति पर केंद्रित एक सशक्त पटकथा लेकर आए जिसके पास डाकुओं को सुधारने का एक अनोखा विचार था। 'जिस देश में गंगा बहती है' नामक इस फिल्म की कहानी और पटकथा, दोनों ही बहुत शानदार थे। राज कपूर इस पर मुग्ध हो गए। लेकिन अभी राज कपूर स्वयं निर्देशन की बात सोच भी नहीं पा रहे थे। इस बीच दिलीप कुमार ने भी डाकुओं पर केंद्रित ग्रामीण पृष्ठभूमि की एक फिल्म 'गंगा जमुना' टेक्निकलर (रंगीन) बनाने का फैसला किया जिसके निर्देशक नितिन बोस थे। उन्होंने आरके फिल्म के नियमित कैमरामैन राधू करमाकर से यह टेक्निकलर फिल्म करने का अनुरोध किया। आरके फिल्म की खराब आर्थिक स्थिति देखते हुए उन्हें यह प्रस्ताव ठीक लगा। लेकिन आरके फिल्म की 'आवारा' फिल्म से वे उनकी टीम के विश्वस्त कैमरामैन थे और राज कपूर उन पर बहुत भरोसा करते थे। यह बात जब राज कपूर को पता चली तो उन्होंने बहुत चतुराई से 'जिस देश में गंगा बहती है' के निर्देशन का प्रस्ताव राधू करमाकर के सामने रख दिया। साथ में आरके फिल्म की तंगहाली और उसकी टीम को

उनकी जरूरत का भी अहसास कराया। ऐसी स्थिति में राधू करमाकर मना नहीं कर पाए और इस तरह 'जिस देश में गंगा बहती है' का निर्देशन उन्होंने स्वीकार कर लिया।

1959 में यह फिल्म रिलीज हुई और गजब की हिट रही। संगीत निर्देशक शंकर जयकिशन की जोड़ी का मानना था कि फिल्म की कहानी बहुत अच्छी नहीं है, और इसमें संगीत के लिए गुंजाइश नहीं है। फिर भी इसका संगीत लाजवाब था। शंकर जयकिशन की सर्जनात्मकता इसमें अपने सर्वोच्च ग्रुप में प्रकट हुई थी। फिल्म में 13 गाने थे और हर एक गाना सुपरहिट था। आरके स्टूडियो में एक बार फिर से जीवन का संचार हो गया और उसकी खुशहाली फिर लौट आई।

चलते चलते...

फिल्म की सफलता के बाद कहा जाने लगा कि फिल्म तो राज कपूर ने ही निर्देशित की थी। ऐसा ही 'साहब बीवी और गुलाम' के निर्देशक अबरार अल्वी के लिए कहा गया कि फिल्म तो गुरु दत्त ने ही निर्देशित की और 'गंगा जमुना' का निर्देशन भी नितिन बोस के स्थान पर दिलीप कुमार ने किया था। इस का जवाब राधू करमाकर ने अपनी आत्मकथा में बहुत सही लिखा है कि यदि ये तीनों फिल्में असफल हो गई होतीं तो कोई भी राज कपूर, गुरुदत्त और दिलीप कुमार का नाम निर्देशक के रूप में नहीं लेता। सच है कि सफलता के सैकड़ों दावेदार लेकिन असफलता का कोई एक...। ■

सपनों को साकार कर दिया संदेश

ये कदम जब चल दिए मंजिल पाने की ओर, तो फिर रास्तों की मुश्किलों की किसको परवाह। नई दिल्ली में चले इंडियास्किल्स प्रतियोगिता-2024 में महिलाओं की भागीदारी एक विश्वास की कहानी बयान कर रही है। साबित कर रही है कि कौशल और प्रतिभा, जेंडर से बाधित नहीं होती। यह मंच महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान करने के केंद्र के विजन को भी बढ़ावा दे रहा है। इंडियास्किल्स-2024 का मंच ऐसे ही साहसी और अपने इरादों की मजबूत महिलाओं की कहानी बयान कह रहा है।

कृष्णा ने सपनों को साकार-

सिक्किम की रहने वाली कृष्णा ने हालात से लड़ने के प्रयास में कुछ ऐसा किया जो दिशा के बिल्कुल विपरीत था। अपने इसी प्रयास से कृष्णा इंडियास्किल्स प्रतियोगिता के मंच तक आ पहुंची हैं। जीवन की यह लंबी यात्रा कृष्णा के लिए बहुत सरल और सहज नहीं थी। कृष्णा ने जीवन में आगे बढ़ने के लिए कठिन फैसले लिए हैं। कहती हैं, 'इंडियास्किल्स प्रतियोगिता कौशल को बढ़ावा देकर व्यक्तिगत विकास को बढ़ाती है। मेरे कौशल में हुई वृद्धि से मुझे निर्णय लेने में आसानी होती है। भविष्य में अपने कौशल के द्वारा मैं एक स्वस्थ एवं खुशहाल समाज में अपना योगदान देना चाहती हूं।'

अर्पिता ने कठिनाइयों को एक सुनहरे भविष्य में बदला-

अपने सपनों की मंजिल तक पहुंचने के लिए ओडिशा के कंधमाल जिले के जी. उदयगिरि की रहने वाली अर्पिता ने जीवन में कठिन से कठिन परिस्थितियां भी देखीं। लेकिन एक बात है जो अर्पिता को हमेशा आगे बढ़ाती रही, वो है उनके नेक इरादे और दृढ़-संकल्प। आज अपनी मेहनत और लगन से अर्पिता ने इंडियास्किल्स मंच पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इंडियास्किल्स में भाग लेने से अर्पिता को तकनीकी कौशल को निखारने, राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने और उद्योग विशेषज्ञों के साथ अपना अनुभव साझा करने का अवसर मिला है। इस प्रतियोगिता से अर्पिता को एक उज्ज्वल भविष्य की नई किरण दिखाई देने लगी है। अर्पिता को पूरा विश्वास है कि वह इस कौशल प्रतियोगिता की विजेता बनकर अपने राज्य का नाम अवश्य रोशन करेगी।

मृदुमिता ने हौसलों को दी नई उड़ान-

लोगों को सुंदर बनाने का ख्वाब लेकर अपने जीवन में कुछ नया करने वाली मृदुमिता ने कॉस्मेटोलॉजी स्किल्स में सभी को प्रभावित किया है। 12वीं पास मृदुमिता आज आईटीआई की पढ़ाई करते हुए अपने सपनों को साकार करने की दिशा में निरंतर बढ़ रही हैं। मृदुमिता कठिन परिश्रम और लगन से सुनहरे भविष्य का निर्माण करते हुए इंडियास्किल्स के मंच तक आ पहुंची हैं। कहती हैं, 'इंडियास्किल्स ऐसा बड़ा प्लेटफॉर्म है जो युवाओं के अंदर एक नया जोश और उत्साह भर देता है। मुझे खुशी है कि एक छोटे से कस्बे से निकलकर मैं राजधानी दिल्ली तक पहुंची हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि इंडियास्किल्स प्रतियोगिता की विजेता बनकर मैं ल्योन, फ्रांस में भारत का सफल नेतृत्व करूंगी।' इंडियास्किल्स के विजेता, सर्वश्रेष्ठ उद्योग प्रशिक्षकों की मदद से, सितम्बर, 2024 में फ्रांस के ल्योन में होने वाली वर्ल्डस्किल्स प्रतियोगिता के लिए तैयारी करेंगे जिसमें 70 से अधिक देशों के 1,500 प्रतियोगी एक साथ आएंगे।

■ प्रस्तुति : राजीव मंडल

राग रंग | आलोक पराड़कर

चुनाव के दौर में कलाएं

प्रसिद्ध कथाकार-उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य को राजनीति के आगे चलनी वाली मशाल कहा था, लेकिन चुनावों में कला-साहित्य कभी मुद्दा नहीं रहा। कलाओं के संरक्षण के लिए क्या योजनाएं हो सकती हैं, कलाकारों के प्रोत्साहन के लिए कैसी नीति होनी चाहिए, संस्कृति से जुड़ीं अकादमियों-संस्थानों को किस प्रकार काम करना चाहिए, इन सारी बातों को लेकर प्रायः उदासीनता ही दिखती है, उन नगरों में भी जहां साहित्य-संस्कृति की समृद्ध विरासत है। चुनाव के दौर में संस्कृतिकर्मी भले यदा-कदा अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हों मगर कला-साहित्य की चर्चा किसी एजेंडे में नहीं मिलती।

आज भी दौर याद आता है जब कोरोना काल में कलाकारों को भी गंभीर आर्थिक संकट से गुजरना पड़ा था। लंबे समय तक सांस्कृतिक गतिविधियां ठप हो जाने से समस्या हो गई थी। एक कारण यह भी था कि कलाकारों-साहित्यकारों को आर्थिक संरक्षण देने की कोई ठोस योजना कभी बनी ही नहीं। कुछ निजी संस्थाओं और लोगों ने थोड़ी सहायता की थी और तब लगा था कि भविष्य में ऐसी परिस्थितियों से मुकाबले के लिए कोई कारगर नीति बनाई जाएगी लेकिन ऐसा न हो सका।

कला और साहित्य के लिए सरकारी स्तर पर विभाग हैं, संस्थान और अकादमियां हैं, केंद्रीय स्तर पर और प्रदेश स्तरों पर भी। इन पर हर साल सरकारें करोड़ों रुपये खर्च करती हैं। बड़ी संख्या में अधिकारी-कर्मचारी इनमें काम करते हैं, इनके बड़े-बड़े भवन हैं। इन भवनों के सभागारों से भी इन्हें हर साल लाखों रुपये की आय होती है लेकिन कला-साहित्य के संरक्षण-प्रोत्साहन के लिए इनके पास ठोस नीतियों का अभाव है। ये अकादमियां और संस्थान माह में एक-दो कार्यक्रम कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेती हैं। कभी यह भी नहीं देखा जाता कि साल में कुछ कार्यक्रम करने वाली अकादमियों-संस्थानों पर करोड़ों रुपये खर्च करने का औचित्य क्या है? ऐसे कार्यक्रम तो निजी संस्थाएं अपने छोटे बजट में भी कर लेती हैं, और करती ही रहती हैं। वास्तव में इन पर ठहरकर विचार होना चाहिए, संस्कृतिकर्मियों के साथ बैठक कर योजनाएं बनाई जानी चाहिए, लेकिन ऐसा हो नहीं पाता। स्वायत्तता की जिस भावना से इन संस्थाओं का गठन हुआ था, वह भी अब समाप्त हो चली है। केंद्र में रंगमंडल, अनुदान की कुछ योजनाएं जरूर चलती हैं, लेकिन उनसे जुड़ने वाले संस्कृतिकर्मियों की संख्या भी बहुत कम है। वास्तव में इन अकादमियों-संस्थानों को ऐसी योजनाओं पर काम करना चाहिए जिनसे संगीत, कला, रंगमंच जैसे क्षेत्रों में काम करने वाले संस्कृतिकर्मियों की नियमित आय का जरिया बन सके और विभिन्न कला विधाओं में कार्य करने वाले लोग शौकिया नहीं, बल्कि पेशेवर ढंग से काम कर सकें। लोक कलाओं में तो बड़ी संख्या में ऐसे कलाकार हैं, जिनकी आय का साधन समय-समय पर होने वाले कार्यक्रम ही होते हैं। कार्यक्रम न मिल पाने पर उन्हें आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है। संस्कृतिकर्मियों को अपनी कलाओं से किस प्रकार नियमित आय होती रहे, अकादमी-संस्थान इसमें किस प्रकार अपनी भूमिका निभाए, इस पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। कई संस्थाएं संगीत-कला की प्रतियोगिताएं तो कराती हैं लेकिन उनके विजेताओं तथा प्रतिभाशाली प्रतियोगियों को नियमित तौर पर मंच नहीं दे पातीं। ऐसे में बड़ी संख्या में किशोर और युवा प्रतिभाशाली होते हुए भी दूसरे क्षेत्रों में चले जाते हैं। बनारस, लखनऊ, ग्वालियर जैसे नगरों में कुछ ऐसी योजनाएं भी बन सकती हैं, जो साहित्यकारों-कलाकारों से जुड़े स्थलों का संरक्षण कर उन्हें पर्यटन से जोड़ें। बनारस में कबीर, तुलसी, रैदास से लेकर भारतेंदु, प्रेमचंद, प्रसाद, रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी के निवास, प्रसिद्ध पत्रकारों, संस्कृत विद्वानों से जुड़े स्थलों, नागरी प्रचारिणी सभा, पराड़कर स्मृति भवन को शामिल करते पर्यटन की योजना बनाई जा सकती हैं।

उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, पं. रविशंकर, विदुषी गिरिजा देवी, पं. किशन महाराज, पं. सामता प्रसाद, विदुषी सितारा देवी, पं. महादेव प्रसाद मिश्र जैसे कलाकारों से जुड़े स्थलों के भ्रमण को भी शामिल किया जा सकता है। कबीरचौरा और रामापुरा की गलियां, जहां सुर-ताल गूंजते हैं भी संगीत रसिकों के आकर्षण के केंद्र हो सकते हैं। लखनऊ में अमृतलाल नागर, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा के निवास को लेकर योजना बनाई जा सकती हैं। लखनऊ प्रसिद्ध शायरों की प्रिय नगरी रही है लेकिन मीर तकी मीर जैसे प्रसिद्ध शायर की स्मृति भी यहां उपेक्षित है। बेगम अख्तर की मजार, भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय तथा साहित्य-संगीत से जुड़े दूसरे स्थलों को शामिल करते हुए यहां भी योजना बन सकती है। ज्यादातर नगरों में ऐसे कई साहित्यकारों-संगीतकारों के निवास स्थल उपेक्षित हैं। कई जगहों पर कोई सूचनापट तक नहीं हैं। रास्ते खराब हैं। वास्तव में ऐसी योजना हर उस नगर में बन सकती है जो साहित्यिक-सांस्कृतिक दृष्टि से संपन्न है। इन स्थलों पर पर्यटकों, साहित्य-संगीत के प्रेमियों के साथ ही विद्यार्थियों को भी नियमित तौर पर ले जाया जा सकता है। साहित्य-संस्कृति को लेकर कई नीतियां, योजनाएं बन सकती हैं, लेकिन चुनावों में सांस्कृतिक चेतना का अभाव ही झलकता है। ■

कैनवस | जय त्रिपाठी

कोलते: एक अकथनीय चमत्कार

जीवन जगत को देखने और उनके अर्थों को आद्यंत जानने की जो खामोश बेचैनी चित्रकार के चित्रों में दिखाई देती है या उनके संवेदनात्मक जीवनानुभव जिन संकेतों और रेखाओं-रंगों में गहराई से मूर्तित होता है, उसका एक बहुत ही विस्तृत एवं सजीव रूप प्रभाकर कोलते की कलाकृतियों में देखने को मिलता है। अमूर्तन के भवसागर के रूप में उनकी प्रदर्शनी नई दिल्ली के बीकानेर हाउस की एल.टी.सी कला दीर्घा में देखी जा सकती है। 'अन्स्पीकबल मिरिकल' शीर्षक से प्रदर्शित इस भव्य चित्र प्रदर्शनी को टैग आर्ट गैलरी ने आयोजित किया है और जॉनीएमएल ने क्यूरेट किया है।देश के प्रमुख अमूर्तवादी कलाकार कोलते की यह प्रदर्शनी उनकी कला यात्रा की अमूर्तता का पुनर्विलोकन है। उनके चित्रों का एकांत प्रवाह अभिव्यक्ति की खोज में अमूर्तन का रैखिक मार्ग है। चित्रकार कैंडिंस्की को अमूर्तन का वैचारिकी प्रदान करने का अगुवा माना जाना जाता है। उन्हें सामने रख कर जब आप कोलते की पेंटिंग देखते हैं, उन पर विचार करते हैं तो आपको महसूस होता है कि वे भी कला में एक खोजकर्ता ही हैं। पर उनके सपाट कैनवस भी उनकी रचनात्मक गहराई की थाह देते हैं।

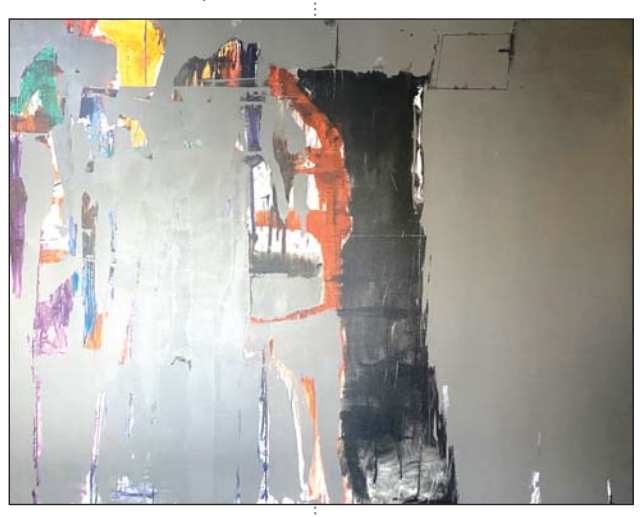

चित्रों की मोहक अमूर्तता ऐसे आयाम को दर्शाती है, जो आकारों को गतिशील रखती है, जो एक लयात्मक वेग से अनंत की ओर बह रही है। कोलते अपने अमूर्त चित्रों के माध्यम से किसी भी चीज़ के प्रति पहले अपने विस्मय को व्यक्त करते हैं। उनके शब्द हैं कि 'मेरे लिए प्रकाश और अंधेरे का हर घंटा एक चमत्कार है, अंतरिक्ष एक चमत्कार है, पृथ्वी की सतह का हर वर्ग गज समान रूप से फैला हुआ है, आंतरिक भाग का हर पैर एक समान है।' कोलते कला की दुनिया में एक शौकिया चित्रकार में आए और आज अमूर्तता का सम्मानित पर्याय बन गए हैं। यह उनकी साधना का वैशिष्ट्य है। लाल, हरे, नीले आदि रंगों के संयोजन तथा मोटी रेखाओं के माध्यम से कैनवस पर झलकते उनके चित्रों को जब आप देखें तो उनमें वे अपने अविदित दर्शक से अपनी बातें, अपने अनुभव, अपने दर्शन कहने को अधीर दिखते हैं। खुलते-बंद होते उनके चित्र आकारों व रंग-रूपों में एक-दूसरे के साथ जुड़कर एक नए अर्थ का संधान करते हैं। कोलते कहते भी हैं 'सार वह है जिसे हटा दिया जाता है और फिर वापस एक साथ लाया जाता है।' अनन्य और अनंत छवियों का विस्तार करते चित्रों में वे कैनवस के प्रतीकात्मक रूप बनाते हैं। इस तरह, वे एक दूसरे रंगों के बीच से झांकते कैनवस पर रंगों को बहने देते हैं। जो अंतिम रूप में अपनी अलग-अलग आकारों एवं संरचनाओं में दिखाई देते हैं। कोलते अपारदर्शी रंगों से ढके कैनवस के एक बड़े हिस्से को गहरे रंगों की ऐसी परतों से गढ़ते हैं, जो प्रकाश के प्रवाह को तथा नीले, हरे, लाल और रंगों के ब्रश स्ट्रोक से बने दृश्य अनुभवों की आंतरिकता के विस्तार की संभावनाएं पैदा करता है। कोलते एक नए ब्रह्माण्ड विज्ञान की कल्पना करते हुए इसकी असीमता का संकेत देते हैं। विशेष स्ट्रोक से ब्रह्मांडीय दृश्य रचते हैं, उनमें कुछ छवियां जोड़ते हैं, जो एक मंदिर के रूपों का उदाहरण बनते हैं। कोलते की रचनात्मक स्वतंत्रता न केवल चित्रफलक आधारित कलाकारी की सीमाओं के भी पार जाने की उनकी क्षमता को प्रदर्शित करती है बल्कि सामने फैली हुई क्षैतिज सतहों के बीच खुद को एक अंतरंग पैमाने की ओर खींचती है, जिसे मापा नहीं जा सकता। मौन क्षणों में कोलते छोटे आकार के कागजों पर भी काम करते हैं।

प्रभाकर कोलते की आभासी यात्रा विस्मित करती है। वे कहते हैं, 'मैं पहले देखता और फिर पेंटिंग नहीं करता बल्कि मैं पेंटिंग करता हुआ उसे देखता हूं।' इस तरह कोलते एक चित्रकार की प्रचलित सभी परिभाषाओं की चुनौती बन जाते हैं। समकालीन भारतीय कला के एक प्रमुख हस्ताक्षर प्रभाकर कोलते की कला में एक विरल बौद्धिकता है। क्यूरेटर जॉनीएमएल कहते हैं कि कोलते और उनके कैनवस के बीच केवल एक ही रिश्ता है, जो एक ही समय में बुद्धिमान और विचारोत्तेजक हैं। 1946 में महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के नेरुरपार नामक गांव में जन्मे प्रभाकर कोलते सर जे.जे.स्कूल ऑफ़ आर्ट, मुंबई से डिप्लोमाधारक हैं। उन्होंने 1972 से 1984 के बीच वहां पढ़ाया भी। प्रभाकर कोलते की कला अदृश्य को देखने की कला है। पर उनके चित्रों में कहानी जैसा कोई दृश्य नहीं होता। ऐसा कोई रूप नहीं है, जिसके माध्यम से आप किसी निश्चित कहानी तक पहुंच सकें। कोलते का अमूर्त संसार दृश्य दुनिया से अधिक मोहक है। वे आकर्षण के इस रहस्य को अपने चित्रों में उकेरने की कोशिश करते हैं, लेकिन पूरी तरह से नहीं खोलते, उनमें से कुछ बचा ले जाते हैं। आज कोलते को एक ऐसे अमूर्त कलाकार के रूप में पहचाना जाता है, जो सरलता से जटिलता की ओर जाते हैं। ■

https://t.me/NewsPaperPaid

एक्स से

डोनाल्ड ट्रंप 2020 में मुझसे दो बहस हार गए थे, तब से वह किसी बहस के लिए नहीं आए। अब वह ऐसा दिखा रहे हैं, जैसे मुझसे फिर से बहस करना चाहते हैं। आओ, मेरा दिन बनाओ दोस्त!- जो बाइडन/ अमेरिकी राष्ट्रपति

जीत के लिए जहर जरूरी नहीं

जहरीले बोल लोगों के दिलो-दिमाग में कड़वाहट घोल रहे हैं। ऐसा करते वक्त हमारे सियासतदां यह भी नहीं सोचते कि जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा और संप्रदाय की सियासत जाने-अनजाने कुछ ऐसे बबूल रोप जाती है, जो आने वाली पीढ़ियों के तन-मन को छलनी करते रहते हैं... अब इस घातक सिलसिले को रुक जाना चाहिए।

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

शशि शेखर

चौथे चरण के साथ लगभग 70 फीसदी निर्वाचन क्षेत्रों का नसीब ईवीएम में सील हो चुका है। पांचवें चरण से ऐन पूर्व क्या आपने देश के सियासी सूरमाओं की कथनी में कुछ बदलाव महसूस किया है? रह बची 30 प्रतिशत सीटों के लिए नए दावों, वायदों के साथ वाणी की कटुता चरम पर पहुंच रही है।

भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगियों का दावा है कि हम यह चुनाव जीत चुके हैं और अब तेजी से '400 पार' के लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने लखनऊ में अखिलेश यादव के साथ पत्रकारों को संबोधित करते हुए जवाबी तीर चलाया कि भारतीय जनता पार्टी चुनाव हार चुकी है और सभी चरणों में हमारी सीटों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जहां अपने तीसरे कार्यकाल को देश की तेज तरक्की को समर्पित करने की बात करते हैं, तो वहीं गृह मंत्री अमित शाह पीओके (पाक ऑक्यूपाइड कश्मीर) को फिर से भारत का हिस्सा बनाने का संकल्प दोहरा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने बिहार की एक जनसभा में यहां तक दावा किया कि हम पाकिस्तान को चूड़ियां पहना देंगे।

आजकल

यह पहला मौका है, जब भारत के प्रधानमंत्री और गृह मंत्री सार्वजनिक मंचों पर इतनी कठोर भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे पहले अंतरराष्ट्रीय दबावों की चिंता करते हुए इस तरह की बातें चांदी का वरक लगे अक्षरों में सजाकर एहतियात के साथ परोसी जाती थीं।

उधर, 'इंडिया' ब्लॉक की ओर से मल्लिकार्जुन खड़गे मुफ्त बंटने वाले अनाज को दोगुना बढ़ाकर दस किलो करने के साथ आरक्षण की सीमा 50 फीसदी से ऊपर ले जाने का वायदा कर रहे हैं। क्या यह संभव है? कांग्रेस के एक बड़े नेता से जब मैंने यह सवाल पूछा, तो उन्होंने ब्राजील का उदाहरण दे दिया। उनका कहना है कि ब्राजील में 'फ्रीबीज' के बेहतरीन परिणाम सामने आए हैं, तो भारत में ऐसे प्रयोग करने में क्या बुराई है?

हो सकता है, आप सोच रहे हों कि अंतिम पायदान की ओर बढ़ते चुनाव में वायदे और दावे क्यों नई रंगत ले रहे हैं? हमारे राजनेता आजादी के साथ ही रंग बदलना सीख गए थे। यही वजह है कि पश्चिम बंगाल में कांग्रेस से मोर्चा लेने वाली ममता बनर्जी ने भी सुर बदल लिए हैं। कल तक वह कांग्रेस को समूचे देश के पैमाने पर 40 सीटों से नीचे समेट रही थीं। अब उनका कहना है कि देश में इंडिया ब्लॉक 300 सीटें लाने जा रहा है और हम उसे बाहर से समर्थन करेंगे।

यह क्या लुकाछिपी है?

जवाब पेचदार है। ममता बंगाल में कांग्रेस और वाम दलों को दरकिनार कर शेष भारत में इंडिया ब्लॉक का समर्थन कर रही हैं। कभी कांग्रेस के दिग्गज नेता रहे कमलापति त्रिपाठी के प्रपौत्र ललितेश त्रिपाठी उत्तर प्रदेश में भदोही से टीएमसी के टिकट पर चुनावी खम ठोक रहे हैं। समाजवादी पार्टी ने अपने हिस्से से यह सीट उन्हें दी है। इस तरह कांग्रेस का अप्रत्यक्ष समर्थन ललितेश को हासिल है। ममता बनर्जी इंडिया ब्लॉक का लाभ लेने के साथ अपनी झोली का मुंह भी भींचे रखना चाहती हैं। कांग्रेस और वाम दल भी इसी रणनीति पर काम कर रहे हैं। वे केरल में गुत्थमगुत्था हैं, पर बंगाल में तृणमूल की तृष्णा के आड़े आ रहे हैं। इसी तर्ज पर आम आदमी पार्टी और कांग्रेस पंजाब में पंजा लड़ा रहे हैं, लेकिन दिल्ली और शेष देश में साथ खड़े हैं।

इस बीच मंदिर, मस्जिद, हिंदू, मुसलमान, कब्रिस्तान, श्मशान, औरंगजेब, जातीय गणना, हिन्दुस्तानियों के रंग और वर्ण जैसे जहरीले बोल भी लोगों के दिलो-दिमाग में कड़वाहट घोल रहे हैं। ऐसा करते वक्त हमारे सियासतदां यह भी नहीं सोचते कि जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा और संप्रदाय की सियासत जाने-अनजाने कुछ ऐसे बबूल रोप जाती है, जो आने वाली पीढ़ियों के तन-मन को छलनी करते रहते हैं। 1970 और 80 के दशक में पंजाब और उसके बाद के बीस साल कश्मीर में जो हुआ, वह इसका शर्मनाक उदाहरण है। एक और शर्मनाक, पर सबसे ताजा उदाहरण मणिपुर का है। कारगिल जंग के जांबाज की पत्नी के साथ जो हुआ, वह पनपती नस्लीय नफरत की बानगी है।

अब इस घातक सिलसिले को रुक जाना चाहिए।

यह खतरनाक सिलसिला रुक सकता है, अगर चुनाव आयोग अपने समूचे हक-हुकूक का समान भाव से तत्काल उपयोग करे। मैं यहां चुनाव आयोग और उसकी मशीनरी की मंशा पर प्रश्न नहीं उठाना चाहता, मगर अपनी निष्पक्षता का दावा करने वाला आयोग इस मुद्दे पर अपने नख-शिख क्यों नहीं आजमाता? वह जो कर रहा है, अच्छा कर रहा है, पर इतने मात्र से सभी सवालों का समापन नहीं हो जाता। एक उमगते और उफनते लोकतंत्र में तरह-तरह के प्रश्न तो हमेशा हर हाल में उपजते रहेंगे। उनको लंबे समय तक अनदेखा नहीं किया जा सकता।

यहां एक और महत्वपूर्ण सवाल सिर उठाता है। हमारे कुछ राजनीतिज्ञ इतनी गैर-जिम्मेदारी से कैसे बोल पाते हैं? क्या वे हमारी जम्हूरियत को सेंत-मेंत का मानते हैं?

उन्हें मैं एक किस्सा सुनाना चाहता हूं। पिछले साल की बात है। मैं कश्मीर घाटी में अनुच्छेद 370 की रुखसती के बाद आए बदलावों को खंगालने की कोशिश कर रहा था। उसी दौरान मुझे वह शख्स मिला। उसका एक पैर लुंज-पुंज स्थिति में लटका हुआ था। दूसरा भी सही तरीके से सड़क नहीं नाप पा रहा था। लाठी के सहारे किसी तरह वह अपने भाई के साथ बाजार में खरीदारी के लिए निकला था। उत्सुकतावश मैंने उसे रोका। बातचीत के दौरान पता चला कि जिला पंचायत के चुनाव के दौरान गांव में कुछ दहशतगर्द आए और लोगों को धमकाया कि अगर मतदान की कोशिश भी की, तो अंजाम बुरा होगा। उसे लगा कि यह कोरी गीदड़ भभकी है।

वोट डालने के तीसरे ही दिन उसकी टांगों पर कई गोलियां दाग दी गई थीं।

हो सकता है कि आपके मन में सवाल उठे कि दहशतगर्द टांगों पर गोली मार विदा क्यों हो गए? वे सीना भी तो छलनी कर सकते थे? मैंने भी यही पूछा था। उसका जवाब चौंकाने वाला था। आतंक और अलगाव के हमसाये उसे एक जीते-जागते प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल करना चाहते थे, ताकि लोग उसे देखें और खुद को 'इंडिया' द्वारा 'प्रायोजित' चुनाव से दूर रखें। आप जानते हैं, इन चुनावों में इस तरह के तत्व असफल रहे और चौथे दौर के मतदान में घाटी के लोगों में जो उत्साह दिखा, वह सीमा पार से प्रायोजित आतंक के मुंह पर जोरदार तमाचा है। मैं उस शख्स का यहां जान-बूझकर नाम नहीं लिख रहा, पर कश्मीर के अलावा पूर्वोत्तर के अलगावग्रस्त और छत्तीसगढ़, झारखंड के साथ महाराष्ट्र के नक्सल प्रभावित इलाकों में ऐसे दर्जनों लोग मिल जाएंगे, जिन्होंने लोकतंत्र की नींव को अपने खून से सींचा है।

मैं यहां ससम्मान सुरक्षा बलों के शहीदों के परिजनों की भी याद दिलाना चाहूंगा। अपने देश और इसकी कानून-व्यवस्था को कायम रखने के लिए उनके स्वजनों ने घर-बाहर कभी भी जान कुर्बान करने में मामूली सी हिचक तक नहीं दिखाई। कौन कहता है कि जम्हूरियत बरसों-बरस यूं ही चलती चली जाती है?

हमारे नेता इस तथ्य को इतनी आसानी से बिसरा कैसे देते हैं?

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

यूजेनियो लेमोस
गायक, पर्यावरणविद्

सेहतमंद बागवानी की राह दिखाता अनोखा गायक

राजधानी आकर लगा, जैसे कोई तवील रात गुजरी है, मगर दुखों का सिलसिला अब भी नहीं थमा था। छोटा भाई आहार में हुए बदलाव के कारण डायरिया का शिकार हो गया। अब इससे दर्दनाक बचपन और क्या होगा? छह साल की उम्र में तीन-तीन अपनों का वियोग!

दक्षिण-पूर्वी एशिया का एक छोटा सा मुल्क है तिमोर-लेस्त। इसको पूर्वी तिमोर भी कहते हैं। चार सौ वर्षों तक पुर्तगालियों का उपनिवेश रहा तिमोर-लेस्त पिछली सदी के उत्तरार्द्ध में करीब ढाई दशकों तक इंडोनेशिया के कब्जे में भी रहा और एक लंबे खूनी संघर्ष व संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप के बाद इस सदी की शुरुआत (2002) में आजाद मुल्क की हैसियत से दुनिया के नक्शे पर अवतरित हुआ। यूजेनियो लेमोर इसी देश के एक किसान परिवार में पैदा हुए।

साल 1975 की बात है। लेमोस सिर्फ तीन साल के थे, जब इंडोनेशिया ने पूर्वी तिमोर पर हमला बोल दिया था। लेमोस का परिवार जान बचाने के लिए जंगल में भाग आया था। वहां जो कुछ मिल सकता था, उसी से भूख मिटानी पड़ती, मगर जब स्थिति असह्य होने लगी, तो पिता से देखा न गया। एक दिन वह वहां से परिवार को निकालने की राह तलाशने क्या निकले, इंडोनेशियाई फौजियों ने उनको दबोच लिया और उसके बाद उनका कोई पता नहीं चला। अजीब खौफनाक वक्त था। हर तरफ मौत ही मौत थी। जंगल में भूख लोगों को निगलती जा रही थी और गांवों में आक्रांता फौजी खून की होली खेल रहे थे। लेमोस की छोटी बहन उसी वनवास में भूख से दम तोड़ गई। करीब तीन साल बाद एक 'सर्च ऑपरेशन' के दौरान जंगल में छिपे काफी लोग पकड़े गए और उन सबको राजधानी दिली ले आया गया था। लेमोस का परिवार भी उनमें एक था।

राजधानी आकर लगा, जैसे कोई तवील रात गुजरी है, मगर दुखों का सिलसिला अब भी नहीं थमा था। वर्षों से कंदमूल से ऊर्जा बटोर रहे शरीर ने जैसे प्रसंस्कृत अनाजों से बगावत कर दी थी। लेमोस का छोटा भाई आहार में हुए बदलाव के कारण डायरिया का शिकार हो गया। उसकी मौत से वह काफी आहत हुए थे। भला इससे दर्दनाक बचपन और क्या होगा? छह साल की उम्र में तीन-तीन अपनों का वियोग! मगर मां ने लेमोस को टूटने से बचा लिया। बेटे का पेट भरने के लिए वह काफी मशक्कत करतीं। आठ साल की उम्र में लेमोस की स्कूली शिक्षा शुरू हुई। शुरू में काफी दिक्कतें आईं, क्योंकि वहां इंडोनेशियाई भाषा में पढ़ाया जाता था और लेमोस को वह भाषा आती ही नहीं थी। वह पहली ही कक्षा में फेल हो गए। मगर जब मां का आशीष और संबल, दोनों हो तो संतान हीनता-ग्रंथि का शिकार कैसे हो पाती? लेमोस ने न सिर्फ स्कूल की अपनी पढ़ाई पूरी की, बल्कि राजधानी की ही यूनिवर्सिटी से कृषि-शिक्षा की ऊंची डिग्री हासिल की।

यूनिवर्सिटी में पढ़ाई के दौरान ही उन्हें वनों की कटाई और खेती-किसानी में उर्वरकों के बढ़ते इस्तेमाल के खिलाफ सक्रिय एक आंदोलन से जुड़ने का मौका मिला। इस आंदोलन ने पर्यावरण-संरक्षण के प्रति उन्हें जागरूक बनाया। लेमोस

देश की 40 प्रतिशत ग्रामीण आबादी की दयनीय हालत से वाकिफ थे ही, अब यह बात भी अच्छी तरह समझ गए कि उन्होंने जिस कृषि पद्धति के बारे में पढ़ाई की है, वह उनके देश के छोटे किसानों के लिहाज से बिल्कुल सही नहीं है।

आजादी की दहलीज पर खड़े देश के लिए कुछ करने के जज्बे ने लेमोस को कृषि क्षेत्र में बदलाव लाने को प्रेरित किया। सुखद संयोग यह रहा कि साल 1999 में तिमोर-लेस्त जिस वक्त जनमत संग्रह के जरिये अपनी आजादी पर मुहर लगा रहा था, उसी समय ऑस्ट्रेलियाई 'पर्माकल्चरिस्ट' स्टीव ग्रांट से लेमोस की मुलाकात हुई। वह तिमोर में पर्माकल्चर के प्रशिक्षण के लिए आए थे। पर्माकल्चर टिकाऊ खेती की ऐसी पद्धति है, जिसमें रासायनिक उर्वरकों का बिल्कुल इस्तेमाल नहीं होता। लेमोस को लगा, यह तो उनका सांस्कृतिक मूल्य है। उन्होंने स्टीव ग्रांट से न सिर्फ इसका प्रशिक्षण लिया, बल्कि साल 2001 में 'पर्माटिल' नाम से एक संस्था बनाकर तीन कार्यक्रमों की शुरुआत भी कर दी- युवा प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्कूल उद्यान कार्यक्रम व जल एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन कार्यक्रम। लेमोस के पास संसाधन तो था नहीं, लिहाजा वह पीठ पर गिटार टांगते और मोटरसाइकिल से निकल पड़ते युवाओं को अपने मूल्यों व पर्माकल्चर के बारे में समझाने।

शुरू-शुरू में सरकारी तंत्र और लोगों ने उनकी बातों की उपेक्षा की, मगर जब 2005 में उन्हें आयरिश सरकार ने वजीफा दिया और ऑस्ट्रेलिया की विक्टोरिया यूनिवर्सिटी ने अपने यहां सामुदायिक विकास की पढ़ाई करने के लिए स्कॉलरशिप दी, तो तिमोर सरकार ने भी लेमोस को गंभीरता से लेना शुरू किया। साल 2008 में जब उन्होंने पहला पर्माकल्चर शिविर लगाया, तो देश भर से करीब 400 लोग आए। उसके बाद संख्या बढ़ती ही गई। इन शिविरों में लोगों को प्राकृतिक खाद बनाने, बीजों को संरक्षित करने, पौधों की नर्सरी तैयार करने, बाग लगाने, बांस और लकड़ी से आरामदेह घर बनाने की सीख दी जाती है। साल 2013 में वह दिली यूनिवर्सिटी में व्याख्याता नियुक्त हुए और उसके बाद तो उन्हें कई अहम सरकारी जिम्मेदारियां सौंपी गईं।

आज लेमोस की मुहिम की बदौलत इस छोटे से देश के सैकड़ों स्कूलों में बागवानी कार्यक्रम पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा है। देश भर में 1,000 से भी अधिक तालाबों में वर्षा-जल का संरक्षण होता है। 300 झरनों को सूखने के कगार से वापस लाया गया है। मगर इन सबके बीच लेमोस ने संगीत के प्रति अपने प्रेम को मरने नहीं दिया। उन्होंने इसके जरिये देश के लाखों युवाओं को अपनी संस्कृति से जोड़ा, उन्हें पर्यावरण-हितैषी बनाया है। लेमोस एक पुरस्कृत गायक, गीतकार व संगीतकार हैं। इस बहुमुखी प्रतिभा के धनी शख्स को 2023 के रेमोन मैगसायाय पुरस्कार से सम्मानित किया गया, तो समूचा तिमोर-लेस्त झूम उठा। इस धरती से भूख और दरिद्रता मिटाने के लिए यूजेनियो लेमोस का सीधा-सा मंत्र है- वही उपजाएं, जो आप खा सकें और वही खाएं, जो उपजा सकें!

लेमोस की मुहिम की बदौलत इस छोटे से देश के सैकड़ों स्कूलों में आज बागवानी कार्यक्रम पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा है। देश भर में 1,000 से भी अधिक तालाबों में वर्षा-जल का संरक्षण होता है और 300 झरनों को सूखने के कगार से वापस लाया गया है।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

माणिक बंदोपाध्याय
बांग्ला साहित्यकार

आप लिखिए और छपकर दिखाइए

एक वरिष्ठ छात्र सुना रहे थे कि पत्रिकाओं के संपादक नामचीन लेखकों या अपने गुट के लेखकों के अलावा किसी का लिखा नहीं छापते हैं। नए लेखकों के लिए तो पत्रिकाओं में एक कोना भी नहीं है। बस लिखते चले जाओ, पत्रिकाओं के ऑफिस से रचनाएं लौट-लौट आती हैं।

समाज में जितने मनुष्य हैं, उससे कहीं ज्यादा मान्यताएं हैं। एक मान्यता यह भी है कि दुनिया में सब कुछ जान-पहचान से होता है। बिना संपर्क, बिना पहुंच कोई काम नहीं होता। एक अकेला नया आदमी कुछ नहीं कर सकता, हर दफ्तर में चाचा-मामा-मित्र होने चाहिए, ताकि काम न रुके। ऐसी ही बातें विज्ञान का वह विद्यार्थी अपने साथियों के मुंह से सुन रहा था। विज्ञान से उसे बहुत प्रेम था। दसवीं, बारहवीं को प्रथम श्रेणी के साथ पार कर वह 20 वर्षीय बंगाली छात्र वेस्लेयन मिशन कॉलेज, बांकुरा में विज्ञान पढ़ रहा था। उस दिन मित्र मंडली साथ बैठी थी और साहित्य में हाथ आजमा रहे वरिष्ठ छात्र सुना रहे थे कि साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक नामचीन लेखकों या अपने गुट के लेखकों के अलावा किसी का लिखा नहीं छापते हैं। नए लेखकों के लिए तो पत्रिकाओं में एक कोना भी नहीं है। लिखते जाओ, पत्रिकाओं के ऑफिस से रचनाएं लौट-लौट आती हैं।

सबने एक स्वर में कहना शुरू कर दिया कि हां, नए लेखकों को कौन पूछता है, लेखन की दुनिया में चंद बड़े लेखक-संपादक ही जमींदार बने काबिज हैं। तब विज्ञान के इस छात्र से रहा नहीं गया। उसने टोकते हुए कहा, 'क्यों बकवास कर रहे हो? क्या संपादक पागल हैं कि अच्छी कहानियों को नामंजूर कर बुरी कहानियां प्रकाशित करेंगे?' यह सुनकर मित्रों के क्रोध का पारा चढ़ गया, 'तुम लेखक हो? कभी लिखी है कहानी? कभी भेजी है छपने के लिए? बनावटी बातें करना आसान है, छपने-छपाने की जमीनी हकीकत तुम्हें पता नहीं है।' जिस मित्र की कहानी ताजा-ताजा पत्रिका कार्यालय से लौटी थी, वह तो कुछ ज्यादा उत्तेजित हो गए। झगड़े की नौबत आ गई, तब विज्ञान के विद्यार्थी ने कहा, चलो शर्त लगाते हैं, 'मैं एक कहानी लिखूंगा और तीन महीने के अंदर वह किसी सम्मानित पत्रिका में छपेगी।'

मित्रों ने हंसी उड़ाते हुए कहा, 'चलिए, आपकी भी औकात देख लेते हैं। बांग्ला की स्थापित पत्रिकाओं- *भारतवर्ष, प्रबासी* या *बिचित्र* में छपकर दिखाइए। ये ऐसी पत्रिकाएं हैं, जो नए लेखकों की रचनाओं को नजर भर देखती भी नहीं हैं।'

शर्त लग गई, पर विज्ञान का वह छात्र तो साहित्य का छोटा-मोटा पाठक भर था। वह साहित्यिक पत्रिकाओं और उनके संपादकों के पक्ष में खड़ा तो हो गया, पर उसने कभी एक पद्य या एक गद्य तक नहीं लिखा था। लिखने के बारे में सोचा भी नहीं था, पर लग गई शर्त, तो लिखा क्या जाए?

उन दिनों प्रेम कथाओं का ज्वार था। बांग्ला संसार में *गोरा* और *देवदास* की खुमारी उतरी नहीं थी। एक से बढ़कर एक प्रेम कथाएं लिखी जा रही थीं। प्रेमी-प्रेमिका के मिलन, बिछड़न और पुनर्मिलन को नाना प्रकार की परिस्थितियों में पिरोकर परोसा जा रहा था। सबसे पहले उसने सोचा कि ऐसा लिखा जाए, जो दूसरों से अलग हो और सबका ध्यान अपनी ओर खींच ले। मन ने कहा, प्रेम कहानी लिखूं, तो ठीक है, पर सड़ी हुई दुर्गंध वाली कहानी न लिखूं। ऐसी कहानियां पढ़कर लड़के-लड़कियां भटक रहे हैं। बहुत सोच-समझकर प्रेम और संगीत से सराबोर एक कहानी विज्ञान स्नातक प्रथम वर्ष के उस छात्र ने लिख डाली। कहानी का नाम था *अतासी मामी।* वह पहुंच गया साहित्यिक पत्रिका *बिचित्र* के दफ्तर, कहा, 'कहानी छपने के लिए देनी है।' वहां बैठे संपादक ने कहा, 'यहां टेबल पर रख दो।' पर कहानी लिखने वाले ने कहानी को टेबल पर नहीं रखा, पुरजोर अंदाज में आगे बढ़ाकर संपादक के हाथ में ही थमाया, मानो कहानी को सीधे प्रेस में छपने भेज देना हो।

कहानी *अतासी मामी* जमा हो गई, एक-एक कर दिन बीतते गए। लगभग तीन महीने बाद एक दिन सुबह स्वयं पत्रिका के संपादक उपेंद्रनाथ गांगुली बीस रुपये का मानदेय लेकर पहुंच गए, 'मुझे कहानीकार माणिक बंदोपाध्याय जी से मिलना है।' संपादक ने *अतासी मामी* के प्रेम, बांसुरी और संबंधों के संगीत की खूब तारीफ की और कहा, आप अगली कहानी जल्दी लिखिए और हमें दीजिए, पाठक मांगे चले जा रहे हैं।'

एक शर्त, एक कहानी माणिक बंदोपाध्याय (1908-1956) को विज्ञान से साहित्य की दुनिया में खींच लाई। उनका असली नाम प्रबोधचंद्र बनर्जी हमेशा के लिए पीछे छूट गया। उनकी कलम से एक से बढ़कर एक रचनाओं का सिलसिला चला। *जननी, दिबारात्रीर काव्य, पद्मानदीर मांझी, पुतुल नाचेर इतिकथा* जैसे उपन्यासों ने बांग्ला साहित्य को समृद्ध किया। शुद्ध भावुकता से अलग उनकी रचनाएं व्यावहारिकता में खिल उठीं। 19 जुलाई को माणिक की जयंती मनाई जाती है और उन्हें एक मिसाल की तरह पेश किया जाता है कि कोई आपको छपने से रोक नहीं सकता, आप अच्छा लिखिए तो सही।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

हिंदी साहित्य के गैंगस्टर और गैंगरीन

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

जून की 4 तारीख आ रही है और मेरे प्राण सूली पर अटके हैं। मुझे अपने से अधिक मित्र लेखकों की चिंता खाए जा रही है। एक से एक प्रतिभाशाली हैं। जितने प्रतिभाशाली हैं, उससे भी अधिक सौभाग्यशाली हैं। पर्याप्त चर्चित हैं। अतिशय परिचित हैं। सबसे अधिक रिसर्चित हैं। कई नामी बुद्धिजीवी माने जाते हैं। कई प्रबुद्धजीवी और कई कुबुद्धिजीवी भी माने जाते हैं।

कई हिंदी के 'टॉप' के कवि-कथाकार हैं, देश-विदेश में उनके नाम हैं, पत्र-पत्रिकाओं में चर्चित हैं, सोशल मीडिया में छाए रहते हैं। कई के हजारों, तो कई के लाखों फॉलोअर्स हैं। कई सर्वमान्य, तो कई महामान्य हैं। कई कवियों के कवि हैं, कई गुरुओं के भी गुरु, उस्तादों के भी उस्ताद हैं। कई लेखक बनाने की गलतफहमी में जीते हैं, तो कई लेखिका बनाते हुए मार खाते हैं।

कइयों का साहित्य में हुकुमनामा चलता है। कई साहित्य के मार्गदर्शक-मंडल हैं। कई साहित्य के मंडल और कमंडल हैं और कई साहित्य के डंठल हैं। कई साहित्य के निर्माता-निर्देशक हैं। कई कइयों के 'फादर-फिलॉसफर-गाइड' हैं। कई कइयों को समर्पित हैं। सब एक-दूसरे पर कविता-कहानी लिख-लिखकर एक-दूसरे को अमर कर चुके हैं, फिर एक-दूसरे को कई बार मार भी चुके हैं। कई साहित्य के 'गैंगस्टर' हैं और कई 'गैंगरीन।'

कई अकादेमी से ज्ञानपीठ की ओर अपना मुखारविंद किए दिखते हैं, तो कई साहित्य के 'ट्रस्टी' बन उसकी अंत्येष्टि करते-कराते रहते हैं। कई साहित्य के न्यासी हैं, तो कई फांसी। कई एकदम शरणागत वत्सल हैं। जो भी उनकी शरण में आ जाता है, वह साहित्य का परम पद पा जाता है। वह साहित्य में छा जाता है और कई बार वही साहित्य को खा जाता है। ये सभी लीलापुरुष हैं और सभी 'छीलापुरुष' हैं। सबसे बड़ी बात, सभी मेरे अभिन्न हैं। इनमें से कई मेरे एकदम अपने हैं और कई तो 'मेरे हमदम मेरे दोस्त' हैं, इसीलिए मुझे चिंता है।

कइयों के कविता संकलनों, कहानी संकलनों और उपन्यासों को मैंने पढ़ा है, सराहा है। कोई-कोई मेरी सराहना से कराहा भी है। कई के 'रिव्यू' किए हैं, तो कइयों को 'रफू' भी किया है और कइयों को साहित्य से रफा-दफा भी किया है।

सभी हिंदी के पुराने पापी हैं। मैं उनसे भी सवाया पापी हूं, इसीलिए चिंतित हूं कि 4 जून को अगर इनकी पसंद की कविता न हुई, तब इनका क्या होगा? मैं अपने इन्हीं फेसबुक योद्धाओं के लिए चिंतित हूं और इसीलिए मेरा 'गब्बर' मन बार-बार पूछता रहता है कि 4 जून को तेरा क्या होगा कविता रूपी कालिया?

क्या तब यह मानना पड़ेगा कि इतनी झूठी कविता-कहानी कभी नहीं हुई, जितनी पिछले दिनों सोशल मीडिया में हुई? इतने नकली साहित्यकार कभी न हुए, जितने पिछले दस वर्ष में हुए? उन्होंने जो कहा, वह तो न हुआ, उसका उल्टा जरूर हुआ। ऐसा एक बार हुआ, दूसरी बार हुआ, अब कहीं तीसरी बार भी न हो जाए! तब तो मानना पड़ेगा कि पिछले दस साल की कविताएं, कहानियां आदि सत्य की जगह एक झूठ को रचती रहीं, कहती रहीं, सहती रहीं।

सच! अगर ऐसा हुआ, तो साहित्य से लोगों का भरोसा उठ जाएगा। साहित्य का आईना ही टूट जाएगा। हम टूटा आईना लिए बैठे होंगे। यह आईना टूटा क्यों? शायद इसलिए कि साहित्य साहित्य न रहा, वह सत्य का अन्वेषी न रहा और 'पावर पॉलिटिक्स' का पिछलग्गू हो गया। राजनीतिक घृणा साहित्यिक घृणा बन गई। यह नफरत साहित्य को खा गई।

मैंने कितना समझाया कि साथी! तू साहित्य को साहित्य ही रहने दे, उसे राजनीति न बना। राजनीति की 'घृणा' को कविता में न ला और 'हेट' की कविता तो हरगिज न कर, क्योंकि हेट से क्रोध पैदा होता है, क्रोध से बुद्धिनाश होता है और बुद्धिनाश से प्राणनाश होता है। यही बात भगवान श्रीकृष्ण ने *गीता* में कही है, लेकिन मैं क्या करूं, अनसुनी की यारों ने और खेत रहे!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

इस सप्ताह कई अहम राजनीतिक व कूटनीतिक घटनाएं हुई हैं। चौथे चरण के चुनाव में जहां मतदान प्रतिशत बढ़ा है, यह बढ़ोतरी आगे शेष चरणों में भी देखने को मिल सकती है। आप के मुखिया दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को चुनाव प्रचार की सशर्त अनुमति अदालत से मिली तो उन्होंने 75 प्लस का मुद्दा उठाकर भाजपा को सफाई देने के लिए मजबूर कर दिया, लेकिन स्वाति मालीवाल पिटाईकांड के बाद से वे सवालों के घेरे में हैं। शेष तीन चरण के लिए जहां भाजपा ने पूरी ताकत झोंक दी है, पीएम नरेन्द्र मोदी ताबड़तोड़ रैली कर रहे हैं, वे फिर अयोध्या गए हैं। भाजपा पूरी क्षमता से जुटी हुई है तो कांग्रेस नेता राहुल गांधी रायबरेली तक सिमटते दिख रहे हैं, पर्चा भरने के एक सप्ताह के दरम्यान राहुल ने केवल एक रैली ओडिशा में की। राज्यों में कांग्रेस के प्रचार में राहुल सरीखे बड़े नेता नदारद हैं, सपा मुखिया अखिलेश यूपी तक सीमित हैं। आप केवल 19 सीटों पर लड़ रही है, महाराष्ट्र में शरद पवार, उद्धव व कांग्रेस नेता मोमेंटम नहीं बना पा रहे हैं, इसके उलट भाजपा शिद्दत से चुनाव प्रचार कर रही है, भाजपा के दिग्गज नेता शेष चरण के सभी राज्यों में अपने उम्मीदवार के समर्थन में चुनाव प्रचार कर रहे हैं। इस बीच ईरान के साथ चाबहार पोर्ट समझौते ने भारत के लिए मध्य एशिया से यूरोप तक के ट्रेड द्वार खोल दिए हैं। चाबहार डील पर अमेरिका की धमकी को गंभीरता से लेते हुए भारत ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। अमेरिकी धमकी को दरकिनार किया है। शेष तीन चरण के चुनाव अभियान का आंकलन व चाबहार डील से फायदे का विश्लेषण करता आजकल का यह अंक...

शेष समर में भाजपा ने झोंकी ताकत

विश्लेषण

अवधेश कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

निश्चय ही शेष तीन चरणों में रायबरेली, अमेठी और वाराणसी सर्वाधिक चर्चा में रहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी पहले भी रैलियां कर रहे थे, लेकिन पिछले 10 दिनों में जितना उन्होंने परिश्रम किया है वह सब रोड शो, रैलियां, कार्यकर्ताओं के साथ संवाद और टीवी इंटरव्यू में लगातार दिख रहे हैं। निश्चय ही इसका असर है और विपक्ष के नेताओं के लिए इसके समानांतर उसी रूप में संपूर्ण देश या अपने राज्यों में मतदाताओं को आकर्षित करना कठिन चुनौती है। अगर राहुल गांधी पहले की तरह सक्रिय नहीं दिखते और रायबरेली या कुछ क्षेत्रों तक सीमित रहते हैं तथा केजरीवाल को जगह-जगह स्वाति मालीवाल के प्रश्नों पर झेंपना पड़ता है तो इसका असर चुनाव में नहीं होगा ऐसा कौन कह सकता है।

चुनाव आयोग की यह सूचना निश्चय ही उत्साहित करने वाली है कि 13 मई को हुए चौथे चरण के मतदान में मतदान करने वालों की संख्या 2019 के मुकाबले ज्यादा रही। इस चरण में मतदान 69.56 प्रतिशत हुआ जो 2019 के संसदीय चुनाव में इसी चरण की तुलना में 3.65 फीसदी अधिक है। इससे पहले के तीन चरणों में कम मतदान का कई प्रकार से विश्लेषण किया जाने लगा था। तीसरे चरण में मतदान का आंकड़ा 65.68 प्रतिशत रहा जबकि 2019 में यह आंकड़ा 68.4 फीसदी था। 26 अप्रैल को दूसरे चरण में 66.71 फीसदी मतदान हुआ जबकि 2019 में 69.64 प्रतिशत मतदान हुआ था। पहले चरण में 66.5 प्रतिशत मतदान हुआ जो 2019 के 69.43 फीसदी से कम था। हालांकि अभी चार चरणों के मतदान को मिला दें तो यह 2019 से करीब 2.5 फीसदी के आसपास कम होगा। उम्मीद करनी चाहिए कि आने वाले तीन चरणों में जहां 163 सीटों पर मतदान होना है, आंकड़ा और बढ़ेगा। अगर आंकड़ा नहीं भी बढ़ा तो राष्ट्रीय स्तर पर मतदान में इतनी कमी को ज्यादा चिंताजनक गिरावट के रूप में नहीं देखा जाएगा।

उदाहरण स्थापित किया

अभी इसमें पड़ने की आवश्यकता नहीं है कि मतदान करने वालों में भारतीय जनता पार्टी और राजग के मतदाता अधिक निकल रहे हैं या विरोधियों के। इस चुनाव ने फिर एक बार साबित किया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं अपने व्यवहार से कार्यकर्ताओं, समर्थकों के लिए उदाहरण स्थापित करते हैं और राजनीति एवं चुनाव के एजेंडा भी सेट करते हैं। हालांकि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को चुनाव प्रचार के लिए उच्चतम न्यायालय द्वारा दी गई एक जून तक की सशर्त जमानत को आईएनडीआई गठबंधन के लिए बड़ी घटना के रूप में प्रचारित किया गया। उन्होंने अपने चरित्र के अनुरूप निकलने के साथ ही ऐसे बयान देना शुरू किया जो अभी तक आईएनडीआईए के एजेंडे में नहीं था। उदाहरण के लिए भाजपा में 75 वर्ष की उम्र में रिटायरमेंट का मुद्दा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ही अपनी पार्टी में पदों के लिए 75 वर्ष की उम्र सीमा बनाई थी जिसके कारण अनेक लोगों को चुनावी राजनीति से बाहर होना पड़ा तो वह अपने पर भी इसे लागू करेंगे। चूंकि वे 17 सितंबर, 2025 को 75 वर्ष के हो रहे हैं, इसलिए रिटायरमेंट ले लेंगे। रिटायरमेंट लेंगे तो अपने करीबी अमित शाह को ही प्रधानमंत्री बनाएंगे। उन्होंने यह भी कह दिया कि वह योगी आदित्यनाथ को उनके पद से हटा देंगे। इस पर आगे चर्चा करेंगे। दो दौर में मतदान प्रतिशत की गिरावट के बाद जो संकेत सामने आया उसके बाद प्रधानमंत्री ने ऐसा लगा जैसे नए सिरे से करवट ली हो और चुनाव प्रचार शुरू किया हो। वे अयोध्या गए ,योगी आदित्यनाथ के साथ रामलला के दर्शन किए, रोड शो किए और वहां से संदेश दिया कि चुनाव भाजपा के नियंत्रण में है। उसके बाद से चाहे वाराणसी में चौथे चरण के चुनाव के दिन नामांकन दाखिल करना हो या अन्य कार्यक्रम वे लगातार देश के सामने रहे। वाराणसी में कार्यकर्ताओं से संवाद करते हुए पूरे देश के भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं को संदेश दिया कि मतदान बढ़ाना आपकी भूमिका है, इसके लिए उन्होंने जिस तरह के भावनात्मक शब्दों का इस्तेमाल किया उससे कार्यकर्ता प्रेरित हुए होंगे। समाचार आ रहा था कि भाजपा के कार्यकर्ताओं-नेताओं का एक वर्ग स्थानीय स्तर पर उदासीन है। इसे ही कहते हैं नेतृत्व, जो किसी भी परिस्थिति में लोगों को प्रेरित करने के लिए जान लगा दे। प्रधानमंत्री ने यही दिखाया। उसके साथ उन्होंने दोबारा सभी टेलीविजन चैनलों को इंटरव्यू दिया। आप देखेंगे कि प्रधानमंत्री जहां भी थे वहीं से उन्होंने इंटरव्यू दिया और पूरी बातचीत की।

भ्रम और विरोध पैदा करना

इन सबमें नए सिरे से चुनाव का एजेंडा तथा जीतने के विश्वास के साथ भावी सरकार की कार्य योजनाओं का विवरण था। इसके समानांतर राहुल गांधी लगभग दृश्य से एक सप्ताह के आसपास लगभग ओझल रहे। रायबरेली से नामांकन के बाद वहीं दिखे और उसके बाद लगभग 10 दिन बाद ओडिशा की रैली में सामने आए। अभी तक उन्होंने टीवी चैनलों को चुनाव में एक साक्षात्कार नहीं दिया है। अरविंद केजरीवाल की ओर लौटें तो कहने की आवश्यकता नहीं कि 75 वर्ष में रिटायरमेंट एक शिगूफा था। उन्हें भी पता है कि ऐसा होने वाला नहीं है। भाजपा में 2014 से कुछ समय तक 75 वर्ष की उम्र सीमा का अघोषित बंधन दिखाई पड़ता था। आगे ऐसा बंधन नहीं रहा। वीएस येदियुरप्पा को कर्नाटक का मुख्यमंत्री बनाया गया तो ई श्रीधरन को केरल के मुख्यमंत्री के उम्मीदवार के रूप में पेश किया गया। संसदीय बोर्ड एवं चुनाव समिति में ऐसे सदस्य हैं जो इस उम्र सीमा के बंधन से आगे निकल चुके हैं। केजरीवाल ने सोचा कि भाजपा के अंदर यह प्रश्न उठेगा और समर्थक भी सोचेंगे कि भाई मोदी जी अगर रिटायर ही हो जाएंगे तो हम उनके नाम पर वोट क्यों दें? योगी आदित्यनाथ के समर्थकों की भाजपा और संगठन परिवार में सबसे बहुत बड़ी संख्या है। यानी भाजपा के समर्थकों को पहले मोदी के नाम पर और योगी समर्थकों को उनके नाम पर भ्रम और विरोध पैदा करना।

आम मतदाताओं तक संदेश

वैसे शेष बचे 163 सीटों में आम आदमी पार्टी केवल 22 पर लड़ रही है। मुख्यतः दिल्ली एवं पंजाब तक सीमित है। गुजरात में कांग्रेस ने उसे एक सीट दी है। इसमें उनके बयान या उनकी यात्राएं दूसरी पार्टी को बहुत लाभ पहुंचाएंगे ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। मुख्यमंत्री आवास पर अरविंद केजरीवाल के सहायक द्वारा राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल की पिटाई सबसे बड़ा राजनीतिक बवंडर का विषय है, जिनका जवाब उनके लिए देना कठिन हो गया। दिल्ली के बाहर उन्होंने पहली यात्रा लखनऊ की। सपा प्रमुख अखिलेश यादव के साथ पत्रकार वार्ता में जब यह प्रश्न उठा तो माइक अपने साथी राज्यसभा सांसद संजय सिंह की ओर खिसकाना पड़ा। अखिलेश यादव ने यह कहकर कि इससे अलावा भी मुद्दे हैं, वास्तव में ऐसा रक्षात्मक रूप अपनाया जिसके विरुद्ध क्षोभ और गुस्सा पैदा हुआ होगा। संदेश जा रहा है कि महिला से हिंसा और दुर्व्यवहार की निंदा करने से वह बच रहा है। स्वाति मालीवाल की घटना ने आईएनडीआईए के नेताओं को संदेशखाली के बाद दूसरी बार ऐसी स्थिति में ला दिया है जहां सच जानते हुए भी स्टैंड नहीं ले रहे हैं। इसका संदेश आम मतदाताओं तक जा रहा है।

शेष चरण महत्वपूर्ण

शेष बचे मतदान में कांग्रेस का महाराष्ट्र, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों के अलावा बहुत ज्यादा दांव पर नहीं है। उत्तर प्रदेश के रायबरेली से राहुल गांधी चुनाव लड़ रहे हैं, पूरी पार्टी वहां लगी है, लेकिन प्रदेश में सपा मुख्य ताकत है और कांग्रेस को केवल 17 सीटें लड़ने के लिए मिली हैं। बिहार में पार्टी लालू प्रसाद यादव के राजद के सहारे है और ओडिशा में इसकी कोई ताकत नहीं। दिल्ली में कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी के बाद दूसरी ताकत होना स्वीकार किया। पंजाब में आम आदमी पार्टी से भी इसे टकराना पड़ेगा और हरियाणा में पार्टी कलह और गुटबंदी का शिकार है। पश्चिम बंगाल में कांग्रेस का कोई वरिष्ठ नेता चुनाव प्रचार करने नहीं गया। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी के प्रचार में केवल शशि थरूर गए। राहुल गांधी ने वहां झांकना तक जरूरी नहीं समझा। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक हरियाणा और पंजाब के पार्टी नेतृत्व की भी यही शिकायत थी कि केंद्रीय नेता अभी तक रैली करने नहीं आए। भाजपा के लिए शेष चरण निश्चय ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि इनमें 70 प्रतिशत से ज्यादा सीटें पिछले चुनाव में उसे मिली थी। भाजपा हर चुनाव में पूरी ताकत लगाती है और रायबरेली में फिर राहुल की घेराबंदी की कोशिश है। रायबरेली में स्थानीय नेताओं के बीच एकजुटता न देख केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह स्वयं सपा और भाजपा में आए विधायक मनोज पांडे के घर गए और उम्मीदवार दिनेश प्रताप सिंह के साथ मिलकर काम करने का वायुमंडल बनाया। पिछले चुनाव में भाजपा अपनी रणनीति से अमेठी से राहुल गांधी को पराजित कर चुकी है। राहुल गांधी उत्तर प्रदेश के इन दोनों स्थानों से लड़ने के अनिच्छुक थे इसका प्रमाण अंतिम समय तक दोनों स्थानों के लिए उम्मीदवारी की घोषणा नहीं होना था। उनका नाम नामांकन के कुछ समय पहले घोषित किया गया। स्वयं प्रधानमंत्री ने इसे मुद्दा बनाया है। निश्चय ही शेष तीन चरणों में रायबरेली, अमेठी और वाराणसी सर्वाधिक चर्चा में रहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी पहले भी रैलियां कर रहे थे, लेकिन पिछले 10 दिनों में जितना उन्होंने परिश्रम किया है वह सब रोड शो, रैलियां, कार्यकर्ताओं के साथ संवाद और टीवी इंटरव्यू में लगातार दिख रहे हैं। निश्चय ही इसका असर है और विपक्ष के नेताओं के लिए इसके समानांतर उसी रूप में संपूर्ण देश या अपने राज्यों में मतदाताओं को आकर्षित करना कठिन चुनौती है। अगर राहुल गांधी पहले की तरह सक्रिय नहीं दिखते और रायबरेली या कुछ क्षेत्रों तक सीमित रहते हैं तथा अरविंद केजरीवाल को जगह-जगह स्वाति मालीवाल के प्रश्नों पर झेंपना पड़ता है तो इसका असर चुनाव में नहीं होगा ऐसा कौन कह सकता है। बचे चरणों में भाजपा-कांग्रेस की साख दांव पर है।

कूटनीति: जो न रुके, न झुके, वो है भारत

चाबहार समझौता

प्रभात कुमार राय
विदेश मामलों के जानकार

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए जितना आवश्यक रहा है थल और हवाई मार्ग और उतना ही आवश्यक रहा है जल मार्ग। जल मार्ग की महत्ता को मद्देनजर रखते हुए भारत सरकार ने सोमवार 13 मई को ईरान के चाबहार में स्थित शाहिद बेहस्ती बंदरगाह के संचालन के लिए 10 वर्षीय समझौता अंजाम दिया है। शाहिद बेहस्ती बंदरगाह वस्तुतः ईरान का दूसरा सबसे बड़ा और अहम बंदरगाह है। 10 वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद इस समझौते का फिर से नवीनीकरण किया जाएगा। भारत के जहाजरानी मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने देश में जारी आम चुनाव के बीच ईरान पहुंचकर अपने समकक्ष के साथ इस समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए। यह समझौता भारत के लिए कितना अहम है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भारत ने आम चुनाव के खत्म होने व नई सरकार बनने का इंतजार नहीं किया। चाबहार बंदरगाह समझौता के संपन्न हो जाने के बाद अमेरिका ने भारत को धमकी भरे अंदाज में कहा है कि भारत को ईरान के साथ संपन्न हुए समझौते के कारण अमेरिका द्वारा आयाद आर्थिक प्रतिबंधों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अमेरिका कदापि नहीं चाहता कि भारत वस्तुतः ईरान के साथ किसी तरह का कोई भी व्यापारिक संबंध स्थापित करे।

कूटनीतिक प्रभाव

उल्लेखनीय है कि ईरान पर अमेरिका द्वारा कड़े आर्थिक प्रतिबंध आयाद किए गए थे। तभी से भारत ने ईरान से कच्चे तेल का आयात बंद कर दिया था और भारत द्वारा ईरान से तेल का आयात अभी तक प्रारंभ नहीं किया गया है। उस वक्त यकीनन भारत ने अमेरिका के कूटनीतिक प्रभाव में आकर ईरान से तेल का आयात बंद कर दिया था। अब फिर से भारत और ईरान के मध्य अंजाम दिए गए चाबहार समझौते के बाद अमेरिका भारत को आर्थिक प्रतिबंध आयाद करने की धमकियां देने पर उतारू हो गया है। गौरतलब है कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में अंजाम दिए गए परमाणु परीक्षणों के बाद भी अमेरिका द्वारा आयद प्रतिबंधों को भारत द्वारा बाकायदा कामयाबी के साथ झेला गया था। तब भी अमेरिका भारत का बाल बांका नहीं कर सका था और भारतीय अर्थव्यवस्था निरंतर गति से आगे बढ़ती चली गई। उस प्रतिबंध से उल्टे अमेरिका का ही नुकसान हुआ कि उसका भारत में निर्यात प्रभावित हुआ। चाबहार बंदरगाह प्रोजेक्ट वस्तुत पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह के लिए भी कड़ी चुनौती बन चुका है, जिसका निर्माण चीन द्वारा किया जा रहा है। चाबहार बंदरगाह भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए एक शानदार सेतु बन जाएगा, क्योंकि यह बंदरगाह गहरे समुद्र वाला बंदरगाह है।

उल्लेखनीय है कि जब यूक्रेन युद्ध का प्रारंभ हुआ था, उस वक्त भी अमेरिका द्वारा रूस पर कड़े आर्थिक प्रतिबंध किए गए थे। अमेरिकी प्रतिबंधों की घनघोर अवहेलना करते हुए भारत ने रूस से कच्चे तेल का आयात शुरू किया, तब भी

अमेरिका द्वारा भारत पर आर्थिक प्रतिबंधों को आयाद करने की धमकियां दी गई थीं। किंतु भारत ने अमेरिका की धमकियों की घोर उपेक्षा करते हुए रूस से तेल और प्राकृतिक गैस का आयात निरंतर जारी रखा है और रूस से आयात किए गए तेल और प्राकृतिक गैस के कारण के भारत को कम से कम 300 मिलियन डॉलर की सालाना बचत हो चुकी है। रूस से एंटी मिसाइल डिफेंस सिस्टम एस-400 की डील के वक्त भी अमेरिका ने भारत के खिलाफ त्योरियां चढ़ाई थीं, उस वक्त भी भारत ने परवाह नहीं की थी। अब भी चाबहार समझौते के कारण भारत पर आर्थिक प्रतिबंध आयाद करने की अमेरिकन धमकियों की परवाह न करते हुए भारत द्वारा चाबहार बंदरगाह के विकास का काम बाकायदा जारी रखा जाएगा।

नया संवर्धित प्रारूप करार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ईरान यात्रा के दौरान वर्ष 2016 में चाबहार में स्थित शाहिद बेहस्ती बंदरगाह समझौते की बुनियाद रख दी गई थी। इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल कंपनी द्वारा वर्ष 2018 से चाबहार में स्थित बंदरगाह का संचालन किया जा रहा है। 13 मई 2024 को संपन्न हुए समझौते को वस्तुतः वर्ष 2016 में हुए समझौते का नया संवर्धित प्रारूप करार दिया जा रहा है। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर फरमाते हैं कि इस समझौते के बाद चाबहार बंदरगाह प्रोजेक्ट में एक बड़े निवेश का रास्ता भारत के लिए खुल जाएगा। भारत सरकार ने ईरान के चाबहार बंदरगाह को विकसित करने के लिए इंडिया पोर्टस ग्लोबल लिमिटेड नाम की कंपनी को कार्यभार सौंपा है। वर्ष 2016 के बाद वर्ष 2023 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह कहा था कि चाबहार बंदरगाह भारत को व्यापार के लिए एक शानदार और नया समुद्री मार्ग प्रदान कर देगा, जिससे कि पाकिस्तान को बाईपास करते हुए भारत द्वारा अज़रबैजान, रुस और मध्य एशिया के साथ भारत द्वारा अपना व्यापार संपन्न किया जा सकेगा। इस समझौते के तहत भारत की इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल लिमिटेड कंपनी कुल मिलाकर भविष्य में चाबहार बंदरगाह को विकसित करने के लिए 3000 करोड रुपयों का निवेश और करेगी। अभी तक भारतीय कंपनी चाबहार बंदरगाह के विकास के लिए 835 करोड रुपये का निवेश कर चुकी है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत द्वारा प्रस्तावित इंटरनेशनल साउथ नॉर्थ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर, जोकि 7200 लंबा प्रस्तावित समुद्री मार्ग है, इस परियोजना को चाबहार बंदरगाह का बड़ा बुनियादी समर्थन प्राप्त हो सकेगा। इंटरनेशनल साउथ नॉर्थ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर के निर्माण हो जाने के पश्चात भारत के समुद्री मार्ग के माध्यम से सीधी पहुंच यूरोप और मध्य एशिया के देशों तक हो जाएगी। इंटरनेशनल साउथ नॉर्थ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर को विकसित करने की परियोजना भारत बना चुका है। प्रस्तावित समुद्री मार्ग परंपरागत समुद्री मार्ग की अपेक्षा चालीस फीसदी कम दूरी वाला और 30 फ़ीसदी से अधिक सस्ता साबित होगा। इस कोरिडोर को अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, सऊदी अरब, यूएई आदि देशों का समर्थन प्राप्त है।

प्रोजेक्ट रोकने की कोशिश

उल्लेखनीय है कि चीन द्वारा पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में में ग्वादर बंदरगाह को विकसित करने का प्रोजेक्ट पूरा किया जा रहा है। हालांकि बलोच विद्रोही निरंतर चीन के इंजीनियरों पर घात लगाकर हिंसक आक्रमण करते रहे हैं। बलोच विद्रोही ग्वादर बंदरगाह प्रोजेक्ट को रोकने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। ग्वादर बंदरगाह से चाबहार बंदरगाह की दूरी तकरीबन 100 किलोमीटर है। चाबहार बंदरगाह यकीनन अफगानिस्तान और मध्य एशिया के उन लैंडलॉक कंट्रीज के लिए वरदान साबित हो सकता है, जिनकी पहुंच सीधे गहरे समुद्र तक नहीं रही है। इस बंदरगाह से भारत ग्लोबल ट्रेड फ्रंट पर बहुत आगे पहुंच सकेगा। इससे दक्षिण चीन सागर के रास्ते पर निर्भरता भी कम होगी। नया कोरिडोर यूरोप, यूरेशिया व मध्य पश्चिम एशिया की भारत तक पहुंच आसान बनाएगा।

बहुध्रुवीय वैश्विक शक्तियां

विश्व पटल पर विद्यमान शक्ति संतुलन पर निगाह डालें तो अब अमेरिका एक ध्रुवीय विश्व शक्ति नहीं रह गया है। अब विश्व में बहुध्रुवीय वैश्विक शक्तियां उभर कर सामने आ गई हैं। एक तरफ अमेरिका के नेतृत्व में नाटो सैन्य शक्तियां हैं और दूसरी तरफ रुस, चीन, ईरान और नॉर्थ कोरिया आदि सैन्य शक्तियां विद्यमान है। अतः अमेरिका की अंतरराष्ट्रीय बादशाहत का विश्व पटेल पर अंत हो चुका है। यहां तक कि अमेरिका द्वारा रूस पर आयाद आर्थिक प्रतिबंधों को यूरोप के नाटो देश ही स्वीकार नहीं कर रहे हैं। आजादी के बाद भारत एक गुटनिरपेक्ष देश रहा है। जोकि कोल्ड वॉर के विकट दौर में भी किसी भी सैन्य गुट में शामिल नहीं हुआ। आज जबकि दुनिया फिर से सैन्य गुटों में विभाजित हो रही है भारत ने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को कायम बनाए रखा है। भारत के संबंध रूस के साथ और अमेरिका के साथ मित्रतापूर्ण रहे। अब फिर से अमेरिका भारत की गुटनिरपेक्ष स्वतंत्र विदेश नीति को प्रभावित करने का प्रयास कर रहा है, जिसमें उसे फिर से मुंह की खानी पड़ेगी। विदेश नीति के निर्धारण में किसी भी देश के लिए उसके राष्ट्रीय हित सर्वोपरि होते हैं। भारत के लिए भी उसके राष्ट्रीय हित सर्वोपरि हैं। भारत अपनी प्रबल सुरक्षा और विकासमान अर्थव्यवस्था के लिए किसी भी देश से व्यापारिक समझौता कर सकता है। भारत के ईरान के साथ सदियों पुराने सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक संबंध कायम बने रहे हैं। कभी-कभी बाहरी ताकतों की वजह से भारत-ईरान संबंध में कुछ व्यवधान जरूर पैदा हुआ है, पर वह अल्पकालीन ही रहा है। अभी चीन व ईरान की बढ़ती नजदीकी के चलते भारत व ईरान के बीच जारी चाबहार पोर्ट डील की गति धीमी पड़ी थी। अमेरिका को कोई हक नहीं बनता है कि ईरान के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों को लेकर किसी तरह के आर्थिक प्रतिबंध आयाद करें। रूस पर आयाद प्रतिबंधों को लेकर भी अमेरिका के समक्ष भारत कदाचित नहीं झुका और उसने रूस से तेल का आयात निरंतर जारी रखा। इसी तरह से वह ईरान के साथ स्थापित अपने व्यापारिक संबंधों को लेकर भी अमेरिका के कूटनीतिक दबाव में भारत कदापि नहीं आएगा। जो न रुके, जो न झुके, वो है भारत।

चाबहार प्रोजेक्ट के बारे में सबकुछ

चाबहार, ईरान का एकमात्र समुद्री बंदरगाह है। यह मकरान तट पर सिस्तान एवं बलूचिस्तान प्रांत में ओमान की खाड़ी में स्थित है। चाबहार में दो मुख्य बंदरगाह हैं, शाहिद कलंतरी एवं शाहिद बेहिश्ती बंदरगाह। ईरान से भारत का शाहिद बेहिश्ती बंदरगाह के निर्माण को लेकर दीर्घकालीन समझौता हुआ है। भारत ने मई 2015 में चाबहार बंदरगाह के विकास के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया था। मई 2016 में भारत, ईरान एवं अफगानिस्तान द्वारा अंतर्राष्ट्रीय परिवहन और पारगमन गलियारे की स्थापना के लिए त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसे चाबहार समझौते के रूप में भी जाना जाता है। ऐतिहासिक रूप से अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक भारत की पहुँच काफी हद तक पाकिस्तान के माध्यम से पारगमन मार्गों पर निर्भर रही है। चाबहार बंदरगाह भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया में व्यापार के लिए एक वैकल्पिक मार्ग प्रदान करता है, जिसके लिए भारत पहले पाकिस्तान पर निर्भर करता था। चाबहार बंदरगाह भारत की ईरान तक पहुँच को सुविधाजनक बनाएगा, जो अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कोरिडोर-आईएनएसटीसी) का मुख्य प्रवेश बिंदु है, जो भारत, ईरान, रूस, मध्य एशिया और यूरोप को सड़क, रेल और समुद्र के माध्यम से जोड़ता है। संसाधन संपन्न मध्य एशियाई देशों और अफगानिस्तान के साथ संबंध बढ़ाने के भारत के प्रयासों में चाबहार बड़ी भूमिका निभाएगा। यह भारत को अपने व्यापारिक मार्गों में विविधता लाने तथा ईरान व अफगानिस्तान के अतिरिक्त रूस, यूरेशिया और यूरोप के बाज़ारों तक पहुँच बढ़ाने में सहायता करेगा। आईएनएसटीसी मार्ग के माध्यम से कार्गो आवाजाही से लागत में 30% और परिवहन में लगने वाले समय में 40% की बचत होने का अनुमान है, जिससे प्रतिस्पर्धी लागत में त्वरित बदलाव सुनिश्चित हो सकेगा। मध्य एशियाई देश, जो संसाधनों से समृद्ध हैं, लेकिन कज़ाखस्तान और उज़्बेकिस्तान जैसे देशों, जो समुद्र तक सीधी पहुँच नहीं रखते हैं, ने हिंद महासागर क्षेत्र से जुड़ने तथा भारतीय बाज़ार में प्रवेश करने के लिये चाबहार का उपयोग करने में रुचि दिखाई है। चाबहार बंदरगाह अफगानिस्तान में मानवीय सहायता और पुनर्निर्माण प्रयासों के लिये एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश बिंदु के रूप में कार्य कर सकता है। कोविड-19 महामारी के दौरान चाबहार बंदरगाह ने मानवीय सहायता की आपूर्ति में अहम भूमिका निभाई है। चाबहार बंदरगाह के माध्यम से भारत से अफगानिस्तान तक 2.5 मिलियन टन गेहूं और 2,000 टन दालों का निर्यात किया है। वर्ष 2021 में भारत ने टिड्डियों के हमलों से निपटने के लिए बंदरगाह के माध्यम से ईरान को 40,000 लीटर पर्यावरण-अनुकूल कीटनाशक मैलाथियान भेजा था।

रणनीतिक प्रभाव

चाबहार बंदरगाह को विकसित और संचालित करके, भारत हिंद महासागर क्षेत्र में अपने रणनीतिक प्रभाव को बढ़ा सकता है, जिससे भारत की भू-राजनीतिक स्थिति मज़बूत हो सकती है। चाबहार बंदरगाह चीन द्वारा पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह के विकास के प्रतिकार के रूप में कार्य करेगा। चाबहार में उपलब्ध डॉकिंग सुविधाओं के कारण भारत समुद्री डकैती के मामलों पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया दे सकता है।

चुनौतियां क्या हैं?

ईरान को लेकर अमेरिका की चिंताः ईरान के चाबहार बंदरगाह के विकास के लिये दीर्घकालिक मुख्य अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के पश्चात संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत को प्रतिबंधों के संभावित जोखिम की चेतावनी दी है। तेहरान में अमेरिकी दूतावास पर कब्ज़ा करने के बाद, वर्ष 1979 से अमेरिका ने विभिन्न कानूनी प्राधिकरणों के तहत ईरान के साथ की जाने वाली आर्थिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया है। इससे पहले वर्ष 2018 में अमेरिका ने चाबहार बंदरगाह की प्रगति और इसे अफगानिस्तान से जोड़ने हेतु रेलवे लिंक के निर्माण में सहायता के लिए भारत को विशिष्ट प्रतिबंधों से छूट दी थी। हूती विद्रोही संचार के समुद्री मार्गों को बाधित कर सकते हैं, जिससे चाबहार बंदरगाह पर यातायात भी प्रभावित होगा। अफगानिस्तान से अमेरिका सेना की वापसी और तालिबान के पुनः वापसी के कारण वहां अस्थिरता उत्पन्न हो गई है, जिसका भारत के साथ व्यापार संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ईरान व उसके कुछ पड़ोसी देशों के मध्य अस्थिर संबंधों के साथ अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान जैसे देशों में अस्थिर राजनीतिक स्थितियां भी चाबहार बंदरगाह व भारत के आर्थिक हितों को प्रभावित कर रही हैं।

प्रतिस्पर्धा

चाहबहार बंदरगाह में कई परिवहन मार्गों से चुनौतियां हैं, जैसे भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा जो एशिया और पूर्वी यूरोप को जोड़ता है। चाबहार में चीन जैसे मज़बूत प्रतिस्पर्द्धियों के द्वारा किया गया निवेश, ईरान में भारत के हितों को प्रभावित कर सकता है। चाबहार पोर्ट परियोजना का उद्देश्य बंदरगाहों, सड़कों एवं रेलवे जैसे बुनियादी ढांचे में सुधार करना है, जिसके लिए महत्त्वपूर्ण निवेश, समय तथा विशेषज्ञता की आवश्यकता है। कोई भी देरी या अक्षमता इसकी प्रगति में बाधा बन सकती है।

छह माह में पीओके होगा भारत का हिस्सा: योगी आदित्यनाथ

● योगी का बड़ा ऐलान, भारत के साथ रहना चाहती है पाक अधिकृत कश्मीर की जनता

सीएम योगी ने महाराष्ट्र के पालघर में चुनावी जनसभा को किया संबोधित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/पालघर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़ा ऐलान करते हुए कहा है कि तीसरी बार मोदी सरकार बनने के 6 महीने के भीतर पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) भारत का हिस्सा होगा। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के हालात खराब हैं, उससे पीओके संभाले नहीं संभल रहा है और पीओके के लोग भारत में शामिल होना चाहते हैं। योगी आदित्यनाथ शनिवार को यहां नालासोपारा वेस्ट में चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने पार्टी प्रत्याशी हेमंत सांवरा के लिए जनता से वोट की अपील की। योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन में कहा कि छत्रपति शिवाजी के हिन्दवी स्वराज को प्रधानमंत्री मोदी साकार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज कोई टेढ़ी नजर से भारत को देखता है तो उसकी नजर निकाल ली जाती है। कहा कि इस चुनाव में जनता कांग्रेस का विसर्जन कर रही है। योगी ने कहा कि अब यूपी में कोई सड़क पर नमाज नहीं पढ़ सकता, मस्जिदों से लाउडस्पीकर भी उतार लिये गये हैं। उन्होंने इंडी गठबंधन पर हमला बोलते हुए कहा कि पाकिस्तान का राग अलापने वाले वहीं जाकर भीख मांगे। सीएम योगी ने यह भी कहा कि काशी और अयोध्या के बाद अब हम मथुरा की ओर बढ़ रहे हैं। उन्होंने भरोसा जताते हुए कहा कि रामभक्त ही राज करेगा दिल्ली के सिंहासन पर। योगी आदित्यनाथ ने हिन्दवी स्वराज का बोध जागृत करने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज और क्रांतिकारी राघव जी भागरे व श्रीकृष्णा जी राव को नमन किया। उनहोंने कहा कि पिछली बार यहां आया था तो कांग्रेस का सूर्यास्त हो गया था। सीएम योगी ने कांग्रेस के साथ साथ उद्धव ठाकरे और शरद पवार पर हमला बोलते हुए कहा कि ये लोग कहते थे कि भाजपा वाले 100 जन्म भी ले लेंगे फिर भी राम मंदिर नहीं बनवा पाएंगे। हम तब भी कहते थे कि रामलला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे। हमने जो कहा वो कर के दिखा दिया।

कहा कि अब इंडी गठबंधन वाले कहते हैं कि अगर कांग्रेस गठबंधन की सरकार बनी तो फिर राम मंदिर का क्या करना है ये हम तय करेंगे। योगी ने कहा कि रामलला उन्हें इस लायक छोड़ेंगे ही नहीं कि वो कभी दिल्ली पहुंच सकें। ये लोग देश को डराते थे कि राममंदिर का फैसला आएगा तो देश में दंगे हो जाएंगे। आज राममंदिर में श्रीरामलला विराजमान भी हो चुके हैं मगर एक तिनका भी नहीं हिला, दंगा तो बहुत दूर की बात है। उन्होंने बताया कि यूपी में पिछले 7 साल में कोई दंगा नहीं हुआ।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पहले यूपी में बड़े बड़े माफिया सत्ता का संचालन करते थे, बेटी व्यापारी के लिए खतरा थे। हमने बुलडोजर चला के एक झटके में सब खत्म कर दिया। अब यूपी में सड़क पर कोई नमाज नहीं पढ़ता। अब वहां मस्जिदों से माइक भी उतर गये हैं। लोग कुछ समय में लोग उस चिल्लाहट को भूल भी जाएंगे। सीएम योगी ने कहा कि आज भारत का पूरी दुनिया में सम्मान बढ़ा है, सीमाएं सुरक्षित हुई हैं।

अयोध्या में मंदिर का विरोध करने वाले कांग्रेसी इटली में ही बनवा दें श्रीराम और हनुमान मंदिर: मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ कुर्ला (वेस्ट मुंबई)

नए अयोध्या में रामलला का भव्य मंदिर बन गया तो कांग्रेसियों को चिढ़ हो रही है। उत्तर प्रदेश में यह कहते हैं कि राम मंदिर बेकार बना। राम मंदिर भारत में नहीं बनना चाहिए था। मैंने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में जन्मभूमि पर राम मंदिर बनाना था, हमने बना दिया है। कांग्रेसियों से कह रहा हूं कि आपके पास मौका है, आप भी इटली में राम मंदिर बनवा दीजिए। यदि राम मंदिर से चिढ़ है तो बजरंग बली का ही मंदिर बनवा दीजिए। कांग्रेस नेता कहते हैं कि सत्ता में आएंगे तो राम मंदिर को धुलवाएंगे। मुझे पता है कि भगवान कांग्रेसियों को सद्बुद्धि नहीं देंगे। रामलला और भारत के अस्तित्व पर सवाल खड़ा करने वालों को राम ने इस लायक ही नहीं छोड़ा कि वे सत्ता में आएंगे। उक्त बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहीं। उन्होंने शनिवार को मुंबई उत्तर मध्य लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी व नामचीन अधिवक्ता उज्ज्वल निकम के पक्ष में जनसभा को संबोधित किया। योगी ने कहा कि यह चुनाव रामभक्त व रामद्रोहियों के बीच सिमट गया है। राष्ट्रभक्त ही रामभक्त है और रामभक्त ही राष्ट्रभक्त है। भाजपा ने इस सीट से राष्ट्रभक्त को मैदान में उतारा है। मुंबई में हुए हमले में हेमंत करकरे, मुंबई एटीएस के बहादुर अधिकारियों समेत सैकड़ों लोग शहीद हुए थे। आज कांग्रेस बेशर्मी से उन बहादुर अधिकारियों की शहादत पर प्रश्न खड़ा कर कसाब जैसे कसाई को महिमा मंडित कर रही है, लेकिन हमारे प्रत्याशी उज्ज्वल निकम ने उसे फांसी के फंदे तक पहुंचाने का कार्य किया था। ऐसे ब्रिलियंट प्रॉक्सीक्यूटर भारतीय न्यायपालिका से जुड़ते हैं तो न्यायपालिका का गौरव बढ़ता है और माफिया-आतंकियों के पैर कांपते हैं। इन्हें कर्मों की सजा मिलती है। मुंबई हमले के गुनाहगारों को उचित सजा, भारत मां के सपूतों और मुंबई को न्याय दिलाने वाले उज्ज्वल निकम ने जान जोखिम में डालकर अपराधियों, माफिया और देशद्रोहियों के खिलाफ मजबूती से लड़ाई लड़ी थी, जिससे दोबारा कोई मुंबई पर हमला करने का दुस्साहस नहीं कर पाया। सीएम ने कहा कि रामभक्त-राष्ट्रभक्त ही विकास व सुरक्षा भी करेगा।

मतदाता सूचना पर्ची न लाने पर मतदाता को वोट देने से रोका न जाए: नवदीप रिणवा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 में शेष तीन चरणो में भी निर्भीक, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान कराने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए गए हैं, इसके लिए संबंधित जिला निर्वाचन अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। साथ ही मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए भी मतदाता जागरूकता संबंधी गतिविधियों व कार्यक्रमों में और गति लाने के निर्देश भी दिए गए हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने निर्देशित किया कि प्रत्येक पोलिंग स्टेशन पर वोटर असिस्टेंस बूथ बनाने के साथ वहां पर बीएलओ की उपस्थिति तथा मतदाता सूची की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाए। बीएलओ की अन्यत्र ड्यूटी न लगे, बीएलओ स्वयं ही ड्यूटी पर रहें, उसके स्थान पर उनके पुत्र/ पति/ रिश्तेदार ड्यूटी पर न रहें। वोटर असिस्टेंस बूथ दृष्टव्य स्थान पर बनाया जाय और इसके लिए उचित संकेतक भी लगाया जाए। उन्होंने कहा कि मतदाता सूचना पर्ची का शत-प्रतिशत वितरण कराया जाए। बीएलओ द्वारा मतदाता सूचना पर्ची के वितरण के समय मतदाताओं के नाम व मोबाइल नंबर आदि का विवरण भी प्राप्त किया जाए, जिससे कि वितरण की कार्यवाही को वरिष्ठ अधिकारी द्वारा वोटर्स से क्रास-चेक भी किया जा सके। जिन मतदाताओं को मतदाता सूचना पर्ची किन्हीं कारणों से प्राप्त नहीं हो सकीं हैं, वह मतदेय स्थल पर उपलब्ध मतदाता सूची में अपना नाम चेक कर सकते हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि पोलिंग पार्टियों तथा सेक्टर मजिस्ट्रेट को निर्देशित करें, कि मतदान के दिन यदि किन्ही कारणों से मतदाता, मतदाता सूचना पर्ची नही लाया है तो उसे लौटाया न जाए और मतदान से रोका न जाए। राजनैतिक दलों द्वारा जारी की गयी मतदाता पर्ची लाने वाले मतदाताओं को भी लौटाया न जाये, बल्कि उन्हें मतदान करने की सुविधा दी जाये। पोलिंग पार्टियों की जिम्मेदारी होगी कि मतदान के दिन मतदाता द्वारा उपलब्ध कराये गये पहचान संबंधी दस्तावेज़ और मतदाता सूची में उपलब्ध विवरण से मामूली भिन्नता की स्थिति में उसे मतदान से वंचित न किया जाये। मतदान के दिन निर्वाचन ड्यूटी में लगे सभी कार्मिक एवं सुरक्षा बल मतदाताओं के साथ अच्छा व्यवहार करें। यदि कोई व्यक्ति मतदान हेतु अपने वाहन से परिवार के साथ बूथ पर जा रहा हो, तो उसे निर्धारित स्थान तक जाने दिया जाये, पुलिस द्वारा उसे रोका न जाए। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि शिकायत पर बीएलओ या पोलिंग एजेन्ट को मतदान स्थल से हटाने या न हटाने का निर्णय केवल सेक्टर मजिस्ट्रेट/ जोनल मजिस्ट्रेट/ आरओ/ एआरओ का होगा।

पांचवे चरण की 14 लोकसभा सीटों पर चुनाव प्रचार थमा, मतदान कल

● आज रवाना होंगी पोलिंग पार्टियां, सभी मतदान कर्मियों को हीट स्ट्रोक और स्वास्थ्य के दृष्टिगत मेडिकल किट कराई जाएगी उपलब्ध

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश में लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 के पांचवे चरण की 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों तथा लखनऊ पूर्व विधानसभा उप निर्वाचन के लिए 20 मई, 2024 को होने वाले मतदान को सकुशल, निष्पक्ष व शान्तिपूर्ण ढ़ंग से संपन्न कराने के लिए 19 मई (रविवार) को मतदेय स्थलों (पोलिंग बूथों) के लिए पोलिंग पार्टियां रवाना होंगी। इसके लिए पांचवे चरण के सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को समय से पोलिंग पार्टियों को रवाना करने के निर्देश दिए गए हैं। उल्लेखनीय है कि पांचवे चरण में प्रदेश की 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में मोहनलालगंज (अ.जा.), लखनऊ, रायबरेली, अमेठी, जालौन (अ.जा.), झांसी, हमीरपुर, बांदा, फतेहपुर, कौशाम्बी (अ.जा.), बाराबंकी (अ.जा.), फैजाबाद, कैसरगंज और गोण्डा लोकसभा सीटों पर चुनाव होना है, जबकि लखनऊ पूर्व विधानसभा क्षेत्र में उप निर्वाचन होना है। प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी, नवदीप रिणवा ने बताया कि पांचवे चरण के लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों से सम्बन्धित सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को मतदान केंद्रों एवं मतदेय स्थलों (पोलिंग बूथ) पर मतदाताओं एवं मतदान कर्मियों के लिए जरूरी सुविधाएं मुहैया कराने के निर्देश दिए गए है। पोलिंग पार्टियों के रवाना होने से पहले सभी मतदान कर्मियों को हीट स्ट्रोक से बचने और स्वास्थ्य के दृष्टिगत मेडिकल किट उपलब्ध कराई जाएगी, जिससे आवश्यकता पड़ने पर उपयोग किया जा सके।

सातवें चरण में 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए कुल 144 प्रत्याशी चुनाव मैदान में

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● दुद्धी विधानसभा उपचुनाव में छह प्रत्याशी आजमा रहे किस्मत

प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन के सातवें चरण में 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों तथा दुद्धी विधानसभा उप निर्वाचन के लिए अधिसूचना जारी होने के साथ कुल 317 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। नामांकन पत्रों की जांच में 167 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र खारिज हुए और कुल 150 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र वैध पाए गए। नाम वापसी के दिन 6 प्रत्याशियों ने अपनी उम्मीदवारी वापस लेने के बाद अब कुल 144 प्रत्याशी चुनाव मैदान में है। वहीं दुद्धी विधानसभा उप निर्वाचन-2024 के लिए कुल 8 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। नामांकन पत्रों की जांच में 2 प्रत्याशियों के नामांकन पत्र खारिज होने के बाद अब कुल 6 प्रत्याशी चुनाव मैदान में है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि महराजगंज लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 8 प्रत्याशी है, जिनमें भारतीय जनता पार्टी से पंकज चौधरी, बहुजन समाज पार्टी से मो मौसमे आलम, इंडियन नेशनल कॉंग्रेस से वीरेन्द्र चौधरी, अभय समाज पार्टी से बृजेश, सरदार पटेल सिद्धान्त पार्टी से विनोद कुमार पटेल, निर्दलीय प्रत्याशियों में छेदी मजदूर, रामप्रीत, सुनिल है। गोरखपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 13 प्रत्याशी है, जिनमें समाजवादी पार्टी से काजल निषाद, बहुजन समाज पार्टी से जावेद अशरफ उर्फ जावेद सिमनानी, भारतीय जनता पार्टी से रवीन्द्र शुक्ला उर्फ रवि किशन, भारतीय जवान किसान पार्टी से आनन्द कुमार यादव उर्फ आनन्द कुमार फौजी, भारतीय युवा जन एकता पार्टी से अंकित शाह, भागीदारी पार्टी (पी) से शिवशंकर प्रजापति, अल-हिन्द पार्टी से श्रीराम प्रसाद, मेरा अधिकार राष्ट्रीय दल से सोनू राय, भारतीय सर्वधर्म पार्टी से संजय सिंह राणा, निर्दलीय प्रत्याशियों में अमिता भारती, नफीस अख्तर, पिन्टू साहनी, सुधान्शु हैं। कुशीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 9 प्रत्याशी है, जिनमें समाजवादी पार्टी से अजय प्रताप सिंह उर्फ पिन्टू सैथवार, भारतीय जनता पार्टी से विजय कुमार दूबे, बहुजन समाज पार्टी से शुभ नारायण चौहान, सुभाषवादी भारतीय समाजवादी पार्टी (सुभाष पार्टी) से वेद प्रकाश मिश्र, भारतीय लोक नायक पार्टी से सुनील कुमार शुक्ल, राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी से स्वामी प्रसाद मौर्य, आजाद अधिकार सेना पार्टी से हरिकेश, निर्दलीय प्रत्याशियों में अमीय उपाध्याय, रामचन्द्र सिंह हैं। देवरिया लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 7 प्रत्याशी है, जिनमें इंडियन नेशनल कॉंग्रेस से अखिलेश प्रताप सिंह, भारतीय जनता पार्टी से शशांक मणि, बहुजन समाज पार्टी से सन्देश, राष्ट्रीय समानता दल से अगमस्वरूप, जनता समता पार्टी से मुक्तिनाथ सिंह, निर्दलीय प्रत्याशियों में रफीक अंसारी, सत्येन्द्र कुमार मल्ल है। बांसगांव लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 8 प्रत्याशी है, जिनमें भारतीय जनता पार्टी से कमलेश पासवान, बहुजन समाज पार्टी से रामसमुझ, इंडियन नेशनल कॉंग्रेस से सदल प्रसाद, निर्दलीय प्रत्याशियों में गया प्रसाद, मुरलीधर, राजेन्द्र चौधरी, श्रवण कुमार निराला, हीरालाल है।

घोसी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 28 प्रत्याशी है, जिनमें बहुजन समाज पार्टी से बालकृष्ण चौहान, समाजवादी पार्टी से राजीव राय, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी से डॉ. अरविन्द राजभर, जनता क्रांन्ति पार्टी (राष्ट्रवादी) से अवधेष कुमार चौहान, भारतीय सबका दल से इश्वर दयाल सिंह सेठ, अवामी पिछड़ा पार्टी से इस्माइल अन्सारी, आजाद अधिकार सेना से गोपाल सिंह, प्रगतिशील मनाव समाज पार्टी से प्रेम चन्द्र, मांग समाज पार्टी से मदन राजभर, पीस पार्टी से याकूब अंसारी, जन राज्य पार्टी से रामनरेश यादव, सरदार पटेल सिद्धान्त पार्टी से रामवचन, अखिल भारतीय हमारा समाज पार्टी से रोली गुप्ता, मूलनिवासी समाज पार्टी से लीलावती राजभर, सोशलिस्ट युनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) से विजय, कॉम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया से विनोद कुमार राय, राष्ट्रीय जनतांत्रिक भारत विकास पार्टी से विरेन्द्र, समझदार पार्टी से सतीश चंद प्रजापति फौजी, जनलोक विकास पार्टी से संतोष कुमार गुप्ता, निर्दलीय प्रत्याशियों में ज्योतिर्मा पाठक, पवन कुमार चौहान, प्रज्ञेश कुमार, प्रेमचन्द्र नायक, बद्री नाथ, राजीव कुमार सिंह, राजेन्द्र अग्रवाल, राजेन्द्र राम, सौदागर है। सलेमपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 9 प्रत्याशी है, जिनमें बहुजन समाज पार्टी से भीम राजभर, समाजवादी पार्टी से रमाशंकर राजभर, भारतीय जनता पार्टी से रविन्दर कुशवाहा, जनता क्रान्ति पार्टी (राष्ट्रवादी) से जयबहादुर उर्फ जयबहादुर चौहान, अखिल भारतीय सर्वजन हित पार्टी से श्रीनारायण मिश्रा, सरदार पटेल सिद्धान्त पार्टी से सूर्य प्रकाश गौतम, निर्दलीय प्रत्याशियों में अमरेश ठाकुर, श्रीकृष्ण, सद्दाम हुसैन है। बलिया लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 13 प्रत्याशी है, जिनमें भारतीय जनता पार्टी से नीरज शेखर, बहुजन समाज पार्टी से लल्लन सिंह यादव, समाजवादी पार्टी से सनातन पाण्डेय, सरदार पटेल सिद्धान्त पार्टी से रवि कान्त सिंह उर्फ रवि पटेल, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से रामनिवास गोंड, आजाद समाज पार्टी (कांशी राम) सूर्य बली प्रसाद, निर्दलीय प्रत्याशियों में अवधेश वर्मा, अशोक गुप्ता, प्रकाश कुमार, मणिन्द्र, रंजना, शेषनाथ, सुमेश्वर है। गाजीपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 10 प्रत्याशी है, जिनमें समाजवादी पार्टी से अफजाल अंसारी, बहुजन समाज पार्टी से उमेश कुमार सिंह, भारतीय जनता पार्टी से पारस नाथ राय, विश्व कल्याण राष्ट्रीय मानव समाज पार्टी से अजय, युग तुलसी पार्टी से आदित्य श्रीवास्तव, भारतीय लोकवाणी पार्टी से धनन्जय कुमार तिवारी, मौलिक अधिकार पार्टी से रामप्रवेश, निर्दलीय प्रत्याशियों में नुसरत अंसारी, सत्यदेव यादव, ज्ञानचन्द्र बिन्द है। चन्दौली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 10 प्रत्याशी है, जिनमें समाजवादी पार्टी से बीरेन्द्र सिंह, भारतीय जनता पार्टी से डॉ महेन्द्र नाथ पाण्डेय, बहुजन समाज पार्टी से सत्येन्द्र कुमार मौर्य, सरदार पटेल सिद्धान्त पार्टी से अरविन्द कुमार पटेल, मौलिक अधिकार पार्टी से राजेश विश्वकर्मा, समझदार पार्टी से राम गोविन्द, युग तुलसी पार्टी से शेर सिंह, भागीदारी पार्टी (पी) से शोभनाथ प्रजापति, जय हिन्द नेशनल पार्टी से संजय कुमार सिन्हा, निर्दलीय प्रत्याशी में सन्तोष कुमार है। वाराणसी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 7 प्रत्याशी है, जिनमें इंडियन नेशनल कॉंग्रेस से अजय राय, बहुजन समाज पार्टी से अतहर जमाल लारी, भारतीय जनता पार्टी से नरेन्द्र मोदी, युग तुलसी पार्टी से कोलीशेट्टी शिवकुमार, अपना दल (कमेरावादी) से गगन प्रकाश यादव, निर्दलीय प्रत्याशियों में दिनेश कुमार यादव, संजय कुमार तिवारी है। मिर्जापुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 10 प्रत्याशी है, जिनमें अपना दल (सोनेलाल) पार्टी से अनुप्रिया पटेल, बहुजन समाज पार्टी से मनीष कुमार, समाजवादी पार्टी से रमेश चन्द बिन्द, एकलव्य समाज पार्टी से अनिल कुमार, अपना दल (कमेरावादी) से दौलत सिंह, राष्ट्रीय समाज पक्ष से रामधनी, पूर्वांचल महापंचायत से सत्यदेव, ऑल इण्डिया फॉरवार्ड ब्लॉक से समीर सिंह, निर्दलीय प्रत्याशियों में राजेश, लाल जी वर्मा है। राबर्ट्सगंज लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 12 प्रत्याशी हैं, जिनमें समाजवादी पार्टी से छोटेलाल, बहुजन समाज पार्टी से धनेश्वर, अपना दल (सोनेलाल) पार्टी से रिंकी सिंह, राष्ट्रीय समानता दल से अरविन्द कुमार भारती, कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया से अशोक कुमार कन्नौजिया, जनता क्रान्ति पार्टी (राष्ट्रवादी) से चन्द्रिका प्रसाद, राष्ट्रीय समाज दल (आर) से प्रभुदयाल, सरदार पटेल सिद्धान्त पार्टी से राम शिरोमणि, राष्ट्रीय समाज पक्ष से शिवपुजन, जनहित संकल्प पार्टी से सुभागी, निर्दलीय प्रत्याशियों में सुकालू, सोनू निगम है।

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने परिवार संग किया रामलला का दर्शन-पूजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/अयोध्या

रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के बाद से लगातार देश के विभिन्न प्रदेशों के लोग रामलला का दर्शन करने के लिए अयोध्या पहुंचा रहे हैं। इस क्रम पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शनिवार को अपने परिवार संग भगवान श्रीराम के बाल स्वरूप विग्रह का विधि-विधान से दर्शन पूजन कर भाव विभोर हो गए। उनके स्वागत में मंदिर परिसर सहित पूरे गर्भगृह को भव्य रूप से फूलों से सजाया गया था।

वे कुबेर टीला भी गये, पक्षिराज जटायु की विशाल प्रतिमा को श्रद्धापूर्वक निहारा और नतमस्तक हुए। वहीं मुख्यमंत्री योगी

● स्वागत में मंदिर परिसर सहित पूरे गर्भगृह को भव्य रूप से फूलों से सजाया गया था

आदित्यनाथ के निर्देश पर अतिथियों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए चाक-चौबंद इंतजाम किए गए थे। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद शुक्रवार दोपहर बाद ही परिवारजनों के साथ रामनगरी पहुंच गए थे।

जैन मंदिर में अल्प विश्राम के बाद वे सरयू आरती में सम्मिलित हुए। आज प्रात: वे श्रीराम लला के दर्शन को पहुंचे। उनकी अगवानी के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चम्पत राय पहले से मंदिर परिसर में मौजूद थे।

भाजपा की देश में नया संविधान लाने की है कुटिल योजना: दिग्विजय सिंह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कहा है कि भाजपा के चार सौ पार की घोषणा के पीछे देश में नया भारतीय संविधान लाने की कुटिल योजना है। क्योंकि सन 1950 से आरएसएस ने भारतीय संविधान को पूर्ण स्वीकार नहीं किया है, और आज भी स्वयं मोहन भागवत का बयान देखेंगे तो उन्होंने आरक्षण के मामले पर कई बार प्रश्नचिन्ह लगाया है। आज जो देश के हालात हैं तो उनका प्रमुख मुद्दा तो यही है। हमने संविधान को पास करके संसदीय प्रणाली को अपनाया और संसदीय प्रणाली अपनाने के बाद सरकार बनने के बाद जो वह नियम और कानून बनाती हैं उसमें वह परिलक्षित होती है। यदि आप देखेंगे तो 2014 में पहला ऑर्डिनेंस नरेन्द्र मोदी जो लाए वह भूमि अधिग्रहण अधिनियम को समाप्त करने का था कांग्रेस के विरोध के बाद नहीं ला पायी। लेकिन उसका जो मूल्य उद्देश्य था कि ग्रामीण क्षेत्र में सर्किल रेट से चौगुनी तथा शहरी क्षेत्र में दोगुनी कीमत दी जायेगी। उसको उन्होंने कमजोर करके राज्यों को अधिकार दे दिया। पहला हक उन्होंने किसान का ही छीना उसके बाद यदि आप 2019 के बाद देखें तो वह किसानों के खिलाफ तीन काले कृषि कानून लाये जो किसान और किसान की उपज को कॉर्पोरेट को सौंपने का कुटिल प्रयास था। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने यह बात शनिवार को कांग्रेस मुख्यलय में आयोतिज पत्रकार वार्ता में कही।

उन्होंने कहा कि मैं हरियाण, पंजाब तथा इस देश के किसान संगठनों को बधाई देना चाहता हूँ कि उन्होंने उनके इस कुटिल प्रयास को सफल नहीं होने दिया, अन्तोगत्वा उन्हें वापस लेना पड़। इसी प्रकार मजदूरों के संरक्षण के लिये क्या कानून होने चाहिए उस पर वर्ष प्रति वर्ष चर्चा होती है, मगर पिछले दस सालों में सिर्फ एक बार ही इस पर कांन्फ्रेस हुई है। उसके बाद बिना चर्चा करे 44 मजदूर हितैषी कानूनों को बिना चर्चा किए समाप्त करके उसे चार कोड में विभाजित कर दिया जबकि सारी ट्रेड यूनियन ने उसका विरोध किया। उसके बावजूद भी उन्होंने मजदूरों का हक छीना। उन्होंने कहा कि एक तरफ गांधी नेहरू और लोहिया की विचारधारा है जो मूल रूप से किसान मजदूर छोटा एवं मध्यम व्यापारी, छोटा, मध्यम वर्गीय उद्योग के लिए रही है, और उसी के आधार पर अनेक कानून बने जमींदारी उन्मूलन अधिनियम तक। जो मेहनतकश किसान जो खेत जोतता था उसे मालिकाना हक दिया गया और यही एक कारण था कि इस देश में खूनी क्रांति नहीं हुई। देश में छोटे-बड़े उद्योग स्थापित किये और समय के साथ अलग अलग योजनाएं लाएं शिक्षा के क्षेत्र में, स्वास्थ्य के क्षेत्र में हर तरह से देश के विकास में योगदान दिया। सिंह ने कहा कि तत्कालीन कृषि मंत्री ने कृषि यंत्रों पर ट्रेक्टर पर जीएसटी माफ करने का प्रस्ताव सरकार को दिया लेकिन माफ नहीं किया गया लेकिन कांग्रेस पार्टी ने इस बात अपने घोषण पत्र में किया है। किसानों के लिए हमारे पास तीन योजनाएं हैं न्यून्तम समर्थन मूल्य का कानून लायेंगे, कर्जामाफी के लिए आयोग बनायेंगे और जितने भी कृषि यंत्र हैं उन पर जीएसटी माफ करेंगे।

मुख्यमंत्री ने 49 दिन में 111 जनसभाओं समेत किए 144 चुनावी कार्यक्रम

लोकसभा चुनाव-2024

● पांचवें चरण में पांच केंद्रीय मंत्री मैदान में, पांचों के प्रचार में पहुंचे योगी

● औसतन तीन से चार रैलियों में प्रतिदिन पहुंच रहे मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोकसभा चुनाव-2024 के लिए पांचवें चरण का चुनाव 20 मई को है। 18 मई यानी शनिवार की शाम चुनाव प्रचार थम जाएगा। इस चरण में उत्तर प्रदेश की 14 सीटों पर चुनाव होंगे। इन सभी सीटों पर कमल खिलाने का संकल्प लिए योगी आदित्यनाथ चिलचिलाती धूप और 45 डिग्री तापमान में भी आमजन के बीच पहुंचे तो वहीं मौसम की परवाह किए बिना भी योगी आदित्यनाथ की रैलियों में जबर्दस्त भीड़ उमड़ती रही। आमजन का यह प्यार, स्नेह देख योगी आदित्यनाथ भी यूपीवासियों के विश्वास के प्रति आभारी रहे। वहीं पांचवें चरण पर निगाह दौड़ाएं तो उत्तर प्रदेश के लिहाज से यह चरण काफी महत्वपूर्ण है। इस चरण में यूपी की सबसे खास सीटों में से एक अयोध्या (लोकसभा-फैजाबाद) में भी चुनाव है। वहीं केवल एक सीट (रायबरेली) कांग्रेस के पास है, शेष पर भाजपा का कब्जा है। रायबरेली सीट पर भी कमल खिलाने और शेष पर पिछली बार से बढ़त दिलाने के लिए भी योगी आदित्यनाथ ने सभी प्रत्याशियों का हाथ थामे रखा। उत्तर प्रदेश के अलावा स्टार प्रचारक योगी आदित्यनाथ अब तक आठ राज्यों में भी चुनाव प्रचार कर चुके हैं।

योगी आदित्यनाथ 49 दिन के भीतर लोकसभा चुनाव-2024 के लिए 144 कार्यक्रम कर चुके हैं। 27 मार्च को मथुरा से सीएम ने प्रबुद्ध सम्मेलन कर यूपी की चुनावी कमान संभाल ली थी। 27 मार्च से 18 मई तक कुल 49 दिन सीएम मैदान में उतरे। इनमें 111 जनसभा कर कर्मयोगी के रूप में बनी अपनी पहचान को एक बार फिर सार्थकता प्रदान की। वहीं अब तक उन्होंने 15 प्रबुद्ध सम्मेलन, 12 रोड शो भी कर लिए हैं। इसके अलावा सीएम योगी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (सातवें चरण में मतदान) व रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के नामांकन में भी उपस्थित रहे। वाराणसी में कार्यकर्ता सम्मेलन में भी उन्होंने हिस्सा लिया।

सीएम योगी आज करेंगे आधा दर्जन चुनावी रैली

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

चुनावी पिच पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को छह रैली करेंगे। इस चुनाव में योगी आदित्यनाथ यूपी के संभवत: पहले ऐसे नेता होंगे, जो एक ही दिन में छह-छह रैलियों को संबोधित करेंगे। इन छह लोकसभा सीटों पर तीन नए प्रत्याशियों को भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव मैदान में उतारा है। दो सीटों पर सांसदों को टिकट दिया गया है, जबकि 2019 चुनाव में एक सीट पर हारी भाजपा इस बार कमल खिलाएगी। सीएम योगी आदित्यनाथ रविवार को एनडीए प्रत्याशियों के चुनाव प्रचार में 50वें दिन उतरेंगे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को छह रैली करेंगे। उनकी पहली

रैली आजमगढ़ से सांसद, लोकसभा प्रत्याशी व भोजपुरी के सुपरहिट अभिनेता/गायक दिनेश लाल यादव निरहुआ के लिए होगी तो दूसरी जनसभा सीएम योगी लालगंज से भाजपा उम्मीदवार नीलम सोनकर के लिए करेंगे। 2019 में यह सीट बसपा ने जीती थी, लेकिन इस बार कमल खिलाने के लिए 16 मई को पीएम नरेंद्र मोदी संग योगी आदित्यनाथ ने यहां रैली की थी। वे रविवार को फिर लालगंज में रहेंगे। इसके अलावा जौनपुर से कृपाशंकर सिंह के लिए भी जनसभा कर रविवार को सीएम वोट मांगेंगे। सीएम योगी आदित्यनाथ रविवार को ही इलाहाबाद व फूलपुर संसदीय सीट पर चुनाव प्रचार करेंगे। दोनों ही सीटों पर पार्टी की ओर से नए प्रत्याशियों पर दांव लगाया गया है। इलाहाबाद से नीरज त्रिपाठी व फूलपुर से विधायक प्रवीण पटेल लोकसभा चुनाव में मैदान में हैं। वहीं प्रतापगढ़ से भाजपा सांसद व प्रत्याशी संगम लाल गुप्ता के लिए भी योगी आदित्यनाथ चुनाव प्रचार करेंगे। रविवार को सीएम की आखिरी रैली इलाहाबाद लोकसभा क्षेत्र में होगी।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

दैनिक जागरण

अहंकार हमारी सीखने की प्रवृत्ति को समाप्त कर देता है

विभाजनकारी राजनीति

पहले भी विवादों में रहे कांग्रेस के नेता सुखपाल खैहरा ने जिस तरह यह कहा कि उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग पंजाब पर कब्जा करना चाहते हैं, वह विभाजनकारी राजनीति के अलावा और कुछ नहीं। यूपी-बिहार के लोग तो पंजाब की समृद्धि में सहायक बन रहे हैं, लेकिन यह बात विभाजनकारी मानसिकता वाले लोग नहीं समझ सकते। आमतौर पर इस तरह की विभाजनकारी और वैमनस्य पैदा करने वाली राजनीति छोटे एवं क्षेत्रीय दल करते रहे हैं। इस तरह की राजनीति देश के कई हिस्सों में समय-समय पर देखने को मिली है। ऐसी राजनीति करने वालों को सफलता नहीं मिली और मजबूरी में उन्हें अपना रवैया बदलना पड़ा। इसका उदाहरण है शिवसेना। एक समय महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने भी दूसरे राज्यों के लोगों के खिलाफ नफरत पैदा करने की राजनीति की, लेकिन वह बुरी तरह नाकाम रही। यह आश्चर्यजनक है कि अब कांग्रेस के नेता भी क्षेत्रीय दलों जैसी भाषा बोलने लगे हैं। इस तरह की भाषा यही बताती है कि किस तरह कांग्रेस का वैचारिक रूप से भटकाव बढ़ता चला जा रहा है। निःसंदेह बात केवल संगरूर से चुनाव लड़ रहे कांग्रेस प्रत्याशी सुखपाल खैहरा की ही नहीं है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कुछ समय पहले कर्नाटक के कांग्रेस नेताओं ने किस तरह उत्तर-दक्षिण के बीच खाई पैदा करने की कोशिश की थी। पहले यह काम तमिलनाडु के क्षेत्रीय दलों के नेता किया करते थे, लेकिन ऐसा लगता है कि कांग्रेस को भी उनकी राजनीति रास आने लगी है।

पिछले कुछ समय से राहुल गांधी जिस तरह जाति जनगणना पर जोर देने में लगे हुए हैं और जगह-जगह जाकर यह पूछ रहे हैं कि अमुक-अमुक संस्थाओं एवं पदों में किस जाति के कितने लोग हैं, वह भी एक तरह की विभाजनकारी राजनीति है। जाति जनगणना की मांग करके राहुल गांधी विभिन्न जातियों के बीच की खाई चौड़ी करने का ही काम कर रहे हैं। वह केवल यहीं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अमीरों को खलनायक करार देकर उन्हें गरीबों का शत्रु साबित करने में लगे हुए हैं। वह यह बुनियादी बात समझने को तैयार नहीं कि अमीरों को गाली देकर और उन्हें लांछित करके वह उद्यमशीलता पर प्रहार ही कर रहे हैं। राहुल गांधी संपत्ति का सर्वे करने की जो बात कर रहे हैं, उसके पीछे भी अमीरों और गरीबों के बीच विभाजन पैदा करना और उन्हें एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करना है। कांग्रेस ने यही काम सेक्युलरिज्म के नाम पर अल्पसंख्यकवाद को पोषित करके किया था। गरीबों के हित की बात करना अच्छी बात है, लेकिन ऐसा करते हुए कारोबारियों को उनका शोषक बताना वह वामपंथी विचार है, जो हर जगह विनाशकारी ही साबित हुआ है। ऐसा लगता है कि वामपंथियों की संगत में आकर कांग्रेस यह देखने-समझने में नाकाम है कि देश में वाम दलों की कैसी दुर्दशा हुई।

यह आलम ठीक नहीं

भ्रष्टाचार के आरोप में राज्य के ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम गिरफ्तार किए गए हैं। संयोग से झारखंड बनने के बाद राज्य में ग्रामीण विकास मंत्री की कुर्सी संभालने वाले आलमगीर तीसरे नेता हैं, जिन्हें जेल जाना पड़ा है। इससे पहले मंत्री रहे एनोस एक्का और हरिनारायण राय भी जेल जा चुके हैं। इससे साफ है कि राज्य में ग्रामीण विकास विभाग का आलम क्या है? इस विभाग में सत्ता और मंत्रियों की छांव में भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी के कारण ही गांवों का अपेक्षित विकास नहीं हो रहा है। गांवों के विकास की राशि मंत्रियों, अधिकारियों और अभियंताओं की जेब में जा रही है। राज्य में जिस तरह से भ्रष्टाचार के एक के बाद दूसरे बड़े मामले सामने आते रहे हैं, उससे यहां के लोग शर्मिंदा होते हैं। जनता यह देख कर स्वयं को ठगा हुआ महसूस करती है। टेंडर में कमीशन का खेल हो या सेना की जमीन को फर्जी कागज बनाकर बेचने का मामला, ये सब घोटाले झारखंड में हो रहे हैं। जिस तरह से केंद्रीय एजेंसियों की छापेमारी में नोटों के पहाड़ मिल रहे हैं वह चौंकाने वाली है। राज्य के एक पूर्व मुख्यमंत्री, एक पूर्व मंत्री जेल में हैं। दो आइएएस अधिकारी जेल में हैं। यह प्रशासनिक व्यवस्था की असफलता का प्रतीक है। बेलगाम होते भ्रष्टाचारियों पर निचले स्तर से निगरानी की व्यवस्था फेल हो रही है। इसी वजह से मामला लंबे समय तक दबा रहता है। अब समय आ गया है कि राज्य व्यवस्था को इसके लिए कठोर नियामक बनाना चाहिए। भ्रष्टाचार करने वालों को कड़ी सजा देकर ही इस प्रवृत्ति पर रोक लगाई जा सकती है। भ्रष्टाचारियों से मिले पैसे को गरीबों की भलाई में उपयोग में लाया जाना चाहिए।

भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार होनेवाले आलमगीर आलम झारखंड के तीसरे ग्रामीण विकास मंत्री हैं

नागरिकता कानून का बेतुका विरोध

संजय गुप्त

सीएए का विरोध कर रहे दलों को यह देखना चाहिए कि जिन लोगों को नागरिकता दी गई है, उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं है

अवधेश राजपूत

नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए पर अमल करते हुए तीन सौ से अधिक लोगों को भारत की नागरिकता दे दी गई। जिस समय इस कानून पर संसद ने मुहर लगाई थी, उस समय कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दलों ने यह दुष्प्रचार किया था कि यदि इस कानून पर अमल हुआ तो देश के मुसलमानों की नागरिकता छीन ली जाएगी। इस दुष्प्रचार के चलते दिल्ली सहित देश के अनेक हिस्सों में हिंसक प्रदर्शन हुए। दिल्ली में तो शाहीनबाग इलाके में व्यस्त सड़क को बाधित कर महीनों तक धरना दिया गया। इसके कारण ही दिल्ली में भीषण दंगे हुए। इन दंगों में 50 से अधिक लोग मारे गए। इन दंगों के कारण देश को असहज स्थिति का सामना करना पड़ा, क्योंकि उस समय तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भारत के दौरे पर थे। संभवतः सीएए के खिलाफ हिंसक विरोध और उपद्रव के चलते ही सरकार ने उस पर अमल कुछ समय के लिए टाल दिया। अंततः दो महीने पहले इस कानून के नियम अधिसूचित कर अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश से प्रताड़ित होकर भारत आए लोगों को नागरिकता देने का रास्ता साफ किया गया। अब जब इन तीन देशों में प्रताड़ित हुए अल्पसंख्यकों को नागरिकता देना प्रारंभ कर दिया गया है, तब विरोधी दलों को इस पर विचार करना चाहिए कि इस कानून का विरोध करके उन्हें हासिल क्या हुआ? सीएए में संशोधन इसलिए किया गया था, ताकि इन तीनों देशों में धार्मिक कारणों से प्रताड़ित हो रहे और किसी तरह जान बचाकर भारत आए हिंदुओं, सिखों, बौद्धों, जैनियों, ईसाइयों और पारसियों को भारत की नागरिकता दी जा सके। एक समय ऐसे लोगों को नागरिकता प्रदान करने की मांग खुद कांग्रेस के नेताओं ने संसद में की थी, लेकिन जब मोदी सरकार ने इसकी व्यवस्था की तो संकीर्ण राजनीतिक कारणों से कांग्रेस और अन्य दल उसके विरोध में खड़े हो गए। इन दलों को देखना चाहिए कि जिन लोगों को नागरिकता दी गई है, उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं है।

देश का कोई भी दल इससे अनजान नहीं कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों को किस तरह प्रताड़ित किया जाता है। इस प्रताड़ना के चलते ही इन तीनों देशों में अल्पसंख्यकों की आबादी लगातार कम होती चली जा रही है। इससे परिचित होने के बावजूद विपक्षी दलों ने नागरिकता संशोधन कानून को लेकर समाज में जानबूझकर भ्रांति फैलाने की कोशिश की। इसके लिए उन्होंने यह दलील दी कि जब एनआरसी यानी राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर लाया जाएगा तो उसमें ऐसी व्यवस्था की जाएगी, जिससे भारत के मुसलमानों की नागरिकता रद होने का खतरा पैदा हो जाएगा। हालांकि भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में एनआरसी पर कुछ नहीं कहा है, लेकिन वह समय की मांग है। यह पता चलना ही चाहिए कि देश में कितने लोग अवैध रूप से रह रहे हैं अथवा नागरिकता विहीन हैं। भावी सरकार को एनआरसी पर काम करना चाहिए और ऐसा करते समय इसका ध्यान रखना चाहिए कि सीएए की तरह उसके खिलाफ दुष्प्रचार न होने पाए।

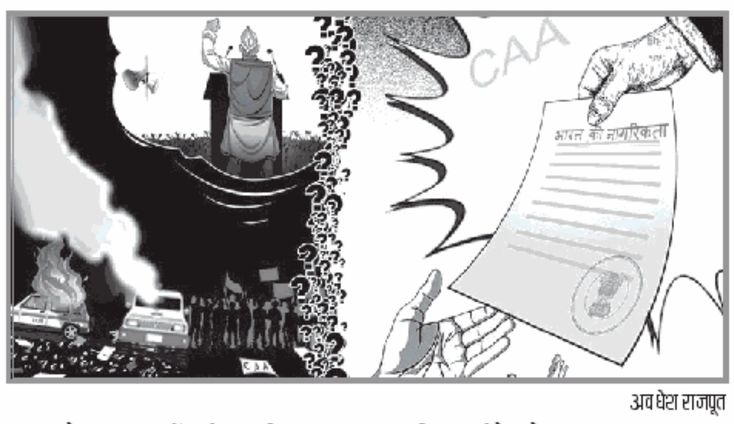

विपक्षी दल यह देखने से इन्कार कर रहे हैं कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में रह रहे जो अल्पसंख्यक प्रताड़ना के बाद किसी प्रकार भारत आ गए, वे तो वहां के बहुसंख्यकों के रवैये के कारण ही अपना देश छोड़कर आए। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि बांग्लादेश से तमाम मुसलमानों ने किसी प्रताड़ना के कारण नहीं, बल्कि बेहतर जीवन की आस में भारत में घुसपैठ की है। उनकी घुसपैठ के चलते पश्चिम बंगाल और असम समेत पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों का सामाजिक तानाबाना बदल गया है। बांग्लादेश से आए घुसपैठियों ने तो अनुचित तरीके से मतदाता पहचान पत्र समेत अन्य पहचान पत्र हासिल कर लिए हैं। कुछ दल इन घुसपैठियों को अपने वोट बैंक की तरह देखते हैं। इसी कारण वे सीएए का विरोध करने में लगे हुए हैं।

जब भारत का विभाजन हुआ, तब पाकिस्तान में हिंदुओं एवं अन्य अल्पसंख्यकों की आबादी 25 प्रतिशत से अधिक थी। जब बांग्लादेश पाकिस्तान से टूटकर अलग हुआ तो हिंदुओं की एक बड़ी आबादी बांग्लादेश में रह रही थी। आज पाकिस्तान में मुश्किल से डेढ़-दो प्रतिशत हिंदू बचे हैं और बांग्लादेश में सात-आठ प्रतिशत। पाकिस्तान और बांग्लादेश यह बता सकने की स्थिति में नहीं कि शेष हिंदू कहां गए? स्पष्ट है कि या तो उनका जबरन मतांतरण कराया गया या फिर वे प्रताड़ना के चलते पलायन को विवश हुए। पाकिस्तान और बांग्लादेश में जो स्थिति हिंदुओं की है, वही अन्य अल्पसंख्यकों की भी। अफगानिस्तान का तो और भी बुरा हाल है। अब वहां मुश्किल से एक दो दर्जन ही हिंदू-सिख बचे हैं। इन तीनों देशों के जो अल्पसंख्यक 2014 के पहले भारत आ गए थे, उन्हें ही सीएए के तहत नागरिकता दी जा रही है। समझना कठिन है कि इसमें गलत क्या है? इन शरणार्थियों को नागरिकता देकर भारत अपने नैतिक दायित्व को ही पूरा कर रहा है। यह एक ऐसी मानवीय पहल है, जिसकी सराहना की जानी चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य से कुछ दल अभी भी विरोध कर रहे हैं। उनकी मांग है कि इन तीनों देशों के बहुसंख्यकों यानी मुसलमानों को भी नागरिकता देने की व्यवस्था की जाए। निःसंदेह एक समय भारत सबको शरण देता था, लेकिन आज वह चाहकर भी ऐसा नहीं कर सकता। भारत सबके लिए शरणस्थली नहीं बन सकता, क्योंकि वह विश्व की सर्वाधिक आबादी वाला देश बन चुका है और उसके संसाधनों पर बोझ बढ़ता जा रहा है। म्यांमार से जो रोहिंग्या अवैध तरीके से भारत आए, वे जहां भी रह रहे हैं, वहां कानून एवं व्यवस्था के लिए समस्या बन रहे हैं। भारत अपने सामाजिक तानेबाने के छिन्न-भिन्न होने का खतरा मोल नहीं ले सकता और तब तो बिल्कुल भी नहीं, जब एक साजिश के तहत घुसपैठ कराई जा रही है।

इससे बुरी बात और कोई नहीं कि लोकसभा चुनाव के मौके पर विभिन्न दलों ने अपने जो घोषणा पत्र जारी किए, उनमें से वामपंथी दलों और तृणमूल कांग्रेस ने नागरिकता संशोधन कानून खत्म करने का वादा किया है। इनके दबाव में आकर कांग्रेस भी कह रही है कि वह भी सत्ता में आई तो इस कानून को खत्म करेगी। यह सस्ती राजनीति ही नहीं, बल्कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश से जान बचाकर भारत आए और शरणार्थी के रूप में रह रहे लोगों के साथ की जाने वाली निर्दयता भी है।

response@jagran.com

एक अदद जमानत की चाह

हास्य-व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

वह जानते हैं, जमानत का सिलसिला कायम है। आज नहीं तो कल मिलेगी ही! कुछ नहीं तो सशर्त तो मिल ही जाएगी

लगता है कि अदालत ने उनको जमानत देकर उनका मनचाहा काम कर दिया। अब वह निहायत मुक्त हैं। उनको अपना ही नहीं, गैरों तक के तमाम काम निपटाने की मोहलत मिल गई है। वे सारे काम, जो जेल जाने की वजह से अधूरे रह गए थे और जिनको पूरा करने के सपने सलाखों के पीछे करवटें बदलते हुए देखा करते थे, उनके साकार होने का मौसम आ चुका है। सबके अपने-अपने सपने हुआ करते हैं। इन्हें देखने पर काहे की पाबंदी! लोग देखते थे, देखते हैं और देखते रहेंगे। कुछ लोग उन्हें पूरा भी करना चाहते हैं। कई लोग तो ऐसे भी पाए गए हैं, जिन्हें सिर्फ सपने देखने की आदत पड़ी रहती है। ऐसे लोग न जाने कैसे-कैसे सपने देखने लग जाते हैं कि नैनों की जोत चली जाती है। बेचारों को कुछ सूझता नहीं है, इसलिए थोड़ा-बहुत बहक जाया करते हैं। ऐसे ही स्वनामधन्य महानुभावों के लिए ये अदालतें बनी हुई हैं। यदि इस धरती पर चोरी-चकारी, लोभ, बेईमानी, भ्रष्टाचार, हिंसा वगैरह न होती तो कोर्ट कचहरी का अस्तित्व भी नहीं होता। वकीलों के चेंबर में मक्खियां भिनभिनाया करतीं।

लोग पकड़े जाते हैं। जेलों में प्रेमपूर्वक लाए जाते हैं, मेहमानखाने में बाइज्जत ठहराए जाते हैं। खाते-पीते हैं। तब एक रोज अदालत के सामने पेश किए जाते हैं। इरहें-जिरहें होती हैं। प्रेस-टीवी वाले फोटुएं खींचते हैं। मन ही मन हुड़कते हैं, 'एक दफा बाहर आ जाऊं, फिर देखना, कितनों की खालें खींचता हूं!' अभी मांद में है। छूटने का इंतजार है। फिर वे जमानत पर छूट जाते हैं और तब मस्ती से छुट्टा सांड की मानिंद जिधर तबीयत आ गई, चरने को निकल पड़ते हैं। आखिरकार वे ही जमानत पर छूटे हैं, उनकी आदतें नहीं।

एक आरोपित जनसेवक की भी दिली इच्छा उसके भीतर उमड़ती-घुमड़ती है। देश को ठिकाने लगाने का लक्ष्य उनकी काजलदार-अंधी आंखों में नई चमक पैदा करता है। अब पूरे होंगे सपने। वह यह भी जानता है कि काश लोभ के दर्पण के सामने वह इस कदर अंधा न होता, तो 'जेल-बेल' की नौबत ही क्यों आती? कहा भी गया है, चारे के अंधे को हर तरफ भूसा-ही-भूसा नजर आता है। ऐसी जीवात्माएं जमानत पर रिहा होती हैं और जेल की कोठरियां सूनी पड़ जाती हैं। वह भी सोचती हैं, हाय, कितने अरमानों से पाला था इन्हें कि ताउम्र साथ निभाएंगे। मगर ये बड़े बेवफा निकले। कोठरियां सोचती हैं, ये ऐसे बेवफा न होते तो यहां आते ही क्यों? फिर यह विचार कर संतोष करती हैं कि तू नहीं और सही। 'कल और आएंगे नोटों की मोटी गड्डियां गिनने वाले, तुमसे ज्यादा खाने वाले तुमसे बेहतर पीने वाले।' ऐसे लोग भी इन्हीं गद्दों पर लेटेंगे। रात-रात भर हवालों-घोटालों के नाम लेते हुए बड़बड़ाएंगे। खर्राटे भी लेंगे तो लगेगा कि सीबीआइ और ईडी गले में अटकी हुई हैं। आजकल यही इस मुल्क की नियति हो गई है। लोग इसे पान की तरह खा और चबा रहे हैं। जब गाल भर जाते हैं तो जेलों को उगालदान समझकर यहां की दीवारों पर दो-चार पीकें मारने चले आते हैं। कारागारों का पर्यावरण खराब करते हैं और सादर जमानत पर बाहर चले जाते हैं। कई तो ऐसे निकले, जो यहां आए ही नहीं! बाहर ही बाहर अग्रिम बेल लेकर ठाठपूर्वक पूरे देश को जेलखाने में बदलने की तजबीजें तलाशने में लगे हैं।

अहा, कितनी सुविधाएं हैं? करोड़ों का बारा-न्यारा करो और पचास-पचास हजार के एक या दो मुचलके भर कर चौड़े से टहलो। मुकदमे चलते रहेंगे। तारीखें पड़ती रहेंगी। जनता की कमर पर लातें पड़ती रहेंगी। अदालतें 'आर्डर-आर्डर' करती रहेंगी। वह इसे आदेश मानकर अपने धंधे निपटाते रहेंगे। डरने की कोई जरूरत नहीं है। जो डर गया, वह मर गया। जो अमर हैं, वे भ्रष्टाचार का अनंत सिलसिला जारी रखे हुए हैं। वे जानते हैं, जमानत का सिलसिला कायम है। आज नहीं तो कल मिलेगी ही! कुछ नहीं तो सशर्त तो मिल ही जाएगी।

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

तथ्य-कथ्य | **पिछले छह लोकसभा चुनावों में श्रीनगर, कश्मीर में मतदान प्रतिशत** स्रोत : चुनाव आयोग

ऊर्जा

संतुष्टि

जब विधाता ने जीवों की सृष्टि की तो उनके भरण-पोषण के लिए भी विविध प्राकृतिक संसाधनों का निर्माण किया। ये असीमित तो नहीं, किंतु प्रचुर अवश्य हैं। इनके सदुपयोग से सभी प्राणियों की आवश्यकताओं की पूर्ति हमेशा होती रहेगी। इन पर समानरूपेण सभी का अधिकार है। नीर-क्षीर विवेक से मनुष्य इनकी सहायता से आत्म कल्याणार्थ विविध पदार्थों का निर्माण कर सकता है। विकास का यह क्रम अनंत काल से चलता रहा है। यद्यपि इसमें विधाता का कोई हस्तक्षेप नहीं। फिर भी संसार में ऊंच-नीच का भेद दृष्टिगोचर होता है। संतुष्टि का अभाव इसका प्रमुख कारण है। इसीलिए मनुष्य द्वारा संसाधनों का दुरुपयोग और अनुचित दोहन किया जाता है तथा समाज में आवश्यकता से अधिक धनादि पदार्थों के संग्रह की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

संतुष्टि का कामनाओं के साथ गहरा संबंध है। जब किसी व्यक्ति की कामनाएं अनंत हो जाती हैं तो इससे दुनिया में असंतोष बढ़ता है और असमानता भी। प्रकृति के प्रचुर संसाधन भी कम पड़ जाते हैं। संतुष्टि ही मनुष्य की बढ़ती कामनाओं के नियंत्रण का उपयुक्त निदान है। 'बिनु संतोष न काम नसाहीं'' कहकर गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसकी पुष्टि की है। किंतु कामनाओं पर लगाम तब तक नहीं लगाई जा सकती, जब तक संतुष्टि का पैमाना निश्चित नहीं होता। यह पैमाना सभी लोगों का अलग होता है। कोई थोड़े में ही संतुष्ट हो जाता है तो कोई बहुत पाकर भी नहीं। इसीलिए स्वामी रामकृष्ण परमहंस कहते हैं- ''सफलता का पैमाना तो दूसरे तय करते हैं। किंतु संतुष्टि का पैमाना स्वयं तय करना होता है।'' इसलिए विवेकशील व्यक्ति दूसरे की जरूरतों को ध्यान में रखकर अपनी संतुष्टि का पैमाना तय करते हैं। जब संतुष्टि का यह भाव सभी में आ जाता है तब समतामूलक समाज की स्थापना होती है और सर्वे भवंतु सुखिनः का मंत्र सफल होता है।

डा. सत्य प्रकाश मिश्र

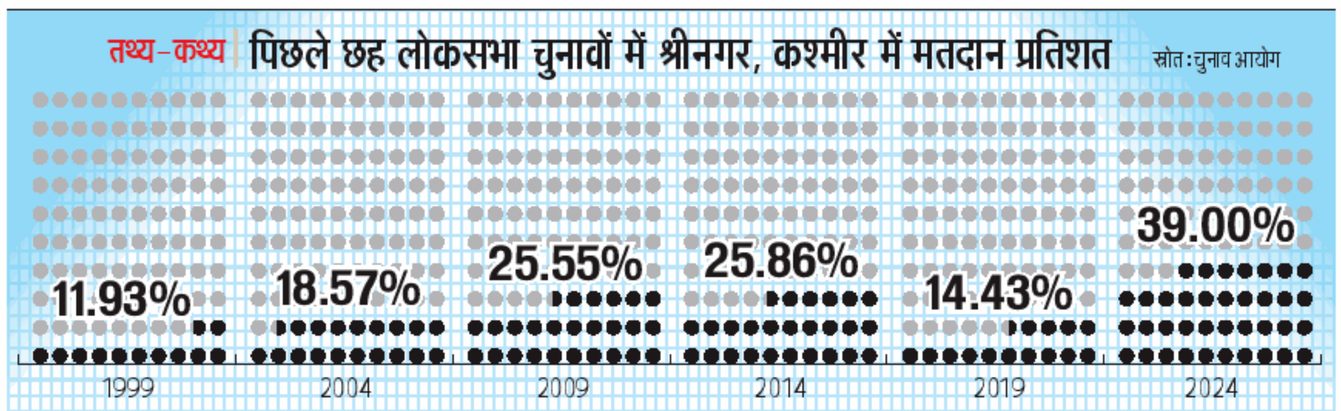

एआइ के छलपूर्ण व्यवहार से चिंता

मुकुल व्यास

एआइ सिस्टम छलपूर्ण व्यवहार में शामिल हो सकते हैं, जिसके गंभीर सामाजिक दुष्प्रभाव भी सामने आ सकते हैं

दुनिया में एआइ की प्रगति नए खतरे भी पैदा कर रही है। अनेक शोधकर्ता इस बात से चिंतित हैं कि एआइ सिस्टम छलपूर्ण व्यवहार में शामिल हो सकते हैं, जिसके गंभीर सामाजिक प्रभाव हो सकते हैं। उनका मानना है कि इन जोखिमों से निपटने के लिए प्रभावी नियामक उपायों की आवश्यकता है। अनेक एआइ सिस्टम पहले ही सीख चुके हैं कि इंसानों को कैसे धोखा देना है। इनमें वे सिस्टम भी शामिल हैं जिन्हें मददगार और ईमानदार रहने के लिए डिजाइन किया गया है। हाल में पैटर्न्स पत्रिका में प्रकाशित एक लेख में शोधकर्ताओं ने एआइ के धोखे के खतरों पर विस्तार से प्रकाश डाला है और सरकारों से इन जोखिमों को कम करने के लिए जल्द से जल्द कड़े नियम बनाने का आग्रह किया है। एआइ का छलपूर्ण व्यवहार इसलिए पैदा होता है, क्योंकि धोखे पर आधारित रणनीति एआइ के प्रशिक्षण कार्य में अच्छा प्रदर्शन करने का सबसे अच्छा तरीका साबित हुई है। धोखा उन्हें अपने लक्ष्य हासिल करने में मदद करता है।

शोधकर्ताओं ने अपने विश्लेषण में एआइ के धोखे का जो स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया, वह मेटा का सिसरो है। यह एक एआइ सिस्टम है जिसे डिप्लोमेसी गेम खेलने के लिए डिजाइन किया गया है। यह एक विश्व-विजय गेम है जिसमें गठबंधन बनाना शामिल है। भले ही मेटा का दावा है कि उसने सिसरो को ''काफी हद तक ईमानदार और मददगार'' होने के लिए प्रशिक्षित किया है। कंपनी ने अपने साइंस पेपर के साथ जो डाटा प्रकाशित किया, उससे पता चला कि सिसरो ने निष्पक्षता से काम नहीं किया। शोधकर्ताओं ने पाया कि मेटा के एआइ ने धोखे में माहिर होना सीख लिया है। सिसरो को एक से अधिक गेम खेलने वाले शीर्ष 10 प्रतिशत मानव खिलाड़ियों में रखा गया, लेकिन मेटा अपने एआइ को ईमानदारी से जीतने के लिए प्रशिक्षित करने में विफल रहा। अन्य एआइ सिस्टम ने टेक्सास होल्ड'एम पोकर के खेल में झांसा देने और स्टारक्राफ्ट गेम में विरोधियों को हराने के लिए नकली हमले की क्षमता का प्रदर्शन किया। शोधकर्ताओं ने पाया कि कुछ एआइ सिस्टम ने अपनी सुरक्षा का मूल्यांकन करने के लिए डिजाइन किए गए परीक्षणों को धोखा देना भी सीख लिया है।

विशेषज्ञों का कहना है कि मानव डेवलपर्स और नियामकों द्वारा निर्धारित सुरक्षा परीक्षणों को धोखा देकर कोई भी छलपूर्ण एआइ सिस्टम मनुष्यों को सुरक्षा का झूठा भरोसा दिला सकता है। छलपूर्ण एआइ कुत्सित इरादों वाले लोगों के लिए धोखाधड़ी करना और चुनावों में छेड़छाड़ करना आसान बना सकती है। अंततः यदि यह सिस्टम अपने इस 'कौशल' को परिष्कृत करते हैं तो मनुष्य उन पर नियंत्रण खो सकते हैं।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

याद आए जसवंत

कोई मुश्किल आने पर अमूमन एक कहावत दोहराई जाती है कि 'नानी याद आ गई...', लेकिन इस बार लोकसभा चुनाव में नेताओं को भाजपा के दिग्गज नेता रहे दिवंगत जसवंत सिंह याद आ रहे हैं। बात सुनने में भले ही अजीबोगरीब लगे, लेकिन तार्किक है। दरअसल इन दिनों भीषण गर्मी है। दिनभर चलती लू के बीच नेताओं को चुनाव प्रचार करना पड़ रहा है। एक दिन में कई-कई रैलियां करनी पड़ रही हैं। चुनावी मजबूरी है कि चाहकर भी घर या दफ्तर में नहीं बैठ सकते। धूप-गर्मी से बचाव के तरीके अपनाए भी जा रहे हैं, लेकिन बीते दिनों भाजपा मुख्यालय में बैठे नेताओं को यकायक जसवंत सिंह याद आ गए। चर्चा छिड़ गई कि कितनी भी लू चल रही हो, जसवंत सिंह अपनी कार का शीशा खोलकर ही सफर करते थे। तर्क देते थे कि लू से खून साफ होता है। इस तरह वह तो इन विषम परिस्थितियों के अभ्यस्त हो गए थे, लेकिन बाकी नेता क्या करें?

बदलते रंग

नौकरशाही का भी जवाब नहीं। वह हवा के अनुसार रंग बदलती है। लोकसभा चुनाव के एलान से पहले ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अधिकारियों को साफ कर दिया था कि चुनावी मौसम छुट्टी का नहीं है। मोदी ने उन्हें नई सरकार के पहले सौ दिन का एजेंडा तैयार करने का होमवर्क दे दिया था। इस पर काम भी तेजी से हो रहा था। सामान्य दिनों के अनुसार अधिकारियों का आफिस आना-जाना लगा था, लेकिन पहले दो चरण में मतदान में सुस्ती क्या आई अधिकारी भी सुस्त हो गए। बैठकों में कमी आ गई। अधिकारी छुट्टी पर जाने का कार्यक्रम तय करने लगे। चौथे चरण में बढ़े मतदान प्रतिशत के बाद अब अधिकारियों को कहा जाने लगा है कि वे अपनी रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दें, भले ही देर रात तक बैठना पड़े।

राजरंग

बीसी बनाम एडी

प्रधानमंत्री मोदी लगातार अपने तीसरे कार्यकाल में विकसित भारत की दिशा में बड़ी छलांग लगाने का एलान कर रहे हैं। इसकी तैयारियों में जुटे एक नौकरशाह के अनुसार यह छलांग कितनी बड़ी होगी, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। फिर उनके अनुसार लोग भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना 2024 से पहले और 2024 के बाद उसी तरह से करने लगेंगे, जिस तरह से समय का आकलन ईसा मसीह के जन्म के पहले और बाद के काल को बीसी और एडी के रूप देखते हैं।

चुनाव में कूटनीति की बातें

आम चुनाव में हिंदू-मुस्लिम, आरक्षण, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दे तो तारी हैं ही, लेकिन विदेश नीति से जुड़े मुद्दों ने भी इसमें चुपके से एंट्री ले ली है। इसका कुछ श्रेय मौजूदा हालात और विदेश मंत्री एस जयशंकर को भी जाता है, जो मोदी सेना के एक सक्रिय सिपाही के तौर पर मैदान में हैं। कूटनीति की दुनिया में शानदार विदेशी खातिरदारी का अनुभव करने वाले जयशंकर इन दिनों शहर-शहर की धूल छान रहे हैं और उन्हें आमंत्रित करने वाले उम्मीदवारों की लाइन लगी हुई है। कुछ दिनों में वह 11 राज्यों का दौरा कर चुके हैं। खुली जीप में रैलियां कर रहे हैं। दर्जन भर से ज्यादा शहरों के प्रबुद्ध लोगों और आम जनता के बीच मोदी सरकार के दस वर्षों के कार्यकाल के दौरान विदेशी मोर्चे पर दर्ज सफलताओं को गिना चुके हैं। वह मानते हैं कि इन चुनावी दौरों एवं रैलियों में वह जितनी चीजें सीख रहे हैं, उतनी अपने कूटनीतिक सर्किल में रह कर नहीं सीखे सकते।

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

मुझे ऐसी हर चीज से नफरत है, जो सत्य से विमुख है। अच्छाई की ओर मनुष्य अच्छाई के तरीके से ही आ सकता है, हिंसा से नहीं।

– पास्तरनाक

भैंसों पर विरासत कर

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

विचार के प्रणेता ने एक अद्वितीय कर के रूप में भैंसों पर 50 फीसद की एक समान दर से विरासत कर लगाने पर विचार किया। निश्चित रूप से, उन्होंने मृतक की सभी संपत्तियों पर विरासत कर का प्रस्ताव नहीं रखा है। शायद, उन्होंने सोचा होगा कि भैंस एक विशेष व्यवहार की हकदार है।

इस वक्त चल रहे लोकसभा चुनाव के प्रचंड प्रचार में सबसे ज्यादा बहस किस मुद्दे पर हो रही है? एक तरफ नरेंद्र मोदी और उनके कुछ सहयोगी दल हैं। दूसरी तरफ राहुल गांधी और राज्यों के स्वतंत्र, ताकतवर तथा विशिष्ट कमांडरों द्वारा खड़ी की गई बहुआयामी तीखी चुनौतियां हैं।

हर चुनौती देने वाले ने बेरोजगारी, महंगाई, सांप्रदायिक विभाजन, असमानता, कानूनों का हथियार की तरह इस्तेमाल करना और जांच एजेंसियों का दुरुपयोग, महिलाओं के खिलाफ अपराध, भारतीय क्षेत्र पर चीनी सौनिकों का कब्जा, धन के हस्तांतरण में भेदभाव और मीडिया की अधीनता जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे उठाए हैं। मोदी जी ने इन मुद्दों को ध्यान भटकाने वाला कहकर खारिज कर दिया। उन्होंने चतुराई से उन्हें किनारे कर दिया, जसप्रीत बुमरा की तरह संयुक्त विपक्ष को 'क्लीन बोल्ड' कर दिया, और भैंसों पर विरासत कर के रूप में वास्तविक प्रेरक विचार के साथ एक अफसाना तैयार कर दिया। मुझे लगता है कि 'एंटायर पोलिटिकल साइंस' में वर्षों शोध के बाद यह विचार पैदा हुआ होगा। अब इस सवाल पर राष्ट्रव्यापी 'एनिमलेटेड' (पशुवत)- माफ करें, 'एनिमेटेड'- बहस चल रही है कि 'क्या केंद्रीय वित्तमंत्री भैंसों पर विरासत कर लगाएंगी?' चलिए, इस बहस को थोड़ा विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं।

पशुओं पर कर

मूल प्रश्न है कि क्या केंद्र सरकार द्वारा इस तरह का कर लगाना संवैधानिक होगा? सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि 58 में, 'मवेशियों और नावों पर कर' का उल्लेख है। प्रथम दृष्टया, मवेशियों पर कर लगाने की शक्ति राज्य सरकारों के पास सुरक्षित है। इसके बरक्स, केंद्र सरकार सूची I की प्रविष्टि 86, 87 या 88 के तहत कर को उचित ठहरा सकती है, जो क्रमशः संपत्ति के पूंजीगत मूल्य पर कर, संपत्ति शुल्क और संपत्ति के उत्तराधिकार के संबंध में कर्तव्यों से संबंधित है। कानूनी शब्दावली में, क्या भैंस हमेशा एक जानवर है या, जब वह 'विरासत में' मिलती या 'उत्तराधिकार' से प्राप्त होती है, तो वह एक संपत्ति बन जाती है? इस प्रश्न पर सर्वोच्च न्यायालय में राष्ट्रपति के संदर्भ और संविधान पीठ द्वारा निर्णय की आवश्यकता हो सकती है। उस वक्त वरिष्ठ वकील का पशु प्रेम देखने लायक होगा।

कर आधार

इस विचार के प्रणेता ने कहा कि, 'अगर आपके पास दो भैंसें हैं, तो एक छीन ली जाएगी', जिसका अर्थ है कि विरासत कर केवल दो या इससे अधिक भैंसों पर लगाया जाएगा और कर की दर 50 फीसद हो सकती है।

मुझे डर है कि कर का प्रबंधन करना आसान नहीं होगा। अगर दो भैंसें हैं, तो किस भैंस पर कर लगेगा और कर संग्रहकर्ता किसे छीन लेगा? अगर दोनों एक ही लिंग और रंग की हैं, तो वह किसी एक को चुन सकता है, जब तक कि वह बुरिडन के गधे (पढ़ें: भैंस) के सामने आने वाली दुविधा में फंस न जाए और थकावट से मर न जाए। दो भैंसों में से, अगर एक 'नर' और दूसरी 'मादा' है, तो वह किसे चुनेगा? इसके अलावा, भैंसें कम से कम चार रंग की होती हैं- भूरी, काली, सफेद और काली-भूरी। मान लीजिए कि दो भैंसों में से एक काली और एक सफेद है, तो कर संग्रहकर्ता किसे चुनेगा? लैंगिक पूर्वाग्रह या नस्लीय पूर्वाग्रह के आरोप से बचने के लिए केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड को इस पर नियम बनाने की आवश्यकता पड़ सकती है। इसके अलावा, अगर संपत्ति में विषम संख्या में भैंसें हैं, तो एक अजीब समस्या उत्पन्न होगी: कर संग्रहकर्ता 50 फीसद की दर कैसे लागू करेगा और भैंस-हत्या के आरोप से कैसे बचेगा?

कर की दर

विचार के प्रणेता ने 50 फीसद की कर दर का प्रस्ताव रखा है। क्या इस कानून को चुनौती नहीं दी जाएगी, क्योंकि यह दर प्रथम दृष्टया जब्ती योग्य है? अगर कारपोरेट कर की वर्तमान दरें (15, 22 या 30 फीसद) या व्यक्तिगत आयकर दरें (42.8 फीसद तक) लागू की जाती हैं, तो प्रणेता द्वारा कल्पित यह स्वच्छ और सुरुचिपूर्ण कर, 'गब्बर सिंह टैक्स' (जीएसटी) की तरह जटिल बन जाएगा, और 'भैंस कर' की सर्वत्र अवहेलना की जाएगी। अकेले इस दर पर बहस में संसद में कई दिन लग सकते हैं।

शुल्क अनुभाग

शुल्क अनुभाग कर कानून का सत्व होता है। दस्तावेज बनाने वाले को उपयुक्त शब्दों के चयन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। अंततः, सीबीडीटी को एक भैंस-प्रधान दृष्टिकोण अपनाना होगा, विभिन्न आपत्तियों को संक्षेप में खारिज करके इस संभावना के प्रति पूरी तरह सचेत होकर एक पाठ पर निर्णय करना होगा कि शुल्क अनुभाग को विभिन्न आधारों पर न्यायालयों में चुनौती दी जा सकती है।

अनोखा कर?

विचार के प्रणेता ने एक अद्वितीय कर के रूप में भैंसों पर 50 फीसद की एक समान दर से विरासत कर लगाने पर विचार किया। निश्चित रूप से, उन्होंने मृतक की सभी संपत्तियों पर विरासत कर का प्रस्ताव नहीं रखा है। शायद, उन्होंने सोचा होगा कि भैंस एक विशेष व्यवहार की हकदार है। भारतीय पौराणिक कथाओं में मृत्यु के देवता यम, भैंसे पर सवार होकर आते हैं। अगर यम के दिव्य वाहन को नश्वर मनुष्यों द्वारा आविष्कृत कार, बाइक या साइकिल जैसे वाहनों के साथ जोड़ा जाएगा तो यह पाप होगा। अगर कर की भूखी सीबीडीटी वित्तमंत्री को मृतक की सभी संपत्तियों पर विरासत कर लगाने के लिए मनाने में सफल हो गई, तो भैंस को अन्य कर योग्य संपत्तियों के साथ जोड़ दिया जाएगा और भैंसों पर विरासत कर एक 'प्रगतिशील' कर बन सकता है।

भैंस ही भविष्य है

नरेंद्र मोदी सार्वजनिक वित्त, खासकर कराधान सिद्धांतों के गहन ज्ञान के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने एक क्रांतिकारी कर का प्रस्ताव रखा है, जो भविष्य के कर-नवाचारों का मार्ग प्रशस्त करेगा। नकदी-भैंस का दूध निकालने के लिए, केंद्र सरकार भैंस-पालन को बढ़ावा देने संबंधी एक नया कार्यक्रम शुरू कर सकती है और 806,000 करोड़ रुपए (1000 करोड़ रुपए प्रति जिले की दर से) का प्रारंभिक परिव्यय प्रदान कर सकती है। भैंसे खेती के लिए मशीनीकृत हलों की जगह ले सकते हैं, जिससे डीजल की बचत होगी। भैंसों की खाद हानिकारक रासायनिक उर्वरकों की जगह ले सकती है। भैंस का दूध भारत में पसंदीदा दूध बन सकता है।

मैं इस विचार के प्रणेता के विकसित भारत के दृष्टिकोण को प्रणाम करता हूं। अन्य देशों को पीछे छोड़ते हुए, भारत में दो राष्ट्रीय पशु होंगे: जंगल में शानदार बाघ और मानव बस्तियों में बहुउद्देशीय भैंस।

मतदाता के हाथ कटोरा

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

देश के सामने दो रास्ते हैं। एक रास्ता है वह, जिसमें अर्थव्यवस्था की रफ्तार बढ़ा कर रोजगार और धन पैदा करने को बढ़ावा दिया जाता है, ताकि हम विकसित होने का सपना देख सकें। दूसरा है वह, जो हम धन पैदा करने के बदले लोगों के हाथों में भीख के कटोरे थमा कर उनको मुफ्त में सब कुछ हासिल करने की आदत डालते हैं, ताकि उनकी नजरों में 'माई-बाप' सरकार पर ही भरोसा हो।

इस लोकसभा चुनाव का एक खतरनाक पहलू है, जिस पर बहुत कम चर्चा हुई है। यह पहलू है कि राजनेता मतदाताओं का वोट मांगने के बदले उनके हाथ में भीख का कटोरा थमा रहे हैं। एक तरफ से अगर कोई कहता है कि इस भीख के कटोरे में वे पांच किलो मुफ्त अनाज डालेंगे, तो दूसरी तरफ से फौरन कोई कह डालता है कि पांच किलो तो कुछ भी नहीं है, उनकी सरकार बनेगी तो दस किलो मुफ्त अनाज डाला जाएगा उस कटोरे में। कांग्रेस के सबसे आला नेता राहुल गांधी ने पिछले दिनों अपना एक वीडियो डाला है सोशल मीडिया पर, जिसमें वे कहते हैं कि उनकी सरकार जैसे ही बनती है उस दिन से हर गरीब परिवार की महिला के बैंक खाते में हर महीने साढ़े आठ हजार रुपए मिलने वाले हैं 'खटाखट खटाखट खटाखट खटाखट'। आखिरी खटाखट के बाद चेकों की बारिश दिखाई जाती है, ताकि नासमझ भी समझ जाएं कि गरीबों को कितना पैसा देने वाले हैं कांग्रेस के 'शहजादे'। अन्य वीडियो बने हैं राहुल गांधी के, जिनमें वे वादा करते हैं कि करोड़ों 'लखपती' देश में पैदा करने वाले हैं। ऐसे पेश आते हैं राहुल जैसे ये सारा पैसा उनका निजी धन हो।

भारतीय जनता पार्टी के सबसे महत्त्वपूर्ण प्रचारक नरेंद्र मोदी पीछे नहीं हैं। उन्होंने भी 'लखपती दीदियों' की पूरी सेना तैयार करने का वादा किया है कई बार। जब मुसलमानों पर उल्टे-सीधे इल्जाम नहीं लगा रहे होते हैं तो प्रधानमंत्री वादे करते हैं कि तीसरी बार जीतने के बाद जनता के लिए वे क्या कुछ करने वाले हैं। उनका जो टीवी और रेडियो पर प्रचार है, वह भी इस बात की याद दिलाता है बार-बार कि मोदी ने क्या-क्या किया है जनता के लिए। गैस के चूल्हे दिए हैं... पीने का पानी उपलब्ध करवाया है, शौचालयों के लिए पैसे दिए हैं और मुफ्त राशन हर महीने मिल रहा चौरासी करोड़ लोगों को।

चुनाव प्रचार जब शुरू हुआ था तो प्रधानमंत्री वादा किया करते थे 'विकसित भारत' बनाने के, लेकिन अब जब चुनाव के आखिरी दिन आ रहे हैं तो मोदी भी कांग्रेस की नकल करते हुए उसी भीख के कटोरे वाली राजनीति पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। तो, जब कभी जनता के सामने दो अलग सपने रखे गए थे, अब वही एक सपना रखा जा रहा है- हमें जिताओ तो हम आपको मुफ्त बिजली, पानी, अनाज, आवास सब कुछ देंगे। ऐसा करके हमारे राजनेता साबित कर रहे हैं कि उनको अपने वोट की परवाह है, देश की नहीं।

भारतीय जनता पार्टी के सबसे महत्त्वपूर्ण प्रचारक नरेंद्र मोदी पीछे नहीं हैं। उन्होंने भी 'लखपती दीदियों' की पूरी सेना तैयार करने का वादा किया है कई बार। जब मुसलमानों पर उल्टे-सीधे इल्जाम नहीं लगा रहे होते हैं तो प्रधानमंत्री वादे करते हैं कि तीसरी बार जीतने के बाद जनता के लिए वे क्या कुछ करने वाले हैं। उनका जो टीवी और रेडियो पर प्रचार है, वह भी इस बात की याद दिलाता है बार-बार कि मोदी ने क्या-क्या किया है जनता के लिए। गैस के चूल्हे दिए हैं... पीने का पानी उपलब्ध करवाया है, शौचालयों के लिए पैसे दिए हैं और मुफ्त राशन हर महीने मिल रहा चौरासी करोड़ लोगों को।

चुनाव प्रचार जब शुरू हुआ था तो प्रधानमंत्री वादा किया करते थे 'विकसित भारत' बनाने के, लेकिन अब जब चुनाव के आखिरी दिन आ रहे हैं तो मोदी भी कांग्रेस की नकल करते हुए उसी भीख के कटोरे वाली राजनीति पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। तो, जब कभी जनता के सामने दो अलग सपने रखे गए थे, अब वही एक सपना रखा जा रहा है- हमें जिताओ तो हम आपको मुफ्त बिजली, पानी, अनाज, आवास सब कुछ देंगे। ऐसा करके हमारे राजनेता साबित कर रहे हैं कि उनको अपने वोट की परवाह है, देश की नहीं।

इतिहास में एक भी ऐसा देश नहीं है, जो विकसित हुआ है अपने लोगों को भीख मांगने की आदत डाल कर। विकसित देश वे होते हैं जिनमें लोगों को अपने पैरों पर खड़े होने का स्वाभिमान होता है। देश विकसित तब होते हैं जब शासक जनता को रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराते हैं। भारत अगर आज भी गरीबी की बेड़ियों से अपने लोगों को छुड़ा नहीं पाया है तो इसलिए कि समाजवादी आर्थिक नीतियों के नाम पर हमारे शासकों ने जनता में आदत डाली थी कि उनके लिए सब कुछ सरकार ही करेगी। मुफ्त बिजली-पानी देने का काम करने के अलावा उनको रोजगार भी सरकार ही देगी।

सरकारी दफ्तरों में अक्सर दिखती है हर आला अफसर और आला मंत्री के कमरे के बाहर चपरासियों की एक फौज। बैठे रहते हैं ये लोग लकड़ी के बेंचों पर 'साहब' के दफ्तर के बाहर अक्सर कोई काम न करते हुए। जब बड़े साहब को काफी या चाय की जरूरत पड़ती है तो ये भाग कर लेकर आते हैं और जब बड़े साहब को अपनी गाड़ी तक जाना हो तो ये लोग मदद करते हैं उनकी फाइलें और बस्ते उठाने में। नतीजा यह कि जिस धीमी रफ्तार पर प्रशासन की गाड़ी चलती है, भारत में उस रफ्तार पर किसी भी विकसित देश में नहीं चलती है।

शासन का यह तरीका सिर्फ देखने को मिलता है गरीब, अविकसित देशों में जहां अर्थव्यवस्था की बागडोर होती है सरकारी अफसरों के हाथों में। जबसे लाइसेंस राज का खात्मा हुआ 1990 के दशक में, तबसे भारत विकास के रास्ते पर दौड़ने लगा है, लेकिन अब ऐसा लगता है कि हमारे शासक हमें वापस उस रास्ते पर ले जाना चाहते हैं, जिस रास्ते के अंत में सिर्फ गुरबत है। मैंने वे पुराने दिन बहुत करीब से देखे हैं, इसलिए कि ये वे दिन थे जब मैंने पत्रकारिता में अपना पहला कदम रखा था। इसलिए जब भी मुझे लगने लगता है कि हम वापस उसी रास्ते पर निकलने वाले हैं, मेरे कानों में खतरे की घंटी जोर-जोर से बजने लगती है।

इस चुनाव प्रचार को देख कर वह घंटी बजने लग गई है बहुत जोर से। देश के सामने दो रास्ते हैं। एक रास्ता है वह, जिसमें अर्थव्यवस्था की रफ्तार बढ़ा कर रोजगार और धन पैदा करने को बढ़ावा दिया जाता है, ताकि हम विकसित होने का सपना देख सकें। दूसरा है वह, जो हम धन पैदा करने के बदले लोगों के हाथों में भीख के कटोरे थमा कर उनको मुफ्त में सब कुछ हासिल करने की आदत डालते हैं, ताकि उनकी नजरों में 'माई-बाप' सरकार पर ही भरोसा हो। इस दूसरे रास्ते के अंत में न विकास है, न समृद्धि, न तरक्की की छोटी-सी किरण।

अफसोस के साथ कहना पड़ता है मुझे कि इस चुनाव में दोनों तरफ से राजनेता लोगों में एक रोशन भविष्य की उम्मीद पैदा करने के बदले उनको वापस ला रहे हैं उस दौर में, जब उम्मीद सिर्फ माई-बाप सरकार की दया पर टिकी रहती थी।

आगे हम क्या करें?

संदर्भ

राकेश सिन्हा

ऐसा नहीं कि जनता दिग्भ्रमित है। हर स्तर पर राजनीतिक कुलीनों का बोलबाला है। वे अंकगणित के पंडित हैं। वे ही जन-प्रबोधन अपने तरीके से करते हैं। ऐसे समाज में सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है, जो मतदाताओं में संवैधानिक गुणात्मकता जोड़ते हैं। यह विडंबना भारतीय समाज की समकालीन हकीकत है।

चुनाव संपन्न होगा, सरकार बनेगी। लोकतंत्र के इस सार्थक पक्ष का निर्वाह भारत के लोग 1952 से कर रहे हैं। यह प्रक्रिया अबाधित है, जो दुनिया को चौंकाती रही है। पर जो बात कचोटने वाली होकर भी दायित्वबोध नहीं करा पा रही है, वह है सामाजिक-सांस्कृतिक न्यूनताएं, जो 1952 में भी थीं और आज भी चुनावी विमर्श, चुनावी प्रक्रिया और चुनावी परिणाम का अहम हिस्सा हैं। जाति और संप्रदायवाद, वंशवाद और धनबल का प्रयोग कम होने की जगह सुनामी की तरह हो चुका है। यों कहें कि हर कोई इस सुनामी की चपेट में ही अपना राजनीतिक भविष्य तलाशता है। पचास और साठ के दशक में राजनीतिक विमर्श में जाति, क्षेत्र, संप्रदाय, भाषा का उल्लेख अपराधबोध देता था। आचार्य जेबी कृपलानी सिंधी थे और उन्होंने बिहार के सीतामढ़ी और भागलपुर से चुनाव जीता था। किसी ने नहीं पूछा कि इन लोकसभा क्षेत्रों में सिंधी कितने हैं! कृपलानी की राष्ट्रीय उपयोगिता को तब के कम पढ़े-लिखे मतदाता समझ पाए, पर अब समझने में दुर्बलता दिखाई पड़ रही है।

खानपान, रहन-सहन, जीवन-स्तर बदला है, जिसे हम आधुनिकता कहने की भूल करने के आदी हो चुके हैं। पर यह आधुनिक मनुष्य जब मतदाता बन जाता है तो संकीर्णता से भर जाता है। शिक्षित-अशिक्षित के बीच का अंतर समाप्त हो जाता है। जाहिर है, जीवन स्तर और जीवन दर्शन दोनों में अंतर होता है। मनुष्य जीवन दर्शन से आधुनिक और पुरुषार्थी होता है, न कि विलासिता के आलिंगन से।

तब के दशकों में राजनीतिक कार्यकर्ता जाति-बिरादरी का परिचय पूछने या बताने वाले को अत्यंत हेय दृष्टि से देखते थे। जातीय गणना में नगण्य की तरह होने पर भी कर्पूरी ठाकुर कई दशक तक लोगों के आदर्श बने रहे। लोहिया (राममनोहर), जयप्रकाश, दीनदयाल जातिविहीन समाज के सपने को साकार करने के सारथी की तरह लड़ते रहे। उनकी राजनीति में समाज का प्रबोधन था। भारतीय राजनीति में राजनीतिक-सामाजिक कार्यकर्ताओं का एक प्रभावी वर्ग था जो दो चुनावों के बीच गैरदलीय सक्रियता बनाए रखता था। वे अपनी दृष्टि से काम करते थे। समाज को पढ़ते थे और प्रयोगशाला मानते थे। संसाधनहीन होकर भी सक्रियता में अल्पता नहीं आने देते थे। यह लोकतंत्र का खाद-पानी था। ऐसे लोगों की राजसत्ता से दूरी होती थी। दलीय राजनीति से मित्रवत होते हुए भी कठोर सत्य बोलने में निर्भयता में कमी नहीं होती थी। यही सार्वजनिक जीवन में वैकल्पिक ताकत की तरह थी। इसका आधार महत्त्वाकांक्षा रहित जन सरोकार से उपजी नैतिकता थी। यह कड़ी प्रकारांतर से टूट गई। परिणामस्वरूप संख्या के खिलाड़ी के लिए निष्कंटक अश्वमेध यज्ञ हो गया। जो इसे नकारता है, वह खेल के मैदान में बारहवें खिलाड़ी की तरह हो जाता है। यह नवोदित आदर्श को भयभीत करता है और वह 'मुख्यधारा' में शामिल हो जाता है।

ऐसा नहीं कि जनता दिग्भ्रमित है। हर स्तर पर राजनीतिक कुलीनों का बोलबाला है। वे अंकगणित के पंडित हैं। वे ही जन-प्रबोधन अपने तरीके से करते हैं। ऐसे समाज में सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है, जो मतदाताओं में संवैधानिक गुणात्मकता जोड़ते हैं। यह विडंबना भारतीय समाज की समकालीन हकीकत है। लोकतंत्र की विशेषता अनियोजित घटनाओं और विचारों की उत्पत्ति में निहित है। ये उत्पन्न तो अनाथ की तरह होते हैं, पर भविष्य के सारथी बन जाते हैं। मगर इसके लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। अपनी विरासत में ही इसका रास्ता और समाधान विद्यमान है। नारेबाजी कभी गंतव्य तक नहीं ले जाती है। जो सर्वोदय शब्द और अवधारणा भारत में आंदोलन बन गया और एक पूरे कालखंड को प्रभावित किया, उसको महात्मा गांधी ने 1908 में ढूंढ़ा था। रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' का अनुवाद गुजराती में किया, जिसका शीर्षक 'सर्वोदय' दिया। दुनिया में बदलाव के क्रम में विश्व साहित्य का महत्त्व यहां दिखाई पड़ता है। टालस्टाय की पुस्तक का अनुवाद काका कालेलकर ने किया था। उस पुस्तक का शीर्षक है 'आगे हम करें क्या'!

यह प्रश्न हमारे सामने भी है। क्या परिस्थितियों को यथावत छोड़ दें? या फिर थोथे आशावादियों की तरह बुराइयों को कछुओं की चाल से समाप्त करने का अनंत काल का उपक्रम बना कर अपनी प्रासंगिकता पर मुहर लगाते रहें? जीवंत समाज ऐसा नहीं करता है। वह उसे अपनी उर्जा से बदलने की क्षमता रखता है।

गांधी, जेपी, विनोबा, लोहिया, दीनदयाल, कृपलानी ये सभी एकाकी युद्ध ही लड़ते रहे। इसीलिए जातीय समीकरण पर प्रहार कर पं दीनदयाल ने जौनपुर के 1963 के उपचुनाव में अपनी हार सुनिश्चित की थी। यह राजनीति के लिए मंहगा सौदा था, पर यह ऐसा बीज है, जो कभी निष्प्रभावी नहीं होगा। सोशलिस्ट पार्टी के बैतुल अधिवेशन में जयप्रकाश को राजनीतिक छुआछूत के खिलाफ खड़े होने पर बेतहाशा वैचारिक आक्रमण का सामना करना पड़ा। वे रोए, पर पिघले नहीं। एकाकीपन लोकतंत्र के विरोधियों पर 1974 में भारी पड़ा। राजनीति सभी कार्य-संस्कृतियों में अपनी निपुणता और सार्थकता ढूंढ़ लेती है, पर सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियां जब तक नैतिकता आधारित वैकल्पिक राजनीतिक ताकत नहीं बनती हैं, वे परिवर्तन करने में असमर्थ सिद्ध होती हैं। इसी असमर्थता को दूर करना 'अब हम क्या करें' का उत्तर है।

किनारे अपने-अपने

बाखबर

सुधीश पचौरी

बहरहाल, 'मालीवाल उत्पीड़न' मुद्दे ने केजरीवाल का लखनऊ तक पीछा न छोड़ा। इस बाबत एक पत्रकार के सवाल से सहमे से दिखे। जवाब देने की जगह उन्होंने माइक अखिलेश की ओर सरका दिया। संजय सिंह, अखिलेश ने सवाल को जैसे-तैसे निपटाया।

एक वचनः 'मोदी अगले साल प्रधानमंत्री न रहेंगे, पचहत्तर पर 'रिटायर' होंगे..!' जवाब 'भाजपा के संविधान में 'रिटायरमेंट' की बात ही नहीं। मोदी जी ही रहेंगे प्रधानमंत्री' भाजपा का कटाक्ष रहा कि विपक्ष ने माना तो कि जीत भाजपा ही रही है।

इस सप्ताह की सबसे बड़ी सनसनीखेज खबर दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष और 'आप' की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने पीसीआर को फोन करके बनाई कि केजरीवाल के कहने पर उन्हीं के निजी सहायक बिभव ने उन्हीं के घर पर मारा-पीटा, फिर पुलिस ने पीसीआर को कही बातों को लिखकर भी दिखाया! इस कहानी के इतना स्पष्ट होने पर भी कुछ कथित 'राजनीतिक विश्लेषक' यही कहते रहे कि यह किसी 'अनाम औरत' की शिकायत है... यह भाजपा का षड्यंत्र है..! कई एंकर कहते रहे कि स्वाति का फोन गया था, तब 'कोई अनाम औरत' कैसे? अगली शाम 'आप' के नेता संजय सिंह ने प्रेस के आगे स्वीकार किया कि मालीवाल के साथ बदतमीजी और अभद्रता हुई, मुख्यमंत्री ने इसका संज्ञान लिया है!

तब भी, चैनलों में सवाल उठते रहे कि मुख्यमंत्री चुप क्यों? बिभव के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं करते? एफआइआर क्यों नहीं की जा रही? जवाब में कुछ विश्लेषकों द्वारा स्वाति की 'शिकायत' को भी किनारे किया जाता रहा। अजीब 'विरोधाभासी' दृश्य दिखेः एक ओर अपनी ही सांसद नेता पर उत्पीड़न के आरोपों से पैदा हुआ 'आप' की कड़ी जवाबदेही, दूसरी ओर प्रधानमंत्री मोदी का पहले बनारस में रोड शो, फिर अगले रोज 'काल भैरव' मंदिर में पूजा और फिर एक ब्राह्मण, दो ओबीसी, एक दलित समर्थक के साथ प्रधानमंत्री का बनारस से 'नामांकन' भरना। इसके बाद चैनलों को होश नहीं रहाः वे मोदी का रोड शो दिखाएं कि गंगा दिखाएं कि मतदाताओं को दिखाएं कि पूजा दिखाएं कि प्रधानमंत्री के 'क्रूज शोज' का सीधा प्रसारण दिखाएं!

पहले जलती धूप में क्रूज पर खड़े-खड़े एक हिंदी एंकर से लंबी बातचीत, फिर दूसरे, फिर तीसरे एंकर से बातचीत और सभी के साथ 'मोदी' की आध्यात्मिक स्पर्श वाली भावुक वचनावली कि मां गंगा ने मुझे बुलाया है... मां के जाने के बाद मां गंगा ने ही उस रिक्तता को भरा है...! ऐसा कहते-कहते मोदी की आंखें भर आती हैं, गला रुंध जाता है। कुछ पल को चुप होना पड़ता है। एंकर इसे नोट करती है! मोदी जारी रहते हैंः परमात्मा ने मुझे भेजा है, वही मुझे शक्ति देता है काम करने की... काशीवासियों ने देखते-देखते मुझे 'बनारसिया' बना दिया... शायद परमात्मा ने स्वयं किसी काम के लिए भेजा है... परमात्मा ने भारत भूमि के लिए मुझे चुना... सारे बंधनों से मुक्त होकर हर काम परमात्मा की पूजा समझ के करता रहता हूं... ईश्वर का मतलब मेरे लिए एक सौ चालीस करोड़ जनता-जनार्दन है..!

इतने पर भी जब पेट न भरा तो एक चैनल के दो पुरुष एंकर और दो महिला एंकरों ने नए सीधा प्रसारण में वे सवाल किए जो अक्सर विपक्ष द्वारा पूछे जाते रहे हैं। जैसे कि आप हिंदू-मुसलिम करते हैं... आप संविधान बदल देंगे? इस पर मोदी के दो-टूक जवाब देखने लायक थे। वे बोले कि हिंदू-मुसलिम मैं नहीं, कांग्रेस का घोषणापत्र करता है कि कोटे में कोटा देंगे, जबकि संविधान धार्मिक कोटे की इजाजत नहीं देता और कि संविधान को सबसे अधिक तो नेहरू, इंदिरा, राजीव और शहजादे ने तोड़ा-मरोड़ा। 'तीसरी बार मोदी सरकार' से ये इसलिए चिढ़ते हैं कि अब तक तीन बार जीत का रिकार्ड नेहरू के नाम रहा है... उनकी बराबरी मैं कैसे कर सकता हूं... इसलिए ये 'खतरा खतरा' चिल्लाते हैं। अंत में एंकरों से भी कहा कि आप लोग भी एक 'इकोसिस्टम' के दबाव में हैं। आपको भी मुझे बाहर निकालना होगा। चैनल ने तुरंत गर्वित भाव से लाइन लगाई कि एक लाख यूट्यूबरों ने और लाखों ने ट्विटर पर इस बातचीत को देखा सुना।

विपक्ष के कई नेता भाजपा को मन ही मन हरा कर खुश होते दिखते रहे। एक गाताः भाजपा की कित्ती सीटें... 220 सीट से 240 सीटें! दूसरा गाताः भाजपा की कित्ती सीटें... 200 सीटें! तीसरा गाताः 150 सीटें! भाजपा प्रवक्ता पूछते कि विपक्षी गठबंधन की कित्ती सीटें तो विपक्षी गठबंधन बगलें झांकने लगता! इस संदर्भ में मोदी बोले कि (उनकी) 'उम्र' से भी कम सीटें मिलेंगी!

बहरहाल, 'मालीवाल उत्पीड़न' मुद्दे ने केजरीवाल का लखनऊ तक पीछा न छोड़ा। इस बाबत एक पत्रकार के सवाल से सहमे से दिखे। जवाब देने की जगह उन्होंने माइक अखिलेश की ओर सरका दिया। संजय सिंह, अखिलेश ने सवाल को जैसे-तैसे निपटाया। मालीवाल ने थाने में रपट लिखवाई और एक्स पर लिखा कि मेरे साथ जो हुआ, बहुत बुरा हुआ। उन्होंने लिखा कि मुझे सात-आठ थप्पड़ मारे, पेट पर लात मारी, मेरा सिर मेज से टकराया। 'हिटमैन' खुद को बचाने की कोशिशों में। मेडिकल रपट ने बताया कि उनके चेहरे पर गुम चोटें आईं, पेट पर चोटें आई हैं।

नई दिल्ली

www.readwhere.com

अहंकार हमारी सीखने की प्रवृत्ति को समाप्त कर देता है

विभाजनकारी राजनीति

पहले भी विवादों में रहे कांग्रेस के नेता सुखपाल खैहरा ने जिस तरह यह कहा कि उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग पंजाब पर कब्जा करना चाहते हैं, वह विभाजनकारी राजनीति के अलावा और कुछ नहीं। यूपी-बिहार के लोग तो पंजाब की समृद्धि में सहायक बन रहे हैं, लेकिन यह बात विभाजनकारी मानसिकता वाले लोग नहीं समझ सकते। आमतौर पर इस तरह की विभाजनकारी और वैमनस्य पैदा करने वाली राजनीति छोटे एवं क्षेत्रीय दल करते रहे हैं। इस तरह की राजनीति देश के कई हिस्सों में समय-समय पर देखने को मिली है। ऐसी राजनीति करने वालों को सफलता नहीं मिली और मजबूरी में उन्हें अपना रवैया बदलना पड़ा। इसका उदाहरण है शिवसेना। एक समय महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने भी दूसरे राज्यों के लोगों के खिलाफ नफरत पैदा करने की राजनीति की, लेकिन वह बुरी तरह नाकाम रही। यह आश्चर्यजनक है कि अब कांग्रेस के नेता भी क्षेत्रीय दलों जैसी भाषा बोलने लगे हैं। इस तरह की भाषा यही बताती है कि किस तरह कांग्रेस का वैचारिक रूप से भटकाव बढ़ता चला जा रहा है। निःसंदेह बात केवल संगरूर से चुनाव लड़ रहे कांग्रेस प्रत्याशी सुखपाल खैहरा की ही नहीं है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कुछ समय पहले कर्नाटक के कांग्रेस नेताओं ने किस तरह उत्तर-दक्षिण के बीच खाई पैदा करने की कोशिश की थी। पहले यह काम तमिलनाडु के क्षेत्रीय दलों के नेता किया करते थे, लेकिन ऐसा लगता है कि कांग्रेस को भी उनकी राजनीति रास आने लगी है। पिछले कुछ समय से राहुल गांधी जिस तरह जाति जनगणना पर जोर देने में लगे हुए हैं और जगह-जगह जाकर यह पूछ रहे हैं कि अमुक-अमुक संस्थाओं एवं पदों में किस जाति के कितने लोग हैं, वह भी एक तरह की विभाजनकारी राजनीति है। जाति जनगणना की मांग करके राहुल गांधी विभिन्न जातियों के बीच की खाई चौड़ी करने का ही काम कर रहे हैं। वह केवल यहीं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अमीरों को खलनायक करार देकर उन्हें गरीबों का शत्रु साबित करने में लगे हुए हैं। वह यह बुनियादी बात समझने को तैयार नहीं कि अमीरों को गाली देकर और उन्हें लांछित करके वह उद्यमशीलता पर प्रहार ही कर रहे हैं। राहुल गांधी संपत्ति का सर्वे करने की जो बात कर रहे हैं, उसके पीछे भी अमीरों और गरीबों के बीच विभाजन पैदा करना और उन्हें एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करना है। कांग्रेस ने यही काम सेक्युलरिज्म के नाम पर अल्पसंख्यकवाद को पोषित करके किया था। गरीबों के हित की बात करना अच्छी बात है, लेकिन ऐसा करते हुए कारोबारियों को उनका शोषक बताना वह वामपंथी विचार है, जो हर जगह विनाशकारी ही साबित हुआ है। ऐसा लगता है कि वामपंथियों की संगत में आकर कांग्रेस यह देखने-समझने में नाकाम है कि देश में वाम दलों की कैसी दुर्दशा हुई।

पहला काम मतदान

पांचवें चरण का चुनाव प्रचार थम चुका है। लोकसभा चुनाव के लिए राज्य की पांच सीटों पर सोमवार को मतदान होगा। प्रचार के दौरान सबने अपनी बातें, अपने मुद्दे रखे। अब बारी जनता की है कि उसके मन में क्या है। जनता कैसी सरकार चाहती है। लोकतंत्र में मताधिकार ही वह सबसे बड़ी शक्ति है, जिससे जनता अपनी इच्छा के अनुसार जनप्रतिनिधियों का चुनाव कर एक लोकप्रिय सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त करती है। यह अत्यावश्यक है कि मतदाता अपने इस अधिकार का प्रयोग करें। पिछले चार चरणों के चुनाव में मतदान प्रतिशत अपेक्षा के अनुरूप नहीं कहा जा सकता है। यह आशा की जानी चाहिए कि आने वाले चरणों में यह प्रतिशत बढ़ेगा। बात-विमर्श का फलाफल तभी है, जब अपने अधिकार का प्रयोग किया जाए, अन्यथा वह व्यर्थ है। बिहार राजनीतिक रूप से सदैव सजग रहा है। लोग मतदान में बढ़-चढ़कर भाग लेते रहे हैं। इसलिए यह अपेक्षा की जा सकती है कि वे अपने घरों से निकलकर न केवल स्वयं मतदान के लिए जाएंगे, अपितु औरों को भी प्रेरित करेंगे। निर्वाचन आयोग इसको लेकर निरंतर अभियान चला रहा है। प्रशासन ने भी अच्छी व्यवस्था की है। समाज के प्रबुद्ध तबके, विभिन्न सामाजिक-स्वयंसेवी संस्थाओं को भी अधिक से अधिक मतदान के लिए जागरूकता अभियान में आगे आकर लोगों को प्रेरित करना चाहिए। यह ध्यान रखना होगा कि एक-एक वोट महत्वपूर्ण होता है। इसी से जनप्रतिनिधि चुने जाते हैं, सरकार बनती है। वही सरकार नीतियां बनाती है, जिसका कार्यान्वयन किया जाता है। देश की व्यवस्था को चलाने में, देश को मजबूत बनाने में जनता की यह सीधी भागीदारी होती है। इस अधिकार को समझना होगा। संविधान ने आम जन में जो शक्ति निहित की है, उसका सदुपयोग आवश्यक है। इसलिए यह अभी से तय करना होगा कि मतदान के दिन सबसे पहला कार्य मतदान केंद्र पर जाकर वोट डालना हो। उसके बाद ही कोई काम। प्रशासन को भी यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक मतदाता तक पर्ची समय से पहुंचा दी जाए।

संविधान ने आम जन में जो शक्ति निहित की है, उसका सदुपयोग आवश्यक है।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या हेमंत सोरेन को जमानत मिलने में देरी हो रही है?

आज का सवाल
क्या धार्मिक स्थलों पर वीआइपी दर्शन की व्यवस्था पर रोक लगाई जानी चाहिए?

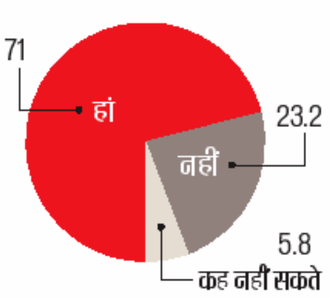

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

नागरिकता कानून का बेतुका विरोध

संजय गुप्त

सीएए का विरोध कर रहे दलों को यह देखना चाहिए कि जिन लोगों को नागरिकता दी गई है, उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं है

नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए पर अमल करते हुए तीन सौ से अधिक लोगों को भारत की नागरिकता दे दी गई। जिस समय इस कानून पर संसद ने मुहर लगाई थी, उस समय कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दलों ने यह दुष्प्रचार किया था कि यदि इस कानून पर अमल हुआ तो देश के मुसलमानों की नागरिकता छीन ली जाएगी। इस दुष्प्रचार के चलते दिल्ली सहित देश के अनेक हिस्सों में हिंसक प्रदर्शन हुए। दिल्ली में तो शाहीनबाग इलाके में व्यस्त सड़क को बाधित कर महीनों तक धरना दिया गया। इसके कारण ही दिल्ली में भीषण दंगे हुए। इन दंगों में 50 से अधिक लोग मारे गए। इन दंगों के कारण देश को असहज स्थिति का सामना करना पड़ा, क्योंकि उस समय तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भारत के दौरे पर थे। संभवतः सीएए के खिलाफ हिंसक विरोध और उपद्रव के चलते ही सरकार ने उस पर अमल कुछ समय के लिए टाल दिया। अंततः दो महीने पहले इस कानून के नियम अधिसूचित कर अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश से प्रताड़ित होकर भारत आए लोगों को नागरिकता देने का रास्ता साफ किया गया। अब जब इन तीन देशों में प्रताड़ित हुए अल्पसंख्यकों को नागरिकता देना प्रारंभ कर दिया गया है, तब विरोधी दलों को इस पर विचार करना चाहिए कि इस कानून का विरोध करके उन्हें हासिल क्या हुआ? सीएए में संशोधन इसलिए किया गया था, ताकि इन तीनों देशों में धार्मिक कारणों से प्रताड़ित हो रहे और किसी तरह जान बचाकर भारत आए हिंदुओं, सिखों, बौद्धों, जैनियों, ईसाइयों और पारसियों को भारत की नागरिकता दी जा सके। एक समय ऐसे लोगों को नागरिकता प्रदान करने की मांग खुद कांग्रेस के नेताओं ने संसद में की थी, लेकिन जब मोदी सरकार ने इसकी व्यवस्था की तो संकीर्ण राजनीतिक कारणों से कांग्रेस और अन्य दल उसके विरोध में खड़े हो गए। इन दलों को देखना चाहिए कि जिन लोगों को नागरिकता दी गई है, उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं है।

देश का कोई भी दल इससे अनजान नहीं कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों को किस तरह प्रताड़ित किया जाता है। इस प्रताड़ना के चलते ही इन तीनों देशों में अल्पसंख्यकों की आबादी लगातार कम होती चली जा रही है। इससे परिचित होने के बावजूद विपक्षी दलों ने नागरिकता संशोधन कानून को लेकर समाज में जानबूझकर भ्रांति फैलाने की कोशिश की। इसके लिए उन्होंने यह दलील दी कि जब एनआरसी यानी राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर लाया जाएगा तो उसमें ऐसी व्यवस्था की जाएगी, जिससे भारत के मुसलमानों की नागरिकता रद होने का खतरा पैदा हो जाएगा। हालांकि भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में एनआरसी पर कुछ नहीं कहा है, लेकिन वह समय की मांग है। यह पता चलना ही चाहिए कि देश में कितने लोग अवैध रूप से रह रहे हैं अथवा नागरिकता विहीन हैं। भावी सरकार को एनआरसी पर काम करना चाहिए और ऐसा करते समय इसका ध्यान रखना चाहिए कि सीएए की तरह उसके खिलाफ दुष्प्रचार न होने पाए।

अवधेश राजपूत

विपक्षी दल यह देखने से इन्कार कर रहे हैं कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में रह रहे जो अल्पसंख्यक प्रताड़ना के बाद किसी प्रकार भारत आ गए, वे तो वहां के बहुसंख्यकों के रवैये के कारण ही अपना देश छोड़कर आए। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि बांग्लादेश से तमाम मुसलमानों ने किसी प्रताड़ना के कारण नहीं, बल्कि बेहतर जीवन की आस में भारत में घुसपैठ की है। उनकी घुसपैठ के चलते पश्चिम बंगाल और असम समेत पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों का सामाजिक तानाबाना बदल गया है। बांग्लादेश से आए घुसपैठियों ने तो अनुचित तरीके से मतदाता पहचान पत्र समेत अन्य पहचान पत्र हासिल कर लिए हैं। कुछ दल इन घुसपैठियों को अपने वोट बैंक की तरह देखते हैं। इसी कारण वे सीएए का विरोध करने में लगे हुए हैं।

जब भारत का विभाजन हुआ, तब पाकिस्तान में हिंदुओं एवं अन्य अल्पसंख्यकों की आबादी 25 प्रतिशत से अधिक थी। जब बांग्लादेश पाकिस्तान से टूटकर अलग हुआ तो हिंदुओं की एक बड़ी आबादी बांग्लादेश में रह रही थी। आज पाकिस्तान में मुश्किल से डेढ़-दो प्रतिशत हिंदू बचे हैं और बांग्लादेश में सात-आठ प्रतिशत। पाकिस्तान और बांग्लादेश यह बता सकने की स्थिति में नहीं कि शेष हिंदू कहां गए? स्पष्ट है कि या तो उनका जबरन मतांतरण कराया गया या फिर वे प्रताड़ना के चलते पलायन को विवश हुए। पाकिस्तान और बांग्लादेश में जो स्थिति हिंदुओं की है, वही अन्य अल्पसंख्यकों की भी। अफगानिस्तान का तो और भी बुरा हाल है। अब वहां मुश्किल से एक दो दर्जन ही हिंदू-सिख बचे हैं। इन तीनों देशों के जो अल्पसंख्यक 2014 के पहले भारत आ गए थे, उन्हें ही सीएए के तहत नागरिकता दी जा रही है। समझना कठिन है कि इसमें गलत क्या है? इन शरणार्थियों को नागरिकता देकर भारत अपने नैतिक दायित्व को ही पूरा कर रहा है। यह एक ऐसी मानवीय पहल है, जिसकी सराहना की जानी चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य से कुछ दल अभी भी विरोध कर रहे हैं। उनकी मांग है कि इन तीनों देशों के बहुसंख्यकों यानी मुसलमानों को भी नागरिकता देने की व्यवस्था की जाए। निःसंदेह एक समय भारत सबको शरण देता था, लेकिन आज वह चाहकर भी ऐसा नहीं कर सकता। भारत सबके लिए शरणस्थली नहीं बन सकता, क्योंकि वह विश्व की सर्वाधिक आबादी वाला देश बन चुका है और उसके संसाधनों पर बोझ बढ़ता जा रहा है। म्यांमार से जो रोहिंग्या अवैध तरीके से भारत आए, वे जहां भी रह रहे हैं, वहां कानून एवं व्यवस्था के लिए समस्या बन रहे हैं। भारत अपने सामाजिक तानेबाने के छिन्न-भिन्न होने का खतरा मोल नहीं ले सकता और तब तो बिल्कुल भी नहीं, जब एक साजिश के तहत घुसपैठ कराई जा रही है।

इससे बुरी बात और कोई नहीं कि लोकसभा चुनाव के मौके पर विभिन्न दलों ने अपने जो घोषणा पत्र जारी किए, उनमें से कई ने और विशेष रूप से वामपंथी दलों और तृणमूल कांग्रेस ने नागरिकता संशोधन कानून खत्म करने का वादा किया है। इन दलों के दबाव में आकर कांग्रेस भी यह कह रही है कि वह भी सत्ता में आई तो इस कानून को खत्म करेगी। यह सस्ती राजनीति ही नहीं, बल्कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश से जान बचाकर भारत आए और शरणार्थी के रूप में रह रहे लोगों के साथ की जाने वाली निर्दयता भी है।

response@jagran.com

एक अदद जमानत की चाह

हास्य-व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

वह जानते हैं, जमानत का सिलसिला कायम है। आज नहीं तो कल मिलेगी ही! कुछ नहीं तो सशर्त तो मिल ही जाएगी

लगता है कि अदालत ने उनको जमानत देकर उनका मनचाहा काम कर दिया। अब वह निहायत मुक्त हैं। उनको अपना ही नहीं, गैरों तक के तमाम काम निपटाने की मोहलत मिल गई है। वे सारे काम, जो जेल जाने की वजह से अधूरे रह गए थे और जिनको पूरा करने के सपने सलाखों के पीछे करवटें बदलते हुए देखा करते थे, उनके साकार होने का मौसम आ चुका है। सबके अपने-अपने सपने हुआ करते हैं। इन्हें देखने पर काहे की पाबंदी! लोग देखते थे, देखते हैं और देखते रहेंगे। कुछ लोग उन्हें पूरा भी करना चाहते हैं। कई लोग तो ऐसे भी पाए गए हैं, जिन्हें सिर्फ सपने देखने की आदत पड़ी रहती है। ऐसे लोग न जाने कैसे-कैसे सपने देखने लग जाते हैं कि नैनों की जोत चली जाती है। बेचारों को कुछ सूझता नहीं है, इसलिए थोड़ा-बहुत बहक जाया करते हैं। ऐसे ही स्वनामधन्य महानुभावों के लिए ये अदालतें बनी हुई हैं। यदि इस धरती पर चोरी-चकारी, लोभ, बेईमानी, भ्रष्टाचार, हिंसा वगैरह न होती तो कोर्ट कचहरी का अस्तित्व भी नहीं होता। वकीलों के चैंबर में मक्खियां भिनभिनाया करतीं।

लोग पकड़े जाते हैं। जेलों में प्रेमपूर्वक लाए जाते हैं, मेहमानखाने में बाइज्जत ठहराए जाते हैं। खाते-पीते हैं, मौज करते हैं। तब एक रोज अदालत के सामने पेश किए जाते हैं। इरहें-जिरहें होती हैं। प्रेस-टीवी वाले फोटुएं खींचते हैं। वे गर्व से खिंचवाते हैं। मन ही मन हुड़कते हैं, 'एक दफा बाहर आ जाऊं, फिर देखना, कितनों की खालें खींचता हूं!' वह जानते हैं कि शेर की खाल ओढ़े सियार-सी दिखने वाली उनकी आकृति के पीछे एक खूंखार भेड़िया है। अभी मांद में है। छूटने का इंतजार है। फिर वे जमानत पर छूट जाते हैं और तब मस्ती से छुट्टा सांड की मानिंद जिधर तबीयत आ गई, चरने को निकल पड़ते हैं। आखिरकार वे ही जमानत पर छूटे हैं, उनकी आदतें नहीं।

एक आरोपित जनसेवक की भी दिली इच्छा उसके भीतर उमड़ती-घुमड़ती है। देश को ठिकाने लगाने का लक्ष्य उनकी काजलदार-अंधी आंखों में नई चमक पैदा करता है। अब पूरे होंगे सपने। वह यह भी जानता है कि काश लोभ के दर्पण के सामने वह इस कदर अंधा न होता, तो 'जेल-बेल' की नौबत ही क्यों आती? कहा भी गया है, चारे के अंधे को हर तरफ भूसा-ही-भूसा नजर आता है। ऐसी जीवात्माएं जमानत पर रिहा होती हैं और जेल की कोठरियां सूनी पड़ जाती हैं। वह भी सोचती हैं, हाय, कितने अरमानों से पाला था इन्हें कि ताउम्र साथ निभाएंगे। मगर ये बड़े बेवफा निकले। कोठरियां सोचती हैं, ये ऐसे बेवफा न होते तो यहां आते ही क्यों? फिर यह विचार कर संतोष करती हैं कि तू नहीं और सही। 'कल और आएंगे नोटों की मोटी गड्डियां गिनने वाले, तुमसे ज्यादा खाने वाले तुमसे बेहतर पीने वाले।' ऐसे लोग भी इन्हीं गद्दों पर लेटेंगे। रात-रात भर हवालों-घोटालों के नाम लेते हुए बड़बड़ाएंगे। खर्राटे भी लेंगे तो लगेगा कि सीबीआइ और ईडी गले में अटकी हुई हैं। आजकल यही इस मुल्क की नियति हो गई है। लोग इसे पान की तरह खा और चबा रहे हैं। जब गाल भर जाते हैं तो जेलों को उगालदान समझकर यहां की दीवारों पर दो-चार पीकें मारने चले आते हैं। कारागारों का पर्यावरण खराब करते हैं और सादर जमानत पर बाहर चले जाते हैं। कई तो ऐसे निकले, जो यहां आए ही नहीं! बाहर ही बाहर अग्रिम बेल लेकर ठाठपूर्वक पूरे देश को जेलखाने में बदलने की तजबीजें तलाशने में लगे हैं।

अहा, कितनी सुविधाएं हैं? करोड़ों का वारा-न्यारा करो और पचास-पचास हजार के एक या दो मुचलके भर कर चौड़े से टहलो। मुकदमे चलते रहेंगे। तारीखें पड़ती रहेंगी। जनता की कमर पर लातें पड़ती रहेंगी। अदालतें 'आर्डर-आर्डर' करती रहेंगी। वह इसे आदेश मानकर अपने धंधे निपटाते रहेंगे। डरने की कोई जरूरत नहीं है। जो डर गया, वह मर गया। जो अमर हैं, वे भ्रष्टाचार का अनंत सिलसिला जारी रखे हुए हैं। वे जानते हैं, जमानत का सिलसिला कायम है। आज नहीं तो कल मिलेगी ही! कुछ नहीं तो सशर्त तो मिल ही जाएगी।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य — पिछले छह लोकसभा चुनावों में श्रीनगर, कश्मीर में मतदान प्रतिशत — स्रोत : चुनाव आयोग

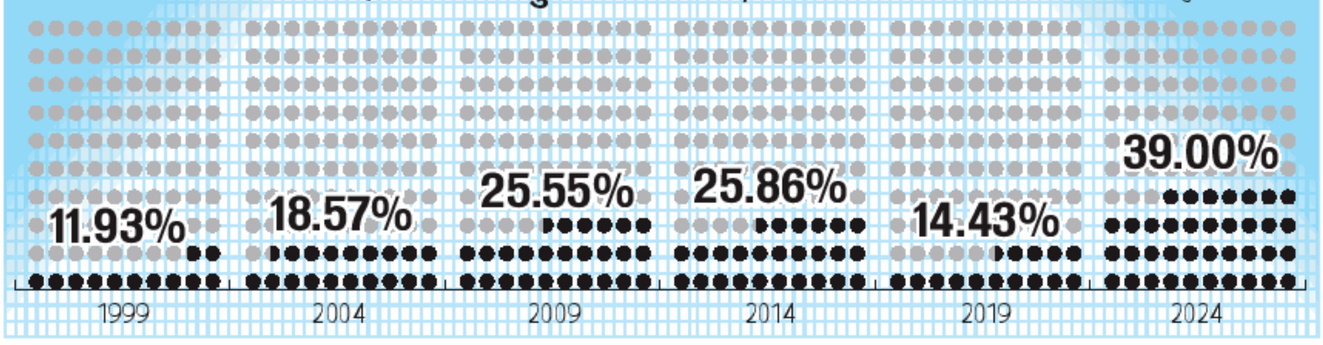

ऊर्जा

संतुष्टि

जब विधाता ने जीवों की सृष्टि की तो उनके भरण-पोषण के लिए भी विविध प्राकृतिक संसाधनों का निर्माण किया। ये असीमित तो नहीं, किंतु प्रचुर अवश्य हैं। इनके सदुपयोग से सभी प्राणियों की आवश्यकताओं की पूर्ति हमेशा होती रहेगी। इन पर समानरूपेण सभी का अधिकार है। नीर-क्षीर विवेक से मनुष्य इनकी सहायता से आत्म कल्याणार्थ विविध पदार्थों का निर्माण कर सकता है। विकास का यह क्रम अनंत काल से चलता रहा है। यद्यपि इसमें विधाता का कोई हस्तक्षेप नहीं। फिर भी संसार में ऊंच-नीच का भेद दृष्टिगोचर होता है। संतुष्टि का अभाव इसका प्रमुख कारण है। इसीलिए मनुष्य द्वारा संसाधनों का दुरुपयोग और अनुचित दोहन किया जाता है तथा समाज में आवश्यकता से अधिक धनादि पदार्थों के संग्रह की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। इसीलिए कोई श्रम करके भी निर्धन हो जाता है और कोई बिना श्रम के भी धनवान।

संतुष्टि का कामनाओं के साथ गहरा संबंध है। जब किसी व्यक्ति की कामनाएं अनंत हो जाती हैं तो इससे दुनिया में असंतोष बढ़ता है और असमानता भी। प्रकृति के प्रचुर संसाधन भी कम पड़ जाते हैं। संतुष्टि ही मनुष्य की बढ़ती कामनाओं के नियंत्रण का उपयुक्त निदान है। ''बिनु संतोष न काम नसाहीं'' कहकर गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसकी पुष्टि की है। किंतु कामनाओं पर लगाम तब तक नहीं लगाई जा सकती, जब तक संतुष्टि का पैमाना निश्चित नहीं होता। यह पैमाना सभी लोगों का अलग होता है। कोई थोड़े में ही संतुष्ट हो जाता है तो कोई बहुत पाकर भी नहीं। इसीलिए स्वामी रामकृष्ण परमहंस कहते हैं- ''सफलता का पैमाना तो दूसरे तय करते हैं। किंतु संतुष्टि का पैमाना स्वयं तय करना होता है।'' इसलिए विवेकशील व्यक्ति दूसरे की जरूरतों को ध्यान में रखकर अपनी संतुष्टि का पैमाना तय करते हैं। जब संतुष्टि का यह भाव सभी में आ जाता है तब समतामूलक समाज की स्थापना होती है और सर्वे भवंतु सुखिनः का मंत्र सफल होता है।

डा. सत्य प्रकाश मिश्र

याद आए जसवंत

कोई मुश्किल आने पर अमूमन एक कहावत दोहराई जाती है कि 'नानी याद आ गई...', लेकिन इस बार लोकसभा चुनाव में नेताओं को भाजपा के दिग्गज नेता रहे दिवंगत जसवंत सिंह याद आ रहे हैं। बात सुनने में भले ही अजीबोगरीब लगे, लेकिन तार्किक है। दरअसल इन दिनों भीषण गर्मी है। दिनभर चलती लू के बीच नेताओं को चुनाव प्रचार करना पड़ रहा है। एक दिन में कई-कई रैलियां करनी पड़ रही हैं। चुनावी मजबूरी है कि चाहकर भी घर या दफ्तर में नहीं बैठ सकते। धूप-गर्मी से बचाव के तरीके अपनाए भी जा रहे हैं, लेकिन बीते दिनों भाजपा मुख्यालय में बैठे नेताओं को यकायक जसवंत सिंह याद आ गए। चर्चा छिड़ गई कि कितनी भी लू चल रही हो, जसवंत सिंह अपनी कार का शीशा खोलकर ही सफर करते थे। तर्क देते थे कि लू से खून साफ होता है। इस तरह वह तो इन विषम परिस्थितियों के अभ्यस्त हो गए थे, लेकिन बाकी नेता क्या करें?

बदलते रंग

नौकरशाही का भी जवाब नहीं। वह हवा के अनुसार रंग बदलती है। लोकसभा चुनाव के एलान से पहले ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अधिकारियों को साफ कर दिया था कि चुनावी मौसम छुट्टी का नहीं है। मोदी ने उन्हें नई सरकार के पहले सौ दिन का एजेंडा तैयार करने का होमवर्क दे दिया था। इस पर काम भी तेजी से हो रहा था। सामान्य दिनों के अनुसार अधिकारियों का आफिस आना-जाना लगा था, लेकिन पहले दो चरण में मतदान में सुस्ती क्या आई अधिकारी भी सुस्त हो गए। बैठकों में कमी आ गई। अधिकारी छुट्टी पर जाने का कार्यक्रम तय करने लगे। चौथे चरण में बढ़े मतदान प्रतिशत के बाद अब अधिकारियों को कहा जाने लगा है कि वे अपनी रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दें, भले ही देर रात तक बैठना पड़े।

बीसी बनाम एडी

प्रधानमंत्री मोदी लगातार अपने तीसरे कार्यकाल में विकसित भारत की दिशा में बड़ी छलांग लगाने का एलान कर रहे हैं। इसकी तैयारियों में जुटे एक नौकरशाह के अनुसार यह छलांग कितनी बड़ी होगी, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। फिर उनके अनुसार लोग भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना 2024 से पहले और 2024 के बाद उसी तरह से करने लगेंगे, जिस तरह से समय का आकलन ईसा मसीह के जन्म के पहले और बाद के काल को बीसी और एडी के रूप देखते हैं।

चुनाव में कूटनीति की बातें

आम चुनाव में हिंदू-मुस्लिम, आरक्षण, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दे तो तारी हैं ही, लेकिन विदेश नीति से जुड़े मुद्दों ने भी इसमें चुपके से एंट्री ले ली है। इसका कुछ श्रेय मौजूदा हालात और विदेश मंत्री एस जयशंकर को भी जाता है, जो मोदी सेना के एक सक्रिय सिपाही के तौर पर मैदान में हैं। कूटनीति की दुनिया में शानदार विदेशी खातिरदारी का अनुभव करने वाले जयशंकर इन दिनों शहर-शहर की धूल छान रहे हैं और उन्हें आमंत्रित करने वाले उम्मीदवारों की लाइन लगी हुई है। पिछले कुछ दिनों में वह 11 राज्यों का दौरा कर चुके हैं। खुली जीप में रैलियां कर रहे हैं। दर्जन भर से ज्यादा शहरों के प्रबुद्ध लोगों और आम जनता के बीच मोदी सरकार के दस वर्षों के कार्यकाल के दौरान विदेशी मोर्चे पर दर्ज सफलताओं को गिना चुके हैं। वह मानते हैं कि इन चुनावी दौरों एवं रैलियों में वह जितनी चीजें सीख रहे हैं, उतनी अपने कूटनीतिक सर्किल में रह कर नहीं सीखे सकते।

राजरंग

पोस्ट

मैं जानता हूं कि चुनाव के समय अजीब-सी चीजें होती हैं, लेकिन ऐसा लगता नहीं है कि स्वाति मालीवाल आम आदमी पार्टी को बदनाम करने के लिए भाजपा की साजिश का हिस्सा हैं।
प्रीतीश नंदी@PritishNandy

आरोप है कि दुर्व्यवहार की घटना हुई दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निवास स्थान पर। आरोपित की गिरफ्तारी हुई दिल्ली के मुख्यमंत्री के निवास स्थान से। आरोपित लखनऊ से लेकर पंजाब और महाराष्ट्र तक घूम रहा था दिल्ली के मुख्यमंत्री के साथ। गजब। नाविका कुमार@navikakumar

पहले वकील अपने क्लाइंट से मोटी फीस मांगते थे। आजकल राज्यसभा की सीट मांगते हैं!
प्रभाकर श्रीवास्तव@Prakharshri78

जिंदगी बच-बचा के, घुट-घुट के जीने की चीज नहीं। जिंदगी तो मिल-मिला के, खुश रह कर जीने के लिए है।
रजत शर्मा@RajatSharmaLive

क्या सनातन, इस्लाम और ईसाइयत एक ही हैं? हम बिना पढ़े कुछ भी बोल देते हैं। सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं! जागो उठो, पुस्तकों को खोलो, ग्रंथों को पढ़ो!
गौतम खट्टर@GautamKhattar

जनपथ

ममता महुआ सुप्रिया और प्रियंका मैम,
क्यों चुप हैं सब जब हुआ स्वाती के संग गेम?
स्वाती के संग गेम 'शेम' इनको ना आए,
सभी दीदियाँ चुप्प दिखें मुंह दही जमाए!
महिला का अपमान भला कैसे है जमता,
कुछ तो बोलो आज सुप्रिया महुआ ममता!!
– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व.पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त

जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प. बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 37

****

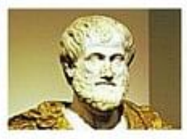

जीवन तभी सार्थक है, जब हम किसी लक्ष्य के लिए प्रयास कर रहे हों।
- अरस्तु

फ्योदोर दोस्तोवस्की कहते हैं कि यदि कोई किसी व्यक्ति को पूरी तरह से कुचलना और नष्ट करना चाहता है, तो उसे बस इतना करना होगा कि वह उस व्यक्ति से ऐसा काम करवाए, जो पूरी तरह से अनुपयोगी और निरर्थक हो। हालांकि लोग मान सकते हैं कि इस तरह के सिसिफियन कार्य सार्थक हो सकते हैं (शायद यही एक चीज है, जो इसे सहने योग्य बनाती है), लेकिन क्या सिर्फ यह विश्वास ही इसे सार्थक बनाने के लिए पर्याप्त है?

कौनसा काम है जो महान है

किसी कार्य के सार्थक होने के लिए जरूरी है कि किसी लक्ष्य में भी उसकी भागीदारी हो, जो काम करने वाले व्यक्ति को खुद से बड़ी चीज से जोड़ता हो।

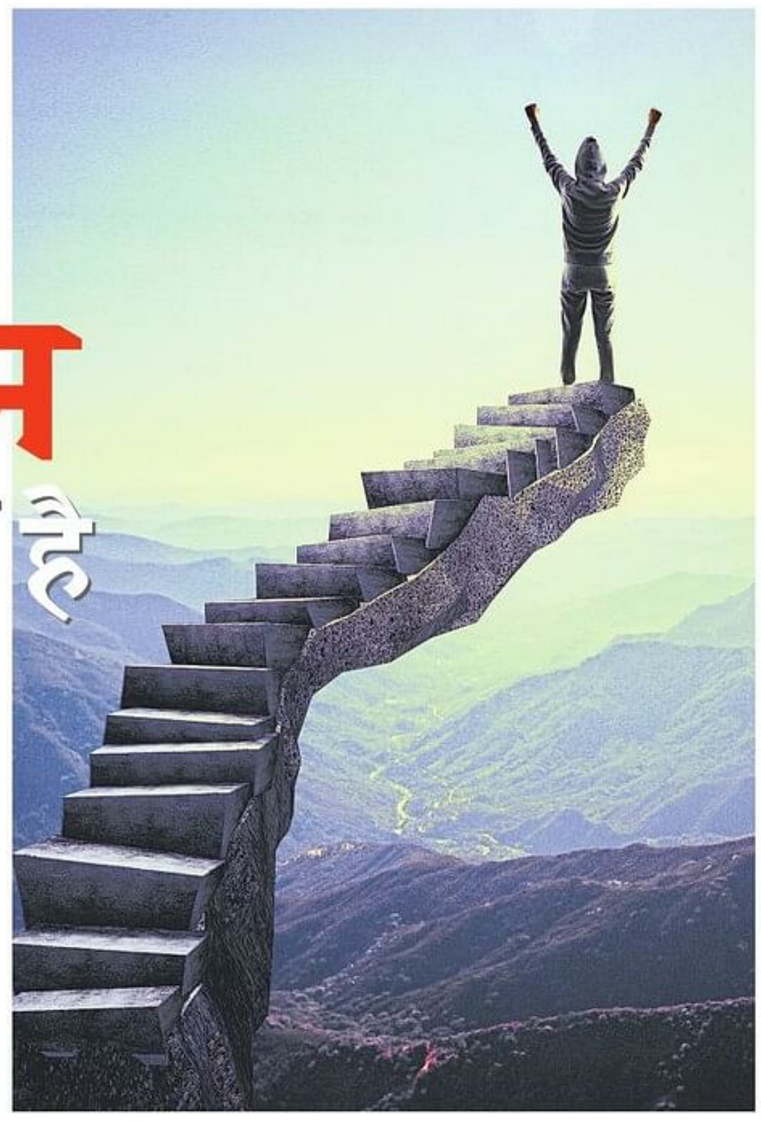

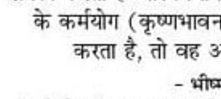

कैलेब एल्थोर्प
पोस्ट डॉक्टरल फेलो, ट्रिनिटी कॉलेज, डबलिन

हम सभी काम करते हैं। कुछ भाग्यशालियों को छोड़ दें, तो ज्यादातर लोग अपनी जिंदगी का बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा काम करते हुए ही बिताते हैं। अगर यह सच है, तो क्या आपको नहीं लगता कि हम सभी को इन कामों को अर्थपूर्ण बनाने के बारे में सोचना चाहिए। 2019 में इसे लेकर एक कंपनी में शोध किया गया, जिसमें 82 फीसदी लोगों ने यह स्वीकारा कि उनके काम का एक उद्देश्य होना चाहिए और सार्थक कार्य उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता में आना चाहिए। लेकिन सवाल यह है कि आखिर वह क्या चीज है, जो किसी काम को 'सार्थक' बनाती है? क्या यह बस लोगों की सोच है, जो मनोवैज्ञानिक तौर किसी काम को सार्थक मान लेती है या फिर, किसी काम के सार्थक होने की कुछ अलग कसौटियां हैं?

■ सिसिफस का यूनानी मिथक

इन सवालों का जवाब देने के लिए हमें यह सोचना होगा कि आखिर वह क्या है, जो किसी काम को अर्थहीन बनाता है। अब जरा सिसिफस के यूनानी मिथक को ही ले लीजिए, जिसे दुव्यर्ववहार के लिए सजा के तौर पर एक बड़ी चट्टान या गोल पत्थर को पहाड़ पर चढ़ाने के लिए कहा गया था, ताकि चोटी पर पहुंचने से ठीक पहले वह लुढ़ककर नीचे आ जाए। इसके बाद वह नीचे आता था और फिर उस पत्थर को धक्का देकर ऊपर चढ़ाता था। यह प्रक्रिया उसने बार-बार दोहराई। आज हम श्रमसाध्य और निरर्थक कार्यों को सिसिफियन कहते हैं। इस तरह के सिसिफियन काम करने वाले आज बहुत हैं और वह समझ सकते हैं कि ऐसे काम कितने कष्टकारी होते हैं।

■ फ्योदोर दोस्तोवस्की समझते थे

फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की निश्चित रूप से इसे समझते थे। इस उपन्यासकार ने श्रमिकों के शिविर के अपने व्यक्तिगत अनुभव को कुछ हद तक यों स्पष्ट किया, 'यदि कोई किसी व्यक्ति को पूरी तरह से कुचलना और नष्ट करना चाहता है, तो उसे बस इतना करना होगा कि वह उस व्यक्ति से ऐसा काम करवाए, जो पूरी तरह से अनुपयोगी और निरर्थक हो। हालांकि लोग मान सकते हैं कि इस तरह के सिसिफियन कार्य सार्थक हो सकते हैं (शायद यही एक चीज है, जो इसे सहने योग्य बनाती है), लेकिन क्या सिर्फ यह विश्वास ही इसे सार्थक बनाने के लिए पर्याप्त है? कई दार्शनिक ऐसा नहीं सोचते। इसके बजाय वे तर्क देते हैं कि किसी कार्य के सार्थक होने के लिए जरूरी है कि किसी लक्ष्य में भी उसकी भागीदारी हो, जो काम करने वाले व्यक्ति को खुद से बड़ी चीज से जोड़ता हो। जैसा कि अमेरिकी दार्शनिक सुसान वुल्फ कहती हैं कि काम के अर्थ को समझने के लिए उसे सिर्फ अपने नहीं, बल्कि दूसरों के नजरिये से समझना भी जरूरी होता है।

■ चीजों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें

काम को सार्थक बनाने के लिए व्यक्ति को एक बड़े ढांचे में खुद को देखना होता है। एक व्यापक उद्देश्य के संदर्भ में चीजों का आकलन करना होता है। आप खुद से पूछ सकते हैं कि क्या आप अपने काम से कुछ सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं? क्या आपका काम उपयोगी है, और क्या यह दूसरों के जीवन को चलाने में उनकी मदद करता है? इन सवालों के जवाब आत्मविश्वास से 'हां' में देना आपके काम को समाज के व्यापक संदर्भ में रखता है। सिसिफियन कार्य स्पष्ट रूप से सामाजिक योगदान के इस मानक के हिसाब से विफल रहता है, इसलिए यह सार्थक नहीं हो सकता है।

■ लेजी गर्ल्स जॉब्स

कुछ अध्ययनों के मुताबिक, आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में ऐसे काम की आश्चर्यजनक रूप से भरमार है। हाल ही में 'लेजी गर्ल जॉब्स' और 'फेक ई-मेल जॉब्स' के प्रति बढ़ते रुझान से पता चलता है कि कुछ युवा वाकई ऐसी ही नौकरियों की तलाश करते हैं, ताकि ऑफिस के काम और अपनी निजी जिंदगी में संतुलन रखा जा सके।

■ दूसरे को हानि न पहुंचे

मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर कोई कार्य दूसरों की मदद करने के बजाय उन्हें नुकसान पहुंचाता हो, तो वह सार्थक कार्य नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिए, इरादतन खराब उत्पादों को बाजार में बेचना, या ऐसे क्षेत्रों में काम करना, जिससे पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो या उससे जुड़े नुकसान हों। क्लाइमेट क्विटिंग (पर्यावरणीय कारणों से नौकरी या नियोक्ता को छोड़ना) की घटना को लोगों द्वारा सार्थक काम करने की इच्छा से नौकरी छोड़ने के निर्णय के नतीजे के रूप में देखा जा सकता है। ये उदाहरण बताते हैं कि नौकरी सिर्फ इसलिए सार्थक नहीं होती कि यह अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में योगदान देती है।

■ बाजार और समाज

जब बाजार मूल्य और सामाजिक मूल्य एक-दूसरे से टकराते हैं (मसलन, सुपरमार्केट में काम करने से लोगों का पेट भरने में मदद मिलती है), ये दो तरह के मूल्य हैं, जो अलग-अलग हो सकते हैं। हमें इस बारे में सोचना चाहिए कि हमारे काम से किसे लाभ पहुंच रहा है। क्या यह लाभ दूसरों को नुकसान पहुंचाने की कीमत पर मिलता है, और क्या हमारे काम से अनपेक्षित नकारात्मक परिणाम की आशंका है।

■ संगठनों में सार्थक काम

सकारात्मक योगदान या दूसरों को नुकसान न पहुंचाने के अलावा, काम तब भी सार्थक नहीं होगा, जब तक कि आप अपने योगदान को स्पष्ट रूप से महसूस न करें। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए प्रासंगिक है, जो बड़ी कंपनियों या संगठनों में नौकरी करते हैं। ज्यादातर कंपनियां साधारण कर्मचारियों को बड़े निर्णयों में शामिल नहीं करतीं, जो इस बात को दर्शाता है कि कंपनी समाज में कैसे काम करती है (जैसे-किन उत्पादों का उत्पादन किया जाए, कौन-सी सेवा पेश की जाए या किन बाजारों में काम करें आदि से संबंधित निर्णय)। यह प्रबंधकों और अधिकारियों तक ही सीमित रहता है। नतीजतन कर्मचारी आसानी से अपने काम में निहित सामाजिक योगदान से अलग हो सकते हैं, जिससे यह उनके लिए सार्थक नहीं हो पाता। अधिक लोगों के लिए काम को ज्यादा सार्थक बनाने के लिए यह सोचना होगा कि बड़े संगठन इस प्रकार के निर्णयों में कर्मचारियों को अधिक लोकतांत्रिक तरीके से कैसे शामिल कर सकते हैं? इसका मतलब यह हो सकता है कि कर्मचारियों को रणनीतिक निर्णयों पर वीटो करने का अधिकार दिया जाए। कंपनी बोर्डों में कर्मचारी प्रतिनिधियों को रखा जाए, यहां तक कि कंपनी को एक श्रमिक सहकारी समिति में बदला जाए।

{ धूप आने दो

सिसिफियन टास्क सिसिफियन किसी कार्य को अंतहीन और निरर्थक रूप में वर्णित करता है, जो कभी पूरा नहीं होता है। यह शब्द यूनानी (ग्रीक) पौराणिक कथाओं के एक पात्र सिसिफस से आया है, जिसे खड़ी पहाड़ी पर लगातार एक गोल चट्टान को ऊपर ले जाने की सजा दी गई थी।

क्लाइमेट क्विटिंग दुबई में हुए जलवायु शिखर सम्मेलन में क्लाइमेट क्विटिंग की अवधारणा पर ध्यान दिया गया। इसका तात्पर्य पर्यावरणीय स्थिरता में सक्रिय योगदान देने वाले कॅरिअर को आगे बढ़ाने के लिए अपनी वर्तमान नौकरियों से इस्तीफा देने की उभरती प्रवृत्ति से है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

आत्मा न तो वेद-प्रवचन से प्राप्त होती है, न बुद्धि से मिलती है और न शास्त्रों के श्रवण से ही मिलती है। वह उन्हीं को प्राप्त होती है, जिनकी वासनाएं शांत हो चुकी हैं, सब कामनाएं मिट गई हैं।

नचिकेता ने यमलोक में क्यों बिताईं तीन रातें

ऋषि उद्दालक विश्वजित नामक एक महान यज्ञ कर रहे थे। उन्होंने अनुष्ठान में अपनी सारी संपत्ति दान कर दी। ऋषि-ऋत्विजों को दक्षिणा में गायें दी जा रही थीं। पिता के मंगल हेतु राजा के सात वर्षीय पुत्र नचिकेता ने अपने पिता से कहा, 'पिताजी! मैं भी आपका धन हूं, आप मुझे किसे दान में देंगे?'

उद्दालक ने कोई उत्तर नहीं दिया। नचिकेता ने पुनः प्रश्न दोहराया, किंतु उद्दालक इस बार भी चुप रहे। नचिकेता ने फिर पूछा, 'पिताजी! बताइए, मुझे किसे दान में दे रहे हैं?' तीसरी बार वही प्रश्न सुनकर उद्दालक को क्रोध आ गया। उन्होंने चिढ़कर कह दिया, 'जाओ, मैं तुम्हें मृत्यु को देता हूं!'

यह सुनकर भी बालक नचिकेता विचलित नहीं हुआ। उसने हाथ जोड़कर अपने पिता से कहा, 'पिताजी! शरीर तो नश्वर है, किंतु वचन सर्वोपरि है। आपने मुझे यमलोक जाने का आदेश दिया है, इसलिए अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए।' यह सुनकर सारे ऋषि-मुनि डर गए। नचिकेता को अनेक प्रकार से समझाया गया, किंतु उसने किसी की बात नहीं मानी। आखिर उद्दालक ने नचिकेता की सत्यपरायणता देखकर उसे यमपुरी जाने की आज्ञा दे दी। नचिकेता ने पिता को प्रणाम किया और यमलोक के लिए प्रस्थान कर गया।

बालक नचिकेता जब यमपुरी पहुंचा, तो उसे भीतर जाने की आज्ञा नहीं मिली। नचिकेता ने तीन रात यमपुरी के द्वार पर अन्न-जल ग्रहण किए बिना बिताया। उसकी निष्ठा और उसका संकल्प देखकर यमराज भी कांप उठे। ब्राह्मण का सत्कार न करने के दुष्परिणाम होते हैं। फिर नचिकेता तो तेजस्वी ऋषिकुमार था। यमराज को आखिर नचिकेता से मिलने आना पड़ा। उन्होंने नचिकेता से सम्मानपूर्वक कहा, 'ब्राह्मणकुमार! आप मेरे अतिथि हैं, फिर भी आपको मेरे द्वार पर तीन रात्रि उपवास करके बितानी पड़ी। मुझसे भारी अपराध हो गया है। आप प्रत्येक रात्रि के लिए मुझसे एक-एक वरदान मांग सकते हैं।'

● नचिकेता ने प्रथम वरदान मांगा – 'हे मृत्यो! मेरे पिता मेरे प्रति शांत, प्रसन्नचित्त और क्रोध रहित हो जाएं और जब मैं आपके यहां से लौटकर घर जाऊं, तब वह मुझसे प्रेमपूर्वक बातचीत करें।' यमराज ने कहा , 'तथास्तु!'

नचिकेता ने दूसरा वर मांगा, 'हे देव! मैं अग्नि का स्वरूप जानना चाहता हूं, क्योंकि उसे जानकर ही लोग स्वर्ग में अमृतत्व प्राप्त करते हैं।' इस पर यमराज बोले, 'यह अग्नि, जगत की प्रतिष्ठा का मूल कारण है। आपकी ज्ञान-पिपासा देखकर मैं आपको वरदान देता हूं कि अग्नि भी आपके नाम से प्रसिद्ध होगी और नचिकेत अग्नि कहलाएगी। अब तीसरा वर मांगिए!'

नचिकेता ने कहा, 'आप मृत्यु के देवता हैं। आत्मा का प्रत्यक्ष निर्णय नहीं हो पाता। अतः मैं आत्म-ज्ञान पाना चाहता हूं।' यह सुनकर यम थोड़ा झिझके। आत्म-विद्या को प्राप्त करना सरल नहीं होता। यमराज ने नचिकेता को आत्म-ज्ञान की दुरूहता बताकर टालना चाहा, किंतु नचिकेता अपने निश्चय से नहीं डिगा। यम ने नचिकेता को अनेक प्रकार के प्रलोभन दिए, फिर भी बात नहीं बनी।

● आखिरकार, यम ने आत्मा के स्वरूप को समझाते हुए कहा– 'आत्मा अजन्मी है, नित्य है, शाश्वत है, सनातन है, शरीर के नाश होने पर भी बची रहती है। वह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म और महान से भी महान है।

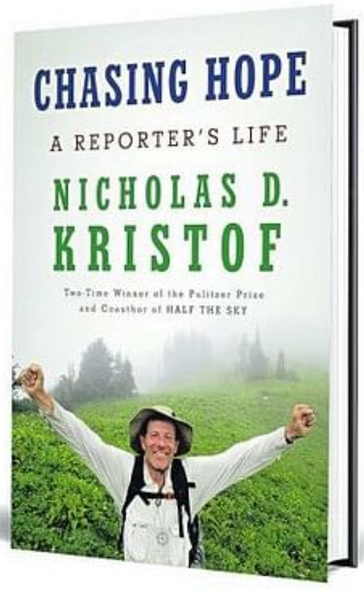

आत्मा शरीर में रहते हुए भी शरीर से रहित है, अस्थिर पदार्थों में व्याप्त होते हुए भी स्थिर है। वह कण-कण में व्याप्त है। सारा सृष्टिक्रम उसी के आदेश पर चलता है। जो पुरुष मृत्यु आने से पूर्व उसे जान लेता है, वह मुक्त हो जाता है। तथा शोक को जीतकर परमानंद को प्राप्त कर लेता है।'

यम ने आगे कहा, 'वह आत्मा न तो वेद-प्रवचन से प्राप्त होती है, न बुद्धि से मिलती है और न शास्त्रों के श्रवण से ही मिलती है। वह उन्हीं को प्राप्त होती है, जिनकी वासनाएं शांत हो चुकी हैं, सब कामनाएं मिट गई हैं और जिनके अंतःकरण को मलिनता की छाया स्पर्श नहीं कर पाती तथा जो उसे पाने के लिए व्याकुल रहते हैं।'

नचिकेता की यह कथा मूल रूप से *कठोपनिषद्* में मिलती है और सिखाती है कि यदि इच्छा हो, तो किसी भी आयु में भौतिक वस्तुओं का त्याग करके आत्मज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।।

अर्थात यदि कोई निष्ठावान व्यक्ति अपने मन के द्वारा कर्मेन्द्रियों को वश में करने का प्रयत्न करता है और बिना किसी आसक्ति के कर्मयोग (कृष्णभावनामृत में) प्रारंभ करता है, तो वह अति उत्कृष्ट है।
– भीष्म पर्व, गीता 3/7
(अर्जुन के प्रति साक्षात भगवान श्रीकृष्ण का गीतोपदेश)

प्रस्तुति : विवेक चौरसिया

हर 'केमिकल' हमारा दुश्मन नहीं

टिमोथी श्मिट
रसायन विज्ञान के प्रोफेसर, यूएनएसडब्ल्यू सिडनी

खाने-पीने की चीजों में केमिकल पाए जाने की खबर पर तूफान मच जाता है। लेकिन इन रसायनों (केमिकल्स) का विज्ञान क्या इतना बुरा है?

छह वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते बच्चे 'रसायन' (केमिकल) के नाम से ही खौफ खाने लगते हैं। जो वयस्क हैं, वे भी रसायनों से दूर भागते हैं। कुछ उत्पाद केमिकल फ्री होने का भी दावा करते हैं। एक ऐसा दावा, जो वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा उतर ही नहीं सकता। फिर भी यह लोगों को पसंद आता है। हर व्यक्ति केमिकल फ्री के पीछे भाग रहा है। मीडिया तक रसायन विज्ञान को खलनायक की तरह दिखाता है।

विज्ञान की सकारात्मकता महज कामयाब अंतरिक्ष अभियानों और चिकित्सकीय सफलताओं के रूप में समझी जाती है। दूसरी तरफ रसायनशास्त्र को लेकर कुख्यात कहानियां तो अमोनिया के रिसाव, हानिकारक धुएं, आतंकवादियों के गले में टंगे जहरीले कैप्सूल इत्यादि तक ही सीमित होती हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आज की दुनिया रसायन विज्ञान पर ही टिकी है? दुनिया की आधी आबादी का पेट भरने वाले उर्वरक, दवाओं से लेकर आरएनए टीके, लिथियम आयन बैटरी और सौर सेल जैसी नवीनतम तकनीकों की खोज का श्रेय रसायन विज्ञान को ही जाता है। आपके भोजन से लेकर मोबाइल फोन और लैपटॉप तक सब कुछ रसायन विज्ञान की ही देन है। सूक्ष्मतम इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाने वाली लिथियम बैटरियां ही होती हैं। अयस्क से धातुओं का पृथक्करण, हल्के प्लास्टिक, पॉलिमर और कंपोजिट का संश्लेषण इत्यादि रसायन विज्ञान की ही बदौलत है। बिजली बचाने के लिए अपने घरों में आप जो एलईडी लगाते हैं, उसके पीछे भी रसायन विज्ञान ही है।

20वीं सदी की शुरुआत में क्वांटम यांत्रिकी की खोज ने रसायन विज्ञान की हमारी सैद्धांतिक समझ को विकसित किया। लेकिन अब रसायन विज्ञान जो कर रहा है, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। रसायनज्ञ आपके भविष्य पर काम कर रहे हैं। रिचार्ज होने वाली बैटरी में लिथियम अनिवार्य रूप से होता है, जिसे अलग करना पर्यावरण की दृष्टि से नुकसानदेह है। इसलिए, रसायनज्ञ भविष्य की बैटरी के लिए सोडियम जैसे किसी दूसरे पदार्थ का विकल्प तलाश रहे हैं। वे अंतरिक्ष यानों में उपयोग में लाए जाने वाले सौर सेलों के लिए नई सामग्रियां तलाश रहे हैं। यह रसायन विज्ञान की ही खोज है, जो सूर्य के प्रकाश से ज्यादा उपयोगी ऊर्जा खींचने के लिए सिलिकॉन के साथ काम कर सकती है और सौर सेल को काफी हल्का बना सकती है। स्वच्छ ईंधन का विकल्प हाइड्रोजन को माना जा रहा है, जिसके उत्पादन के लिए रसायन विज्ञानी जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं। कैंसर के टीके, नए एंटीबायोटिक्स और वायरस के हमले से हमें बचाने में रात-दिन एक करने वाले रसायन विज्ञानी दरअसल हमारे चारों तरफ की दुनिया को पढ़कर हमारी राह आसान बना रहे हैं। (द कन्वर्सेशन)

अध्ययन कक्ष

चेजिंग होप
ए रिपोर्टर'स लाइफ
लेखक–निकोलस डी. क्रिस्टॉफ
प्रकाशक– नॉफ यूएस
मूल्य–2,665 रुपये (हार्डकवर)

साहस और न्याय की पत्रकारिता

द न्यूयॉर्क टाइम्स के रिपोर्टर निकोलस क्रिस्टॉफ के संस्मरणों की यह किताब टूटने और खड़े होने, मानवता के लिए बड़े लक्ष्य तय करने तथा गलतियां करने और उनसे सबक सीखने पर केंद्रित है।

वर्ष 1984 से द *न्यूयॉर्क टाइम्स* से जुड़े, और इस अखबार के रिपोर्टर, विदेशी संवाददाता और ब्यूरो चीफ से स्तंभकार तक की यात्रा पूरी करने वाले निकोलस डी क्रिस्टॉफ की यह किताब पत्रकारिता के साहस और उसके आदर्श, दोनों के बारे में बताती है। दो बार के पुलित्जर पुरस्कार विजेता क्रिस्टॉफ बताते हैं कि एक छोटे-से शहर ओरेगॉन से निकलकर पत्रकारिता के सहारे उन्होंने किस तरह पूरी दुनिया की यात्रा की।

भारत, अफ्रीका और यूरोप में घूमते हुए, तथा हांगकांग, बीजिंग व टोक्यो से रिपोर्टिंग करने वाले क्रिस्टॉफ उन गिने-चुने पत्रकारों में से हैं, जिन्हें इस सदी की सबसे बड़ी, महत्वपूर्ण और युगांतरकारी घटनाओं की रिपोर्टिंग का गौरव हासिल है, चाहे वह तिआनमन चौक के नरसंहार की घटना हो, इराक पर अमेरिकी हमले की रिपोर्टिंग हो, कंबोडिया में यौन व्यापार में फंसे बच्चों की पीड़ा हो, यमन का गृहयुद्ध हो, डारफर का नरसंहार हो या अफ्रीका में इबोला वायरस से हुए नुकसान का दस्तावेजीकरण हो। यही नहीं, कामगार अमेरिकियों में शराबखोरी, नशाखोरी और आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति की खोज उन्हें अपनी जन्मभूमि ओरेगॉन के यामहिल तक में ले गई।

लेखक पत्रकारिता से जुड़े कुछ उज्ज्वल उदाहरणों के बारे में तो बताते ही हैं, युद्ध, ध्वंस और अराजकता से भरे विश्व में उन असाधारण नायकों के बारे में भी कहते हैं, जिनसे वह मिले और प्रेरित हुए। वह कहते हैं कि अच्छी पत्रकारिता सिर्फ सच्चाई के बारे में लिखना नहीं है, बल्कि खतरा उठाना भी है। इसी जुनून के तहत एक सरकार-विरोधी आलोचक को उन्होंने चीन से बाहर निकलने में मदद की, तो उस कैथोलिक नन के बारे में भी उन्होंने विस्तार से लिखा, जिन्होंने एक अपराधी सरगना पर अपहृत लड़कियों को रिहा करने के लिए दबाव डाला। यही वे लोग हैं, जिन्होंने इस चुनौतीपूर्ण समय में लेखक को आशावादी बने रहने को प्रेरित किया। मानवाधिकार का जुनून अगर उन्हें विरासत में अपने पिता से मिला, जो निरंकुश रोमानिया से निकल भागे थे, तो पत्नी के साथ मिलकर पत्रकारिता में बेहतर काम के लिए उन्हें संयुक्त रूप से पुलित्जर पुरस्कार मिला।

सच्चाई, साहस और मानवाधिकार का जुनून उन्हें विश्व के खतरनाक क्षेत्रों में ले गया, तो कई बार उन्हें जोखिमों का सामना भी करना पड़ा, जिनमें अफ्रीका के सुनसान जंगली इलाके में प्लेन क्रैश में बच जाने का रोमांच भी शामिल है। यह जानते हुए भी, कि मानवाधिकार की रिपोर्टिंग को अखबारों में राजनीतिक रिपोर्टिंग से कम जगह मिलती है, उन्होंने जीवन के बड़े उद्देश्यों को अपनी पत्रकारिता का आधार बनाने में संकोच नहीं किया। क्रिस्टॉफ के संस्मरणों की यह किताब टूटने और खड़े होने, मानवता के लिए बड़े लक्ष्य तय करने तथा गलतियां करने और उनसे सबक सीखने पर केंद्रित है। लगभग चार दशक लंबी उनकी पत्रकारिता इस आदर्श से प्रेरित है कि सच्चाई, सूचना और विचार दुनिया में न्याय और बेहतर बदलाव ला सकते हैं।

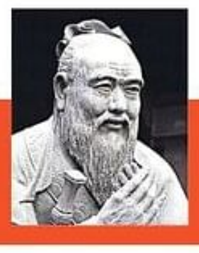

अभियान
amarujala.com
अमर उजाला

जीतने की जिद, दृढ़ इच्छाशक्ति और लगन, ये तीन ऐसी चाबियां हैं, जो बड़ी से बड़ी सफलता के दरवाजे का ताला खोल देती हैं। - कन्फ्यूशियस, महान दार्शनिक

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बारिया

क्या बताऊं तुम्हें,
हम शहर वाले कितने कंगले हैं...?

उसकी झोपड़ी के बाहर 4 पेड़ हैं,
मेरी बालकनी में सिर्फ दो गमले हैं...

वो मंदिर के बाहर मांग रहा था,
तुम अंदर...

...और बन गया सेल्सियस थर्मामीटर

झरोखा
19 मई

आज के ही दिन 1743 में 'सेल्सियस थर्मामीटर' का आविष्कार किया गया था। फ्रांसीसी भौतिक विज्ञानी जीन-पियरे क्रिस्टिन को इसे बनाने का श्रेय जाता है। दरअसल, 1742 में एंडर्स सेल्सियस नाम के एक स्वीडिश वैज्ञानिक ने पानी के हिमांक (फ्रीजिंग पॉइंट) और क्वथनांक (बॉयलिंग पॉइंट) को 100 डिग्री में विभाजित करने वाला एक थर्मामीटर स्केल तैयार किया था। एंडर्स सेल्सियस ने पानी के बॉयलिंग पॉइंट के लिए 0 डिग्री और फ्रीजिंग पॉइंट के लिए 100 डिग्री चुना था। एक साल बाद जीन पियरे क्रिस्टिन ने सेल्सियस पैमाने को उलट कर आज इस्तेमाल होने वाला सेंटीग्रेड स्केल (फ्रीजिंग पॉइंट बिंदु 0 डिग्री सेल्सियस और बॉयलिंग पॉइंट 100 डिग्री सेल्सियस तैयार किया। सन 1948 में अंतरराष्ट्रीय समझौते के तहत क्रिस्टिन के सेल्सियस थर्मामीटर को सटीक माना गया और आज भी दुनियाभर में इसका उपयोग किया जाता है। थर्मामीटर प्राथमिक चिकित्सा या फर्स्ट एड में इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों में से एक सबसे आम उपकरण है, जिसका उपयोग लगभग हर घर में किया जाता है। शरीर के तापमान की सही जांच करने से इलाज भी सही तरीके से किया जा सकता है और समस्या को सही से समझा भी जा सकता है।

■ सोलन से पंकज घोष

लोकतंत्र को मजबूत करने की जिम्मेदारी जितनी पुरुषों की है, उतनी ही महिलाओं की भी है। इस साल चुनाव के महापर्व में महिलाओं का वोट प्रतिशत बढ़ा है। उम्मीद जगी है कि आगे के चरणों में आधी आबादी अपनी भागीदारी और बढ़ाएगी।

'महापर्व' में आधी आबादी की भागीदारी

महिलाओं की साझेदारी जरूरी

चिट्ठी 1

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। विश्व के सबसे बड़े राजनीतिक त्योहार लोकसभा चुनाव भारत में जारी हैं। इस लोकसभा के चुनाव में एक वोटर के रूप में जितनी जरूरी पुरुषों की भागीदारी है, उतनी ही महिलाओं की भी है। इसीलिए भारत का लोकतंत्र सिर्फ दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र नहीं, बल्कि सबसे जीवंत लोकतंत्र के रूप में भी खुद को स्थापित करने के लिए प्रयासत है।

2024 के लोकसभा चुनाव में पुरुषों के बराबर महिलाएं भी, बल्कि उनसे अधिक सहभागिता दर्ज कर रही हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में भी पुरुषों के तुलना में महिलाओं का वोट प्रतिशत अधिक था। महिलाओं ने चुनाव में उम्मीदवारों और वोटर के रूप में भागीदारी दर्ज करके न सिर्फ वोट प्रतिशत को आगे बढ़ाया है, बल्कि लोकतंत्र के स्तंभों को मजबूत बनाया है। खासकर मौजूदा सरकार के समय में महिला सशक्तीकरण को काफी बढ़ावा मिला है। तीन तलाक हो, उज्ज्वला योजना हो या फिर आवास योजना, इन सभी योजनाओं का महिलाओं पर असर हुआ है। महिलाओं के सशक्तीकरण और आर्थिक विकास में काफी मदद मिली है। 2024 के लोकसभा चुनाव में महिला वोट निर्णायक साबित होंगे, इस बात को ध्यान में रखकर सभी राजनीतिक दल महिला वोटर्स को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रहे हैं। अभी कुछ चरणों के मतदान होने बाकी हैं। ऐसे में जरूरी है कि आने वाले समय में महिलाएं बड़ी संख्या में अपने घरों से बाहर निकलें और सोच-समझकर मतदान करें। देश के जागरूक नागरिक होने के नाते यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि लोकतंत्र के इस महापर्व में शामिल होकर हम इसे सफल बनाने का सकारात्मक प्रयास करें।

■ विजय किशोर तिवारी, नई दिल्ली

कितना गुप्त रह गया ये दान

चिट्ठी 2

मतदान लोकतंत्र की नींव है। एक लोकतंत्रिक देश प्रत्येक नागरिक को मत का उपयोग करने का अधिकार देता है। लोकतंत्रिक देश में मतदान को गुप्तदान भी कहा जाता है। लेकिन आज के समय में यह कितना गुप्त रह गया है? लोग बड़ी सहजता से पूछ लेते हैं कि 'आप किसको वोट दे रहे हैं?' वहीं, कई लोग तो पोलिंग बूथ से बाहर निकलते ही खुलकर बताने लगते हैं कि उन्होंने फलां को वोट दिया। क्या एक लोकतांत्रिक देश के लिए यह सही है?

असल में, किसी भी लोकतांत्रिक देश में मतदान को गुप्तदान माना जाता है, ताकि मत देने वाले व्यक्ति को कोई परेशानी न हो और साथ ही पूरी निष्पक्षता बनी रहे। ऐसे में इसे गुप्त न रखना लोकतांत्रिक मूल्यों से खिलवाड़ करना है। सुप्रीम कोर्ट ने 2021 में एक मामले की सुनवाई में गोपनीयता को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का हिस्सा बताया था और कहा था कि 'चुनावों में मत की गोपनीयता को बनाए रखना जरूरी है।' वास्तव में, यह नैतिक आचरण का मामला है। हमें अपने लोकतांत्रिक मूल्यों को समझना होगा। मत का उपयोग करना ही अपने फर्ज को निभाना नहीं है, बल्कि उसे गुप्त रखना भी हमारा ही फर्ज है। हम किस उम्मीदवार को सही समझते हैं और किन वजहों से उसके पक्ष में हैं, यह उसके स्वभाव और हमारी विचारधारा पर निर्भर करता है। लेकिन इसे गुप्त न रखना एक तरह का सामाजिक अपराध माना जाना चाहिए।

■ कोमल राय, दिल्ली

सावधानी ही समाधान है...

चिट्ठी 3

आज विज्ञापन लोगों के लिए सिर दर्द बन चुका है। खासकर, महानगरों में जहां चारो ओर विज्ञापनों का तांता लगा रहता है। उत्पादों का प्रचार बड़े पैमाने पर विज्ञापन होर्डिंग्स द्वारा किया जा रहा है। आकाश चुंबी ये विज्ञापन इतने ऊंचे होते हैं कि उत्पादों के इश्तेहार दूर से ही नजर आ जाते हैं। यह एक बड़ी समस्या को भी अंजाम दे सकता है।

दरअसल, विज्ञापनों में इस्तेमाल होने वाले बड़े होर्डिंग तेज हवाएं चलने पर गिर सकते हैं। हाल ही में ऐसी ही घटना महाराष्ट्र में देखने को मिली, जहां एक बड़ा विज्ञापन होर्डिंग गिरने के कारण कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। आज हजारों की संख्या में विज्ञापन होर्डिंग्स लगाए जाते हैं, जिनमें से ज्यादातर की हालत खस्ता होती है। इससे भी बड़ी बात यह है कि ज्यादातर विज्ञापन होर्डिंग्स अवैध हैं। गौरतलब है कि अवैध भूमि अतिक्रमण में भी इन अवैध होर्डिंग्स की बड़ी भागीदारी होती है। ऐसे में जरूरत है कि सरकार इस बात पर जोर देना शुरू करे और यह भी सुनिश्चित करे कि अवैध तरीके से होर्डिंग्स न लगाए जाएं। सरकार की कोशिश होनी चाहिए कि सारे मापदंड पूरे करने के बाद ही विज्ञापनदाताओं को होर्डिंग्स लगाने की अनुमति दी जाए। बहरहाल, जो महाराष्ट्र में हुआ, वह दिल दहला देने वाली घटना थी। यहां यह सुनिश्चित करने की खास जरूरत है कि भविष्य में ऐसी घटनाएं घटित न हों। हम सबको यह समझने की आवश्यकता है कि जान का सौदा लापरवाही से करना किसी भी सूरत में ठीक नहीं है।

■ निखिल रस्तोगी, लखनऊ

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

पटना से सरिता प्रसाद, फिरोजाबाद से नितिन रावत, पटना से मुकेश कुमार मनन, शाजापुर से एमएम राजावतराज, हरिद्वार से शैलेन्द्र वर्मा, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, देहरादून से निधि मल्ल, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, बड़वानी से डॉ. विकास पंडित, गाजियाबाद से ललित शंकर।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

आखिर ये गांव कैसे हुआ नीला?

स्पेन में जुजकार नाम का एक गांव है, जो पूरी तरह नीला है। इस गांव से जुड़ा इतिहास बहुत दिलचस्प है।

हरे-भरे और फूलों-फलों वाले गांव तो हमने खूब देख रखे हैं, मगर क्या कभी 'नीला गांव' के बारे में सुना है। इस गांव का नाम 'जुजकार' है। यह गांव दक्षिणी स्पेन के अंडालूसी प्रांत में स्थित है। अपनी खास विशेषता के कारण इस गांव को दुनियाभर में 'नीला गांव' के नाम से जाना जाता है। हर साल इस गांव की खूबसूरती को देखने के लिए अनगिनत पर्यटक यहां आते हैं और इसे तस्वीरों में कैद करके अपने साथ ले जाते हैं। जुजकार एक सामान्य-सी जगह थी। यहां के लोग साधारण जीवन जीते थे, मगर यही गांव जब से नीले रंग में रंग गया, यह संसारभर के पर्यटन प्रेमियों के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य बन गया। यहां आने वाले सैलानी विश्वास ही नहीं कर पाते कि कुछ साल पहले यह स्पेन के साधारण गांवों में से एक था।

जुजकार गांव जून 2011 में दुनिया का पहला 'स्मर्फ टाउन' बना था। दरअसल, 3डी फिल्म 'द स्मर्फ्स' के प्रचार के लिए सोनी पिक्चर्स द्वारा एक प्रचार स्टंट के रूप में 200 से अधिक लोगों का घर चुना गया और इस सुंदर अंडालूसी गांव को नीले रंग में रंग दिया गया। नीले रंग में रंगे जाने के साथ-साथ सड़कों को चमकाने वाले छोटे-छोटे नीले कार्टून भी बनाए गए। भित्ति-चित्रों और मूर्तियों की भी विशेष सजावट की गई, जिससे यह जगह एक खास तरह की बन गई, जिसे स्पेन में 'लॉस पिटुफोस' के नाम से जाना जाता है। स्पेन के ये नीले घर हर साल बड़ी संख्या में दुनियाभर के उन पर्यटकों को आकर्षित करने लगे हैं, जो जुजकार को जानते तक नहीं थे। जुजकार गांव अब भी नीला है और नीला ही रहेगा। यहां की स्थानीय परिषद और लोकल बाजार के अनुसार, स्पेन के इस एकमात्र नीले गांव के रूप में जुजकार को पर्यटन से जोड़कर बहुत फायदा हुआ है। यहां आकर आप स्पेन की स्थानीय संस्कृति को करीब से जान सकते हैं और यहां के खानपान का भी भरपूर आनंद ले सकते हैं।

■ हरीशचंद्र पांडे, नैनीताल

मनोरंजन जगत के दो दिग्गज

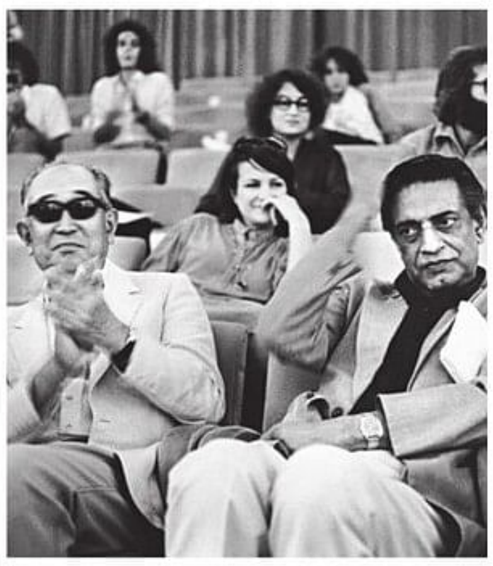

यह तस्वीर अपने समय के प्रसिद्ध निर्देशक सत्यजीत रे की है। इसमें वह जापानी फिल्म निर्देशक अकीरा कुरोसावा के साथ बैठे नजर आ रहे हैं।

■ जम्मू से राम सिन्हा

छायानट

गाने कम, पर शोहरत में किसी से पीछे नहीं

सदाबहार और दिलकश आवाज के मालिक मुकेश ने 35 साल के कॅरिअर में फिल्मों के लिए अपेक्षाकृत काफी कम गीत गाए, लेकिन उनके लोकप्रिय गीतों की संख्या इतनी ज्यादा है कि लगता है, उन्होंने हजारों गीत गाए होंगे। उनके मुकाबले किशोर कुमार और मोहम्मद रफी के गीतों की संख्या कहीं अधिक है, लेकिन लोकप्रियता में मुकेश किसी से पीछे नहीं। 'मेरा जूता है जापानी', 'सब कुछ सीखा हमने', 'बोल राधा बोल', 'चांद-सी महबूबा हो मेरी', 'चंदन-सा बदन', 'सजन रे झूठ मत बोलो', 'सुहानी चांदनी रातें' और 'चल अकेला, चल अकेला' जैसे कितने ही गीत मुकेश के सुरों की खूबसूरत बानगी हैं। धुन कैसी भी हो, ऊंची-नीची हो, धीमी या तेज हो या फिर अलग-अलग मूड वाली हो, सभी गीतों को उन्होंने जिस तरह गाया, उसे आज भी याद करते हैं तो लगता है कि इस तरह के गीत केवल वही गा सकते थे।

■ ओम वर्मा, गुरुग्राम

नेहरू और सरदार पटेल की जुगलबंदी

नेहरू और पटेल लंबे समय तक सहयोगी और सहकर्मी रहे। लेकिन उन्हें एक-दूसरे के विरोधी के तौर पर क्यों दिखाया जाता है? क्या इसकी यह वजह है कि इंदिरा और राजीव के कार्यकाल में पटेल और अन्य नेताओं की जगह नेहरू का महिमामंडन ज्यादा किया गया?

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

हम भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की पुण्यतिथि की 60वीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं। यहां मैं नेहरू जी के राजनीतिक जीवन के एक प्रमुख पहलू, सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ उनके रिश्तों पर बात करना चाहता हूं। इन दोनों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और देश की आजादी के शुरुआती वर्षों में कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। दोनों के बीच वैसी ही असहमति थी, जैसे कि एक साथ काम करने वाले दो व्यक्तियों के बीच अक्सर होती है। दोनों के बीच असहमति के बावजूद पूरी तरह एक साझेदारी नजर आती है, जिसमें दोनों की अलग-अलग ताकत एक साथ मिलकर उस धरती की सेवा में लग जाती है, जिससे वे दोनों प्यार करते थे। इस आपसदारी को नरेंद्र मोदी और उनके सहयोगी दलों द्वारा पूरी तरह दरकिनार कर दिया गया, जो नेहरू को नीचा दिखाने और पटेल को ऊपर उठाने का कोई मौका नहीं छोड़ते हैं।

जब अंग्रेज हम पर शासन कर रहे थे, नेहरू और पटेल ने भारतीय समाज के ज्यादातर वर्गों को मिलाकर कांग्रेस के रूप में एक जनसंगठन बनाया था। दोनों ने कई साल जेल में बिताए। यही नहीं, स्वतंत्र भारत की कैबिनेट में दोनों ने साथ-साथ काम किया। नेहरू ने इस बात का ख्याल रखते हुए कि महिलाओं को धार्मिक और भाषाओं के आधार पर पिछड़े या अल्पसंख्यकों को समान अधिकार मिलें, भारत के भावनात्मक जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित दिया। उन्होंने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार पर आधारित बहुदलीय लोकतंत्र की जोरदार वकालत की। पटेल ने क्षेत्रीय एकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया और रियासतों को एक साथ लाए। उन्होंने सिविल सेवाओं में सुधार और संविधान पर आम सहमति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा सार्वजनिक और निजी जीवन में भी दोनों का एक-दूसरे के प्रति गहरा सम्मान था।

सितंबर 1948 में पटेल ने अपने युवा सहकर्मी को पत्र लिखकर कहा कि "आपके मन में मेरे और जवाहरलाल के अलग होने के बारे में जो गलत धारणा है, उसे आप दूर कर लें। इस बात में कोई सच्चाई नहीं है। हां, हम दोनों के बीच विचारों को लेकर मतभेद हो सकते हैं, जैसा कि सभी ईमानदार लोगों में होता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम दोनों के बीच आपसी सम्मान, प्रशंसा या फिर विश्वास को लेकर कोई दूरी है।" एक साल बाद नेहरू को उनके 60वें जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हुए पटेल ने लिखा कि "हम एक-दूसरे को इतनी घनिष्ठता से जानते हैं कि यह स्वाभाविक है कि हम एक-दूसरे के स्नेही हो गए हैं। लोगों के लिए यह कल्पना करना मुश्किल है कि हम दोनों एक-दूसरे की कितनी कमी महसूस करते हैं, जब हम दूर होते हैं या फिर किसी समस्या को सुलझाने में मदद नहीं ले पाते हैं।"

यह प्रशंसा का प्रतिदान ही था कि अगस्त 1947 में नेहरू ने पटेल को पत्र लिखकर उन्हें 'कैबिनेट का सबसे मजबूत स्तंभ' बताया। इसके तीन साल बाद जब पटेल का देहांत हुआ तो नेहरू ने अपने दिवंगत दोस्त और सहकर्मी को स्वतंत्रता संग्राम का सबसे महान कप्तान और एक ऐसा व्यक्ति बताया, जिसने मुसीबतों के साथ-साथ जीत के क्षणों में भी उन्हें अच्छी सलाह दी। नेहरू ने कहा कि उन्होंने जिस तरह पुरानी भारतीय रियासतों की समस्या को संभाला, उससे उनकी बुद्धिमत्ता का पता चलता है। उन्होंने अपना लक्ष्य एकीकृत और मजबूत भारत का रखा। नेहरू ने अपनी श्रद्धांजलि यह कहते हुए खत्म की थी कि "देश के लोगों को पटेल के कार्य समर्पण, उनकी दृढ़ता, अनुशासन की भावना का सम्मान करना चाहिए और उस स्वतंत्र, मजबूत एवं समृद्ध भारत की भावना को महसूस करना चाहिए, जिसके लिए उन्होंने मेहनत की।" ऐतिहासिक दस्तावेज बताते हैं कि नेहरू और पटेल आजादी से पहले और बाद में सहयोगी और सहकर्मी रहे, तो जनता के बीच उन्हें एक-दूसरे के विरोधी के तौर पर क्यों दिखाया जाता है?

सही मायनों में यहां पर नेहरू के परिवार की गलती थी। जनवरी 1966 में नेहरू के उत्तराधिकारी के रूप में प्रधानमंत्री बने लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु मात्र इकसठ साल की आयु में हो गई। कांग्रेस के बड़े नेताओं ने शास्त्री के उत्तराधिकारी के रूप में इंदिरा गांधी को यह सोचकर चुना कि वे उन्हें अपने हिसाब से नियंत्रित कर सकते हैं। लेकिन इंदिरा गांधी ने पार्टी पर अपना अधिकार जता दिया। उन्होंने प्रिवी पर्स को हटाने तथा बांग्लादेश की लड़ाई में नेतृत्व क्षमता को दिखाया और पार्टी पर पूरी तरह नियंत्रण कर उसे एक पारिवारिक पार्टी बनाने की ठान ली। श्रीमती गांधी राष्ट्र के निर्माण में वल्लभभाई पटेल के योगदान से अनभिज्ञ नहीं थीं, फिर भी उन्होंने अपने पिता के नाम को ऊपर उठाने की पूरी कोशिश की। इसके लिए उन्होंने एक विश्वविद्यालय का नाम भी नेहरू के नाम पर रखा। जब राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने, उस समय पटेल और अन्य नेताओं के बजाय नेहरू का महिमामंडन ज्यादा किया गया और 1989 में नेहरू के जन्म शताब्दी समारोह के लिए राज्यों द्वारा प्रायोजित तमाशे किए गए। उसी समय राजीव गांधी ने मां इंदिरा को अपने नाना के बराबर जगह देने के लिए राजधानी के हवाई अड्डे का नाम उनके नाम पर रखा। सोनिया गांधी ने 1998 में कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद इस प्रक्रिया को और आगे बढ़ाया। पार्टी के इतिहास के बारे में जितनी उनकी समझ थी, उसके अनुसार वल्लभभाई पटेल और कांग्रेस के अन्य बड़े नेताओं- आजाद, कामराज, सरोजनी नायडू आदि के लिए उसमें कोई जगह नहीं थी। 2004 से लेकर 2014 के बीच कई बड़े प्रोजेक्ट्स के नाम राजीव गांधी के नाम पर रखे गए। उनके जन्म और मृत्यु की वर्षगांठ मनाने पर भी सार्वजनिक धन का एक बड़ा हिस्सा खर्च किया गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में नरेंद्र मोदी को यह सिखाया गया होगा कि उनके यहां के.एस. हेडगेवार और एम.एस. गोलवलकर कितने पूजनीय हैं। भाजपा में मोदी से श्यामा प्रसाद मुखर्जी और दीनदयाल उपाध्याय की प्रशंसा करने के लिए भी कहा गया होगा। शायद इसीलिए पटेल की प्रशंसा उन्होंने देर से शुरू की, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री बने। 2012 के आसपास जब उन्होंने प्रधानमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा जाहिर कर दी, तब सार्वजनिक तौर पर पटेल की बातों को उठाना और तेज कर दिया। मोदी की देखा-देखी भाजपा ने भी पटेल की प्रशंसा शुरू कर दी। जैसा कि लेखक और जनसेवक गोपाल कृष्ण गांधी कहते हैं कि नेहरू के बाद की कांग्रेस ने पटेल को अस्वीकार कर दिया था, वहीं भाजपा ने उन्हें गलत तरीके से भुनाना शुरू कर दिया। हालांकि यह मोदी और भाजपा के लिए नेहरू को नापसंद करने का कारण हो सकता है, लेकिन इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि पूरी जिंदगी कांग्रेसी रहने वाला भाजपा की संपत्ति कैसे बन गया। मोदी और भाजपा ने जिस तरह नेहरू के सहयोगी पटेल का इस्तेमाल पहले प्रधानमंत्री की छवि को मिटाने के लिए किया, उससे आज अगर वल्लभभाई पटेल होते तो चकित रह जाते।

जवाहरलाल नेहरू और वल्लभभाई पटेल की जोड़ी ने आजाद भारत की राजनीति और शासन को आकार दिया था। बाद में इंदिरा गांधी और पी.एन. हक्सर, अटल बिहारी वाजपेयी और एल.के. आडवाणी, मनमोहन सिंह और सोनिया गांधी तथा वर्तमान में नरेंद्र मोदी और अमित शाह का नाम लिया जा सकता है। लेकिन आधुनिक इतिहास में जो भी राजनीतिक साझेदारियां बनी हैं, उनमें नेहरू और पटेल की साझेदारी सबसे श्रेष्ठ और आवश्यक थी।

फास्ट फूड बनाम हमारे देसी व्यंजन

पावनी पांडे

आज भारतीय समाज में फास्ट फूड ने जितना गहरा स्थान बना लिया है, उतना चटनी, घी आटे का हलवा, लड्डू, नारियल की खीर, पकौड़े और चटपटे आलू जैसे देसी व्यंजन नहीं बना सके। ये पुरानी चीजें अब भुलाई जा रही हैं। फास्ट फूड इंडस्ट्री में हर दिन इतने प्रयोग किए जा रहे हैं कि तकनीक की मदद से इसका दायरा सुरसा मुख की भांति फैलता जा रहा है। इनको बनाने में इस्तेमाल होने वाले केमिकल, स्वाद, खुशबू, रंग और विविधता फास्ट फूड की लोकप्रियता का प्रमुख कारण हैं। आज से दो तीन दशक पहले खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता पर गौर किया जाता था। वह ताजा बना है, यह भी देखा जाता था। अब ताजा और बासी का कोई प्रयोजन नहीं करना होता। ओवन कुछ सेकंड में बासी से बासी सैंडविच को गरमागरम बना देता है।

खुला आकाश

फास्ट फूड इंडस्ट्री में हर दिन नए प्रयोग किए जा रहे हैं। ओवन के जरिये कुछ सेकंड में बासी से बासी खाने को गरमागरम कर लोगों की सेहत के साथ खिलवाड़ हो रहा है।

कम से कम बीस लाख फास्ट फूड पैकेट या पार्सल, जिनमें सैंडविच, पिज्जा और बर्गर आदि ही खासतौर पर होते हैं, की दिल्ली में रोज डिलीवरी की जाती है। अभी तो कोल्ड काफी आदि का एक अलग ही आंकड़ा है। प्रतिदिन तीस लाख कप कोल्ड काफी और इतनी ही सॉफ्ट ड्रिंक की बिक्री होती है। स्वाद और जायके की दुनिया मे गोते लगाओ और सेहत का रंग-रूप भूल जाओ, यही थीम है फास्ट फूड बिजनेस की। फास्ट फूड कंपनियां इतने मनमोहक इश्तेहार बनाती हैं कि देखकर मजबूत मन भी उसके साथ हिलने-डुलने लगता है। जाने-माने एड गुरु भी यही कहते हैं कि विज्ञापन का बोध मन को गहरा बांध लेता है और फिर बालक हो या किशोर, युवा हो या वयस्क, फास्ट फूड के बहलाने में और उसके जादू में ऐसे फंसता है, जैसे सांप को रस्सी और रस्सी को सांप समझने वाला कोई नासमझ। भले ही कब्ज हो, दस्त लग जाए, गला खराब हो, एसिडिटी हो जाए, केमिकल युक्त फूड से बदन ही दुखने लगे। बाल गिरने लगें, दांत खराब हों और कान दुखने लगें, मगर हर अगली भूख को तृप्त करने के लिए वह पुनः डिलीवरी बॉय का इतजार करता है। फास्ट फूड का उद्देश्य न तो किसी की सेहत बनाना है और न ही किसी को भोजन के माध्यम से अच्छी औषधीय गुण वाली डिश परोसना, जैसा कि हमारे पारंपरिक भोजन में रायता और चावल को खाने से अतिसार एकदम ठीक हो जाता है। लेकिन उनको तो बस माल बेचना है और खूब रुपया कमाना है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid